बेगम

११७५ हिजरी—अंग्रेजी सन् १७५६ ई०, यानी आज से दो सौ साल से भी पहले। आगरा शहर उन दिनो दुनिया के अच्छे से अच्छे शहरो में अन्यतम था।

बादशाह शाहजहां ने दिल्ली का लाल किला बनवाकर उसके अदर खास दरबार के लिए जो दीवाने-खास बनवाया था—जिसकी चादनी चांदी की थी, जिसके संगमर्मर के खभो की नक्काशी में हीरे, मोती, पन्ने, नीलम की जगर-मगर थी, वहां उन्होंने फारसी की दो पंक्तियां खुदवा रखी थी—

"अगर फिरदौस बर-रूए ज़मी अस्त
हमी अस्त, हमीं अस्त, हमी अस्त।"

यानी इस धरती पर अगर कही स्वर्ग है, तो वह यही है, यही है, यही है। अपनी राजधानी दिल्ली लिवा जाने के लिए शाहजहानाबाद शहर बसाकर बादशाह ने उसे भूस्वर्ग बनाने मे कोई कसर उठा नही रक्खी। लालकिला, जामा मसजिद, दिल्ली, लाहौरी, कश्मीरी और अजमेरी दरवाज़ा, चांदनी चौक, चांदनी चौक की सड़क तक यमुना का पानी ले जाकर नहर—बहुत कुछ बनाया था। अगर बीमार और लागर होकर अपने बेटे औरंगज़ेब द्वारा कैद नही कर लिए गए होते, तो शायद हो कि वे ऊपर की उन दोनों पंक्तियों को साकार ही कर देते। लेकिन मुकद्दर की मार खाकर वे बेटे के हाथों बंदी बने रहे, हार गए, उनकी उस हार से दिल्ली का शाहजहानाबाद अकबराबाद आगरे से हारा ही रहा।

अकबर बादशाह ने आगरे में जो किला बनवाया था, वह किला लाल किले की तुलना मे मरदाना-सा था। लाल किले को देखकर जो

'वाह-वाह' करते थे, वही आगरे के किले को देखकर कह उठते थे, 'अरे बाप रे !'

कहिए कि मरदाना और जनाना । या कि बाघ और बाघिन । इसके सिवा खुद जहापनाह शाहजहां ने मुमताजमहल के मरने के बाद जो ताजमहल बनवाया था, उसके मुकाबले दिल्ली का सारा कुछ जैसे फीका पड गया था ।

आगरे के चादनी चौक की बहार दिल्ली की चादनी से कुछ कम नही थी । ११७५ हिजरी के आसपास आगरा और भी जग उठा था । बहुतेरे बडे-बडे अमीर-उमरा, सेठ-साहूकार दिल्ली से खिसककर आगरे आ बसे थे । इसकी शुरुआत तेरह साल पहले हुई थी । बादशाह मुहम्मदशाह के जमाने मे ईरान का बादशाह, मनुष्यो मे रुस्तम, राजा-बादशाहो मे शेर, कहे तो कहना होगा, दुनिया के लोगो के लिए विभीषिका नादिरशाह के हमले के बाद से ही । लोग उस विभीषिका को आज भी नही भूल सके है ! बाप रे ! उसकी डाट से नवाब सआदत अली खा जैसा उतना बड़ा एक आदमी—औधिया का नवाब ज़हर खाकर मर गया था !

वही नादिरशाह तख्तेताऊस और बादशाही ताज का कोहनूर हीरा लूटकर दिल्ली के स्वर्गीय गौरव को छीन ले गया था ।

नादिर फिर नही आया । उसका इंतकाल भी हो गया । लेकिन लोगो की दहशत नही गई । जाए भी कैसे ?

शुकदेव आचार्य का कहना था—दिल्ली की इमारतें, बादशाहत 'गिरी-गिरी' कहकर चीख रही है । शुकदेव आचार्य की गणना कतई गलत नही । ज्योतिष-गणना मे उस समय हिंदुस्तान को बडा विश्वास था, वह विश्वास बादशाही दरबार से लेकर मामूली गृहस्थ तक था—उसकी बुनियाद कुतुबमीनार से भी सख्त थी, उसका सिर उससे भी ऊचा उठा हुआ था । दैवज्ञ, फकीर, साधुओ का प्रताप उत्तर भारत की सर्दी और गर्मी से भी प्रबल था । ज्यादा दिन की बात नही, मुहम्मद-शाह ही के जमाने मे—सैयद भाइयों का खून हो चुका था, वजीर था मुहम्मद अमीर खा । एक दिन रात को चबूतरे की जाफरी मे किसीने एक झडा गाड दिया । सुबह लोगो की नजर पडी । उसमे लिखा था—"बादशाह, होशियार ! अपनी गद्दी छोडकर खिसक जा !"

लोग-वाग जुट गए। कोतवाली से वज़ीर को खबर भेजी गई। वज़ीर अमीर खा आदमी जवर्दस्त था। हरकत यह किसकी है, इसका पता लगाने मे उसे देर नही लगी। एक फकीर पकडाकर आया। नाम था उसका नयजन। पहनावे मे एक लगोटी। सर नंगा। फकीर ने खुद ही हसकर वजीर से कहा—हां, वह झंडा तो मैंने ही गाड़ा है!

—क्यों गाडा ?

—मेरी खुशी।

वजीर ने फकीर को कोडे लगाने का हुक्म दिया। लेकिन कोडा मारने की किसीको हिम्मत नहीं पड़ी। विगडकर वजीर ने अपने ही हाथों कोड़े लगाए। कोड़ा फकीर के बदन पर घस-घंस गया, पर वह रोया नही, हंसा। यह खवर जो मिली तो कोकीजी ने वादशाह से कहा—तुम फकीर को फौरन बुलवाओ और उसे खुश करो।

कोकीजी रहीमुन्निसा बीवी वादशाह के दूध का जतन करती थीं। कोकीजी का पिता मुहम्मद जान गणना में माहिर था—कोकीजी भी यह विद्या जानती थी। वादशाह ने उनकी वात टाली नही। तुरन्त आदमी दौडाया। नयंजन फकीर को दरबार में बुलवाकर चार मुहरें देकर खुश किया। फकीर ने खुश होकर कहा—हां, तू रह जा शाहन-शाह, रह जा। मगर वह वज़ीर…। गरदन हिलाते हुए फकीर चला गया।

अमीर खां यह सुनकर हंसा था। लेकिन कोकीजी ने वादशाह से कहा—यह सोच रखो कि नया वज़ीर कौन होगा!

इसके ठीक तीन दिन के वाद अमीर खां को बुखार हुआ और पांचवें दिन अमीर खां चल बसा।

नयंजन ढूढे दिल्ली में नही मिला। लेकिन कोकीजी वोली—मैं जानती थी कि यह होगा।

कोकीजी रहीमुन्निसा का पिता मुहम्मद जान दिल्ली मे मिस्त्री का काम करता था। उसने गणना की यह विद्या एक फकीर से हासिल की थी। मुहम्मद जान ने मुहम्मदशाह का टिप्पण देखकर उसकी मां से कहा था—मुहम्मदशाह उस समय वादशाह नही, शाहजादा रौशन अख्तर था, नाम की तनखा मिलती थी—रौशन अख्तर गद्दी पर वैठेगा। उसका कहा अक्षर-अक्षर सच निकला। कोकीजी ने सैयद भाइयों के खून होने

की वात वता दी थी। वह भी सच हुई। इस समय सच पूछिए तो वादशाही हरम की सव कुछ कोकीजी ही थीं। वादशाह की मुहर उन्हीके पास रहती।

आगरे के लोग लेकिन शुकदेव को कोकीजी से भी वड़ा ज्योतिषी मानते थे।

उसके चमत्कार के अजीव-अजीव किस्से लोग कहा करते, जिनमे से दो किस्से तो सारे हिंदुस्तान के लोगों को मालूम थे। उन दिनो शुकदेव आचार्य आगरे की सडक पर खली से पत्थर पर खाने वनाकर माथे पर फटी पगड़ी डाले और कपाल पर तिलक लगाए वैठा करता था। उमर भी कम थी। वहुत तो अट्ठारह-वीस साल की होगी। राहगीरो के हाथ देखा करता। लोग-वाग दो-चार ढेवुआ या दमडी देकर अपनी राह लगते। एक रोज़ की वात है, आचार्य वैठा था उसी तरह। डोली पर चढ़कर उस रास्ते से आगरे का वहुत वडा सेठ जा रहा था। कारवार खूव चला हुआ था सेठ का। सेठ यह सव मानता-वानता न था। एक नौजवान को ज्योतिषी वना वैठा देख उसने कहारो से डोली रखने को कहा। उसे सवक सिखा जाने का इरादा था। डोली से उतरकर सेठ शुकदेव के सामने गया। कहा—अवे लौंडे, यह ढोंग क्या रचे हुए है? कमा-कोड़कर क्यो नही खाता?

शुकदेव सेठ की शक्ल देख रहा था। उसने कहा—आपकी तकदीर तो खूव है सेठजी! लक्ष्मी की आपपर अपार दया है।

सेठ ठठाकर हस पडा। बोला—यह तो सारे आगरे के लोग जानते है। नाम वता दो तो तमाम हिंदुस्तान के लोग यह कहेगे। कुछ और वता सकता है तो वता।

शुकदेव ने कहा—कपाल की रेखाओ से तो एक वात लग रही है, लेकिन हाथ की रेखा देखे विना, मैं कह नही सकता।

—ले हाथ की रेखाए भी देख ले।—सेठ ने तलहथी सामने पसार दी।

ध्यान से सेठ के हाथ को देखा और उसके चेहरे को देखकर आसमान की ओर चुपचाप ताकते हुए वह कुछ सोचने लगा शायद। सेठ ने कहा—क्यो वे छोरे, दिन का आसमान तो विलकुल नीला है। वहा तो कोई तारा भी नही। वहा कुछ नही लिखा है।

शुकदेव ने सेठ का हाथ हटा दिया। कहा—मैं कुछ बता नहीं सकूगा सेठजी। आप जाइए। हां, सामने मत जाइए, घर लौट जाइए।

—घर लौट जाऊं ? बदमाश कही का, भाग। काश, पता होता कि मैं जा कहां रहा हूं···

—वह मुझे मालूम है सेठजी।

—मालूम है तो बता।

—वह आप मत सुनिए। आप घर जाइए अपने।

सेठ ने आचार्य के गाल पर एक तमाचा जड दिया—भाग यहा से। फिर कही तुझे यहां या और कही यह ठगी करते देखा तो कोतवाल से कहकर कैदखाने भिजवा दूगा।

भीड़ लग गई। शुकदेव की यह दुर्गत देखकर लोग खूब हसे। शुकदेव अपने को और जब्त नही कर सका। वह खडा हो गया। बोला—ओ सेठजी, तो सुन ही लो तुम कहां जा रहे हो !

सेठ डोली पर सवार हो चुका था। कहार डोली को उठा रहे थे। उसने वही से कहा—बोल, मैं यही से सुन रहा हूं।

शुकदेव ने कहा—तुम मरने के लिए जा रहे हो ! रस्सी ही भर के फासले पर तुम्हारी मौत खड़ी है।

सेठ हो-हो करके हसा। बोला—अच्छा रे बदतमीज़, लौटते वक्त मैं इसका जवाब देता जाऊंगा। मैं आगरे के किले के नवाब के पास खिताब और खिलअत लाने जा रहा हू। लौटते वक्त कोडों से तेरी पीठ की खाल उधेड दूगा।···बढा डोली।

कहार हुकारी भरते हुए चल पडे। पौन रस्सी ही जा पाए होगे कि कही शोर उठा। सेठ के साथ कई घुडसवार थे। तलवार खोल-कर वे आगे वढ गए। सडक का मोड था। उसी मोड पर शोर मचा था। घुडसवार कुछ ही दूर गए और लगाम खीचकर रुक गए। सिहर उठे। उधर से एक पगला हाथी दौडा चला आ रहा था। अपनी सूड़ से दोनो किनारे की दूकानो को तहस-नहस करता चला आ रहा था। 'भागो-भागो' का शोर उठा था। भगदड मच गई थी। वह शोर वढता ही आ रहा था। राजपथ की भीड जान लिए इधर को भागी आ रही थी। इधर धडाधड़ दूकाने बंद होने लगी थी।

सवार मुड़े। डोली के पास आकर बोले—हाथी बिगड़ गया है। इधर ही आ रहा है। डोली को घुमा लो। जल्दी।

मगर कहा की जल्दी! तब तक हाथी मोड़ पर आ धमका। हाथी को देखना था कि डोली को पटककर कहार भाग खड़े हुए। सवारों ने लाख चाहा, मगर घोड़े न रुके। पीठ पर सवार को लिए-दिए ही हवा हो गए। लोग-बाग अपने-अपने पैरों के भरोसे भागे। भागने का मौका न मिला तो एक सेठ को। डोली पर था। भाककर हाथी को देखा और चीख उठा। जानवर जैसी चीख। हाथी दौड़ता आया, सूंड से डोली को पकड़ा और सामने के पैरों से दबाकर उसे चूर-चूर कर दिया। उसके बाद सेठ को पकड़ा। सूड़ से उठाकर उसे जोरों से पटक दिया। पटककर भी तसल्ली न हुई। पैरों से मसलकर उसे पीस डाला। पत्थर से बंधी आगरे की सड़क को खून से रंगकर वह आगे की तरफ दौड़ा।

शुकदेव के सामने उस समय तक भी भीड़ थी। लोग उसका मजाक उड़ा रहे थे। शुकदेव ने पोथी-पत्तर उठाया और बगल की गली में घुस गया। लोगों ने तालियां पीटीं—वह भागा रे, वह भागा! उनके मुह की बात लगभग मुंह में ही रही। पीछे से घबराहट-भरा शोर सुनाई पड़ा—भागो, भागो! लोग चौंके। चौकन्ने होकर पीछे ताका। हाथी पर नजर पड़ी।

हाथी चला गया। जरा देर बाद लोग फिर वहां जुटे। दर्शकों में से कुछ वहा तब तक भी खड़े थे। बड़े फर्राटे से शुकदेव के भाग देखने के बारे मे बोल रहे थे। बोले—अरे बाप रे बाप! साक्षात् देवता है वह! बाप रे!

इसके बाद ही शुकदेव का नाम तमाम आगरे में फैल गया। एक घटना और घटी थी। इस घटना के कुछ ही दिन बाद।

उस समय आगरे की सुरैया बेगम का बड़ा नाम था। उसके बराबर की गजल गानेवाली बाई आगरे में दूसरी न थी। उमर उसकी पचीस के करीब होगी। गाने के साथ-साथ उसकी और एक ख्याति थी कि वह खुद गजल बनाती थी। उसके साथ-साथ एक और सुनाम या दुर्नाम जो कहिए, था। वह यह कि बाईजी बिलकुल संग-दिल है। कोई उसे कटाक्ष करता तो उसके जवाब में वह जो कटाक्ष

करती—वह बाका और जहरीला होता। मुहब्बत या दिल के दर्द की जो गज़लें वह बनाती, वह कतई झूठ होती। ठीक उस झिलमिल जैसी झूठ, जो हवा के झोंके से दरिया के पानी पर होती है, उस झिकमिक-सी जो दिन की रोशनी मे होती है। ये दोनों ही धोखा हैं। दर असल दरिया के पानी का न तो कोई रग होता है, न ही उसकी कोई तरंग होती है। रात को उस पानी को देखो। क्या देखोगे ? बिलकुल स्याह। और जब हवा न हो, तब देखो। देखोगे, दरिया का पानी एक चादर-सा है।

उसी सुरैया बाई को दिल्ली से बुलाहट आई। औधिया के नवाब अमीर-उल-उमरा नवाब सआदत अली खां एक जलसा करेंगे। उस जलसे मे दिल्ली की जोत, हिंदुस्तान की बुलबुल, मुल्क की कोयल नूरबाई गाएगी। उस जलसे मे खुद बादशाह, दुनिया के मालिक, मुहम्मदशाह पधारेंगे, उनके साथ दिल्ली के अमीर-उमरा, रईस-वजीर और बादशाह के बडे-बड़े ओहदेदार होंगे। नवाब ने सुरैया को बुलाया था। उसकी खास वजह थी कि वह लखनऊ शहर की बेटी थी। सुरैया बुरका ओढे डोली पर सवार होकर शाम को शुकदेव आचार्य के यहा पहुची। उसे अपना हाथ दिखाना था। वह जानना चाहती थी कि दिल्ली की उस महफिल मे उसकी इज्जत बचेगी या कि नूरबाई से हारकर मुह काला करके लौटने की नौबत आएगी।

सुरैया ने चेहरे पर से बुरका नही उतारा, अपना परिचय भी नही दिया। बोली, मैंने सुना है, पडितजी की निगाह दुनिया के अतिम दिन तक को देख पाती है। मैं आपसे एक बात जानने आई हूं। सिर्फ एक बात।

—फरमाइए।

—अगले तीन महीनो के अंदर मेरी इज्जत पर कोई खतरा है क्या ?

सवाल सुनकर शुकदेव अवाक् रह गया था। उसने सवाल के जवाब मे सवाल ही किया—इज्ज़त पर ?

—जी। मेरी एक इज्जत है, खातिर है, नाम है। उस इज्जत पर, उस नाम पर कोई आंच आनेवाली है ?

—जरा आपका हाथ देखूं।

—सुरैया ने हथेली फैला दी।

—ऐं!—अचभे की एक आवाज करके बाये हाथ से दिये को हाथ के करीव ले जाकर शुकदेव ने कहा—कमाल का हाथ है। मेरा तो ख्याल है···

शुकदेव रुक गया। सुरैया ने कहा—कहिए···

—कहूं?

—जी, कहिए।

—बेअदबी माफ करे, बेगम साहबा। मेरा तो ख्याल है, आप ऐसा कुछ करती है, आपके अदर ऐसा कुछ है, हम जिसे कहते है कि उससे सरस्वती की पूजा होती है।

—जी हा, वह तो मैं करती हू। पेशे से मै बाई हू।

—आपमें उससे भी ज्यादा सिफ्त है। माफ करे, आप क्या सुरैया बाई हैं? जो गाने मे ही कुशल नही है केवल, खुद गजल भी बनाती है। "औरतो का दिल कमल-सा होता है। वह अपनी पखडिया खोलकर जिसे पुकारता है, वह है सूरज! मगर हाय रे औरत का नसीब, इन खुली पंखडियो पर आ बैठते है मधु के लोभी भौरे, मक्खिया! सूरज डूब जाता है और कमल के दल एक-एक करके पानी मे टूट गिरते है।"

और इसके बाद ही शुकदेव बोल उठा—वल्लाह! आपके हाथ की लकीरो मे तो इस शिकायत का जवाब लिखा हुआ है बाईजी!

—मतलब?

सुरैया ने अबकी अपना बुरका उतार दिया।

शुकदेव ने कहा—बताता हू। जरा अपने कपाल को सिकोड़े तो। कपाल की रेखाए देख लू।

सुरैया ने वैसा ही किया।

—ठीक है। हाथ और कपाल एक ही बात बता रहे है।

—क्या बताते है?

—बताते है—! शुकदेव ने जरा हंसकर कहा—कहते है, इतना दुःख, 'तना अफसोस तुम मत करो। औरतों की तकदीर कमल के फूल की किस्मत से मिलती जरूर है, लेकिन फिर भी दीन-दुनिया के

जो मालिक है, उनकी मेहरवानी से कुछ औरतों के भाग्य में सूरज जैसा आदमी आ जाता है। उसकी खुली पंखुड़ियों पर आंसू की शवनम-बूदो मे वह सूरज प्रतिविंवित होता है।

सुरैया एकटक उसे निहारने लगी।

—तो क्या वादशाह मुझे नूरवाई की तरह दिल्ली मे रोक लेगे ?

—नहीं, नही, वाई साहवा, आपकी जिन्दगी विलकुल वदल जाएगी। ज़िन्दगी की लहर आज जिधर को भाग रही है, ठीक उसके उलटे भागेगी। और, ज़िन्दगी मे आज तक जो सुख, जो आनंद आपको नही मिला है, वही सुख, वही आनद मिलेगा। इन तीन महीनों मे आपके वड़े अच्छे दिन आएंगे।

—और भी साफ-सीधा बताइए पंडितजी।

—आपको शादी करनी पड़ेगी।

—शादी ?

—वैसे सुख की शादी मुश्किल से होती है !

सुरैया ने शुकदेव को एक मुहर दी और उठ खड़ी हुई। कहा—आपकी वात का यकीन नहीं कर सकी पंडितजी। क्योकि···

ज़रा चुप रही। फिर कहा—लोग मुझे क्या कहते है, मालूम है ? कहते है, 'संगदिल'। और, जवाब का इंतजार किए विना ही वह चली गई।

शुकदेव की यह वात भी गज़व की सच निकली। उस जलसे में सुरैया की एक अनोखे आदमी से भेंट हुई। बसरा के गुलाब जैसा रंग, खिंची हुई आंखें, पतले होंठ, लंबी नाक और लंबा छरहरा वदन—देखते ही समझ में आ जाता कि यह आदमी हिंदुस्तान का नही है। वादशाह उस महफिल मे मौजूद थे। नूरबाई ने नाच-गाकर महफिल मात कर दी। नूरबाई कश्मीर की थी। जवान और फिर वला की खूवसूरत। उसका गला वांसुरी को लजाता था। सुरैया की उम्र उससे ज़्यादा थी। रूप की बहार भी वैसी न थी। आवाज़ भी उतनी मीठी और ऊंची नही। नाच मे भी गति धीमी। फिर भी उसकी इज्ज़त रह गई—स्वरचित गजल और बैठकी में ठुमरी गाने से। लखनऊ घराने की ठुमरी गाकर उसने बड़ी वाहवाही लूटी, बहुत इनाम पाया।

दिल्ली के बहुत बडे ख्यालिया मौलाव खा तक ने उसकी बेहद तारीफ की ।

महफिल के बाद सआदत खा ने कहा—बहुत खूब । तुमने मेरे लखनऊ की इज्ज़त रखी ।—यह कहने के बाद पानबरदार से उन्होने अपने पनबट्टे से उसे पान देने को कहा—दो बाईजी को पान दो । मोती की एक माला भी दी उसे ।

झुककर सलाम करके जब वह मोती की माला लिए पीछे हट गई तो नवाब एकाएक हस उठा ।

सुरैया ने पलटकर ताका ।

नवाब सआदत खा ने कहा—सुरैया, ये हैं, अमीर खानज़मान अली कुइली खा जाफरजग । खास ईरान के बहुत बडे अमीरजादा । इनके वालिद मुहम्मद अली खा ईरान के शाह के दोस्त थे । ईरान की तकदीर को आग लगी—वहां नादिरशाह जम बैठा । अपने चाचा की बेटी खादिजा सुलतान से अली कुइली को प्यार था । छुटपन से ही दोनो साथ खेला किए थे । अवेरिया पाख के जिन पद्रह दिनो तक ईरान के लोग आसमान मे चाद नही देख पाते थे, दुनिया अघेरी रहती, उस समय अली कुइली यह देखा करते थे कि चाद तो उनके चाचा के घर मे चक्कर काटता है । अली कुइली जब मदरसे मे पढते थे तभी खादिजा सुलतान पर शेर बनाते थे, गज़ल लिखते थे। लिखकर खादिजा को सुनाया करते थे । शर्म से खादिजा पके अनार-सी लाल हो उठती थी । एक दिन उसने कहा—दुहाई है तुम्हारी अली कुइली, तुम मेरे नाम पर यो शेर और गज़ल न बनाया करो । मुझे बड़ी शर्म आती है । अली कुइली ने फौरन शेर बनाकर ही इसका जवाब दिया कि तुम तो शर्म के मारे अपने नाम पर शेर कहने को मना करती हो प्यारी, मगर तुम्ही कहो, जिस शेर मे, जिस गज़ल मे तुम्हारा नाम न हो, उसका दाम ही क्या है ! दुनिया मे जो भी रूप है, रस है, गघ है, सब तो तुम्हीसे लिपटा है ! चाद के बिना रात अघेरी होती है,···तुम्हारे बिना शेर और गजल मे न तो सुर होता है, न सगीत, वह महज़ बेमानी आवाज़ होती है, सिर्फ शब्द ! शायरी का नाम अली कुइली का वाला सुलतान है पता नही, तुमने सुना है या नही !

सुरैया ने सलाम किया। वोली, जी जनाव ! लखनऊ और आगरे रहते हुए मैंने ईरान के बुलबुल शायर वाला सुलतान का नाम सुना है। उनकी गजले न सिर्फ सुनी है, वल्कि उन्हे गाया है।

—ये वही वाला सुलतान अली कुइली खा है, नादिरशाह ने ईरान के नसीव को फूक दिया, अली कुइली का नसीब ही नही, दिल भी जलकर राख हो गया—घर भी खाक हो गया। गद्दी पर बैठते ही नादिरशाह ने जोर-ज़वर्दस्ती खादिजा सुलतान से शादी कर ली। उसे अपने हरम मे ले गया। दीवाना होकर कुइली ईरान छोडकर हिंदुस्तान चले जाए। मेरे दामाद सफदरजंग के दोस्त है। मैं इन्हे लड़के-सा मानता हूं। लेकिन शायर होने के नाते ये मेरे भी दोस्त है।

सुरैया ने फिर सलाम किया। वोली, मेरी खुशनसीवी है जनावे-आली, जाने सुबह आज किसका मुंह देखकर उठी थी। खुद हिंदुस्तान के वादशाह मेरा गाना सुनकर खुश हुए। और अगर मैं यह अर्ज़ करूं—आप है, इसलिए कहने की जुर्रत कर रही हूं—गज़ल बनाने वाले वाला सुलतान जैसे शायर मुजरे में मौजूद थे, ये खुश हो सके या नही, नही जानती···

टोककर कुइली खां ने कहा—हजार वार ! सुरैया वेगम, तुम्हारी आवाज़ की वलिहारी ! खयाल की तुम्हारी तानों का सानी नही, तुम्हारी गज़लों की तारीफ नही !

सुरैया ने वार-वार अदव से कोर्निश अदा की।

सआदत खां ने कहा—अरे, सुरैया की शक्ल देखकर तुम अपनी वात भूल गए क्या कुइली खां ? कहो, फरमाइश करो, हम भी सुने।

प्रश्न-भरी निगाह उठाए सुरैया अवाक् थी। नवाव सआदत खां ने कहा—तुम्हारी गज़लो से कुइली खां के मन के सितार के सारे तार झनझना उठे है सुरैया। जवाव कह सकती हो···

—खुशकिस्मती अपनी, वड़े भाग मेरे कि मेरी गज़ल से वाला सुलतान के मन मे उसका जवाव जागा है !

कुइली खां ने कहा—जवाव नही सुरैया। तुमने अपनी गज़ल में कहा, "मैने दुनिया से पूछा, आखिर मुहव्वत क्या है ? किसीने इसका जवाव नही दिया। जवाव अंत मे एक हिरनी ने दिया इसका। वह वोली—मुहव्वत मेरी इस प्यास जैसी है, जिस प्यास से छाती

फटकर मैं मरी जा रही हूं। प्यास अभी-अभी छाती मे जगी है और देखा कि सामने फैले बालू पर दरिया वह रहा है, कांच-सा साफ पानी किनारों से छलका पड़ रहा है। मैं दौड पड़ी। दौड़ पडी कि उस दरिया मे कूद पडूगी—जलता हुआ शरीर शीतल होगा, घघकती छाती जुडाएगी। मै सामने चली दरिया की तरफ और दरिया हटने लगा पीछे। ठिठक गई। दरिया भी रुका। फिर दौडी। दरिया फिर भागने लगा। आखिर रेत पर औंधे मुह गिर पडी। मैं मर रही हू। मेरी छाती सूख गई है सुरैया। तो भी, अभी भी देखा करती हूं कि वह, वह रहा दरिया, मेरे सामने। रेगिस्तान की पकड मे न आनेवाला यह जो दरिया है, वही है ज़िन्दगी मे मुहब्बत।"

सुरैया ने फिर अदव से सलाम किया। कहा—हज़ारों, लाखो तसलीम। वाला सुलतान साहव, आप तो आला शायर है, ईरान की वुलवुल और हिंदुस्तान की कोयल है—आप ही बताएं, मुहब्वत यही नही है क्या ?

अली कुइली खा ने दाये हाथ के अगूठे और तर्जनी के छोर को मिलाकर वाकी तीन अंगुलियो को फैलाकर हाथ को ज़रा वढ़ाया और गुनगुनाकर गाने लगे—"रेगिस्तान की छाती पर इस मरी हिरनी के ककाल को देखते हुए मै भी वढ़ रहा था। दरिया ठीक इसी तरह से पीछे हट रहा था। मै भी ठिठक गया था। मगर मरी हिरनी के कंकाल ने कहा—प्यासे राही, रुक क्यो गए ? अब तो पीछे हटने से भी तुम्हारी मौत ही है। फिर भी यह वताओ, और भी आगे हिरन का ककाल क्यो पडा है ? मै वढता गया। वढ़ते-वढते देखा, हरियाली हाथ के इशारे से वुला रही है। लड़खड़ाते हुए मैं गया। वहा सच ही हरी-भरी घासों का एक कुज था। खजूर के पेड़ो की पात और उनके वीच पानी का कुड। मैने हिरन के एक जोडे को देखा। एक-दूसरे को एकटक ताक रहे थे वे। उन्होने मुझसे कहा—यह मुहब्वत का उत्स है। लोग इसे ओएसिस कहते है। मैंने पूछा—तुम लोग किस तरह से इतनी राह तै करके आए ? वे वोले—विश्वास चुक जाने से औंधे मुंह गिरना पडता है। हमारा विश्वास नही चुका है, नही मिटा है।"

इस बार सुरैया कोर्निश करना भूल गई। नवाब सआदत ने

अपना दिल उजाडकर वाहवाही दी। कहा—इसका जवाब तो तुम्हे देना ही है सुरैया। तुम लखनऊ की जोत हो, जलती हो आगरे मे। पास ही है हिन्दुओ का वृन्दावन। यमुना का जो पानी आगरे की गोद को धोता है, वह वृन्दावन के वनो को धोकर आता है। आगरे मे यमुना के किनारे बादशाह शाहजहां का बनवाया ताजमहल है। जवाब तो तुम्हे देना पडेगा।

सुरैया बोली—इसका जवाब देने की जुर्रत मुझमे नही है। ये मेहरबान है·

—नही सुरैया, मेहरबान दुनिया मे एक ही है—कहकर कुइली खा ने अपना दाया हाथ ऊपर की ओर उठा दिया।

सुरैया ने कहा—बेशक। मेहरबान एक बस खुदा है। लेकिन अपनी मेहरबानी वह दुनियावालो को खुद से नही देता। देता है उनके मारफत, जिनपर वह मेहरबानी करता है। आप वैसो मे से एक हैं। जभी तो आप आखिरकार रेगिस्तान के उस वीरान मे पहुंच सके। और मैं वही की वही ठक खडी हूं, जहा उस प्यासी हिरनी ने दम तोड दिया। न तो पीछे हट पाती हूं, न आगे बढ़ पाती हूं।

सआदत खा वाह-वाह कर उठे।

इसी वक्त लाल किले के नौबतखाने मे भोर की भैरवी बज उठी। नवाब बोल उठा—इशा अल्लाह, सारी रात गुज़र गई!

इसके बाद ज्यादा दिन नही गुजरे, एक दिन आगरे मे सुरैया के दरवाजे पर जाफरजग अली कुइली खा का तजाम आ लगा।

दरवाजे पर जो खोजा गुलाम था, अली कुइली ने उससे कहा—बेगम को खबर कर दो कि बाला सुलतान नाम का एक राही आया है।

राही? हब्शी बंदा अवाक् हो गया था। वह हा किए रह गया था। कुइली ने कहा—अबे, हो क्या गया तुझे! यो हा क्या किए हुए है?

सुरैया को तब तक खबर मिल चुकी थी। बादी ने झरोखे से अली कुइली को देख लिया था। वह शक्ल एक बार देख लेने से फिर भुलाई नही जा सकती। दिल्ली मे बादी ने उसे देखा था। उसने जाकर सुरैया से कहा—बाई वो आए है!

—कौन ?—सांझ को सुरैया सिंगार करके झरोखे पर बैठी भादों के आसमान की तरफ निहार रही थी। उत्तर भारत के ताप-झुलसे आसमान में बरसात के मेघ उमड़ आए थे। बीच-बीच में गर्जन हो रही थी। बारिश के आसार।

सुरैया के गले में गुन-गुन जग आया था। गजल के बीज से अंकुर उग रहा हो जैसे। बांदी की बात सुनकर उसने भवें सिकोड़ीं। पूछा, कौन ? कौन आया है ?

बांदी जरा हंसकर बोली—वो। दिल्ली के वही शायर। वही नुकीली नाक, मिर्ची आंखें, गुलाब जैसे रंगवाले ईरानी अमीर—गजलगो वाला गुलनार…

सुरैया चौंक उठी थी। उसके कलेजे में जैसे मेघों का नगाड़ा बज उठा। वह झटपट सीढ़ी के दरवाजे पर जा खड़ी हुई। वहीं से सलाम करके बोली—अहोभाग्य अपना, आज इस नाचीज के गरीबखाने का अंधेरा मिटाने हुए आसमान का चांद उतर आया है !

अली कुली ने सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए कहा—नहीं, सुरैया बाई, मैं चांद जैसा नहीं, आज के इस बादल की तरह आया हूं। बदली के उमड़ने से जिसके दिल है, उसको क्या होता है, मालूम है ? दिल धकधक करने लगता है, जैसे किसी को चाहता हो। मैं सोचने लगा, आखिर वह है कौन ? अचानक लगा, मेघ को देखकर मेरा मोर पंखना खोलकर नाच उठा। तुम्हारी याद आ गई। चला आया। सोचा, आज मैं तुम्हें मोरनी की तरह नचाऊंगा।

तमाम रात नाच-गाने में निकल गई। उधर आधी रात से बादल बरसने लगे। सवेरे भी बारिश के रुकने का नाम नहीं। अली कुली ने भी उठने का नाम नहीं लिया। सुबह से महफिल का भी रंग-रूप बदल गया। वह तवायफों के मुजरे की महफिल नहीं रही, दो शायरों का मुशायरा-सा हो गई। खाने-पीने जो भी बातें हो रही थीं, सब शायरी में। उन दोनों के अलावा वहां कोई नहीं था—न बांदी, न सारंगियां, न तबलची, न पानबरदार, कोई नहीं। जो भी कुछ काम था, सब खुद सुरैया कर-धर रही थी। गिलास में अंगूर का अर्क डालकर दे रही थी। चांदी की रकाबी में अंगूर, पिस्ता, बादाम दे रही थी। खुद ही पान लगा रही थी। कभी-कभी अली कुली भी रकाबी को

सुरैया की तरफ बढ़ा देता था।

उस रोज खाना भी सुरैया ने खुद ही पकाया।

खानजमान लौटा उसके दूसरे दिन। चलते वक्त सुरैया बोली—मोरनी के जी में पुकार जगी है, सुन रहे है? क्या कह रही है, कहिए तो?

—कहो, तुम्ही कहो!

सुरैया ने कहा—कह रही है, "ऐ आसमान के बादल, तुम आए। आकर मुझको नचाया। नाचते-नाचते मैं अभी थकी तो नही हू, पर तुम अपनी राह चल दिए। अब मै अपना यह नाच किसे दिखाऊगी, कहो? या कि रोते ही गुजारूगी अपने बाकी दिन?"

अली कुइली पलटा। उसके दोनो हाथों को पकडकर कहा—"दिलरुबा, मैं जिस नियम से आता हू, जाता हू, उसमे फर्क आने का तो कोई उपाय नही है। वह परवाना तो उसका है, जिसके परवाने से रात के बाद दिन, दिन के बाद रात होती है। लेकिन फिर भी उपाय है—तुम्हारे दो डैने तो है। इस मिट्टी का मोह छोडकर अपने उन डैनो को फैला दो—मैं अपने सर्वांग मे तुम्हे लपेटकर अपने गरीबखाने मे ले चलू। सोच लो, मिट्टी की माया काट सको, तो चलो। मै समझूगा कि मेरी जिन्दगी जिंदाबाद हो गई!"

सुरैया ने शेर में ही उसे फिर आने का आमन्त्रण दिया। जवाब मे कवि बाज़ा सुलतान ने अपने यहा आने का न्योता दिया। सुरैया आंखे फाडकर उसे देखती रही। उसे गोया यकीन नही हो रहा था।

अली कुइली ने कहा—हा, कह दो प्यारी। कह दो कि कबूल है।

सुरैया रो पडी।

उसे अपनी छाती से लगाकर अली कुइली ने पूछा—सुरैया…

सुरैया बोली—मैं तुम्हारी बादी हूं।

—तुम मेरी प्यारी हो।

—मेरी जिन्दगी, मेरी किस्मत ज़िदाबाद!

इसके कुछ ही दिनो बाद अली कुइली ने मुल्ला को बुलाया। मजहब को गवाह रखकर उससे शादी की और उसे अपने हरम मे ले गया।

सुरैया को शुकदेव आचार्य की याद आई। उसने अली कुइली से

सारा किस्सा कहा। कहा, एक बार आप अपने नसीब को पूछ देखें। वह ठीक-ठीक बता देगा कि मुझसे शादी करके आपका भला होगा या बुरा। आप सुखी होंगे या दुखी।

अली कुइली का हाथ देखकर शुकदेव ने बताया—जो होना है, सो होगा ही। यह शादी आपकी होकर ही रहेगी। इस शादी से आप-की जिन्दगी सुख और शांति से भर उठेगी। दुनिया में जो कुछ लोग सबसे सुखी हैं, आप उनमें से एक होंगे। लेकिन···

—लेकिन ?

—दौलत और इज्जत की राह रुक जाएगी आपकी। सुरैया बाई के हाथ में भी शादी का यही फल लिखा हुआ है। आपका भी वही। दोनों की तकदीर जब एक होगी, तो इसका ज़ोर और भी बढ़ेगा। लेकिन···

—लेकिन फिर क्या···

—लेकिन एक उपाय है। शादी न करके अगर दोनों ··

—नहीं, नहीं। मैं आपका मतलब समझ गया। अली कुइली वैसा हरगिज़ नहीं कर सकता ! मैं सुरैया से शादी करूंगा।

उसी शुकदेव का कहना था, सारी दिल्ली, दिल्ली की सारी इमारतें ही 'गिरी-गिरी' कह रही हैं। यानी अब गिरी तब गिरी। और यह क्या आज से ? वही, उस पुराने जमाने से ही। यकीन न आए तो नजर उठाकर देखो, राय पिथौरा के टूटे किले को, कुतुबमीनार के अलाई दरवाजे की ओर। अब वहां से खिसक आओ। देखो हौज खास। पूरब की ओर आ जाओ—वह देखो तुगलकाबाद, फिरोजशाह कोटला, शेरशाही किला ! कहां तक बताऊं ! अब लाल किला, दिल्ली दरवाजा, अजमेरी दरवाजा, तर्कमान दरवाजा, कश्मीरी दरवाजा। यह दरवाज़ा, वह दरवाज़ा। चारों तरफ की पत्थर की चहारदिवारी 'गिरी-गिरी' कर रही है।

हंसकर कहता, इसकी ज़िम्मेदारी फर्रुखशियर की भी नहीं, सैयद बंधुओं की भी नहीं, मुहम्मदशाह की भी नहीं। यहां तक कि नादिरशाह की भी नहीं, जिसे गाली देते हुए क्या हिंदू और क्या मुसलमान, यही कहते हैं कि वही सब तहस-नहस कर गया है। यह ज़िम्मेदारी असल में उन दैवज्ञों की है, जिन्होंने बहुत-बहुत पहले, जब

दिल्ली मे शहर की नीव पडी थी, कहा था कि इस देहली के ठीक नीचे वासुकी नाग अपना फन फैलाए उसपर दिल्ली को थामे हुए है।

माना, वही था। मगर कहने की क्या जरूरत पडी थी। और कहा भी तो लोहे की लंबी सीक माटी मे गाडकर वासुकी के माथे में छेद करके उस सीक की लहू लगी नोक को दिखाकर बहादुरी दिखाने की क्या जरूरत थी! सीक की खरोच खाकर वासुकी नाग ने अपना सर हटा लिया और शाप दिया कि यहा जो भी शहर बनेगा, वह हरगिज नही टिकेगा। देख लेना, शाहजहानाबाद की क्या हालत होती है!

शुकदेव की ये बाते आज की नही, बहुत पुरानी हैं। ये बाते उसने नादिरशाह के लौट जाने के पहले ही कही थी। नादिरशाह जब अटक पार करके लाहौर की तरफ बढा, तो भारत के साधारण लोग जरा भी चिंतित नही हुए। केवल साधारण लोग ही क्यो, अमीर-उमरा, नवाब और खुद बादशाह भी चिंतित न हुए। आ रहा है, थोड़ा-बहुत लूट-पाट करके लौट जाएगा, वह भी लाहौर की तरफ से ही। महज़ बत्तीस साल पहले बादशाह आलमगीर का इंतकाल हुआ। आलमगीरशाही का प्रताप और उसकी फौज की बहादुरी की कहानी सुदूर ईरान-इराक तक फैली थी। काबुल-कंधार बादशाही इलाके में शामिल थे। इन बत्तीस बरसो के अरसे मे घरेलू लड़ाइयों, गद्दी के लिए आपसी छीना-झपटी में बादशाही ताकत कुछ कमजोर पड़ गई थी। दक्षिण मे मराठे उत्पात मचा रहे थे, हैदराबाद मे निजाम चिनकिलिच खा आजाद-सा था, मालवा-गुजरात निकल गए थे, तो भी नगाड़े की एक चोट से बादशाह के एक लाख सैनिक तैयार हो जाते। ऐसे मे किसीने सपने मे भी नही सोचा कि नादिरशाह लाहौर पार करके दिल्ली पहुंच सकता है। सभी निश्चित थे। टिड्डियां आती हैं, खेती का थोडा-बहुत नुकसान करके चली जाती है—वैसा ही होगा, लोगो का यही ख्याल था।

दिल्ली मे कोई परवाह नही थी। बादशाही दरबार मे बदस्तूर नाच-गीत की महफिले होती रही—बादशाह और तमाम दिल्ली के लोग नूरबाई की खूबसूरती, उसके नाच, उसके गाने की ही चर्चा करते रहे। शाम को भग और शराब पीकर हो-हल्ला मचाते रहे। बादशाह की

सलाहकार, उनकी धर्म बहन कोकीजी ने भी कहा, कोई खतरा नही। लोग निश्चित हो गए। कभी ईरान के शाह की बात उठती, तो पहलवान की तरह ताल ठोककर लोग कहते—आने दो! अकेले मै दस-बीस ईरानियो के सर काटकर लाल किले के सामने जमा कर दूगा।

कि दूसरे ने मूछे ऐठ दाढी फटकारकर कहा—घबराओ मत! कल सुन लेना कि नादिरशाह नमाज से उठते ही कहेगा, खुदाताला का हुक्म है, ईरान लौट जाओ।

और वह ठठाकर हस पडा।

लेकिन लाहौर जीतकर नादिरशाह दिल्ली की तरफ बढ़ने लगा। बादशाह ने अगडाई छोडी, नाच की महफिल बद की—उठा। चारो तरफ आदमी भेजे गए कि हिंदुस्तान पर आफत आई है। ईरान का बादशाह बढता आ रहा है। सब लोग इकट्ठे हो! दक्खिन से निजामुल मुल्क आसफजा आया, बाजीराव नही आए। सआदत अली खा के पास भी आदमी पहुचा—बादशाह का फरमान निकला है, अपनी फौज लेकर चलिए।

अली कुइली खा को भी जाना था। सआदत खा उसका दोस्त था। और फिर नादिरशाह से उसे दुश्मनी थी। उसने खादिजा सुलतान को छीन लिया था। लेकिन वह नही जा सका। सुरैया की विनती से उसका जाना रुक गया। सुरैया को शुकदेव ने मना कर दिया था। उसने उसे नादिरशाह से लडने के लिए नही जाने दिया। नादिरशाह ने अली कुइली से खादिजा को जबर्दस्ती छीन लिया था—गुस्से के मारे लडाई मे कही अली कुइली होशो-हवास खो बैठे और कुछ हो-हवा जाए तो सुरैया की दुनिया अधेरी हो जाएगी। सुरैया ने शुकदेव के पास सवार भेजा था। उस समय वे दिल्ली मे रह रहे थे। अली कुइली बादशाह का मीरताल्लुक था। सवार चौथे दिन शुकदेव की चिट्ठी लेकर लौटा।

शुकदेव ने लिखा—मगल नादिरशाह का मददगार है। बादशाह पर शनि, राहु, केतु की दृष्टि है। दिल्ली के आसमान पर बादशाह की त्रिपाली की छाया पड रही है। इस लडाई मे बादशाह की हार ही होगी। नवाब सआदत खा का नसीब और भी खराब है! बेगम साहबा, मेरी नेक सलाह है कि आप अली कुइली को लेकर दिल्ली

से कही पूरब की ओर चली जाए। दिल्ली शहर पर मंगल की बड़ी बुरी नजर है। लगता है, दिल्ली खून से लाल हो जाएगी। लेकिन इतना कह सकता हू मै, अली कुइली की किस्मत मे कोई आफत नही है। लगता है, लड़ाई पर उनका जाना न हो सकेगा।

वही हुआ। जाते वक्त बादशाह ने अली कुइली को तलब नही किया। उसे दिल्ली मे ही छोड गया। जाड़े का दिन। पूस के बीच का समय। खबर आई कि करनाल की लड़ाई में दिल्ली के बादशाह नादिरशाह के हाथो बंदी हो गए! बंदी बादशाह को लेकर नादिरशाह दिल्ली रवाना हुआ।

इस खबर का दिल्ली पहुंचना था कि वहां लूट-पाट शुरू हो गई। सेठो ने भागना शुरू कर दिया। गरीब-गुरबे भी पूरब को, दक्खिन को भागने लगे। दक्खिन से पूरब को ही ज्यादा। क्योकि दक्खिन के बरगी सिपाही आगे बढ़ रहे थे। कहा तक बढ़ जाएगे, वही जाने। लेकिन भागते हुए जो उनके चगुल मे पड जाएंगे, उनकी कम दुर्गत नहीं होगी।

सुरैया ने पागल की तरह कुइली खां से कहा—यहा से चले चलो। यहां अब रहना नही होगा! कुइली खां ने सुरैया की ओर ताका। वह हाफ रही थी। बेहद डर गई थी। उसका यह डर सिर्फ कुइली खा के लिए नही था, अपने लिए भी नहीं। डर उसे तीसरे के लिए ही था। यह था उसके गर्भ मे।

कुइली खा चुप हो रहा। वह भी सोच रहा था। दिल्ली के लोगो ने नादिरशाह का सिर्फ नाम ही सुना था। कुइली खा ने उसे अपनी आंखो देखा है, प्रत्यक्ष जानता है उसे। नादिर भी अली कुइली को पहचानता है। उसकी लिखी मसनवी को नादिरशाह ने ईरान से बिलकुल गायब कर देना चाहा है। उसने सुन रक्खा था कि मसनवी मे खादिजा सुलतान का नाम है। जिसके भी पास उस मसनवी की हाथ की लिखी प्रतिलिपि मिली, उसे सजा दी। जिसने वाला सुलतान की लिखी गजल गाई उसकी गरदन गई। लिहाजा अली कुइली को नजर के सामने पाने पर···

अली कुइली चौंका! मन की आखो उसने गुस्से से भरे नादिर का चेहरा देखा—उसका हाथ कमरबंद के छुरे की मूठ पर!

अली कुइली ने सुरैया की बात पर एतराज नही किया। बजरे पर सारी कीमती चीजे रखवाई और पहरे के लिए दूसरी नाव साथ मे देकर उसे आगरे भेज दिया। वह खुद पाच हजारी मनसबदार था उस समय। उसकी मातहत पाच हजार जाट राजपूत और मुसलमान चगताई फौज थी। उनमे से चुने हुए ढाई हजार सैनिको को लेकर वह आगरा चला आया, आगरे से अपनी जागीर मे। वह जागीर अयोध्या के नवाब के इलाके मे पडती थी—आगरे के इलाके की सीमा पर।

अली कुइली को वही पता चला कि नादिरशाह के हाथो बेइज्जत होकर सआदत खा ने जहर खा लिया है। ऐन होली के रोज दिल्ली के चादनी चौक, फतेहपुरी बाजार, दरियागज, जामा मसजिद, पहाड गज मे नादिर के हुक्म से ईरानियो ने खून की होली खेली। हिंदू-मुसलमान का ख्याल नही किया, बच्चे-बूढे का ख्याल नही किया—औरतो मे बूढी, प्रौढा, बदसूरत, बच्ची, किसीको न छोडा। चादनी चौक की सडक लहू-माटी से कादो हो गई। दरीबा गली और कूचा में कत्ल किए गए लोगो की लाशो का ढेर! मुसलमान अमीर-उमरावो की बहू-बेटिया कुए मे कूद गई। हिदुओ ने अपनी बहू-बेटियो को खुद काटकर मुक्ति दे दी। इसके बावजूद हजारों-हजार हिंदू-मुसलमान औरतो को ईरानी किजिलबास जानवर की तरह घसीटते हुए नादिरशाह की फौजी छावनी मे ले गए। वहा रात-दिन जो एक चीख उठी औरतो की, उससे नीला आसमान काला पड गया। लेकिन लोगो को वह चीख सुनने का अवकाश नही था—वे खुद भी चीख रहे थे, या अल्ला, या खुदा! बचाओ! हिंदू मारे डर के गोविंद को पुकार रहे थे।

अली कुइली ने खुदा का शुक्रिया अदा किया, शुकदेव आचार्य को इनाम दिया और हाथ पकडकर सुरैया को दुलारा। कहा—तुम्हे देने को तो मेरे पास कुछ नही है। क्या दू?

सुरैया सुनकर सिर्फ रोई। पति-पत्नी दोनो ही कवि। शेरो मे बात करना उनके जीवन का विलास नही, आनन्द था। रस की होली। लेकिन उस रोज दोनो ही कवियो के गले से कविता जैसे गायब ही हो गई थी।

उसके बाद से अली कुइली दिल्ली विशेष नही गया। अपनी

जागीर मे ही रहा। अयोध्या का नया नवाब सफदरजंग उसका दोस्त था। उसी नाते सआदत खां उसकी हिमायत करता था। इसके सिवा भी एक नाता था। वह नाता था धर्म का। अयोध्या का नवाबी खानदान सिया था और कुइली खां भी सिया था। नादिरशाह के लौट जाने के बाद से सिया-सुन्नी की आपसी तना-तनी बढ़ गई। बादशाही के लिए वजीर की, वजीरी के लिए उमरावो की हरकते बढ गई।

नवाब सफदरजग कुछ रोज तक उसी खेल मे मशगूल रहा। नवाब के चलते कुइली खां को बीच-बीच मे दिल्ली जाना पडा। पर सुरैया नही गई। वह अपनी गोदी के चांद को लिए अपनी जागीर मे ही रही।

चांद उसकी लडकी थी। सोने के खिलौने-सी लड़की। नाम था गन्ना—गन्ना बेगम। रूप बाप का, गला मां का। उसके अंगो का छद, गाने का ज्ञान जन्मजात था। यह दौलत मा के पेट से ही लेकर पैदा हुई।

११७५ हिजरी मे गन्ना बेगम सोलह कलाओं से परिपूर्ण युवती थी—सोलह साल की। सुरैया ने उसके ब्याह की गणना के लिए शुकदेव को बुलवाया। शुकदेव ने आते ही कहा—बेगम साहबा, बीवी की शादी किसके साथ करेगी, यह बात तो बाद की है। सबसे पहली बात है कि दिल्ली-पजाब मे नही। नही। दिल्ली की आवाज़ मै कानो सुन रहा हूं—गिरी, गिरी, गिरी। वह आवाज और जोर की हो गई है, बहुत जोर की।

२

गन्ना के रूप और गुण की शुहरत लखनऊ, आगरा, दिल्ली के संभ्रांत परिवारो मे केवडे की खुशबू की तरह फैल गई थी। रूप से ज्यादा गुण की। उसकी कविता करने की ख्याति संभ्रांत लोगो तक ही नही, देश के रसिक और समझदारो, यहा तक कि स्वप्नविलासी तरुणो की जबान पर भी पहुच चुकी थी। पान-शरबत की दूकानो पर पान खाते, शरबत पीते हुए कोई-कोई अचानक आवेश से कविता-पाठ कर

उठता—"गुलाव की कली रोती है। तुमने सुना है वह रोना ? कली रोती है और कहती है, दुनिया के मालिक ने मुझे खिलने के लिए सिरजा है। मैं खिलू, वे देखा करे। उनकी निगाहो का स्नेह सूरज की किरणो-सा मेरे अग-अग मे उतरेगा। मै खुशबू से, मधु से भर उठूगी। मगर हाय री मेरी किस्मत, खिलते न खिलते ऐयाशो ने तोड-कर मुझे अपनी नाक के पास रखा। उसके वाद हिकारत से माटी पर फेक दिया। मैं धूल मे मिल गई। दुहाई है तुम्हारी, मुझे खिलने दो, खिलने दो। रो-रो के गुलाव कहता है, मुझे खिलने दो, खिलने दो।"

कि कोई दूसरी कविता कह उठता—"वुलवुल सीटी वजा-वजा-कर मतवाली हो उठी है। वह कहती है, गुलमुहर फूले है। वगीचा लाल हो गया है। सूरज की रोशनी वेतावी से खोजती फिर रही है कि कमल कहा खिला है। वुलवुल, कहा हो तुम ? मगर हाय री वदनसीव, तुझे पता नही कि तेरी सीटी सुनकर नर-वुलवुल के आने से पहले ही जाल लिए चुपचाप शिकारी आ रहा है। उड के भाग जा। अपना गाना वद कर। वरना तू कैद हुई कैद।

ये गजले पहले आगरा, वहा से लखनऊ, लखनऊ से दिल्ली तक जा पहुची सोलह साल की ही उम्र मे गन्ना अपनी गजलो के लिए मशहूर हो गई।

इन गजलो के इस कदर प्रचार मे सुरैया के अध्यवसाय और कौशल का हाथ था। गन्ना के भविष्य के लिए उसकी चिंता और सपने का अत नही था।

नादिरशाह के यहा से चले जाने के वाद ही गन्ना का जन्म हुआ था। उस समय की उस खूखार तवाही की खौफनाक याद से सुरैया वेगम ने सुख और शाति का छोटा-सा वसेरा वसाना चाहा—पति, पुत्री और वह आप।

अपने पति को वह दिल्ली, यहा तक कि लखनऊ जाने से भी रोका करती थी। कहती—क्या होगा दौलत का ? सूवा या जागीर से क्या लेना ? सूवेदार और जागीरदार क्या वाला सुलतान से वडे हैं ? याकि जाफरजग अली कुइली खा पाचहजारी वाला सुलतान से ज्यादा सुखी है ?

कुइली खा कहता—ठीक ही कह रही हो।

कई साल शांति से ही गुज़रे। कुइली खां गन्ना को गोदी से चिपकाए कहा करता—हमी अस्त, हमी अस्त, हमी अस्त।

नन्ही गन्ना नाहक ही हंसती। सुरैया कहती, देखो-देखो, खुदा की मेहरबानी उसके होठों की हंसी मे भर रही है।

मगर वह शांति उन दिनों खुदा को ही मंजूर न थी शायद! नवाब सफदरजंग ने कुइली खां को लखनऊ बुलवा भेजा।

नादिरशाह के अपमान से नवाब सआदत खां ने जहर खाकर खुदकुशी कर ली थी। उसके बारे मे यह भी अफवाह उड़ी थी कि सआदत खां ने ही नादिरशाह को करनाल से दिल्ली बुलाया था। सआदत खां के कोई लड़का नही था, था उसका एक भतीजा मुकीम खां। वही उसका दामाद था। अक्लमंद, हिम्मतवर और बहादुर लड़ाकू। और फिर विलासी तथा खुले हाथ का। शायरी और संगीत का प्रेमी। शायरी के प्रेम से कुइली खां से उसकी दोस्ती हुई थी। और फिर दोनो ही सिया थे।

सआदत खां के मरने के बाद अयोध्या की सूबेदारी की गद्दी पर मुकीम खां बैठा और वह अबुल मनसूर सफदरजंग हो गया। कुछ दिनो तक वह मायूस-सा रहा। उसके बाद मानो नींद से जग गया। लखनऊ मे वह सक्रिय हो उठा। कुइली खां को बुलवाया।

अली कुइली लखनऊ पहुंचा। उसकी मुस्तैदी देखकर हैरान रह गया। छावनी सैनिकों से भरी हुई थी। फौज मे उसने किजिलबास सैनिकों की एक टुकड़ी देखी।

सफदरजंग से पूछा—ये आपको कहां मिल गए? ये तो नादिरशाह की फौज के सिपाही हैं?

सफदरजंग ने कहा—खूब पहचाना दोस्त। ये नादिरशाह की फौज के ही सिपाही हैं। यहां की रोटी और गोश्त, सोना-चांदी, हीरे-जवाहरात की इफरात देख ये ईरान नही लौटे—यही रह गए। मै इन्हें यहां ले आया। ऐसे जबर्दस्त सिपाही ईरान, तुरान, अफगानिस्तान, हिन्दुस्तान—कहीं नहीं है।

—बेशक नही है। इन्हें मुल्क से मुहब्बत भी नही है। असल में ये तुरानी है। रोजी-रोजगार की तलाश मे ईरान आए थे। यहां

वे ईरानी आये चाहे तुरानी, सबसे हिन्दुस्तानी की तरह ही लोहा लेंगे। लेकिन…

—कहिए, चुप क्यों हो गए?

—यह इतनी बड़ी जमघट लगाई है…

—वही बताने के लिए ही तो आपको बुलवाया है। आप और गुरैया कबूतर के जोड़े-से अपने छोटे-से बसेरे में शेर और गजल की 'बक-बकम' में चिलचिलाती दोपहरी बिताने की तरह अपनी जिंदगी बसर कर रहे थे—मैंने वैसे में बुलवा भेजा।

—हमारे एक लड़की हुई है। खबर सुनकर आपने हीरे की एक धुकधुकी भेजी थी, याद होगा जरूर।

—हां, हां, याद है। कैसी हुई है लड़की, बताओ। आपकी ईरानी सूरत मां के नाच गान का इल्म और मां-बाप दोनों की शायराना सिफत जरूर पाई है, क्यों!

—जी! खुदा की मेहरबानी और आप जैसे दोस्त की दुआ से वह तो पाई है उसने।

—उन सबको यहां ले आइए।

—जरूर लाऊंगा। जब यहां कोई जशन होगा और नवाब का हुक्म होगा—उन्हें ले आऊंगा।

—नहीं भई, तुम्हें अभी ही आना पड़ेगा। जो मामूली कवि होते हैं, उनकी बात जुदा है। तुम ईरान के उसी अमीर खानदान के हो, जिन्होंने वहां की गद्दी की बगल में बैठकर ईरान के चक्के को घुमाया है। तुम शायर हो, तुम तो सिर्फ गुलाब और शीरा और बुलबुल और औरत की खूबसूरती पर, उनके दिल, दर्द और कलेजे पर ही गजल नहीं लिखते, बल्कि उनपर भी शेर और गजल लिखते हो जो शेर की नाई मर्दाना छाती पर बर्म पहनकर मुल्क को बचाते हैं, राज्य की नींव डालते हैं। तुम बल्कि उनसे भी ज्यादा हो। मैंने तुम्हारे लिए हथियार रखे हैं।

चौंककर कुदली खां ने उसकी ओर ताका।

सफदरजंग ने कहा—मैं तैयार हो रहा हूं कुदली खां। मुगल बादशाहत के सिर पर डंडा मारकर नादिरशाह ने उसे बेहोश कर दिया है। होश आए भी तो उसकी हाथ-पैर हिलाने की ताकत जाती

रही है। पंजाब तो एक तरह से ईरान मे ही शामिल हो गया। जितने बदतमीज अफगान रोहिला डाकू थे वे रोहिलखड मे अमारुल उमरा, नवाब बन बैठे। ईरानी, तुरानी के आपसी झगडे मे हिन्दुस्तानी हिन्दू-मुसलमानों की मदद से तुरानी लोग सियो की बेहद बेइज्जती कर रहे है। मैं खुद तुर्क होते हुए भी सिया हूं। सुन्नियो के जुल्मो-सितम से सिया लोगो की दुर्दशा का अंत नही है। तुम भी सिया हो। सिया होकर मैं सियों की तकलीफ और बेइज्जती अब बर्दाश्त नही कर सकता। मै तैयार हो रहा हूं। तुम्हे मेरा साथ देना होगा। उधर रोहिले तैयार हो रहे है। दक्षिण मे मराठा लुटेरे। वल्लभगढ़ मे जाट सूरजमल, बुदेलखड में बुदेले राजपूत। बगाल मे अलीवर्दी ने मुर्शीदकुली के नाती सरफराज को शिकस्त दी और उसका खून करके सूबेदारी पर कब्जा कर लिया। उसने बादशाह से हुक्म नहीं लिया—न तो उसने सरफराज के खजाने के जमा का हिसाब दिया और न दौलत का हिस्सा ही दिया बादशाह को। चगताई बादशाह का खानदान सड़ गया है, तो भी उस बादशाही को बचाए बिना हिन्दुस्तान की बादशाही, नवाबी, अमीरी—सब खत्म हो जाएगी। उन हिन्दू काफिरो का राज हो जाएगा और मुसलमानो को यहां सिर झुकाकर रहना पडेगा।

कुइली खा ने कहा—नवाब साहब, पिछले चार साल से मैंने इन बातो को सोचा ही नही है। अपने गरीबखाने मे मैंने गृहस्थ की नाई शांति से दिन बसर किए है। नादिरशाही जुल्म और कत्लेआम से जिन बेचारों की तबाही हुई, उनकी सोच-सोचकर रोया किया है···

—हां, तुम्हारा वैसा एक गीत मैने सुना है। एक भिखमगा वही गीत गाते हुए भीख मांग रहा था। बडा अच्छा गीत है। सुनकर आंखों मे आंसू आ जाते है। "हाय नादिरशाह, हिन्दुस्तान तुम्हारा दुश्मन और ईरान तुम्हारा घर; ईरानी तुम्हारे अपने है और हिन्दी पराये ! क्या ईरानियो का खून लाल और हिन्दी का काला है ? ईरान का पानी मीठा और हिन्दुस्तान का पानी कड़वा है ? ईरान के मुसलमान खुदा के और हिन्दुस्तान के मुसलमान क्या शैतान के पैदा किए हुए है ?" मैंने वह गीत सुना है बाला सुलतान ! बात तुमने बजा कही है, मगर रोने से तो नही चलने का भाई। कही नादिरशाह

दूसरी वार आया तो दरवार के लिए तेहरान दौडना होगा। कहते हो कि तुम्हारी वेटी खूवसूरत हुई है—वहा से हुक्म आएगा कि उसे ईरान भेजो। या कि ईरान का कोई कमीना सौदागर आकर कहेगा कि मैं इससे शादी करूंगा। या फिर इन हिन्दू काफिरो को ही कोनिश वजाकर इस मुल्क मे रहना होगा !

कुइली खा अमीर खानदान का ठहरा—उसके लहू मे राजनीति थी। वोला—आपकी निगाह वडी साफ है। आप ठीक देख रहे है। ठीक ही फरमा रहे हैं। आपका हुक्म सिर-आंखो पर। मैं लखनऊ आने को तैयार हूं। आप मुझे जो भी ज़िम्मेदारी देंगे, अपनी जान पर खेलकर मैं उसे निवाहूंगा। जान जाएगी तो जाएगी, ईमान नही जाने दूंगा।

—वह मैं जानता हूं दोस्त ! तुम्हारा कहा शेर मैं रोज सवेरे गुनगुनाता हू। दरवार मे भी सदा सुनाता हूं।—"तुम मुसलमान हो, इसका सवूत क्या है ? सवूत यही है कि मैं वे-ईमान नही, ईमानदार हूं।"

—मैं आने को तैयार हू। क्या करना होगा मुझे, हुक्म दीजिए। सिर्फ···

सफदरजंग ने उसकी ओर देखते हुए कहा—नही, नही, फौजी काम मे मैं आपको नहीं लपेटूगा। आप लखनऊ के सिरिश्ते का ज़िम्मा लीजिए। एक भार और। वादशाह आलमगीर के जमाने मे गाना-वजाना, चित्र आंकना—ये कलाए जहन्नुम मे चली गई है। पता नही, आपको मालूम भी है या नही—एक रोज़ कलाविद्, हुनरमंद, उस्ताद कधे पर कफन लिए किले के सामने से जा रहे थे। वादशाह ने पूछा, किसका इतकाल हुआ, कफन मे किसे लिए जा रहे हो ? उन कलाविदो ने जवाव दिया—जहापनाह, वादशाही हुकूमत मे सगीतकला की मौत हो गई है। उसीको दरगोर करने जा रहे है। सुन्नी आलमगीर ने कहा—कब्र का गढा गहरा खोदना—कुआ-सा। जिससे यह कंबख्त जिन होकर निकल न आए।

—मैंने सव सुना है। जानता हू !

—वादशाहो के विलास और औरतो के नशे से आलमगीर के वाद दिल्ली मे फिर से गाना-वजाना शुरू हुआ है। मगर कितना ?

महजनूर बाई और मौलाव से हो भी कितना सकता है ? दरबार मे सुन्नियों की चलती है। वे इस ओर ध्यान नहीं देते। नाचनेवाली दो-चार खूबसूरत बाईजी को लाकर बादशाह को सुला दिया कि वे निश्चित हो गए। मगर मै यह नही चाहता। मैं चाहता हू कि लखनऊ मे चित्र और सगीत की तरक्की हो।

—यह तो मेरे दिल की बात है नवाब साहब। मैं आज से ही यह भार अपने ऊपर उठा लेता हू।

सफदरजग खुश हो गया। बोला—सुनो दोस्त, तुम्हे मै बताऊं। दिल्ली दरबार मे हम सबो के लिए मौका आया है। इलाहाबाद के खानखाना अमीर खां से बादशाह की खतो-किताबत चल रही थी। तुम्हे मालूम होगा कि अमीर खा एक बार वजीर कमरुद्दीन के सामने सिर हेठ कर लौट आया है। अब की नही लौटने का। अमीर खा ने बादशाह को लिखा है कि मुझे जिम्मा दिया गया तो मैं तीन साल के अदर बादशाही की शकल बदल दूगा। मैं तुमसे कहू क्या कुइली खा, आज बादशाह का अपना खर्च भी नही चल पाता है। बादशाह ने हामी भर दी है। अमीर खा दिल्ली जा रहा है। मुझे साथ लिए जा रहा है। हम दोनो ने हाथ मिला लिया है। अभी महीने-भर बाद मै सूबे बगाल की तरफ जा रहा हू। अलीवर्दी से या तो बंगाल छीन लेना पड़ेगा या उससे नया बन्दोबस्त करके बाकी रुपये वसूलने होगे। मेरा इरादा है कि उससे पहले ही तुम आकर सिरिश्ताखाने मे बैठ जाओ। मै तुम्हारे लिए मकान-वकान ठीक कर चुका हू।

लखनऊ शहर उस समय दिन-दिन बन रहा था, बढ़ रहा था। श्री और समृद्धि मे आगरा और दिल्ली से होड ले रहा था। गोमती के किनारे किला बन-बना गया। उधर नई नवाबशाही के महल पर महल खडे होने लगे। चौक बाजार मे शाम से बत्तिया जलने लगी—हीरे-मोती से लदी किशोरी-सा झलमल लगता। इमारते सारी की सारी नई थी—सूरत और सीरत मे झकमक। उसमर पडती रोशनी की छटा! चौक के बीचोबीच बाईजी के मुहल्ले मे इसराज और सारगी की झकार उठती—उसके सथ गूजता ख्याल और ठुमरी का आलाप। कही घुघरू की रुनझुन। किले के मैदान मे दिन को फौजो की कवायद होती। नवाब के घुडसवार सडको की धूल उडाते हुए

घोडा दौडाते—वे दिल्ली, बल्लभगढ, दक्षिण को जाते। बादशाह के पास चिट्ठिया जाती, सूरजमल से बाते होती, मराठा पेशवा या उसके भाई रघुनाथ राव से मोल-भाव होता।

इसी बीच कुइली खा सिरिश्ते मे जा बैठा। शहर के एक छोर पर उसका डेरा—बगीचावाला सुदर-सा मकान। बगल के मैदान में उसके अपने एक हजार सैनिकों की छावनी। बाकी चार हजार फौज जागीर पर थी। वहा का सारा भार दीवान पर था।

बीच-बीच मे कुइली खां के यहा मुशायरा हुआ करता। लखनऊ शहर के शायर जुटते। परदे की आड मे एक ओर सुरैया बेगम बैठा करती। वही से वह अपने शेर और गजल सुनाया करती। हाथी के दात पर चित्र बना-बनाकर शिल्पी लोग लाया करते।

उधर अमीरुल-उमरा अमीर खां के साथ सफदरजग दिल्ली मे जम गया। दस हजार किजिलबाश सवारो के साथ तोपखाना और बारूदखाना लेकर दिल्ली मे मीर आतिश बन बैठा। मीर आतिश की नौकरी से सुन्नी हाफिजुद्दीन बरखास्त हुआ।

इस खबर से लखनऊ मे रोशनी की दीवाली मनाई गई। उसके बाद दूसरी खबर आई—जबर्दस्त खबर। बादशाह मुहम्मदशाह के सबसे प्रिय पात्र इसहाक खा नजीमुद्दीन की रूपवती बहन से नवाबजादा शुजाउद्दौला की शादी! बादशाह ने खुश होकर नई बहू का नाम रखा—बहू बेगम।

उस धूमधाम मे शुकदेव लखनऊ आया था। बहू बेगम की जनमपत्री तैयार करके कह गया—नसीब बहुत जोरदार हुए बिना इस बहू जैसी बहू नही मिलती। आगे चलकर सबको पता चलेगा कि बहू बेगम बहुत भाग्यवती और पुण्यवती है। लक्ष्मी है, साक्षात् लक्ष्मी!

सफदरजग ने शुकदेव को सौ मुहरें दी थी।

उसी समय शुकदेव ने मन्ना का भाग्यफल देखा था। सुरैया ने आग्रह करके कहा था—पडित जी, जरा मेरी बिटिया का नसीब देख दे। शुकदेव ने मन्ना का हाथ लेकर बडी देर तक देखा। देखा और सोचा। कहा कुछ नही।

सुरैया ने पूछा—पडित जी?

—हा।

—कहिए।

—हा।—कहकर वह फिर ग्रासमान की ग्रोर देखने लगा।

—चुप क्यो रह गए पंडितजी, कहिए।

—ग्रापकी विटिया वड़ी गुणमती है वेगम साहवा। विद्या में तो यह ग्रापसे भी वढ़ी-चढी होगी।

—यह तो नसीव की वात नही हुई पडितजी। जीवन मे क्या है, कहिए।

—जिसके गुण होता है, उसे भला तकलीफ होती है वेगम साहवा!

—शादी कैसी होगी, सो कहिए।

—शादी ? शादी···। हसकर कहा—विटिया के लिए तो हिन्दुस्तान के ग्रमीर-उमरा दीवाने होगे।

सुरैया खुश हो गई। वोली—सो तो होगा! शादी कैसी होगी? दूल्हा कैसा होगा?

—दूल्हा ? ग्रांखे वद करके मानो मन की ग्राखो से भविष्य देखते-देखते ही शुकदेव ने कहा—वहुत खूवसूरत, वडा इल्मवाला, वहुत वडा ग्रादमी। लेकिन··

—लेकिन क्या पडितजी ?—शका से सुरैया ने पूछा।

—लेकिन— शुकदेव ने फिर ग्राखे वंद कर ली। कहा—वह इससे भी वडी वात है। तुम्हारी विटिया का नाम लोग सदा याद रक्खेगे। ग्रपनी प्रियतमा को लोग जैसे याद करते है, वैसे। गन्ना वेगम, गन्ना वेगम। ग्रौर उनकी ग्राखो से ग्रासू वह निकलेगे।

—ग्रासू किसलिए ? लोग रोएगे क्यो ?

—इसलिए कि जिदगी मे उसे ग्रपनी ग्राखों नही देख पाए। रूपमती का नाम सुना है न। उसके लिए लोग ग्रासू क्यो वहाते है···

—कह क्या रहे हे पडितजी, गन्ना क्या जहर पीएगी ?

—नही। हजारो दु:ख भी हो, मगर गन्ना जहर पीकर ग्रपने को खत्म नही करेगी। यह काम वह नही करेगी।

उसी गन्ना के व्याह की समस्या खडी हुई। सोलह साल की युवती। इसीलिए ग्रादमी भेजकर सुरैया ने पडित को वुलवाया।

ग्रली कुइली खा नही रहा। कुछ ही दिन पहले गुजर गया। नवाव-

जादा शुजाउद्दौला की शादी के वाद से हिन्दुस्तान मे बहुत कुछ हो गया। उत्थान-पतन! कितने अमीर उठे, कितने गिरे। अमीर क्यो, वादशाही का भी वही हाल। मुल्क मे लडाई हुई—अभी भी हो रही थी। नवावजादा की शादी हुई ११६४ हिजरी मे और यह थी ११७५ हिजरी। इन कुल ग्यारह सालो मे जैसे एक सौ ग्यारह साल का हेर-फेर हो गया।

ईरान मे नादिरशाह मारा गया। उसीके अपने वजीर-मनसवदार-किजिलवास अमीरो ने एक रात उसके तवू मे घुसकर सोते मे ही उसका खून कर दिया। छुरे के तेरह-तेरह घाव छाती पर।

नादिरशाह के वाद अफगान सेनापति अहमदशाह अब्दाली अफगानो के साथ अफगानिस्तान पर कब्जा करके वहा का शाह हो गया।

काबुल की गद्दी पर कब्जा करके अब्दाली अफगानी फौज लेकर हिंदुस्तान आया। पंजाव पर उसका धावा था। नादिरशाह पंजाव दखल कर गया था—इसलिए उसके वाद उसका मालिक वही है। वह ११६६ हिजरी मे पजाव छीनने के लिए आया था। लाहौर दखल करके दिल्ली की ओर वढने लगा। सोचा था, नादिरशाह की तरह वह भी दिल्ली से करोडो-करोड रुपये, सोना-चादी, मोर-सिहासन, कोहनूर ताज और औरतो के साथ-साथ यहां की कारीगरी और इल्म लूट ले जाएगा। लेकिन इस वार मुहम्मदशाह समय पर सजग हो गया था। अमीर-उमरा, वज़ीर-वख्शी, सिया-सुन्नी सभी आपसी मतभेदो को मुलतवी रखकर अपनी-अपनी फौज लिए अब्दाली का सामना करने के लिए निकल पडे थे। वादशाह खुद नही जा सके, अपने वदले अहमदशाह शाहजादा को भेजा। नवाव सफदरजंग भी गया था।

अब्दाली पेशावर से लाहौर तक रास्ते के दोनो तरफ के गाव-शहरो को जलाकर खाक करता आया था। उसके साथ जादू का उस्ताद वावा शवीर था। वह लाहौर का ही रहनेवाला था। उसका अड्डा था पेशावर। अब्दाली के लिए उसने खिलौने के घोडे-तोपो को सच्चा तोप-घोडा वना दिया था। वावा शवीर अपनी मा से भेट करने के बहाने अकेले ही लाहौर मे दाखिल हुआ था। लेकिन असल में वह आया था सूवेदार हिदायतुल्ला के पास अब्दाली का न्योता लेकर।

लेकिन हिदायतुल्ला के लोगो ने जो उसे देखा तो कत्ल करके बला ही दूर कर देने की कोशिश की। मगर जो भी जादू करना था, तब तक बाबा शबीर कर चुका था। हिदायतुल्ला हार गया। शबीर के जादू से उसकी अकल बिलकुल बिगड़ गई थी। नही तो तमाम दिन लड़कर उसे रोकने के बाद शाम को अपनी फौज को यह कहकर लौटने का हुक्म क्यो देता कि अफगान भाग गए? लाहौर की फौज पीछे लौटी कि अफगान सैनिक बदूके लिए टूट पड़े, अफगानी तोपे गोले दागने लगी। और आखिर लाहौर दखल करके अब्दाली ने दिल्ली की तरह लूटपाट कर शहर को तहस-नहस कर दिया। उसके बाद बोला—अब दिल्ली चलो। हिदायतुल्ला भाग गया था। लाहौर के बेईमान मीर मोमिन ने तीस लाख रुपया देकर अब्दाली से पंजाब की सूबेदारी ले ली। सरहिंद दखल करते-करते अब्दाली बढ़ते-बढ़ते मानूपुर में ठिठक गया।

मानूपुर मे दिल्ली की फौज ने पड़ाव डाला था। अब्दाली चौका। हिंदुस्तान के पास इतनी फौजे है, इतनी है तोपें! खेमे गाडकर अब्दाली सोचने लगा। लड़ाई के दिन सुबह-सवेरे नमाज पढकर निकलते ही वज़ीर कमरुद्दीन अब्दाली की तोप से घायल हो गया। फिर भी भारतीय सेना घबराई नही। नवाब सफदरजग, जयपुर के राजा ईश्वरीसिंह, वज़ीर का बेटा—फौज लेकर आगे बढे। सफदरजग ने एक पहाडी दखल कर ली और उसपर गोलदाज सिपाही तथा बंदूकधारियो को चढाकर हजारो-हजार अफगानो को भून डाला।

शाम होते-होते अब्दाली बाकी बची फौज को लेकर एक किले मे घुस गया था। रात को ही अगर हिंदुस्तानी फौजो ने उस किले को घेर लिया होता, तो अब्दाली वापस नही लौट सकता। लेकिन हिंदुस्तानी सिपाहियों ने वैसा नही किया।

हिंदुस्तान के अमीर-उमरा और शाहजादा ढीले-ढाले थे। एक बात यह भी हो सकती है कि हिंदुस्तान में लड़ाई का एक नियम है, कानून है। वह यह कि रात मे दुश्मनो पर बेकायदे हमला न करो। रात के इसी मौके का लाभ उठाकर अब्दाली अपनी अफगान फौज लेकर काबुल की ओर भाग निकला था—नही तो सफाया हो जाने की नौबत थी।

अब्दाली सरहिद से सीधे काबुल की ओर रवाना हुआ था। हिंदुस्तानी फौज ने दूर तक पीछा तो किया था, लेकिन अपनी ढिलाई से उसे पकड नही सकी। हिंदुस्तान की रईसी बडी रईसी होती है। भंग, अर्क, अफीम, तबाकू, पान-जर्दा, रबडी-शरबत, रोटी-गोश्त और महफिल मे नाच-गानवाली कसबिया—इतने लवाजमात के साथ बड़ी तेजी से दौडा नही जा सकता। जो इस तरह से दौडते है या दौड सकते है, वे जगली है। वे लडाई नही करते, लूट-पाट करते है, डकैती करते है।

लडाई पर से लौटकर नवाब सफदरजग ने यह बात कही थी। उस समय लखनऊ मे एक जोरदार जुलूस निकला। नवाबजादा शुजाउद्दौला की शादी मे जैसी धूम-धाम हुई थी, वैसी ही धूम-धाम या उससे भी ज्यादा।

शायद उससे ज्यादा ही।

नवाब सफदरजग दिल्ली का वजीर हुआ। अब्दाली को खेदकर जब वे लोग लौट रहे थे, तो रास्ते मे खबर मिली कि बादशाह शाह मुहम्मद नासिरुद्दीन गाजी नही रहे। चल बसे!

लड़ाई के बाद सफदरजग को थोडा बुखार आ गया था।

अली कुइली को आकर लखनऊ मे बताया—वजीरे-आजम खानखाना अमीरुल-उमरा नवाब अबुल मनसूर सफदरजग ने।

कहा—उस रोज लडाई शुरू होने से पहले ही सुबह-सवेरे वजीर कमरुद्दीन तोप से जख्मी हो गया—मैने उसी वक्त समझ लिया। हा दोस्त, मैं जानता था कि सफदरजंग के सिवा हिंदुस्तान की इज्जत रखनेवाला दूसरा कोई नही है। वास्तव मे लडाई मैंने जीती। मुझे पता था। मगर बादशाह दिल्ली मे थे। उनके पास लौटे बिना कोई फैसला नहीं होने का। उसके बाद उस रोज पानीपत के खेमे में मै नमाज पढके उठा ही था कि खेमे के पहरेदार ने कहा—हुजूर, बादशाह नही रहे! दिल्ली से खबर आई है। मै फौरन अदमदशाह के तंबू मे गया। कोर्निश करके कहा—बादशाह शाह मुहम्मद बिहिश्त गए! अब हिंदुस्तान के बादशाह आप है—मै बादशाह का नमक-हलाल बदा हू। खिदमत मे गुलाम का हजार सलाम!

शाहजादा ने हसकर कहा—बादशाह नये वजीरे-आजम नवाब

-अवुल मनसूर सफदरजग से वहुत खुश है। मै वजीरे-आजम को तहे-दिल से मुवारकवाद देता हू। मुवारक वजीरे-हिंदुस्तान! —जरा रुककर वोले, नही तो···

सफदरजंग ने कहा—नही तो वादशाह ने अगर मुझे वजारत नही वख्शी होती, तो मै वही से सीवे लखनऊ चला आता। और फिर आजाद हो जाता। सुलतान वनकर चाल चलने लगता।

कुइली खां ने कहा—अमीरों मे आप शेर है नवाव साहव। जंगल मे सिंह के वाद ही शेर का स्थान होता है। उस अधिकार को नाकवूल कौन करे? लेकिन हा, नया वादशाह अक्लमद ही लगता है।

सफदरजग ने कहा—नही कुइली खा, तैमूरी शाही खानदान मे वह वुद्धि, वह दूरनजर, वह हिम्मत नही रही। वह सव जाती रही। अहमदशाह का भी वही हाल है। वाईस साल का नौजवान—इससे पहले वादशाह ने उसे वाहरी दुनिया से जान-पहचान का कभी मौका ही नही दिया। हरम मे वंद करके रक्खा था। यो कहो कि भूखा ही रक्खा था। न तो अच्छी तनखाह देता था न दो-चार अच्छी वादियां। नतीजा यह है कि वादशाह होते ही उसकी लालसा आग-सी लहक उठी है। उसकी मां जो है, वह वडे छोटे घर की है। तवायफ थी ऊधम वाई। वादशाह ने भोग-लालसा से उससे निकाह किया था। वह औरत अव सव कुछ वन वैठी है। उससे आ जुटा है हरम का खोजा सरदार जावेद खा। परले सिरे का हरामी।

इसी वक्त खटखट कर तातारिन पहरेदार ने आकर सलाम किया।

सफदरजग ने उसकी ओर ताका—क्या है?

—खानजमान साहव की विटिया आई है खुदावद की खिदमत मे मुवारकवाद देने के लिए।

खानज़मान यानी अली कुइली खां।

सफदरजग को कौतूहल और आनन्द दोनों हुए। कहा—हा? अच्छा ले आओ उसे। इसके लिए इत्तला की जरूरत थी?

नौ-दस साल की लडकी। चेहरा हूबहू फारस के खूवसूरत कुइली खां जैसा। देखते ही समझ मे आ जाता कि उसी वाप की वेटी

है। वेश-भूषा मे बड़ी सादगी, सफाई। एक ही नजर मे लगता—वाह!

सफदरजग 'वाह' कर उठा।

बाअदब सलाम करके कुइली खा की बेटी गन्ना करीब मे खड़ी हुई। सफदरजग ने कहा—तुम्हारी बिटिया तो बहिश्त की हूर-सी है कुइली खा! देखने मे तुम्हारी ही जैसी हूबहू। और रुचि कितनी सुन्दर। वाह!

उसके बाद गन्ना से कहा—तुम मुझे मुबारकबाद देने आई हो! किसने भेजा? तुम्हारी मा सुरैया बेगम ने?

गन्ना ने सलाम करके कहा—जी नही खुदावद, मैं अपने मन से आई हू। रात लखनऊ मे रोशनी की बहार देख मैं बाग-बाग हो गई। जी में आया···

और उसने अपनी आवाज मे कुछ पक्तियां कही। भावार्थ—लखनऊ शहर की ये बत्तिया आसमान के सितारो-सी जगर-मगर है—ये सारी की सारी जोत तो पूनम के चाद-से खुदावंद सफदरजग की लौ से जल उठी है। ऐ परवरदिगार, लखनऊ के आसमान मे सफदरजग की जोत सदा जलती रहे!

—वल्लाह! यह शेर किसका है बिटिया, तुम्हारे अब्बाजान का या तुम्हारी अम्मांजान का?

—जी नही गरीबपरवर, इसे आपकी इस नन्ही बांदी ने बनाया है।

—अच्छा! बहुत खूब, बहुत खूब! ताज्जुब है! तुम शेर बना लेती हो?

अली कुइली अब तक चुप था। बोला—जी। गन्ना आठ ही साल की उम्र से कविता करती है।

—और क्या कर सकती हो? गीत गा सकती हो?

—जी हा। नाच-गाना तो गोया वह लेकर ही पैदा हुई है। मुशायरे मे भी शेर, गजल, मसनवी सुनाती है।

हसकर सफदरजंग ने कहा—आखिर गजल काहे से लिखती हो तुम? मुहब्बत मे दीवाना बनने की उमर तो हुई नही है तुम्हारी!

गन्ना ने कहा—क्यो जहापनाह, जिसकी वजह से इस दुनिया मे

ऐसी रोशनी है, इतने रंग, इतने गीत, इतनी गंध है, मेरे शेर, गजल, मसनवी उसीके लिए है।

—मुझे सुनाओ तो···

गन्ना कोर्निश करके कहने लगी—"नीले आसमान को देखकर लगता है तुम नीले हो—चाद और सूरज को देखकर जी मे आता है, तुम हो जगमग जोतवाले सफेद। रात देखकर तुम काले लगते हो, लेकिन रोज रात में सपना देखती हूं, तुम्हारा कोई रूप ही नही! तुम केवल अपार करुणा हो!"

उस लडकी की ओर सफदरजग हक्का-वक्का-सा देखता रह गया। उसके वाद अपने गले से वेशकीमती जवाहरात का एक हार उतारकर उसे पहना दिया और कहा—उसी अपार करुणावाले दुनिया के मालिक का एक मामूली-सा गुलाम हूं मै वेटी—उन्हीके हुक्म से मैने तुम्हे यह हार पहना दिया।—उसके वाद तातारिन से कहा—गन्ना को वेगम साहवा और वहू वेगम के पास ले जा। उनसे कहना—इसे खिला-पिलाकर तव वापस जाने दे।

गन्ना चली गई तो कहा—कुइली खा!

—जी।

—तुम वडे किस्मतवर हो। ऐसी वेटी है तुम्हारी! तुम्हारी वेगम सुरैया भी कभी तवायफ थी। मगर आज वह वास्तव मे पाक-साफ है। इसीसे तुम्हे ऐसी वेटी हुई है। और ऊधम वाई को देखो—वह भी तवायफ थी—वजीर अमीर खां की वेटी खादिमा खानूम ने उसे वादशाह के सामने हाज़िर किया था। मुहम्मदशाह की तकदीर! हां, तकदीर ही कहूगा! वादशाह की पहली वेगम वादशाह फर्रुखशियर की वेटी थी। उसके कोई लडका नही हुआ। दूसरी वेगम निजाम की वेटी। उसके एक वच्ची हुई। लडका पैदा हुआ छोटी जात की तवायफ ऊधम वाई के पेट से। उसे तहजीव तक नही आती। वह इज्जत नही समझती। मैं तुमसे क्या वताऊं कुइली खा, मजहव तक की जानकारी नही है उसे। वाईस साल का लडका, वह भी वादशाह—और उसकी मा क्या तो वाईजी नवाव कुदसिया साहव उज्जमानी साहव-जी साहिवा हजरत ऊधम वाई! पचासहजारी मनसवदार की खातिर। और उसकी मुहव्वत का पात्र कौन है, पता है? वही हरामी खोजा

सरदार जावेद खा! ऊधम बाई का भाई—अभी-अभी उस रोज तक वह गली-कूचो की खाक छानता फिरता था और जो औरते रास्तो पर नाचा करती थी, उनके साथ औरत बनकर नाचा करता था। उस कम्बख्त को लाकर दोहजारी मनसबदार बनाया है। उसका खिताब है मुतकादउद्दौला बहादुर ! मै सोचता क्या हू, मालूम है ?

—जी ?

—मैं सोचता हूं कि यह बिटिया अगर छोटी नही होती, जवान होती, तो अहमदशाह से इसकी शादी कराकर उस निकम्मे आदमी को कीचड मे से निकाल लेता और एक बार फिर से तैमूरशाही शासन को हिन्दुस्तान मे जबर्दस्त बना देता। बिटिया को तुम खूब जतन से लिखाना-पढाना, राजनीति सिखाना—सिर्फ शेर-गजल नही। मौका मिले तो यह लडकी नूरजहा बेगम की तरह सल्तनत को चला सकेगी।

गन्ना के बारे में पति की जबानी सफदरजग की कही बातें सुनकर सुरैया एकटक ताकती रह गई।

कुइली खा ने कहा—मगर मैं ऐसा नही करूंगा।

सुरैया चौकी—क्यो ?

—गन्ना की जिन्दगी जिसमे तुम्हारी जैसी सुख की हो, मैं वही करूगा। तुम्हे क्या समझाना सुरैया, उस जिन्दगी मे बड़ा दुख है, बडी जलन है। राजनीति मे डूब जाने से मुझे तो तुमने ही रोका है।

सुरैया बोली—चूक हो गई। जिन्दगी मे चुक होती है बाला सुलतान, उस चूक पर जो हाय-हाय करते है—वे मुर्दे है। अफसोस न करके जो उस चूक को सुधारते है, दुनिया मे वही जिंदादिल है। वही शेर है!

कुइली खा अवाक् होकर सुरैया को ताकता रहा गया। बड़ी देर के बाद बोला—सुरैया!

सुरैया ने कहा—मै जब छोटी थी, तब ऊधमबाई की मा मेरी मा की बादी थी खानजमान। ऊधमबाई उस समय दस साल की थी। मेरे झूले को झुलाया करती थी। मुझे गोद खेलाती थी। नसीब कहिए खानजमान, नसीब! ऊधमबाई आज हिन्दुस्तान के बादशाह की मा है!

कुइली खा ने कहा—नसीब की दौलत शराब की दूकान है। प्यास मिटाने के लिए गाव के किनारे के झरने को छोडकर उधर मत दौडो सुरैया ! शराब बोतल मे रहती है। बोतल खाली हो जाती है। नशा टूटने पर छाती फटने लगती है। झरने के पानी से नशा जरूर नही होता, लेकिन उससे छाती फटने की नौबत नही आती और फिर वह पानी खत्म नही होता।

सुरैया ने उस दिन अपनी बेटी को सजा-सवारकर मोहिनी बनाया था। नौ साल की थी, तो क्या ! मन हरनेवाली बनने के लिए जैसा सजना चाहिए, वैसा ही उसे सजाकर देखा था और उसके एक भविष्य की कल्पना की थी।

लड़की उसकी नूरजहा ही है। चाहे तो बखूबी बन सकती है। उसके होठों पर हसी खेल रही थी। लेकिन आईने मे अपनी शकल देखकर गन्ना ने कहा—यह मुझे क्या बना दिया है अम्मी ? यह क्या···?

—क्यो, देख तो सही, कैसी दिख रही है !

—बडी बुरी लग रही हू ! क्या है यह ? ऐसी चटकदार वेश-भूषा, बालो का यह ढग—कर क्या दिया मुझे ? मै उतार दूगी सब। नही !

—खबरदार, बिगाडना मत !

—मैं तवायफ-सी जो लग रही हू !

सुरैया ने बेटी के गाल पर एक तमाचा जड दिया। उस अचानक चोट से गन्ना घबरा गई, पर रोई नही।

—तवायफ ! हु.। जानती है, बादशाह अहमदशाह की मा तवायफ थी ! तेरी मा यह सुरैया भी कभी तवायफ थी।

गन्ना भौचक्की रह गई। कई क्षण अपलक आखो मां को देखती रहकर बोली—तुम तवायफ थी !

—हां। मै तवायफ थी।

—मुझे तवायफ बनाओगी ? नूरबाई ? दिल्ली की नूरबाई ?

सुरैया चुप रह गई, इस बात का जवाब देते नही बना। कुछ देर के बाद बोली—नही। तुझे नूरजहा बेगम जैसी बनाना चाहती हू—जिसके कदमो पर सारा मुल्क लोट पडे। नूरबाई नही।

अपने ही हाथो उसने जूडा बिखेर दिया, चेहरे को पोछ डाला। कहा, मै कुछ भी नही होना चाहती। नवाब के रंगमहल मे आज

मैंने वहू वेगम को देखा। उन्होंने मुझसे कहा—गन्ना, खुदाताला पर लिखी तुम्हारी यह गजल मुझे वडी अच्छी लगी। जी जुड़ा गया। तुम्हे जिसमे सारी जिंदगी यही याद रहे; अपनी गजल ही तुम याद रखना—"खुदा मालिक! भूख लगी तो तुमसे खाना मागा। तुमने लहलहाते गेहू से खेत भर दिए। प्यास लगी—तुमने दरिया उमडा दिया। किन्तु तो भी भूख-प्यास न मिटी। सुख की चाह की—तुमने सुख दिया, घर-द्वार दिया, खेत-खलिहान दिया, जागीर, वादशाहत दी। फिर भी दुःख दूर नही हुआ। घर टूटते है, खेती छिन जाती है, जागीर-सल्तनत के लिए लड मरते है। चाहा नही सिर्फ तुम्हे। काश, तुम्हे चाहा होता, तो तुम मिलते। और, तुम्हे पाने से तुम तो कभी खोने के नही, हम ही तुममे खो जाते हैं!" याद रखना। जानती हो, दुःख मुझे भी है। तुम्हारी गजल से अपना दु ख मैं भूल गई।

—ऐ! तू फकीर वनेगी! तो फिर अपने वाप की तरह माला जपा कर।

गन्ना चुप रह गई।

सुन-सुनाकर खानजमान ने सुरैया से कहा—इतने दिनो के वाद तुम्हारे जी मे आग जली।

सुरैया ने कहा—जी हा। आखिर मै तो तुम्हारी तरह खादिजा सुलतान की जुदाई के गम मे फकीर नही वन गई हू! मरकर पत्थर नही वन गई हू! यह समदर—जिसमे पानी ही पानी है, उसमे भी आग है। वह आग जलती है। आग मुझमे भी थी। आज अगर वह वधक ही उठी तो कौन-सा कसूर हो गया? और इसमे भी जिम्मेदार तुम्ही हो!

छाती पर हाथ रखकर कुइली खा ने कहा—मैं?

—हा, तुम। याद करो खानजमान साहव, दिल्ली से हटाकर छोटी जागीर मे मै ही तुम्हे खीच लाई थी। उस दिन तवायफ सुरैया को इस वात की वडी ख्वाहिश थी कि छोटा-सा घर हो, सुख की गिरस्ती हो। गन्ना पैदा हुई। मैने गोदी मे चाद का टुकडा पाया। उसके वाद तुम लखनऊ आए। नवाव वहादुर के वुलावे पर लखनऊ आए। तुम्हारे साथ-साथ मैंने भी खातिरदारी पाई, दौलत पाई। अपनी आंखो के

सामने ही देखा कि देखते ही देखते नवाव सफदरजंग सारे हिन्दुस्तान का वजीर वन गया। वादशाह को वह खिलौना वनाकर खेलने लगा। स्याह-सफेद का मालिक वन वैठा। दिल्ली मे ऊवमवाई पचासहज़ारी अमीर का सम्मान पा रही है—वह वादशाह की मा है। रोज सवेरे झरोखे पर वैठी हजारो का सलाम लेती है। मेरे आग लगी है। वह आग तुमने सुलगाई है।

कुछ देर चुप रहकर कुइली खा ने कहा—सवेरे पूरव को मुह किए खड़े सूर्योदय देखकर, ताजे फूलों को देखकर नशा सवार हो जाता है सुरैया! लगता है—इस दिन का कभी अत नही है। सूरज की रोशनी भी हमे छलती हुई छटा वढाती है, तेज वढाती है। मन दौड़ पड़ता है खेत-खलिहान मे, फूल-फसल में, काम-काज मे—उस वक्त पच्छिम को मुह कर लेना होता है, जिधर वह सूरज डूवता है और जिधर मक्का-कावा की मसजिद है—जिधर को मुह करके मुसलमान नमाज पढते है। मै यहां दौलत के लिए, खातिरदारी के लिए नही आया हूं सुरैया। मैं नवाव की मदद को आया हूं। सुन्नियो ने सियो का अपमान किया है—इसके लिए भी और वादशाहत की वुनियाद हिल उठी है, हिन्दू सर उठा रहे है—उससे वादशाहत को वचाने के लिए भी। दिल्ली की ओर ताककर वहा के लाल किले पर ही नजर को न टिकाओ—उसे और भी पच्छिम की ओर फैलाओ, जहा नमाज के वक्त नजर जाती है।

सुरैया इसके वाद कुछ देर चुप रही। उसकी आखो से टपाटप आसू टपकने लगे।

खानजमान ने प्यार से कहा—रोती क्यो हो, भूल-चूक इन्सानो से होती है।

—तुमने ऊधमवाई की वात क्यो कही?

—लालकुवर की वात तो याद करो। हिन्दुस्तान के वादशाह जहांदारशाह को खिलौना वनाकर खेलती थी। उसका अत क्या हुआ···

सुरैया सिहर उठी। खानजमान का मुह दवाकर वोली—मत कहो, मत कहो! मुझे याद नही था!

× × ×

"पहाड की चोटी पर जगल मे आग लगी। आग किसीने लगाई नही। पेडो की आपस की घिसन से लग गई। वह आग जल रही है। तमाम दिन, और तमाम रात जलती है। आसमान मे मेघ घिरे। पानी बरसा। लगा कि आग बुझ गई। नही, धुआ उठ रहा है। फिर लहक उठी। यह आग कैसे बुझेगी! हाय खुदा, दीन-दुनिया के मालिक! एक बेचारी चिडिया एक पेड पर बैठी थी। उस पेड ने उसे बड़े आदर से बुलाया था। जगल जला, पेड़ जलने लगा। उस बेचारी चिड़िया को पनाह कहा! इसका तुम जवाब नही दोगे, तो कौन देगा?"

गन्ना ने सोलह साल की उम्र मे यह गजल बनाई। यह ऊपर की घटना के सात साल बाद की बात है।

सुरैया ने बेटी से पूछा—मतलब इसका? क्या कहना चाहती है तू?

सात साल के अरसे मे दुनिया, खास करके हिन्दुस्तान मे बहुत-कुछ रद्दोबदल हो गया। कुइली खा ने सुरैया से कहा था—सुरैया, सूरज जब उगता है, तो लोग पूरब की तरफ ही ताकते है। उस समय उगे सूरज, ताजे खिले फूल और खेतो की फसल को देखकर लगता है, इस दिन का कभी अत नही होगा। उसने सुरैया को उस पश्चिम की ओर निगाह डालने को कहा था, जहा नमाज पढते समय मुसलमानो का मन और नजर गडती है। सात साल मे हिन्दुस्तान मे जितना कुछ बदल गया, उसकी ओर नजर न करके सुरैया पति के कहे मुताबिक अपनी जागीर मे ही होशियारी से रह रही थी। उसे दीवान इकबाल खा ने भी ऐसा ही कहा था।

इकबाल खा ने कहा था—खानजमान नही रहे। लखनऊ मे आप रहेगी किस हक से, किस हिम्मत से? लखनऊ शहर—अमीर-उमरा, नवाब-नवाबजादाओ का आमद-रफ्त। गन्ना कब किसकी निगाह मे पड जाएगी, क्या ठिकाना! नवाबजादा शुजाउद्दौला की नारी-लोलुपता मुल्क-भर मे जाहिर हो चुकी है। बहू बेगम जैसी रूप-गुणवाली बेगम भी उसकी लालसा की आग को नही बुझा सकी। आप किस भरोसे लखनऊ मे रहेगी?

सात साल के बाद सुरैया बेगम के निश्चिन्त जीवन मे चिंता आई। लडकी जो सोलह साल की हो गई! नादिरशाह ११५९ हिजरी

मे आया था। वैशाख मे हिंदुस्तान की धूप तेज हो जाएगी इसलिए वह उसके पहले ही लौट गया था। गन्ना उसके दो साल वाद सुरैया की गोद मे आई थी। सोलह साल हो गए। उसकी शादी की फिकर अपने-आप आ गई मां को। उसकी गजल वह वडे ध्यान से सुनती है। उसे पता तो है कि मन की वह वात उसीमे वाहर निकल आती है, जो दुनिया मे किसीसे नही कही जाती। उसने खुद भी यह काम किया है। मुशायरे मे नाम कमाने के लिए अच्छी-अच्छी वाते जोडकर गजल तैयार करके गाया है। शायद हो कि वे वाते दिल की न हो, पर यो ही आपसे-आप जो गजले आ गई है, उनमे तो दिल की वात जरूर ही होगी।

व्याह की वात सोचने की वजह हो गई थी। लखनऊ से नवाव-ज़ादा शुजाउद्दौला ने अपने वालिद को लिखा है, जिद पकड़ी है कि वह गन्ना से शादी करेगा। नवाव सफदरजंग ने लिखा है, नवावजादा से गन्ना का व्याह हो तो मुझे वड़ी खुशी होगी। वह वेगम उसे वहन की तरह आदर करेगी और नवावजादा शुजा भी शायद वदचलनी छोड़ सुधर जाए!

दोनो की उमर मे वडा फर्क था। तिसपर आज नवाव सफदर-जंग का सितारा झुक रहा था। नवावजादा की लपटता की वदनामी से लखनऊ-आगरा मुखर हो रहे थे। उसकी लहर दिल्ली तक पहुच चुकी थी। सुरैया खुद तवायफ थी, उसे पता है कि यह वीमारी जिसमे एक वार घर कर लेती है, फिर मरने तक नही छोडती।

फर्रुखावाद का नवाव अहमद खां वगाश रोहिला अफगान था—धर्ममत मे भी सुन्नी। ये सिया थे। दोनो मे सवंध नही होने की ही वात। मगर कुइली खा की कवित्व-शक्ति और मीठे स्वभाव से नवाव वंगाश उसकी कदर करता था। वह सुरैया की भी खातिर करता है। खातिर करता है उसकी गजल लिखने की खूवी और चरित्र के वदल जाने से। दुनिया मे तवायफ वहुतेरी हुई है वेगम साहवा, लेकिन घर और गिरस्ती पाने के वाद भी उनका पुराना नशा और आदत नही जाती। इस वात मे वह सुरैया की तारीफ करता था।

नवाव सफदरजंग जव दिल्ली मे वजीर था, तो वंगाश नवाव से

...ऊ की तराई के सखुआ-वन के लिए लड़ाई हुई थी। उस समय वगाश की फौज ने कई दिनो तक वावा करके लखनऊ शहर का वहुत-सा हिस्सा दखल कर लिया था। तीसरे दिन लखनऊ की फौज ने उसे पीछे हटाया था और एक सुलह भी हुई थी। उस सुलह की सारी वातें कुडली खा ने वताई थी। वह दो वार फर्रुखावाद गया था उस सिलसिले मे। उसी समय नवाव से दोस्ती हुई थी।

खा ने कहा—खानजमान, आप मेरे लिए ईरान के वाला सुलतान है। आपकी इज्जत मेरे लिए नवाव-वादशाह से भी ज्यादा है। नवाव-वादशाह वुखारा-समरकन्द के लिए दुनिया को लोहू से नहलाते है। आप लोग प्यारी के गाल के तिल के लिए वुखारा-समरकंद लुटा दे सकते है।

अगर अल् तुर्की शीराजी वदस्त आवद दिले मारा।
वखाले हिंदूअश वखगस समरकदो वुखारारा।

वह सरहद और सखुए का जंगल अगर आप चाहते होते, तो मै आपको सलाम करके फौरन वापस आ जाता।

तभी से वंगाश से दोस्ती का एक नाता था। वगाश ने सुरैया के पास आदमी भेजा था। कहलाया था कि सुरैया वेगम को मेरा हजार सलाम कहना और कहना कि वदचलन व्यभिचारी शुजाउदौला से वे गन्ना जैसी लडकी का व्याह न करें। गन्ना से खुद वादशाह के वज़ीर इमादुल-मुल्क गाजीउदीन ने व्याह करना चाहा है।

सुनकर सुरैया अवाक् हो गई।

नवाव वगाश ने कहा था कि वजीर ने लाहौर के मुगलानी वेगम की वेटी उमवा वेगम से व्याह करने की कही थी, पर उस रिश्ते को उसने नामज़ूर कर दिया। तिसपर दो दिन पहले एक हिंदू साधु ने आकर वताया कि गन्ना पर अभी शनि की दृष्टि चल रही है।

सुरैया ने शुकदेव को वुलवा भेजा।

उसे सादर विठाया। पूछा—पंडितजी, आप वताइए कि गन्ना की शादी मै कहा करू? यह वहुत गुप्त वात है। सिर्फ आपसे कह रही हू। आप मुझे रास्ता वता दीजिए। मै क्या करू? एक तरफ नवावज़ादा। नवाव सफदरजंग हमारे आश्रयदाता है। उवर है हिन्दुस्तान के वजीर। उस रोज एक हिन्दू साधु वता गया कि गन्ना

पर अभी सनीचर की नजर है ।

शुकदेव ने कहा—वेगम साहवा, शादी किससे करें, यह तो वाद की वात है । यह कह दू कि वेटी की शादी पश्चिम मे मत कीजिए। सारी दिल्ली 'गिरी-गिरी' कर रही है—मेरे कानो मे वह आवाज आ रही है । पश्चिम से आकर सदा से आवी हिन्दुस्तान को तहस-नहस करती रही है । वरावर । जिनके आखे है, वे साफ देख रहे है वेगम साहवा, कि पेशावर शहर के ऊपर वादल झांक रहे है । बिजली कौध रही है । पश्चिम मे नही, पूरव ।

—पूरा पूरव न होते हुए भी लखनऊ वहुत पूरव मे है । लेकिन नवावज़ादा शुजाउद्दौला की वात तो आपकी अजानी नही ।

—हा, मैं जानता हू वेगम साहवा, खूव जानता हूं, नवावजादा की कुण्डली मैंने ही वनाई थी । उसमे मैंने देखा है, इसी गुनाह, इसी पाप से नवावजादा एक दिन खत्म होगा । उसे औरत के हाथों ज़ख्मी होना पड़ेगा । सव मैंने देखा है । लेकिन तुम्हारी गन्ना की किस्मत की एक खूवी है कि जो उससे शादी करेगा, उसमे वह पाप नही रहेगा ।

—तो आप यह कह रहे है कि गन्ना से शादी होने से नवाव-जादा मे यह गुनाह नही रहेगा, वह सुधर जाएगा ?

—वहुत मुमकिन है । गन्ना का भाग्य तो यही कह रहा है। जो उसका पति होगा, उसमे यह दोष नही रहेगा ।

—हिन्दू सावु ने ऐसा ही कहा, लेकिन सनीचर की दशा···।

—नही, सनीचर की दशा मे नही, उसने या तो भूल देखा या सयाना है ।

सुरैया ने दस मुहरे देकर पंडित को विदा किया । कहा, इतने मे ही खुश होना होगा पंडितजी ! खानजमान नही है। हम गरीव हो गए है ।

—मेरे लिए यही हजार मुहर है वेगम साहवा । मेरे तो भविष्य का और कुछ नही दिखाई देता—अव जैसे आधी से अंधेरा हो गया है । ज़ोरो की आंधी आ रही है। ओः !

शुकदेव सिहर उठा, मानो सच ही वह कुछ खौफनाक देख रहा हो ।

सुरैया डर गई—पडितजी !

पडित आपे मे आया। कहा—दूसरे जनम मे जिसमे यह विद्या न सीखू बेगम साहबा। इसके जानने से आदमी क्या देखता है, जानती है ?

सुरैया उसकी ओर ताकने लगी।

शुकदेव ने कहा—सिर्फ दुख ही देखता है। हसकर कहा—सोच देखिए बेगम साहबा, दुनिया के सभी तो मरते है। अत-अत तक सूरज भी बुझ जाएगा, चाद भी बुझ जाएगा—माटी की यह दुनिया धूल होकर आसमान मे मिल जाएगी। वह आसमान भी नीला नही रहेगा। स्याह अधेरे मे सब डूब जाएगा। वैसी जगह जिसकी आखे जाती है, उसकी तो हर घडी बडी खौफनाक घडी होती है।

सुरैया ने कहा—आप यह सब न कहे पडितजी, जाइए।

—हा, जाता हू। यह विद्या कोई न सीखे।

शुकदेव चला गया।

सुरैया अदर गई। गन्ना वहा नही थी। बादी ने पूछा—अरी, साहबजादी कहा गई ?

—छत पर।

—छत पर ?

—हा, गुनगुनाकर गजल बना रही है।

सुरैया छत पर गई। छत पर के दरवाजे के पास से ही सुना, गन्ना गा रही है—"पहाड की चोटी पर जगल मे आग लगी है। आग किसीने लगाई नही। पेडो की आपस की घिसन से लग गई। वह आग जल रही है। तमाम दिन, तमाम रात जलती है। ताप से, धुए से आसमान मे बादल घिरकर पानी बरसाता है। लगता है, आग बुझ गई। लेकिन आग नही बुझी। धुआ उठ रहा है। धूप तेज होगी, हवा चलेगी तो फिर लहकेगी। वह आग कैसे बुझेगी ? हाय खुदा, एक बेचारी चिडिया एक पेड पर बैठी थी। उस पेड ने उसे बुलाया था। जलकर वह पेड राख हो गया। आज उस बेचारी को कहा पनाह है, यह कौन बताएगा ? इसका जवाब तुम दो खुदा, तुम दो।"

सुरैया चौक उठी। गन्ना यह क्या गा रही है ? इसका मतलब क्या है ? एक अर्थ बिजली-सा उसके मन मे खेल गया। वह उसके

पास जाकर खडी हुई। गन्ना ने देखा, मा आकर खड़ी हुई है। वह जरा हंसी।

सुरैया ने पूछा—इसके माने क्या है गन्ना ?

गन्ना फिर जरा हसी।

सुरैया ने पूछा—तू क्या कहना चाहती है ?

—कुछ भी नही। यो ही मन मे आ गया···

—क्यों आया ?

—सो मैं कैसे जानू ?

—पहाड-जगल कहा जल रहा है ? कहा देखा तूने ?

—सारे का सारा हिन्दुस्तान जल रहा है अम्मी, और कहती हो कि जंगल कहा जल रहा है ?

—तूने चिडिया के बारे मे कहा। कौन चिडिया ?

—चिडिया ? वह है हिन्दुस्तान के गरीबो की जान।

—वे लोग किस पेड पर बैठे थे ?

—मुगल शासन के पेड की डाल पर···

—तू झूठ बता रही है गन्ना। चिडिया तू है।

—तो फिर तुम पेड को भी जानती होगी—बताओ।

—वह राह की धूल से नवाब सफदरजग द्वारा उठाकर लाया हुआ वह छोरा है, जिसे नवाब बादशाही खानदान का बताता है। आलमगीर बादशाह का बेटा कामबख्श का पोता आदिलशाह। सात महीने का झूठा बादशाह अकबर आदिलशाह।

गन्ना जरा देर चुप रही। उसके बाद बोली—उसपर नाहक ही नाराज़ हो रही हो अम्मा। वह बादशाही खानदान का है या नही, झूठा बादशाह है या नही—उसने तो कभी इसके बारे मे कहा नही है। कहा है फकीर साहब ने। शाह फाना। उसे जबर्दस्ती नवाब कहकर अपने स्वार्थ के लिए हाथी पर चढाया। उसने तो नही चाहा था अम्मा। वह फकीर है। और मेरे मन की कह रही हो ! नः उसे बाधा नही जा सकता ! कहो तो, उससे बाते करके तुमने ही नही कहा था कि दुनिया मे यह दुर्लभ आदमी है। तुम हैरान नही रह गई थी ?

सुरैया इस बात को काट नही सकी। आदिलशाह—जितना ही

रूप है उसे—दुनिया से उतनी ही उदासी। बात सही है। वह जैसे सुरैया की आखो मे नाच रहा है।

बादी आई। सलाम करके बोली—बदगी।

—क्या है ?

—नायब ने इत्तला भेजी है।

—इकबाल खां साहब ने ?

—जी।

इस समय में इकबाल खा ? सुरैया जल्दी-जल्दी नीचे उतरी।

३

नायब इकबाल खा अधबूढा भारतीय मुसलमान था। लोग राजपूत मुसलमान कहते थे। इसलिए कि पुरखे राजपूत थे। कभी मजबूरी से मुसलमान हो गए थे पर राजपूती आचार-विचार थोडा-बहुत अभी भी मानते थे। इस्लाम धर्म के प्रति भी निष्ठा थी।

कुइली खा की जागीर की नायबी और उसकी पाच हजार फौज की देख-रेख वही करता। जैसे हिसाब का पक्का वैसा ही योद्धा के हिसाब से साहसी। लगातार बीस साल से कुइली खा की जागीर को वही चलाता आ रहा था।

इकबाल खा को कुइली खा ने एक बार बहुत बडे अपमान से बचाया था। बीस साल पहले। उस समय कुइली खा ने सुरैया से शादी नही की थी।

इकबाल खा एक छोटा-मोटा ताल्लुकेदार था। तीन ताल्लुकों की ताल्लुकेदारी। ताल्लुकों के सारे लोग इकबाल जैसे ही राजपूत मुसलमान थे।

पास ही एक अफगान ताल्लुकेदार था। सुन्नी मुसलमान। वह इकबाल के ताल्लुको को हडप जाने के लिए भेडिये-सा चौबीसो घटे ताक लगाए रहता था। जीभ से लार टपकती रहती थी। बीच-बीच मे अफगान लोग डाकुओ जैसा हमला किया करते थे। सब कुछ लूट-पाट ले जाते थे। रुपया-पैसा ही नही, उनकी मा-बहन, बहू-बेटियो

को भी लूट ले जाने के लिए आया करते थे। लेकिन हर बार वे कामयाब नही होते। इकबाल खा के ताल्लुके के राजपूत मुसलमान जब यह समझ लेते कि इस लडाई मे हार जाएगे तो घर की औरतों को काट डालते, फिर तलवार ताने निकल पड़ते। लडते हुए मर जाते या फिर घर की औरतो को काटकर निकलते, जमात बनाते और अफगानो को मार भगाकर फिर से अपनी जमीन दखल करते।

उस बार अफगान ताल्लुकेदार ने डकैती नही, बदस्तूर लड़ाई छेड दी इकबाल खा से। लडाई का बहाना यह बनाया कि उसकी एक बेहतरीन खुरासानी घोडी को खुद इकबाल खा ने चुरा लिया है। फिर सीमा का दावा। दोनो की जागीरो की सीमा बनी एक छोटी-सी नदी बहती थी। वह नदी सीमा तोड़कर अफगानो की जागीर मे जा घुसी। लिहाज़ा इस पार जो जमीन निकली, उसपर इकबाल खा ने दखल जमाया।

बात सही थी। इकबाल खा ने उसकी घोडी को चुराया तो नही था, पकड लिया था। जाने कैसे तो वह घोडी छूट निकली थी और जगल मे भागी जा रही थी। इकबाल खा अपने घोडे पर उधर से जा रहा था। उस खूबसूरत घोडी को देखकर वह लट्टू हो गया। चालाकी से उसने अपने घोडे की मदद से उस घोड़ी को फसाया और रस्सी से बाध लिया।

घोडी का विवाद सीमा-विवाद से भी बड़ा हो उठा। अफगान ताल्लुकेदार ने अपनी घोडी की माग की और इस अपमान के बदले इकबाल खा की तीसरी बेगम की भी माग की, जिसकी खूबसूरती की इलाके मे शुहरत थी। यह शर्त नही मजूर होने से वह इकबाल के ताल्लुके को फूक डालेगा, दखल कर लेगा। हर अफगान सिपाही एक-एक औरत पकड़ लाएगा, बादी बनाकर रखेगा।

इकबाल ने अफगान ताल्लुकेदार के आदमी को अपमानित करके लौटा दिया और मुकाबला करने को तैयार हो गया। लडाई में इकबाल की हार नही हुई। उसने अगल-बगल से काफी राजपूत सिपाही जमा कर लिए थे। और राजपूत मुसलमानो ने उसकी मदद की थी। अपनी सीमा को पीछे छोडकर पहले से ही आगे जाकर इकबाल ने अफगान के ताल्लुके मे खूटी गाड़ दी थी। लड़ाई वही पर

हुई। सवेरे से पूरी तीन घडी की लडाई हुई। आखिर अफगान भाग खडे हुए। राजपूत मुसलमानो ने उनका पीछा किया। लेकिन अचानक पीछे से 'आग-आग' का शोर हुआ।

आग! हा, इकवाल खां के किले मे आग जल उठी थी।

इकवाल चौंका! हाय अल्ला, उसके कबूतर के दरवे का दरवाजा कैसे खुल गया! और, वही कबूतर उड गया, जिसके जाने से यह मानना होगा कि उसकी हार हो गई।

इकवाल खा फौज के साथ दौडा। दौडकर वदनसीवी को रोक नही सका। होना था सो हो चुका था। किले मे आग जल रही थी। कबूतर के आते ही वेगमो तथा दूसरी-दूसरी औरतो ने आग मे जलकर जान दे दी। वारूदखाने मे आग लग जाने से किले का एक तरफ का हिस्सा उड गया था।

वदनसीवी का यही अत न था। अफगान ने नवाव सफदरजंग, नवाव वंगाश के पास नालिश की कि मुसलमान होते हुए भी इकवाल काफिर है। उसने काफिर जैसा काम किया। उसके घर की औरतें जौहर करके जल मरी।

लखनऊ मे इसका विचार हुआ। सफदरजग ने कहा—मुसलमान होते हुए भी तुमने काफिरो के धर्म का पालन किया है! औरतो ने जौहर रचा। इस्लाम में तुमको विश्वास नही है।

इकवाल खां ने कोर्निश करके कहा—वंदापरवर, मैंने सुना है कि मेरे पुरखे राजपूत थे। मगर मै मुसलमान का वेटा हूं, मुसलमान मां के पेट से पैदा हुआ, उसीका दूध पीकर पला। छुटपन से ही मां-वाप ने सिखाया, खुदा मेहरवान, यह सारी दुनिया उन्हीकी इच्छा से पैदा हुई है। जिनकी इच्छा से यह दुनिया पैदा हुई इस्लाम उन्ही-का सवसे प्यारा धर्म है! इसे खुदा ने कहा था और पैगंवर ने सुना था। मै मुसलमान हू। दिन मे पाच दफा नमाज पढता हूं। लाइला इलिल्लाह-मुहम्मद-इ-रसूलिल्लाह। रमजान मे रोजा रखता हूं—जकात वाटता हू। ईद-वकरीद मे कुर्वानी करता हूं। ईमान को दुनिया मे सवसे वडा मानता हू। हुजूर, इस्लाम मे मां-वहन-वीवी की इज्जत वडी पवित्र मानी जाती है। वह इज्जत काफिरों की भी है। इज्जत बचाने के लिए उनके घर की मा-वहने जल मरती है। यह जौहर है।

वे लोग इज्जत के लिए अपने हाथों भी मां-बहनों को काट डालते है। इस्लाम मे भी ऐसा बहुत होता है। औरतें ज़हर भी पीती है,कुएं मे भी कूद पड़ती है और जल भी मरती है। वह जौहर नही है। लेकिन इन रोहिले अफगानो की पराई औरतों को लूट ले जाने की हरकत को मैं इस्लाम के खिलाफ मानता हूं। मेरी बेगमे, बहनें जल मरी है, यह ठीक है। लेकिन उन्होने जौहर नही लिया है। न तो उन्होने काफिर का धरम माना है और न ही मै काफिर हो गया हू।

इकबाल ने अन्याय शायद न किया हो, तो भी इसके कहने के लहजे से सफदरजंग नाराज़ हुआ। कहा—तुम झूठ बोलकर सच्चाई पर परदा डाल रहे हो इकबाल खां।

जो कट्टर मुसलमान थे, वैसे अफगान, ईरानी, तुरानी—सबने ज़ोरों से सफदरजग का समर्थन किया। कहा—बात सही है। यह, इसके ताल्लुके के लोग इस्लाम धर्म को नही मानते।

कुइली खां इस समय नौजवान था। उसकी जिन्दगी मे उस वक्त तक सुरैया नहीं आई थी। उसे इकबाल की साफगोई और निर्भीकता अच्छी लगी। उसने खडे होकर कहा—बंदा की गुस्ताखी माफ हो गरीबपरवर, मैं खुदा के गुलाम के नाते कुछ कहना चाहता हू।

शायर के नाते वाला सुलतान मुसलमान समाज मे आदर का पात्र बन गया था। हिंदुस्तान आए कुछ ही साल हुए थे। फारस के अमीर खानदान का लड़का। कुशल कवि और खूबसूरत जवान। उसके शेर और गज़ले सुनकर लोग पागल हो उठते। लोग उसकी ओर मुखातिब हुए। नवाब भी उसे मानता था। कहा—कहिए वाला सुलतान, क्या कहना चाहते है, कहिए।

उस रोज अली कुइली ने शेर नही सुनाए। कहा, खुदावद! दुनिया में खुदाताला का सत्य धर्म इस्लाम ही है। इसपर जो शुबहा करता है, वह काफिर है। लेकिन इस्लाम मे सिया, सुन्नी, सूफी जैसे कितने ही मत हैं, यह बात सफदरजग जैसे मुसलमान की अजानी नही। हिन्दुस्तान मे आज सिया-सुन्नी की लडाई चल रही है। लेकिन सिया हो चाहे सुन्नी, सूफी हो चाहे और कोई, जब मरते है तो सब एक ही तरह से मरते है। बुखार से मरते है तो एक-से मरते है। तलवार से हिंदू-मुसलमान की गरदन एक ही तरह से दो टुकड़े होती है।

सिया के भी होती है और सुन्नी के भी होती है। लोगो को जब जान की कुर्बानी करनी होती है, इज्जत बचानी होती है, तब भी ऐसा ही होता है। मरने के जो भी कुछ तरीके है—सबके लिए समान खुले हैं। नदी-कुए में कूदना, जहर खाना, छुरा मार लेना, पत्थर से सर फोड़ना, जल मरना। अफगान ताल्लुकेदार ने इकबाल खा के यहां की औरतो को छीन लेने की धमकी दी थी। यह धर्म के खिलाफ काम था। इकबाल की बीवी-बहनो ने तो जान बचाने के लिए, आबरू बचाने के लिए किले मे आग लगाई थी। इकबाल खा ने सिर ऊंचा करके कहा कि वह मुसलमान है। पाच दफे नमाज पढता है, रमजान मे रोजा रखता है, दान-खैरात करता है, कुर्बानी करता है। वह ईमानदार है। इन बातो मे कोई झूठ हो तो उसका विचार करे। उसकी बहू-बेटियां जल मरी, इसका विचार करेगे तो वह अविचार होगा, हुजूर।

जनता का मन विचित्र होता है, चरित्र विचित्र होता है। लोगो ने तुरत वाला सुलतान की ताईद की—बजा है, बजा।

सिर्फ वे कट्टर अफगान ही चुप थे।

इकबाल ने कहा—हुज़ूर, मैं अगर मुसलमान न होता तो आज राजपूत राजा जाट सूरजमल का ताबेदार होता। उनके मातहत बहुतेरे मुसलमान नौकरी करते है। ढूढने से अफगान भी मिलेगे। मगर यह खाकसार उनकी ताबेदारी मे नही गया, उनकी मदद नही ली।

अली कुइली के किए उस रोज इकबाल खा की पत रह गई। वह अफागान ताल्लुकेदार ही बेआबरू हुआ। भारतीय और सिया मुसलमान खुश हुए। सफदरजंग ने कहा—इकबाल खा, तुम मुसलमान हो! उस अफगान को खुदाताला माफ करे।

इकबाल खां दूसरे ही दिन सवेरे अली कुइली के पास आया। उसके कदमो मे अपनी तलवार रख दी और कहा—बदानवाज़, यह इकबाल आज से आपका गुलाम है।

तभी से इकबाल अली कुइली का सब कुछ है। उसकी जागीर का वजीर, नाजिर, सिपहसालार—सब कुछ। उसका ताल्लुका अली कुइली की जागीर से ज्यादा दूर नही। उसीके ताल्लुके के मुसलमान अली कुइली के पांच हज़ार सैनिको मे तीन हजार से भी ज्यादा हैं।

अली कुइली की मौत दिल्ली मे हुई। एक गुप्त चिट्ठी लेकर नवाब सफदरजंग ने ही उसे बादशाह के पास भेजा था। अली कुइली की मौत अचानक हुई। इकबाल खां साथ था। मरते वक्त वह कुछ कह नही सका, लेकिन अर्थपूर्ण दृष्टि से इकबाल खां की तरफ ताकता रहा था। इकबाल खां ने उसका मतलब समझ लिया था। उसने हाथ मे कुरान लेकर कहा—कुरान हाथ मे लिए खुदा को गवाह रखकर शपथ करता हूं कि जब तक मैं ज़िन्दा हू, बेगम साहबा और गन्ना बेगम के पैरों कोई कांटा भी नही चुभने दूगा। ईमान को मै सब कुछ मानता हू। बेईमान और नमकहराम मैं नही हूं।

लौटकर इकबाल खां ही सुरैया और गन्ना को लखनऊ से जागीर में ले आया था। कहा—बेगम साहबा, अख्तियार ही बहिश्त और बेअख्तियार ही जहन्नुम है। जहा अपना बस है, वही आज़ादी है। जहां बस नही, वह कैद है। शायद हो कि गांव अच्छा न लगे, फिर भी अपने गाव का किला ही गन्ना के लिए ठीक है—आपके अख्तियार का बहिश्त है। नवाबज़ादा की···

इकबाल खां ने इससे आगे नही कहा। सुरैया लेकिन सब समझ गई। नवाबज़ादा की लालसा की आग! उस समय गन्ना की गज़लों की आग जगल की आग-सी ही धधक रही थी। गन्ना का नाम, उसके रूप की शुहरत सारे मुल्क मे फैल चुकी थी।

सुरैया इकबाल खा से परदा नही करती थी। कुइली खां के जीते जी ही वह उसके सामने होती थी, बोलती-चालती थी।

कुइली खां ने कहा था, सुरैया, इकबाल खां धार्मिक है। इसे तुम अपना धरमभाई मानना। नौकर और भाई मे बडा फर्क होता है।

सुरैया वही मानती है।

सुरैया आई। इकबाल खा ने सलाह करके कहा—मजबूरी में आपको इस असमय मे तकलीफ देनी पड़ी। एक खबर मिली···

—बुरी खबर?

—जी। अच्छी ज़रूर नही है।

—क्या है इकबाल खां?

—उस रोज जो एक हिन्दू फकीर आया था, वह फकीर नही था।

सुरैया चौंकी। फकीर नही, तो कौन था?

—जटा लगाए, राख मले, साधु बनकर वह जाट सूरजमल का बेटा जवाहर सिंह आया था।

सुरैया फिर चौंकी—वह जवाहर सिंह था?

—जी, खुद जवाहर सिंह।

सुरैया चुप हो गई। दो दिन पहले साधुओ की एक टोली आई थी। पचासेक मूर्तिया। साथ मे कुछ घोड़े, एक हाथी। हाथी पर साधुओ का महत। बडी-बडी जटाओवाला सन्यासी। बाकी कुछ घोड़ो पर, कुछ पैदल। मथुरा-वृन्दावन जा रहे थे। अली कुइली और सुरैया बेगम का नाम सुना था। सो किले के सामने आकर डडा गाड दिया। घी-आटे की फरमाइश की। कहा—खुदा के लिए, भगवान के लिए। भला होगा। खुदा की मेहरबानी, भगवान की दया मिलेगी! साधु को, फकीर को खिलाओ। सेवा करो!

सुरैया ने झरोखे से देखा। उसे संन्यासियो का महत बडा भला लगा। जैसा खूबसूरत था, वैसा ही तदुरुस्त और बलवान। लगा, कोई राजकुमार सन्यासी हो गया है। सिंहासन छोडकर। सुरैया ने उन्हे भरपूर भोजन का सामान देने का हुक्म दिया।

वे दिन-भर वहा रहे। उनके आसपास बहुतेरे लोग जुटे थे। दो-चार साधुओ ने भजन से लोगो को मग्न कर दिया। गुरु ने बहुतो का चेहरा देखकर ही भाग्य बताया। किसीको तावीज दी, किसीको जडी। किसीको लोहे की तो किसीको पीतल की अगूठी दी। भारत के मुसलमान राजे हिन्दुओ को काफिर चाहे कहे, मगर साधु-सन्यासियो के चमत्कार पर वे अविश्वास नही करते थे। अकबर, जहागीर आदि ने इन साधु-सन्यासियो की बडी खातिरदारी की थी। अवश्य आलम-गीर के जमाने मे यह सब उठ गया था, पर उसके बाद फिर वही धारा बह निकली। आज तो ये साधु-सन्यासी बहुत तरह से नवाबो की मदद करते थे। इनकी लडाई गजब की होती। मानो दैवीशक्ति से लडते हों। राजेन्दर गिरि गुसाईं तो नवाब सफदरजग का दाया हाथ था। उसके नाम से दुश्मन थर-थर कापते थे। बदूके छूटती हो, तोपे चल रही हो, तीर मारे जा रहे हो—ऐसे माहौल मे राजेन्दर गिरि शेर की तरह दहाड उठता। उसकी शकल ही बदल जाती।

गुमाइँ नाचने लगता, एक हाथ मे त्रिशूल और दूसरे मे तलवार लेकर दुश्मनो के तोपखाने पर टूट पड़ता। तोपखाना दखल कर लेता या दुश्मनो को तितर-वितर कर देता। उसकी अपनी जमात थी सन्यासियो की। सव सन्यासी अपने गुरुजी के पीछे-पीछे दौड़ पड़ते।

गिरि गुसाइँ की लखनऊ दरवार मे इतनी खातिर थी कि वह घोडे पर सवार नगाडा पिटवाता हुआ दरवार मे आता था, दरवार में नवाव को कभी सलाम नहीं करता था! आशीर्वाद देने की अदा से हाथ उठाकर खड़ा हो जाता। सफदरजग मसनद छोडकर खडा हो जाता, आगे वढकर हाथ पकडकर सादर उसे लिवा जाता। गिरि गुसाई को कोई शत्रु मार नही सका। मारा सफदरजंग के मनसवदार इस्माइल खा के एक वंदूकधारी सिपाही ही ने। पीछे से गोली मार दी। गुसाई की छाती मंत्रपूत थी, पीठ नही। जानकर ही पीठ को वह मंत्रपूत नही करता था। कहता था, कभी अगर मेरी अकल मारी जाए, मैं पीठ दिखाकर भागूं, तो वैसे मे पीठ पर गोली लगे, तलवार का वार हो, मैं मारा जाऊं। इस्माइल खा को इस वात का पता था। उसने अपने सिपाही से गोली मरवा दी।

गुसाई के मारे जाने से नवाव सफदरजंग का दाया हाथ टूट गया। गोकुल मे नागा गुसाई थे। सवके सव संन्यासी। वे दुनिया मे किसीसे नही डरते। उन्हे गद्दी नही चाहिए, जागीर-जमीदारी नहीं चाहिए—चाहिए सिर्फ दोनो जून आटा और घी। पेड के नीचे या झोंपड़े में पड़े रहते। ये तीनों काल देख सकते थे। सारा देश उनकी खातिर करता, हिन्दू भी, मुसलमान भी। इस तरह के मुसलमान फकीर भी थे। नयजन फकीर के गुस्से से वजीर अमीर खां तडप-तडपकर मर गया। लिहाजा सुरैया ने उन सन्यासियो की खातिर की। इकवाल खा ने भी की।

जाते वक्त महत ने कहा—तुम्हारी सेवा से संतुष्ट हुआ। आत्मा तृप्त हुई। खुदा-भगवान तुम्हारा भला करेंगे। दीवानजी, हम थोडा भभूत देना चाहते है। हजरत वेगम को खवर कीजिए। उन्हे वुलाइए या मुझे उनके पास ले चलिए।

इकवाल वड़ी आफत मे पडा।

साधु को ले जाए ? वेगम को उसके पास बुलाए ?

आखिर उसने सुरैया से जाकर कहा। सुरैया ने कहा—तो उन्हे लिवा लाइए। वात नही मानने से दोष होगा।

साधु वैठक मे आकर वैठा। सुरैया ने सलाम किया। कहा—आप सतुष्ट हुए वावा ?

—खूब। मेरे परमात्मा ने कहा, वेगम का भला मना के जा। उनकी वेटी को तावीज़ दिए जा। लो माई, पकडो। उसने सिर की जटा से एक लाल पत्थर निकालकर सुरैया को दिया। दामी पत्थर। कहा—माईजी, इसे अगूठी मे लगाकर तुम पहनना। भला होगा। उसके वाद एक नीलम और एक चौकोर कवच निकालकर कहा—यह तुम्हारी विटिया के लिए है माजी। मैने देखा, उसपर अभी सनीचर की दशा है। इससे सारा अमगल भाग जाएगा। सनीचर प्रसन्न होकर उसे राजरानी वना देगा। मैने देखा, उसके लिए तुम्हारी चिंता का अंत नही है। इससे सव चिंता जाती रहेगी।

सुरैया ने हाथ पसारा। नीलम देते-देते सन्यासी ने हठात् हाथ हटा लिया। कहा, नही माताजी, तुम उसीको वुला लो। मै मतर पढकर यह उसीके हाथ मे दूगा।

सुरैया धीरे-धीरे अभिभूत हो गई थी। गन्ना को आखिर उसने वुलाया। अवश्य वुरके मे ले आई। सलाम करके गन्ना ने हाथ फैलाया। सन्यासी उसे नीलम देने लगा कि चौककर वोला, वाप रे, हाथ की रेखाए है ! यह तो साक्षात् राजरानी का हाथ है।

ज़रा देर चुप रहा। वोला, जरा तुम्हारा कपाल तो देखे कुमारी।

गन्ना ने वुरका हटाया। उसके चेहरे को गौर से देखकर सन्यासी ने कहा—तुम्हारी यह विटिया ब्रजरानी जैसी भागवती है। यह ज़रूर राजरानी होगी। इसका पति वहुत वडा वीर होगा। खूव समझ-वूझकर इसकी शादी करना !

सन्यासी विदा हुआ। यहा से आगरा, आगरा से मथुरा, मथुरा मे वृन्दावन।

इसी घटना के वाद सुरैया ने शुकदेव आचार्य को वुलवा भेजा था। शुकदेव आज ही वापस गया। अभी—कुछ ही देर पहले।

अव इकवाल ने वताया, वह हिंदू साधु साधु नही था, वह साधु

के वेश मे जाट राजा का वेटा जवाहर सिह था !

सुरैया कुछ देर सन्न-सी रही । फिर पूछा—किसने कहा ग्रापसे ? ग्रापने कैसे जाना ?

—मुझे कुछ शुवहा-सा हुग्रा था वेगम साहवा । उसने जो नीलम गन्ना को दिया, वह वहुत कीमती है !

—यह समझने की नज़र मुझे भी है । लेकिन ये हिन्दू साधु होते ही ग्रजीव है । सुना है, किसी साधु ने वृन्दावन मे एक माणिक पाया था । उसे उसने यमुना की रेती मे डाल दिया था । सिक्ख गुरु के वारे मे भी सुना है । एक सिक्ख ने उन्हे जवाहरात के कंगन ला दिए थे । एक नदी मे गिर गया । सुनकर सिक्ख घवराया । पूछा, गुरुजी, कहा गिरा, मुझे वताइए तो मैं ले ग्राऊ निकालकर । गुरु ने दूसरे कंगन को पानी मे फेककर कहा, वहा । इनके लिए जवाहरात की तो कोई कीमत ही नही होती !

—मैं जानता हू वह । ग्राप सिया हैं । हमारे पुरखे हिन्दू थे । सुन्नी, तुरानी, ग्रफगान हमे ग्राधा काफिर कहते है ।—मगर मैंने इसका ग्रौर भी सवूत पाया है ।

—कौन-सा सवूत ?

—शुकदेव ग्राचार्य को नाव पर विठाने के लिए मै यमुना के घाट पर गया था । वही पर मथुरा की एक नाव ग्राकर लगी । उस नाव पर ग्रपनी जागीर का एक वनिया था । माल वेचने के लिए मथुरा गया था । उसने कहा, ताज्जुव है ! मथुरा के घाट पर साधुग्रो की एक टोली शोर मचाते हुए हाथी की तरह पानी में उतरी ग्रौर सव जाट सिपाही वनकर पानी से वाहर निकले । ग्रौर उन सवका जो महंत था, वह कमखाव का चुस्त पजामा, कुरता, पगडी, कमरवद लगाकर राजा वन गया । लोगो ने कहा, वह वल्लभगढ का युवराज जवाहर सिह है !

सुरैया भौचक रह गई । छाती धडक उठी 'ग्रल्लाह मेहरवान' कहकर चिल्ला उठा उसका हृदय ।

जाट राजा सूरजमल ने वल्लभगढ में काफी ताकत बटोर रक्खी थी । ग्रफगान, राजपूत भी उससे डरते थे । मराठे उससे वचकर चलते । लखनऊ के नवाव सफदरजंग को उसका भरोसा रहता ।

राजपूत राजे भी उससे पार नही पाते।

जवाहर सिंह यो साधु बनकर क्यो आया था, यह अंदाज़ लगाने की बात न रही। वह गन्ना को अपनी नजर से देखने आया था।

वह कह गया, यह ब्रजरानी जैसी भागवती है। इसका मतलब साफ है। जाट अपने को यादव राजपूत कहते है। कृष्णजी के वृन्दावन के अहीर यादव राजपूत हे। मथुरा-वृन्दावन अचल को ब्रज-मडल कहते है और वहा के राजा बनना चाहते हैं। भरतपुर, वल्लभगढ, कुमहार, डिग—चार किले लेकर जाटों के सरदार बदन सिंह ने जयपुर के महाराजा जय सिंह की कृपा पाई थी। वह अपने को कभी राजा नही कहता था। ठाकुर की उपाधि ले रक्खी थी। वह कभी दिल्ली के बादशाह के दरबार में नही गया। कहा करता कि मै जाट सरदार ठहरा—अपने खेत-खलिहान, खेती-बारी लेकर पड़ा रहता हू। भला मै दिल्ली के दरबार मे जा सकता हू! उसका गोद लिया बेटा सूरजमल आज राजा सूरजमल है। उसका इलाका आज आगरे के पश्चिम-दक्षिण से लेकर उधर राजपूताना तक चला गया है। उधर मथुरा-वृन्दावन का इलाका उसका न होते हुए भी वास्तव मे वही उसका मालिक है। दिल्ली से आगरे तक की बादशाही सड़क उसीके हाथ मे है।

जवाहर सिंह उसीका बेटा है। इस जवाहर सिंह के बारे मे सुरैया ने बहुत कुछ सुना था। वह धूर्त है। बादशाही सडक से अपने चार दोस्तो और सिपाहियो के साथ भेडिये की तरह घूमता फिरता है। सारा चवल उसके डर से कापता रहता है।

यह तो साफ है कि वह गन्ना को चाहता है। उसके रूप-गुण की शुहरत सुनकर इस तरह से गन्ना को वह देखने के लिए आया था। अब वह पागल हो उठेगा। अली कुइली के पाच हजार सिपाहियो की यह मजाल नही कि उसे रोके। सुरैया ने सुना है कि जाट राजा का नगाडा बजते ही तीस-चालीस हजार सिपाही जुट जाते है। यही नही, बन्दूके और तोपे भी जुटाई है उन्होने। उनके सामने यह छोटा-सा किला कब तक टिकेगा?

हिन्दू राजे गडो की तादाद मे शादिया करते है। पचीस-पचास-सौ भी हो तो कोई बात नही। ऊपर से वे उपपत्निया रखते हैं। महल-भर उपपत्नियां। पहले क्या होता था, सुरैया को यह नही

मालूम। आजकल तो वे मुसलमान उपपत्नी भी रखते है। वाजीराव पेशवा—जात के ब्राह्मण है। तमाम हिन्दुस्तान मे उनका सम्मान है। उनके एक मुसलमानिन प्यारी थी। नाम था मस्तानी। घोड़े की पीठ पर सवार हो वह पेशवा के साथ लडाई पर भी जाती थी। फिर भी वह उपपत्नी से ज्यादा कुछ नही थी। उसका वेटा शमशेर आज अपने भाई वालाजी राव के मातहत एक मामूली मनसवदार है। इज्जत क्या है उसकी ?

एकाएक सुरैया को गुस्सा हो आया। उसका भय भाग गया। वह तवायफ थी। खुदा की मेहरवानी और भाग्य की वदौलत आज वह फारस के अमीर शायर अली कुइली की वीवी है। अल्लाह के दरवार मे उसका सव पाप, सव गुनाह कट गया। अपने प्यारे की वही अकेली प्रियतमा थी। उस सुरैया की वेटी है गन्ना—जो रूप मे, गुण मे ऐसी है, वह विधर्मी काफिर की उपपत्नी होगी ! उसकी पैदाइश की घडी से ही वह कामना करती आई है कि गन्ना उससे भी भाग्यवती होगी—अपने पति की वही अकेली प्रियतमा होगी। वह—? नही, यह वह हरगिज नही होने देगी। कभी नही !

सुरैया के जवाब के इतजार मे इकबाल खा चुपचाप खडा ही था। सुरैया ने इतनी देर के वाद कहा—इकवाल खां !

—हुक्म ?

—आपका क्या ख्याल है, जवाहरसिंह का इरादा तो साफ है ?

—जी हा ! अव वह गन्ना को मागेगा और ना करने से···

—जवर्दस्ती छीन ले जाएगा। तोपो से हमारे किले को चूर-चूर कर देगा। दिल्ली के वादशाह के पास दरखास्त लिख भेजिए।

—उससे क्या नतीजा निकलेगा वेगम साहिवा ? साठ साल की उम्र मे वादशाह वनकर शाहजादा मैजुद्दीन ने क्या किया था, मालूम है ? वादशाह मुहम्मदशाह की वेटी, साहिवे-जमानी की वेटी हज़रत वेगम। सोलह साल की थी वह। उसकी खूवसूरती शमादान की जलती मोमवत्ती-सी थी शायद। वादशाह होते ही मैजुद्दीन ने कहा, मैं उससे शादी करूगा। हज़रत वेगम वोली—मै जहर पीकर मर जाऊगी। मलिका-ए-ज़मानी, साहिवे-जमानी ने कहा—हजरत वेगम अगर खुद से नही मर सकेगी, तो हम दोनो मां मिलकर उसे जिवह

कर देगी। समझेगी कि खुदाताला के दरवार मे कुर्वानी की है। वादशाह को दरखास्त भेजने से वही गन्ना को माग वैठेगा। कहेगा, फौज भेज रहा हू। गन्ना को वादशाही हरम मे भेज दो!

वात सही थी। वादशाह की वावत कहने के वक्त सुरैया ने यह नही सोचा था। हाय, दीन-दुनिया के मालिक, तुम औरतो पर ऐसे वेरहम क्यो हो? उनकी किस्मत ऐसी क्यो? सारी दुनिया की औरत मर्दो की दौलत—दौलत क्या, खेलने की चीज-सी रह गई है। वहुत हुई तो फूल या मोती की माला-सी। जिसे ज्यादा जोर है, वही दूसरे के गले से उतारकर उसे अपने गले मे पहन लेता है। उसके वाद फिर नई माला मिलती है, तव उसे अपने हीरा-मोती के खजाने मे डाल देता है, याकि किसीको वख्शीश मे दे डालता है। ले जा!

इकवाल ने कहा—कुछ न कुछ तै कर लेना होगा वेगम साहिवा, समय नही है। गन्ना को लेकर इधर एक आधी-सी घुमड उठी है। कव विजली कौंधेगी और तूफान उठ आएगा, कहा नही जा सकता। सुना है, लखनऊ मे नवावजादा पागल हो रहा है। नवाव साहव को गन्ना से थोडी ममता है। लेकिन नवावजादा से हारकर ही उन्होंने आपको खत लिखा है। उधर दिल्ली का वजीर इमादुल मुल्क। लाहौर की नवाव वेगम मुगलानी की वेटी उमधा वेगम से उसकी शादी तै हो चुकी है। लेकिन मुगलानी वेगम मनसवदारो और वदों के साथ जो कर रही है, उन किस्सो से कान रखना मुहाल हो रहा है। यह एक मौका पाकर इमादुल मुल्क उस शादी को तोडकर गन्ना से व्याह करना चाहता है। उधर रोहिला नवाव नजीवुद्दौला का वेटा जवि्ता खा गन्ना से अपना रिश्ता तै करने के लिए वाप की नाक मे दम किए हुए है। इसके सिवा मेरे सुनने मे आया है कि छोटे-छोटे नवाव-जागीरदार भी गन्ना को चाह रहे हैं। ये स्यार महज इसलिए चू नही कर पा रहे है कि दो तरफ दो शेर हैं—एक तरफ शुजाउद्दौला, दूसरी तरफ इमादुल मुल्क। अव नया भेडिया सामने आया है—जवाहर सिंह। जो करना है, जल्द ही करना चाहिए।

—मैं सोच देखती हू। मुझे एक रात सोचने का समय दो!

—जो भी करना है, झटपट कर लेना है। रास्ते मे मुझसे शुकदेव पडित ने कहा, एक वात मै तुमसे कह जाऊ। वेगम साहिवा से मैंने

नही कही । जव तुम्हारे यहा की चिट्ठी गई थी, मैं हिन्दुस्तान का भाग्य विचार कर रहा था । देख रहा था कि उत्तर-पश्चिम से एक आधी आ रही है। उस आंधी से सब अंधेरा हो गया, और कुछ भी नही देख सका । और जब गन्ना की कुडली देखी, तो पाया कि हिन्दुस्तान और गन्ना का भाग्य विलकुल एक-सा है । देखा कि गन्ना की किस्मत एक डोगी-सी वीच दरिया मे पडी है और उधर आसमान मे मेघ जमकर तूफान उठ रहा है। अव अगर जीना हो तो उस डोगी को वीच दरिया से निकालना होगा । किसी किनारे उसे लगाना ही होगा । मैंने कहा, मैं समझ नही सका पडितजी । खोलकर कहिए। दरिया ज़िन्दगी है यह समझा, किस्मत डोगी है, यह भी समझा । मगर आप यह किनारा क्या कह रहे है? वोले—मेरे ख्याल मे एक किनारा अयोध्या है, दूसरा दिल्ली । शुजाउद्दौला और इमादुल मुल्क । किसी किनारे लगाना होगा । गन्ना की शादी कर दो ।

—मैं कल सवेरे कहूंगी इकवाल खां !

सवेरे वादी छत पर गई थी । वहा से एक तीर उठा लाई । तीर का फल लोहे का नही, सोने का था । उसमे एक चिट्ठी लिपटी थी । उसमे उर्दू की कुछ पक्तियां लिखी थी—

"वासुरी वजानेवाला चरवाहा ही हो चाहे, राजा की वेटी वह सुर सुनकर उतावली हो उठती है । उसमे जात, कुल, मान का ख्याल नही होता । तुम राजा-उमराव की वेटी, वांसुरी का सुर क्या नही सुनती ? तुम्हे कव तक पुकारू ? कव तक ?"

चिट्ठी पढकर सुरैया चुप खडी रही । गन्ना आई । सुरैया सचेत हुई । उसके हाथ मे चिट्ठी देकर वोली—पढ ।

गन्ना ने पढा ।—डर लग गया मा ?

—डरने की वात नही है ?

—कोई डराए और डरो, जभी डर की वात है । डरो नही तो डरने की क्या वात है ?

—तुझे डर नही लग रहा है ?

—नही अम्मी । जिससे सभी डरते है, वह है मौत । उसी मौत से आदमी आदमी को डराता है । मौत से नही डरो तो फिर आदमी

से कैसा डर ?

—मगर मै तुझे मरने तो नही दे सकूगी गन्ना !

—आखिर कैसे बचाओगी ?

—यहा से भाग जाऊगी ।

—कहा भागोगी ?

—अकबर आदिल कहा है, वही जाऊगी ।

गन्ना हसी । कुछ बोली नही ।

सुरैया ने कहा—मैं उसीके हाथो तुझे सौपूगी गन्ना । मेरे लिए सबसे बडी चीज तेरा सुख है ।—उसने बादी को बुलाया।

बादी ने आकर सलाम बजाया।सुरैया ने कहा—इकबाल खां को इत्तला दो ।

इकबाल खा आकर सलाम करके खडा हो गया ।

सुरैया ने कहा—यह देखो। छत पर तीर मे लिपटा यह खत पडा था ।

इकबाल ने कहा—यह तो होगा ही । ऐसा कोई काम ही नही, जो जवाहर सिह नही कर सकता हो । यमुना के किनारे के उस जंगल के पेडो से छत पर आसानी से तीर फेंका जा सकता है। मैंने तो हुजूर से कल ही कहा था । आपने क्या तै किया ?

सुरैया ने कहा—यहा से पहले तो आगरा जाऊगी । वहा के किलेदार से कहकर महीने-भर वहा रह सकने का इन्तजाम कीजिए इकबाल खा । भरतपुर की तोप से यह माटी का किला टूट सकता है, मगर शाहनशाह अकबर का किला तोप से नही उडने का । उसके लिए जो खर्च होगा, मै दूगी ।

—लेकिन वहा हमारी फौज को तो नही रहने देगे और आप गन्ना को लेकर रहेगी ।—इकबाल खा थम गया ।

—अगर किलेदार ही बदनीयत हो, अगर सारी दुनिया के लोग ही जानवर हो जाए तो जीकर ही क्या होगा—वैसे मे मा-बेटी मिलकर जहर खा लेगी ! राणा की शरण मे जा पाती, तो निश्चित हो सकती । मगर वहा जाने के लिए तो भरतपुर पार करके जाना होगा ।

इकबाल ने कहा—गुलाम की गुस्ताखी माफ करे, गन्ना की

शादी हो जाए कि वस चुक जाए।

—शादी मैंने तै कर ली इकवाल खां। ग्राप पता करे कि ग्रकवर ग्रादिल कहां हैं ?

इकवाल खा चौंका—ग्रकवर ग्रादिल ?

—हां, ग्रकवर ग्रादिल !

—ग्राप क्या सोचती है, वह फिर कभी वादशाह होगा ?

४

ग्रकवर ग्रादिलशाह ! लोग कहते है, गुलाम था। गुलामो की पैंठ मे विकने के लिए ग्राया था। चौदह-पन्द्रह साल की उम्र। देखने में गज़व का !

पांच साल पहले की वात। उस समय नवाव सफदरजग दिल्ली का वज़ीर था। नवावजादा शुजाउद्दौला पैठ में गुलाम की तलाग मे गया था।

फटे कपड़े, कमर में रस्सी वंधी, ग्रनोखा रूपवाला वह गुलाम लापरवाह खडा था। वह जामा मसजिद की मीनार की तरफ एकटक ताक रहा था।

शुजाउद्दौला मोल-भाव कर रहा था, कि दिल्ली के मशहूर फकीर हज़रत शाह फाना ग्राए। एकटक उसे देखने लगे, फिर पुकारा, ऐ बच्चे !

छोकरे ने ग्रावाज़ नही दी। एक प्रकार से शाह फाना नवावज़ादे को ढकेलकर ही ग्रागे निकल गए। छोकरे की छाती पर हाथ रखकर कहा—ऐ वच्चे !

ग्रव की छोकरे ने उनकी ग्रोर देखा। कहा—हज़ार सलाम हज़रत ! कसूर माफ करे, मैं मीनार को देखते हुए सव भूल वैठा था।

शाह के कानो मे शायद उनमें से एक भी वात नही गई। वे उसकी ग्रोर झुके। पूछा—तू कौन है ?

छोकरे ने कहा—मेरा नाम ग्रकवर है।

—ग्रकवर ?

—जी, मेरी अम्मा मुझे इसी नाम से पुकारती थी।

—तेरे वालिद का क्या नाम है ?

—हजरत, आप फकीर हैं। आपसे झूठ कहू तो गुनाह होगा। लेकिन मरते वक्त मेरी मा ने मुझसे कहा था—आदिल, तेरा बाप मुझे राह की धूल पर बिठाकर चला गया। मैं भी तुझे दुनिया मे राह की धूल पर ही बिठाकर जा रही हू। अपना परिचय तू इस धूल मे खो दे। कोई पूछे तो कहना, नही जानता हूं !

—यह शकल तूने कहा पाई ? अपनी अम्मा से या अब्बा से ?

—अब्बा की बडी धुधली-सी याद है मुझे। लेकिन अम्मा कहा करती थी कि मैं अपने अब्बा जैसा हूं। और अब्बा अम्मा से कहा करते थे, नही—मैं उनके अब्बा यानी अपने दादा-सा हू देखने मे।

—तेरे अब्बा का नाम मैं बताऊ ? मुहम्मद फीरोज़—मुहम्मद फीरोजमद। ऐ ! उसके बाप का नाम शाहजादा मुहम्मद कामबख्श। हा ? उसका बाप शाहनशाह औरगजेब, उसका बाप बादशाह शाह-जहा…

—इसीलिए मैं मसजिद की मीनार की ओर ताक रहा था हजरत—बडी भली लग रही थी। आखो मे आसू भी आ रहे थे कि वह जो खुदाताला का आसन है, रसूलिल्लाह को पुकारने के लिए मेरे ही पुरखो ने इस आसन को तैयार किया था। उसी दिल्ली—शाहजहानाबाद की हाट मे मै गुलाम होकर बिकने के लिए आया हू।

शाह फाना ने कहा—कामबख्श सभी शाहज़ादो से देखने मे खूबसूरत था। वह मेरा दोस्त था। मैंने तुझे देखते ही पहचान लिया। बडा ज़ालिम था वह। बहुत जुल्म करता था। फिर भी वह मन से फकीर था। दानिशमद खा ने लिखा ही था कि "वह जिस दिन इस दुनिया से उठ गया, उस दिन चारो तरफ से मुबारकबाद गूजा।" तू जैसे ठीक वही है। फिर लौट आया है। सोचते भी अच्छा लगता है ! तेरा बाप पुराने किले से भागा था। कहा गया, नही जानता। तू उसका बेटा है।

देखते-देखते भीड़ जुट गई थी।

शुजाउद्दौला ने बाप के पास सवार भेजा था। इतनी बडी और अनोखी खबर वजीर को तुरत मालूम होनी चाहिए।

तब तक अकबर की कमर से रस्सी खुल चुकी थी। शाह फाना ने कहा—हाय रे नसीब ! हाय खुदा की मर्जी। कैसे ताज्जुब की बात है। अकबर आदिल ने शाह फाना से सारी बातें कही थी। शाहजादा फीरोजमद पुराने किले से भागे थे। मक्का जाएगे, हज करेंगे। रास्ते मे बीमार पड़े। पेड के नीच पडे रहे, पानी-पानी चीखते रहे। रास्ते के पास जो गांव था, वहा की एक मुसलमान औरत उन्हे पानी पिलाकर अपने घर उठा ले गई। सेवा-जतन से चगा किया। उनका हज करना न हो सका। उसी घर के दामाद बनकर वही रह गए। लेकिन निकम्मे दामाद को वह खेतिहर ससुर बर्दाश्त न कर सका। उनकी शकल देखकर ससुर उन्हे खेत मे काम-काज करने को नही कहता था। कहता था किसी ज़मीदार-जागीरदार के सिरिश्ते मे मुशी का काम करने के लिए। लेकिन फीरोजमद वह भी नही करते थे। आखिर लानत-मलामत नही सह सकने के कारण एक दिन वे रास्ते पर निकल पडे। उनकी स्त्री भी घर नही रही—वह भी साल-भर के अकबर को गोदी मे लेकर पति के पीछे-पीछे निकल पड़ी। फीरोज एक दरगाह के फकीर बने। वही चार-पाच साल रहे। उसके बाद एक दिन दुर्घटना घटी। उस समय नादिरशाह दिल्ली आया था। दिल्ली को लहू से नहलाकर उसे जहन्नुम बनाकर तख्तताऊस, कोहनूर और दिल्ली की इज्ज़त लेकर अपने मुल्क लौट रहा था। यह सुनकर फीरोज जैसे पागल हो गए। उसी दिन रात को उन्होने स्त्री को अपना परिचय दिया था। कहा था—जलालुद्दीन अकबरशाह, शाह जहागीर, शाहनशाह शाहजहां की दिल्ली, तख्तताऊस, कोहनूर — उस दिल्ली की इज्जत है। मेरी भी इज्जत है। अमीना, मैं बादशाह औरगजेब के शाहजादा कामबख्श का बेटा हू। मेरा नाम है फीरोज़-मंद। इसलिए मैंने किसीकी नौकरी नही की, नौकरी नहीं कर सका। खेती भी मेरा काम नही। मेरे वालिद कामबख्श थे तो शाहजादा, मगर मन से वे फकीर थे। भाई से लडते हुए जिस लडाई मे वे मारे गए, उस युद्ध मे उनकी ज़बान पर बस एक ही बात थी—खुदा की मर्जी ! जो भी होगा, वह भी उनकी मर्जी। मरते वक्त भी यही कहा था—खुदा की मर्जी। मैं भी वही जानता हूं अमीना—खुदा की मर्जी। उन्हीकी मर्ज़ी से मक्का की ओर रवाना हुआ था।

उन्हींकी मर्ज़ी से जाना नही हुआ। तुम मिल गई। उन्हींकी मर्ज़ी से इस दरगाह मे उन्हीको पुकारते हुए पड़ा हूं। उनके नाम से जो जो भी दे देता है, उसीसे तुम लोगो की रोटी चलाता हू। लेकिन आज दिल्ली की इज्जत को पैरो से रौंदकर नादिरशाह ईरान लौट जाएगा, इसे मैं किसी भी तरह से खुदा की मर्जी नही मान पा रहा हूं। किजिलवास सिपाहियो को ढकेलकर शहर के पास जा भी नही सकूंगा। पहुचने से पहले ही मेरी गरदन चली जाएगी। जाए गरदन, उसे खुदा की मर्जी मान लूगा। लेकिन इज्ज़त जाएगी—उसे खुदा की मर्जी नही मानूगा।

अमीना ने अवाक् होकर सुना था। उसके साथ-साथ छ. साल के अकवर ने सुना था।

फीरोजमद चल दिए थे। किसीका कहना नही माना था। कहा—रोना मत अमीना। मै जा रहा हू। खुदा की मर्जी !

अमीना ने एक बात पूछी थी—ओर हम लोगो क्या होगा ?

—खुदा जाने।

फीरोजमंद चल दिए। फिर नही लौटे। कोई खबर भी नही आई।

अमीना लड़के को लेकर दिल्ली की ओर चली।

वह बाबर, हमायू, अकवर की दिल्ली को देखेगी। जहांगीर की दिल्ली को देखेगी। शाहनशाह शाहजहां की दिल्ली को देखेगी। औरंगज़ेब की दिल्ली। जामा मसजिद मे नमाज पढेगी। मगर उसकी वह उम्मीद पूरी नही हुई। दूरी भी तो कुछ कम नही थी। काठियावाड़ की ओर से आ रही थी। बीच-बीच मे कही-कही कुछ दिन रुकती, फिर चलती। रास्ते में अमीना का पैर टूट गया। एक गाव मे छ. महीने रुक जाना पड़ा।

रास्ते पर खुदा का नाम लेकर भीख मागा करती। लोग उसके पावो को देखकर हमदर्दी ज़ाहिर करते तो वह कहती—मर्जी खुदा की। लगड़ाते हुए तीन साल मे वह अजमेर शरीफ पहुंची। आखिर वही रुक गई। और आगे नही बढी। कहा, अकवर, खुदा की यही मर्जी है कि एक खेतिहर की बेटी चगताई बादशाह की वहू के रूप मे दिल्ली पहुचेगी, तो उस खानदान की हेठी होगी—यह नही होने

का। खुदा ने खेतिहर की वेटी को वहां पहुचने ही नही दिया। लेकिन खुदा मेहरवान है, मेहरवानी करके उसने मुसलमानो के इस बडे तीरथ अजमेर शरीफ तक पहुचने दिया। यही वहुत है। यही मेरा हज है। यहां भी तो सभी चगताई बादशाह आए है। यहा अमीर नही, गरीब नही, वादशाह नही, भिखमगा नही—सब समान है। यहां भी वादशाह की कितनी कीर्ति है! यही मेरा अंत होगा—यही खुदा की मर्जी है। मै मर जाऊ तो तू दिल्ली जाना।

छ महीने पहले तक वे वही थे। अजमेर शरीफ मे पीर साहवो की मेहरवानी से अकवर मसजिद मे काम करता था। वही उसने कुछ लिखना-पढ़ना सीखा। लोगो को उसके लिए बड़ी जिज्ञासा थी, लेकिन अमीना ने परिचय वताने को मना कर दिया था।

कहा था—खवरदार वेटे, गरदन कट जाने पर भी मत वताना कि तेरे अब्बाजान का नाम शाहजादा फीरोजमंद है, उनके अब्बाजान का नाम शाहजादा कामवख्श, उनके अब्बाजान का नाम शाहनशाह बादशाह आलमगीर गाजी है। खवरदार, अपमान की यह स्याही उनके नामो को काला कर देगी।

दस-ग्यारह साल के अकवर ने यह समझा था और अक्षर-अक्षर उसका पालन किया था।

छः महीने पहले उसकी मा मरी। अजमेर शरीफ मे उसे कब्र देकर पीर और मुल्लाओ से विदा होकर अकवर दिल्ली की ओर चला।

चगताई वंग की दिल्ली। वह दिल्ली क्या तो सोने से मढी हुई है। मीनारो के शिखर पर सोने के ताज की वहार—गुवजो पर चाद-सूरज की किरणो से सोने की चमक। लाल किला, जामा मसजिद—कितना क्या! अकवर सव देखेगा। जामा मसजिद मे नमाज पढकर कहेगा—मेरा नसीव ऐसा क्यो?

लेकिन रास्ते मे खुदा की मर्जी कुछ और ही हो गई। वह जिस दल के साथ दिल्ली आ रहा था, उस दल पर डकैतो का धावा हुआ। दल तितर-वितर हो गया। रास्ता भूलकर अकवर आगरा-ग्वालियर के रास्ते चल पडा। वीच मे चवल मे उसे फिर डकैतो ने पकडा और गुलामो का व्यवसाय करनेवालो के हाथ वेच दिया।

× × ×

अकबर ने हसकर कहा था—खुदा की यही मर्जी थी कि कमर मे रस्सी बाधे मुझे गुलामो के बिकने के बाजार मे आना होगा !

सभी अवाक् होकर सुन रहे थे। शाह फाना गरदन हिलाकर कह रहे थे—बेशक ! खुदा की मर्जी !

इतने मे वजीर सफदर के भेजे हुए सिपाही आए। सिपाहियों ने शाह फाना को झुककर सलाम किया। कहा—वजीर साहब ने हमें इन्हे लिवा ले आने के लिए भेजा है। आपको भी हजार सलाम कहे है, और कहा है, इन्हे दरबार मे भेज देगे।

शाह फाना ने कहा—सवारी क्या लाए हो ? शाहज़ादा जाएगे कैसे ?

—नवाबजादा शुजाउद्दौला ने घोडे पर ले जाने को कहा है।

—ठीक है, मगर इसकी जान का जामिन कौन है ?

—जामिन मै रहा हजरत !—कहा से तो दो रईस मुसलमान आ पहुचे। हजरत को मुहर नजर की और अफीम भेट की।

शाह फाना के लिए अफीम दुनिया की सबसे बेहतरीन चीज थी। सिपाही लोग अकबर को लेकर चले गए।

उसके बाद उस शाहजादे या शाहज़ादा के परिचय वाले छोकरे को दिल्ली मे किसीने नही देखा। दिल्ली मे तरह-तरह की अफवाहे फैली। और-और शहरो मे भी अफवाहे फैली। किसीने कहा—चील या बाज जैसे झपट्टा मारते है, वजीर साहब खबर पाते ही उसे झपट ले गए।

किसीने कहा—वजीर नही, खुद बादशाह अहमदशाह और उसकी मा ऊधमबाई ने।

किसीने कहा—तुम्हे खाक मालूम नही है। वजीर, बादशाह, बादशाह की मा—ये सब कुछ नही है। यह सब किया है हरम के खोजा सरदार जावेद खा ने।

और किसीने कहा—रहने भी दो। उस छोकरे ने ही सफेद झूठ कहा था। बिलकुल झूठ। असल मे वह गुलाम ही था। किसी अमीर के यहा था। वहा उसने शाहजादा फीरोजमंद के बारे मे सुना था। सयाना था, उसने यह किस्सा गढ लिया था। मौका पाकर भाग रहा था। मालिक ने पकडकर गुलाम बेचनेवालो के हाथ बेच दिया।

वजीर ने खुद से तहकीकात कराई। पता चल गया, वह खोजा गुलाम था। वज़ीर ने देखते ही उसे···

हाथ के इशारे से बताया कि काट डाला।

किसीने कहा, नहीं। सिर घुटाकर, नाक-कान काटकर भगा दिया।

खुद बादशाह ने वज़ीर को बुलाकर पूछा था—क्या बात है वजीर साहब, क्या सुन रहा हूं! शाहज़ादा कामबख्श का पोता गुलाम-बाज़ार में···

वज़ीर ने सलाम करके कहा—बादशाह इन बातों की फिक्र न करें। मैंने सब ठीक कर दिया है। वह बादशाह के सुनने लायक नही है।

—लेकिन शाह फाना ने तो कहा, देखने मे वह हूबहू कामबख्श-सा था?

—शाह फाना की उमर बहुत हो गई—नज़र कमज़ोर हो गई है और दिमाग भी सही नही है। तिसपर अफीम खाता है। वह कभी जावेद खां को भी देखकर कहेगा कि देखने में वह जहांदारशाह या फर्रुखसियर-सा है।

बादशाह की आंखें और चेहरा लाल हो उठा था। लेकिन कुछ बोल नही सका। वजीर ने चिकोटी काटी थी। खोजा जावेद खां और बादशाह की मां ऊधमबाई के बारे मे शहर मे कानाफूसी होती थी। यह बादशाह को मालूम था।

वजीर ने फिर कहा—जहांपनाह, इसकी फिक्र न करे। जब तक यह खाकसार है, तब तक किसी शाहजादे की मज़ाल नही कि मसनद को हिलाए।

प्रसंग को बदलकर कहा—आपने कहा था, इसलिए जहांपनाह को एक बात की याद दिला रहा हूं। शाहजादा को छुटपन से ही शासन की तालीम देने का विचार बहुत अच्छा है। शाहज़ादा का दरबार लगेगा, अमीर-उमरावों के बच्चे आएंगे, शाहज़ादा को कोर्निश करेंगे, नज़राना देगे। वे बच्चे अभी से जानेगे कि यही हमारे बादशाह हैं। वह दरबार शाम को दीवाने-खास मे होगा।

अहमदशाह खुश हो गए। कल्पना मे दीवाने-खास मे शाहजादे

को दरबार करते देख खुश हो गए।

उस अजीब छोकरे को दिल्ली मे किसीने नही देखा—लेकिन लखनऊ मे चौदह-पन्द्रह साल के एक खूबसूरत किशोर को नजरबंद बनाया गया था। किले की एक तरफ एक छोटे-से कमरे मे वह रहता था। पहरा था। सिपाही-सतरी या बाहर के लोगो को वहा नही जाने दिया जाता था। लेकिन हा, दिल्ली मे जो कैदी ज़मीन पर फटे कबल और फटा बधना-कटोरा लिए अधेरे मे रहता—उससे उसकी हालत बहुत अच्छी थी। उसके लिए गुलाम-बादी थी। बावर्ची था।

बाहर से केवल मुल्ले आते थे। वे उसे पढाते थे। कुरानशरीफ पढाते थे। साल-भर बाद खानजमान अली कुइली पर उसे फारसी पढाने का भार दिया गया। अली कुइली उसे हाफिज और उमर-खैयाम पढाता।

कुछ दिनो के बाद उसे लखनऊ शहर घूमने की इजाजत दी गई थी। उस समय अली कुइली गठियां का शिकार था। इसलिए वह अली कुइली के यहा जाता था।

जिस दिन पहले-पहल पहुचा अली कुइली ने अचरज से पूछा—यह कैसी पोशाक पहनकर तुम निकले हो आदिल ?

उसके उस रूप में पोशाक सच ही उसे फब नही रही थी। मल-मल का पाजामा। मलमल का ही कुरता। सर पर मामूली टोपी। पावो मे मोटे चमडे का जूता—जैसा देहाती लोग पहनते है। आंखो मे सुरमा नही। कपडो मे खुशबू नही। नाम उसका अकबर आदिल के बजाय नवाब के हुक्म से सिर्फ आदिल ही रह गया था। आदिल ने पूछा—क्यो भला !

कुइली खा ने कहा—नही, नही, यह पोशाक तो नवाब के महल के नौकर-चाकर पहनते है। मैंने नवाब की ओर से तुम्हारी पोशाक तो बनवा दी है।

आदिल ने कहा, जी, जो होता है, खुदा की मर्जी से होता है। तो वही हो। नसीब लोगो की किस्मत से खेलता है, उसमे इंसान का बस नही। न रहे बस। लेकिन अपनी इज्जत बचाए रखना इंसान के हाथ मे है। वहां नसीब को खेल खेलने देने से इज्जत नही रहती।

कुइली खां ने कहा—खेल मे नसीव अगर ज्यादा इज्जत दे तो उसे फेंक ही क्यों दोगे ? और अगर वह वेइज्ज़त ही करे तो उपाय क्या है ? नसीव का खेल खुदा की मर्ज़ी से ही होता है ।

आदिल ने अदव के साथ सलाम करके कहा—गुस्ताखी माफ करे । आप ईरान के वाला सुलतान है—ईरान-तुरान-अफगानिस्तान-हिन्दुस्तान के एक नामी शायर—जाने-माने ज्ञानी । नसीव का खेल खुदा की मर्जी से ही होता है । इससे सच्ची वात और नही । लेकिन इन्सान को इज्ज़त का वोध उन्होने ही दिया है । वहां उनकी मर्जी परखने की होती है । जिव्राइल देखते है । ऐसे देखते है, जैसे कुश्ती के समय विचारक देखता है । जहा नसीव इन्सान को उसके पावना से ज़्यादा इज्जत देता है, वहा उसे लेकर वह हार जाता है । जो उसे नही लेता, फेक देता है, जिव्राइल दौड़े जाते है।—"ऐ दीन-दुनिया के मालिक, नसीव की लडाई मे इन्सान जीत गया, नसीव हार गया।" खुदाताला की महिमा खुश होती है । हां, मेरी मर्ज़ी पूरी हुई । लेकिन नसीव जव इज्ज़त छीनने को आता है तो इन्सान जान की वाज़ी लगा देता है । उस छीना-झपटी मे वह जान दे भी देता है । वहा भी खुदा प्रसन्न होते है । जिव्राइल कह उठते हैं—"यह है कुर्वानी ! यही तो खुदा की मर्ज़ी है ।"

सुरैया और गन्ना वगल के कमरे मे थी । अली कुइली से उन्होंने सव सुन रखा था—उस खूवसूरत वदनसीव जवान को देखने के लिए आई थी । रूप से वे मान गई थी—हां, यह चगताई खानदान का हैं ।

अभी उसकी वात सुनकर दोनो के अचरज का ठिकाना नही रहा । दोनो एक-दूसरे को ताकने लगी ।

शावाश ! कहकर अली कुइली ने उसके हाथ थाम लिए। कहा—ये वाते तुम्हे किसने सिखाई आदिल ? अव्वाजान ने ?

—जी । मेरे अव्वा कहा करते थे—खुदा की मर्जी। राह चलते-चलते अम्मी कहती थी—नसीव का खेल । नही तो—अम्मी धीमे से कहती—नही तो टांग तुडाकर मुझे लगडाते हुए रास्ता चलना पड़ता, खुदा से कहना पडता—रोटी दो ! मैने सोचते-सोचते सीखा है कि इज्ज़त इन्सान की है, मेरी है । जगल मे जिस रोज डाकुओ ने मुझे

पकडा, कमर मे रस्सी लगाई, उसी रोज पत्थर में सिर पीटकर मुझे मर जाना चाहिए था। लडकर मर जाना था। मैं हार गया। फिर तो मैं दुनिया के कानून से वास्तव मे गुलाम हू। उस रोज शाह फाना ने मेरे अव्वा, अव्वा के अव्वा का नाम लिया। शर्म से मैं इतना-सा हो गया। लोगो ने खैर मनाई। मुझे लगा, लोगो ने मुझपर थूका। मैं सीख गया। मर्जी खुदा की है, खेल नसीव का। लेकिन इज्जत इन्सान की है। खुदा की यही मर्जी है कि इन्सान वह इज्जत रख सके।

अली कुइली ने कहा—तुम मसनवी मे, गज़लो मे इन वातों को गूथ रक्खो।

आदिल ने हसकर कहा—नसीव से जूझते-जूझते और खुदा की मर्जी समझते-समझते मैं थक गया, गजल-मसनवी कव वनाऊ? और फिर कविता मुझे नही आती। आप लोग इतना तो पढाते है। आज आपसे सच बताऊं, मुझे अच्छा नही लगता है। मुझे कुरान अच्छा लगता है। पढता हू, नकल करता रहता हू। उसीमे दिन कट जाता है। कभी-कभी हाथीदात पर तसवीर वनाता हू। अजमेर मे थोडा-वहुत सीखा था। मेरी खाहिश है, अकवर से लेकर अपने दादा तक सव वादशाह-शाहजादो की तसवीर वनाऊगा। अपने अव्वा और अम्मा की वनाऊगा। वही मेरी वादशाही होगी।

जरा चुप रहा। उसके वाद वोला—मेरी स्थिति झूले पर चढे हुए आदमी जैसी है। अभी ऊपर, अभी नीचे। चक्कर खा रहा हूं। जी-जान से पकडे हुए हू झूले को आखे वद किए। मुझे फुरसत कहा?

कुइली खा ने कहा—तुम मुशायरे मे आया करो। धीरे-धीरे सव अच्छा लगने लगेगा।

—आप चाहेगे, तो जरूर आऊगा।

—तुम्हे खुशी होगी?

—जरूर। आप जव कह रहे है, तो जरूर खुशी होगी। और खुदा की भी वही मर्जी होगी।

जाते वक्त आदिल ने कहा—कुरान की मैंने नकल की है। उसे ले आया हू। अर्ज है कि आप उसे देख दे।

—रख जाओ। जरूर देख दूगा।

उसकी लिखावट और मेहनत देखकर सुरैया हैरान रह गई थी। गन्ना ने अवाक् होकर उसे देखा। तमाम दिन उसके पन्ने पलटती रही। कुइली खां से कहा—अव्वाजान, मै यह कुरान लूंगी। आप शाहज़ादा से कह दे।

आदिल ने सुना तो बहुत खुश हुआ। कहा—इससे वड़ी खुश-नसीवी क्या होगी मेरी? गन्ना वेगम की गज़लो की तारीफ में सारा मुल्क पंचमुख है। शाहज़ादी जहांनारा, शाहज़ादी जेवुन्निसा गजल लिखा करती थी—गन्ना वेगम की गिनती उनके साथ होती है। उन्हें यह अच्छा लगा और लेना चाहती है तो इससे बढ़कर मेरा और क्या सौभाग्य हो सकता है!

गन्ना ने उसे अपनी मसनवी भेज दी थी। कपाल से उसे लगा-कर आदिल ने कहा था—वहुत खूव! इसे मै जतन से ताजिंदगी अपने पास रक्खूंगा।

गन्ना ने ऊपर ही कुछ पंक्तियां लिख दी थी—"दुनिया मे जितने भी फूल खिलते हैं, सवकी सुन्दरता और खुशवू खुदा की ही महिमा है। दुनिया मे जितने गीत, जितने सुर है, उन सवमे भी उसी खुदा की महिमा है। संसार में जो भी प्रेम है—इन्सान से इन्सान का, मा से वेटे का—उसमें भी उसी खुदा की महिमा है। उसी महिमा से गूजती है अजान—ला इला इलिल्लाह! गन्ना कहती है, अपने दिल को उसी महिमा से धो लो, तो गीतो में ही अजान सुनोगे।"

आदिलशाह 'वाह-वाह' कर उठा था।

गन्ना की गजलो मे इसीके वाद से नया सुर जागा था। पहले धुंधला, फिर धीरे-धीरे साफ।

वह सुर सवके ध्यान मे आया था, पर सवने शावाशी देते हुए कहा—अव तो गन्ना का हृदय खिले गुलाव जैसी खुशवू और वहार विखेरेगा।

आदिल वैठा सुनता और तारीफ करता। कभी-कभी कुइली खा कहता—अगले मुशायरे पर तुम्हारी गज़ल सुनने की उम्मीद किए बैठा हूं आदिल साहव!

आदिल को कुइली खां आदिल साहव कहने लगा था। आदिल

के अंग-अंग मे नौजवानी की छटा निखर रही थी। थोड़ी-बहुत दाढी-मूछे झाकने लगी थी। गले की आवाज भारी हो आई थी। पोशाक उसकी गरचे वही मलमल वाली थी, मगर धुप-धुप धुली। टोपी पर थोड़ा-बहुत काम। जूते मे हलकी जरी। मामूली-सी। उसमें सोना-रूपा नही।

आदिल साहब सुनकर हंसता। कहता—हुजूर, खुदा की सृष्टि मे सिर्फ फूल ही नही है। उन फूलो की खुशबू, उन फूलो का रस लेने के लिए, तारीफ करने के लिए खुदा ने ही मधुमक्खियो को बनाया है। भौंरो को बनाया है। मैं फूल नही मधुमक्खी हूं।

अगले मुशायरे मे गन्ना ने पर्दे के पीछे से गजल सुनाई। "जिब्राइल ने आकर फकीर से पूछा—फकीर, खुदा की महिमा को समझा है? फकीर ने मधु का पात्र और खुशबू की शीशी सामने रखकर कहा—समझने की क्या कहते हो स्वर्ग-दूत, मैंने सजोया है उसे। खुद उसका स्वाद लेता हूं, औरो को चखाता हूं। जिब्राइल ने पूछा—फकीर, तुम मधुमक्खी हो कि फूल से खुदा की महिमा बटोर रक्खी है? उसकी ओर कभी ताककर देखा है? तुम खुद क्या फूल की तरह खिल सकते हो? वह मधु और खुशबू तुममे विकसी है? तुम फूल होकर फूलो फकीर, तुम्हारे रस और वास से खुदा खुश हो उठे!"

महफिल मे 'वाह-वाह' होने लगी। कुइली खा ने कहा—अब तो गजल लिखे बिना नही रह सकोगे आदिल साहब!

उस रोज सुरैया ने बेटी से पूछा—यह तूने किया क्या गन्ना? हसकर गन्ना बोली—मधुमक्खी के छत्ते मे एक खरोच लगा दी!

—जरूरत क्या पडी थी?

—अगर झरे तो शहद थोडा झरे न!

—ऊ हू।

—क्या कहना चाहती हो?

—नौजवानी मे मैं तवायफ थी गन्ना। नौजवानी मे मन क्या खेल खेलता है, मुझे मालूम है। यह खेल मत खेलना बेटी! चदन घिसकर लगाने से बदन जुडाता है। लेकिन हिंदू लोग चदन की लकडी से लाश फूकते है। चदन-काठ के अगारे और मामूली अगारे मे कोई फर्क नही है। वह भसम लगाने से दुनिया पास से खिसक जाती है—

सार हो जाती है फकीरी। फकीरी मे खुदा की मेहरबानी कितनी है, नही जानती, लेकिन मा-बेटा, पति-पुत्र, भाई-बहन के आनन्द मे खुदा की जो मेहरबानी है, जिससे जी जुडाता है, उसमे वह तो नही है। आदिल हिन्दुओ की चिता का वही चंदन-काठ है। उसे जलकर खाक होना ही पडेगा ! वजीरे-हिन्दुस्तान नवाब सफदरजंग ने उसे जलाने के लिए ही जुटाया है। मुझसे यह समझ ले तू। देख लेना, कुछ ही दिनों मे अहमदशाह से वजीर की खटपट शुरू होगी। बहुत जल्दी। उस झगड़े मे लड़ाई की आग भड़केगी और चदन होकर उस आग मे आदिल को जलना ही होगा।

सुरैया की बात अक्षरश. सत्य निकली थी। साल-भर के अदर ही वज़ीर-बादशाह का झगडा शुरू हो गया।

नवाब सफदरजग उस समय रोहिलखड मे रोहिलो से लड रहा था। खोजा जावेद खा के सहारे अहमदशाह और ऊधमबाई दिल्ली चला रहे थे। बाज़ार की वसूली से रंगमहल और बादशाह का खर्च चल रहा था। इधर शोलापुरी वेगम और ऊधमबाई मे सफदरजंग को भगाने की साजिश हो रही थी। इसी बीच अब्दाली फिर काबुल से दिल्ली तक आया। मोइनुल मुल्क को वदी बनाकर लाहौर और मुलतान मे अफगानी झडा फहराकर अपने एक मनसबदार को उसने दिल्ली भेजा।

कलंदरबेग अफगानी ने अब्दाली की चिट्ठी बादशाह को देकर सिर ऊंचा करके कहा—हुजूर, काबुल, कंधार, अफगानिस्तान के बादशाह, दुनिया के रुस्तम अब्दाली ने अपनी तलवार और पजे के जोर से लाहौर और मुलतान पर कब्जा किया है। दिल्ली के बादशाह से उन्होने पचास लाख सिक्के की मांग की है। यह मांग खुदाताला के नाम से है। बादशाह या उनके कोई बदमाश ताबेदार अगर इससे नाराज़ हों, तो वे अब्दाली के गुस्से के शिकार होगे।

सारे दिल्ली दरबार मे ऐसा एक भी अमीर न था, जिसके गले से इसपर चूं भी निकले। सिर्फ दीवाने-आम और लाल किले के पत्थर के पायो में अफगानी की बाते प्रतिध्वनित होती रही। बादशाह अहमदशाह मारे डर के कांप उठा था। कलदरबेग को बड़ी ख़ातिर के साथ पचास लाख रुपये देकर अब्दाली की मांग मंजूर कर

ली थी।

कुमायू-रोहिलखड से लौटने पर वजीर ने सर पीट लिया—हाय रे हिन्दुस्तान का नसीब, इसका जवाब देने के लिए एक भी मर्द नही था ?—फिर कहा—रहे कहा से ? लाल किले का सूबेदार एक खोजा है।

झगडा यही से शुरू हुआ। अहमदशाह, ऊधमबाई, शोलापुरी बेगम, इतिजामुद्दौला और सफदरजग के धरमबेटे ने अफगानो को बुलाकर साठ-गाठ की। सिया वजीर सफदरजग के खिलाफ सुन्नियो की साजिश।

सफदरजग निरा अकेला। भरोसा एक सलावत खा, और लड़ाई का सहारा सिर्फ राजेन्दर गिरि गोसाई। लडाई मे उसे दिल्ली से हटना पडा। वल्लभगढ के सूरजमल से हाथ मिलाया। दिल्ली से फौज लेकर निकल गया। लखनऊ लौट जाने की सोची थी। उधर इंतिज़ाम वजीर बना। सफदरजग के खेमे से भागकर इमाद बादशाह से जा मिला।

सफदरजग को अकबर आदिल की याद आई। एक दिन उसकी चिट्ठी लेकर सवार लखनऊ पहुचा। चिट्ठी कुइली खा के नाम थी। लिखा था—"अकबर आदिल को बादशाह की इज्जत देकर फौज के साथ जितनी जल्दी बने, दिल्ली चले आओ। अहमदशाह की बादशाही खत्म होगी—शुरू होगी अकबर आदिल की बादशाही। लखनऊ की मसजिद मे हिन्दुस्तान के बादशाह कहकर खुतबा पढवाना। तोपो की सलामी देना और डौडी पिटवा देना—हिन्दुस्तान के नये बादशाह हुए अकबर आदिलशाह।"

वह खत कुइली खा ने सुरैया और गन्ना को दिखाया था। गन्ना की आखे दपदपा उठी।

और सुरैया देख रही थी। क्या देख रही थी, वही जाने।

आदिल साहब ने कहा—जनाब खानजमान साहब, यह है नसीब का खेल ! मगर खुदा की मर्जी क्या है, कह सकते है ?

कुइली खा ताकता रहा। उस जवान की बात का जवाब वह सोच-समझकर देता था। कहा—जहापनाह, अब से आप हिन्दुस्तान के बादशाह है। यही खुदा की मर्जी है !

—मेरी इन्सानियत की इज्जत, नमक का दाम क्या इससे अदा होगा वाला सुलतान साहब ?

कुइली खा चौका। कहा—जहापनाह !...

टोककर आदिलशाह ने कहा—नही, आदिल साहब कहिए। कुछ समय के लिए वादशाही को अलग रक्खे। अभी मैने उसे अपनाया नही है। आप मेरे शिक्षक है—मौलवी। उसी निगाह से देखते हुए मुझसे वात कीजिए।

कुइली खां ने कहा—आदिल साहब, तुम डर रहे हो ? सच-सच कहो। इसमें लेकिन डरने की कोई वात नही है। मै वादशाही का खेल नही खेलता। मगर समझता हूं। तमाम हिन्दुस्तान मे अभी भी नवाव सफदरजंग जैसा हिम्मत और कलेजेवाला आदमी नही है। इतनी वड़ी फौज भी किसीकी नही है। तुम डरो मत।

आदिल ने हसकर कहा—मेरे अब्बाजान वादशाही खानदान के शाहज़ादा थे। वे गद्दी का लोभ छोडकर हज को निकले थे। मेरी मां खेतिहर की वेटी थी। मगर वैसी मा कम होती है। अल्लाह का नाम लिए विना कभी किसीसे रोटी नही मागी। मैं निहायत मामूली झोपडे मे पैदा हुआ। उसके वाद अब्बा चल बसे। कहते गए, चगताई वश की इज्जत बचाने जा रहा हू। कहते थे, खुदा की मर्जी ! क्या होगा, यह भी खुदा जाने। उसके वाद मै आधा हिन्दुस्तान पैदल चला। गुलाम होकर दिल्ली में विकने आया। मुझे डर कैसा ? क्यों हो डर ? वह बात नही, आप हिसाव जानते है—मुझे हिसाव नही आता। कहिए तो, वादशाह होने पर अगर गरदन जाए तो नवाव साहब के नमक का वदला चुकेगा ?

कुइली खा ने कहा—आदिल साहब, तुम फकीरी लेकर दुनिया मे पैदा हुए हो—वादशाही ताज पहनकर जो पीडा होगी तुम्हें, उससे ज़िन्दगी-भर का देना चुक जाएगा। और तुम वादशाह होगे, तो वादशाही खुदा की मसजिद होगी।

उसी रोज शाम को आदिल खुद खानजमान के यहां आया। पोशाक उसकी वही मखमल की ही थी, सिर्फ माथे पर कीमती पगडी थी, पैरो मे ज़रीदार जूता। घोड़े पर चढ़कर आया था। साथ मे सवार थे। उस वक्त तक उसके वादशाह होने का एलान नही किया

गया था।

कुइली खा ने अदब से बात की। जहापनाह कहा। कहा—यह क्या अघटित आप घटा रहे है। कल घोषणा होगी। सारा देश जानेगा कि आप बादशाह हुए, और आज शाम को···? एक मामूली पाच-हजारी मनसबदार के यहा ऐसे···

आदिल साहब ने कहा—जी, मेरे आधे आज़ाद जीवन की परमायु आज ही तक है। कल से ही बादशाही कानून की ज़जीर का कैदी बन जाऊगा। आज जाने एकाएक क्या ख्याल आया, मैंने एक गज़ल बना डाली। आपको, बेगम साहबा को, साहबज़ादी को सुनाने चला आया। मेरी यह पहली कविता है और शायद आखिरी!

कुइली खा ने उस दिन अच्छा-बेजा का विचार नही किया। खुद जाकर सुरैया और गन्ना को बुला लाया।

उन लोगो ने आदिल शाह को कोर्निश की।

आदिलशाह ने बाधा दी—आप मेरी भी मा जैसी है बेगमसाहबा। और मै आज बादशाह भी नही हू। आज तो मैं एक नया शायर हूं—वाला सुलतान, सुरैया बेगम और गन्ना बेगम—हिन्दुस्तान के तीन मशहूर शायरो को अपनी पहली गजल सुनाने आया हू।

"रात के चाद को देखा है? नही देखा है। क्योकि तुम लोग कहते हो कि चांद हसता है। लेकिन मैने देखा है कि चाद हंसता नही है। चांद रोता है।! हंसते हुए ही वह रोता है। उस रोज देखा, बीतती रात की शांत धरती—चाद की धुली हसी से दुनिया मे जैसे बहार आई है। लेकिन देखा, घास की नोको पर, गुलाब की पंखुरियो पर अनगिनत आसुओं की बूदे टलमल कर रही है। कौन रोया? चाद ने कहा—मै। मैने अवाक् होकर पूछा—चाद, तुम रोते हो? चांद ने कहा—खुदा की मर्जी से रोना ही अपनी किस्मत है। दीन-दुनिया के मालिक ने मुझे ताप नही दिया है। मै हिम-शीतल हूं। मेरा ख्याल है, मेरी हंसी की शीतलता से गुलाब और भी ताजे रूप मे झलमला उठेगा। मगर हाय रे मेरा नसीब! मेरी चादनी की शीतलता से गुलाब की पंखुरी-पंखुरी पर मौत की छाया घनी हो आती है। एक-एक करके पंखुरिया झड जाती है। मैं इसीलिए रोता हू। रोता हूं और कहता हूं, मुझमे मौत का परस है, ऐ दुनिया, तुम रात को सो

जाना। मेरी छूत मत लगाना। गुलाब, रात का तुम मुह छुपा लो! मैं चुपचाप रोकर पश्चिम को चला जाऊ—अपने आंसू की आखिरी बूंद खुदाताला के दरबार मे देकर कहू—दयामय, मुझे जनम-भर के लिए छुट्टी दे दो!"

कविता के भाव मे, पाठ की लय मे ऐसा कुछ था कि तीनो श्रोता, यहां तक कि पूरे कमरे की हवा मानो दर्द से भारी हो गई। तीनो ने लम्बी उसासे भरी। गन्ना की आंखों में आंसू छलक आए। उसने शर्म के बहाने सिर झुका लिया था। पर सुरैया समझ गई थी कि वह रो रही है।

अली कुइली ने पूछा—आपको इतनी तकलीफ क्यो है, हिन्दुस्तान के भावी बादशाह?

आदिल ने कहा—खुदा की मर्जी से यही अपना नसीब है। जभी मैं दुनिया से दूर रहा हू, दूर ही रहना चाहता हू। फिर भी खुदा की मर्जी से इज्जत रखने के लिए आज मुझे हिन्दुस्तान के आसमान मे इजोरिया पाख की प्रतिपदा या दूज के चाद-सा उगना पड रहा है। महज दो घडी के लिए—फिर छुट्टी।

—क्यो, तुम पूर्णिमा के चाद होकर पारी पूरी नही करोगे, यह किसने कहा?

—अपनी तकदीर को मै जानता हू खानजमान साहब।

इतने मे प्रासाद मे रात के पहले पहर का घडियाल बजा। नक्कारखाने मे बिहाग के सुर का आलाप शुरू हो गया…

आदिल साहब सलाम करके उठ खडा हुआ। कल होगे बादशाह अकबर आदिलशाह गाजी—हिन्दुस्तान के मालिक—हिन्दू जिसे 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा' कहते है। मुसलमान कहेगे—अल्लाह के प्रतिनिधि। कल से आदिलशाह सबके 'आप' हो जाएगे, 'तुम' नही रहेगे। वह किसीको अभिवादन नही करेंगे, सब उन्हीको अभिवादन करेगे।

आदिल साहब ने हसकर कहा—आप लोगो से यही शायद अतिम विदाई ले रहा हू।

आदिल साहब चले गए। सुरैया की आखे गीली हो आईं—गन्ना बुत-सी खडी रह गई।

रात को सुरैया ने कुइली खां से कहा—नवाब सफदरजंग से कह-

कर आदिल साहब से गन्ना की शादी कर दो न। सुरैया ने कुछ दिन पहले खुद ही गन्ना से कहा था—गन्ना, उससे खेलने का अरमान मत रख। वह चदन चाहे हो, उसे घिसकर शरीर को शीतल नही किया जा सकता। उस चिता मे जलकर अगार हो जाएगी। फिर भी अभी सुरैया ने ऐसा सकल्प किया।

कुइली ने कहा—मैंने आदिल से कहा था। उस समय उसके बादशाह होने की बात नही थी। उसने कहा था, नही, नही, आपकी बेटी बहिश्त की हूर है—हिन्दू जिसे देवी कहते हैं, वह। मुझ जैसी किस्मतवाले से उसकी शादी नही हो सकती। तिसपर मेरी जिन्दगी का क्या, आज है, कल नही। अजमेर के इमाम ने मुझसे कहा था—तुझे बडा कष्ट उठाना पड़ेगा। खुदा को याद करके सब सहते जाना। उससे आनन्द मिलेगा। नही तो तुझे खुदकुशी करनी पड़ेगी।

कुइली ने जरा चुप रहकर कहा—उस नौजवान को इतना कोमल देख रही हो न, वह उसका बाहरी रूप है। अन्दर से वह लोहे से भी सख्त है।

सुरैया उदास होकर सो गई थी। सवेरे उसने बादी से सुना—गन्ना रात बिलकुल नही सोई। औंधी पड़ी फूट-फूटकर रोती रही।

बाद की बात हिन्दुस्तान के लोग जानते हैं। तीन साल पहले, ११७२ हिजरी मे, भारतीयो के चैत महीने मे एक दिन फौज सजाकर, बडे हाथी पर नवाब सफदरजग के सोने का हौदा कसकर, उसपर कमखाब-साटिन के मोती-झालरवाला चदोवा लगाकर अकबर आदिलशाह गाजी के नाम की घोषणा करते हुए लखनऊ से दिल्ली की ओर शाही जुलूस रवाना हुआ था।

नवाब सफदरजग ने दिल्ली मे एलान कर दिया—अहमदशाह की बादशाही खत्म हो गई। शाह गाजी आलमगीर के बेटे शाह कामबख्श के बेटे फीरोज़मद बहादुर के बेटे अकबर आदिलशाह हिन्दुस्तान के नये बादशाह है।

आदिलशाह ने कहा था—नसीब का खेल!

नसीब का खेल ही कहिए। दुनिया के सभी आदमी से नसीब खेलता है। लेकिन अभी उसके जी मे क्या आया, वही जाने। छोटी

बच्ची जैसे घरौंदे मे खिलौने लिए खेलती है, वह इस समय हिन्दुस्तान के बादशाह को ही लेकर खेलने मे मशगूल हो गया। इतना बड़ा देश यह हिन्दुस्तान, इतने-इतने लोग—इनके नसीब तो एक प्रकार से ठीक ही है कि ये भूखो मरेंगे, दु:ख उठाएगे, बीमारी से मरेंगे; राजा-नवाब लड़ेंगे और उसमे इनके घर जलेंगे, ये झुलसेंगे, खून होंगे, इनकी औरतें छिनेंगी, आधी उठेगी, नदी मे बाढ आएगी और उस बाढ मे ये मरेंगे। सभी तो बंधा-बधाया है। दुनिया के आदिकाल से ही तै है। मगर हिन्दुस्तान की बादशाही मे नसीब ने सबसे पहले शाहजहा को बेटे के हाथों कैद कराकर इस खेल की शुरुआत की। दाराशिकोह कत्ल हुआ था। शुजा मरा था। मुराद मरा था। औरंगजेब के हाथो उनकी तकदीर पुछ गई थी। उसके बाद से इतनी छीना-झपटी, इतनी मार-काट हुई कि देश के लोग अवाक् रह गए।

बादशाह ही नही बादशाह के साथ वजीर।

सैयद बंधुओं ने ही फर्रुखशियर को गद्दी पर बिठाया था और फिर उन्होंने उसकी आंखे निकालकर उसका काम तमाम कर दिया था। उसके बाद कै महीने में दो-दो बादशाह। कोई कहता है, वे लोग अपने-आप ही मर गए थे और कोई कहता है, सैयदो ने उन्हे जहर दे दिया था। उसके बाद मुहम्मदशाह। मुहम्मदशाह को बादशाह बनाया सैयद भाइयो ने। मुहम्मदशाह ने सैयदो को समाप्त कर दिया। मुहम्मदशाह को घायल कर गया नादिरशाह। उसके बाद अहमदशाह। अहमदशाह से वज़ीर सफदरजग की ठनी। सफदरजग बादशाह कहके आदिलशाह को सामने लाया।

आदिलशाह अपनी किस्मत को ठीक ही पहचानता था।

लाल किले मे वह घुस नही पाया। सफदरजंग की छावनी में कमखाब-मलमल-साटिन के पर्दे-चंदोवे तले लकडी की कुर्सी पर बैठकर सात-आठ महीने बादशाही की। हिंदुओ के वैशाख महीने से अगहन तक। बस। हो गई उसकी बादशाही! अहमदशाह से सफदरजग हार गया। नये वजीर इंतिजामुद्दौला ने सफदरजग को शिकस्त दी। आदिलशाह और सफदरजंग का नसीब—राजेन्दर गिरि को सफदरजग के सिपाही ने ही गोली से मार दिया। सफदरजंग का दायां हाथ टूट गया। वह लखनऊ चला गया।

कुइली खा ने सुरैया से कहा था—लौटते वक्त भी सफदरजंग आदिलशाह को वैसे ही हौदे और हाथी पर ले आया।

आदिलशाह वही पुराना आदिलशाह हो गया। उसके होठो की हसी एक दिन के लिए भी नही टूटी। उन कै महीनों की बादशाही मे भी नही···बादशाही का खेल खत्म हो जाने पर भी नही।

सिर्फ एक दिन। दिल्ली से लौटकर कुइली खां ने कहा था—सुरैया, आदिल की बादशाही सिर्फ एक दिन देखी थी। कुछ दिनो के लिए प्रकट होकर बादशाह आदिलशाह मानो उसी पुराने शात और उदास आदिलशाह मे सिमट गया। काली पहाडी की लडाई मे मनसबदार इस्माइल खा ने बेईमानी से अपने एक सिपाही के हाथो पीछे से राजेदर गिरि गुसाईं पर गोली मरवा दी। गिरि गुसाईं पीठ को मत्रपूत नही करता था। कहता था—दुश्मन को पीठ दिखाकर भाग आने से हमारे धरम से दोजख होगा। पीठ को मंतर से बाधने का मतलब है, दुश्मनों के बड़े मुकाबले मे पीठ दिखाकर भागने का इरादा होगा। पीछे भागने से ही मरना होगा। लेकिन गुसाई यह नही जानता था कि उसे अपने ही दल का कोई मारेगा। इस्माइल खा को गुसाईं पर बडा गुस्सा था। खबर जब आई तो एक आवाज सुनकर मै चौक उठा। सुरैया, लगा, जैसे कोई शेर दहाड़ उठा। नज़र उठाकर देखा, तो बादशाह! चेहरा लाल हो उठा है। हाथ उनका कमर की तलवार पर। चीख उठे—मनसबदार इस्माइल खा की गरदन कोई काटकर ला दोगे मुझे? कोई? वजीर चौका—चुप हो जाइए बादशाह। इस्माइल खा जान जाएगा कि राजेदर गिरि गुसाई नही है, तो अपनी फौज के साथ तुरत अहमदशाह से जा मिलेगा। चुप रह जाइए। उसके बाद हुक्म दिया—उस सिपाही का सिर काटकर बादशाह को दो लाकर। बादशाह आदिल चौंके! बोले—ठहरो। उन्होंने वज़ीर से कहा—बादशाह के रूप मे यही मेरा आखिरी हुक्म है वजीर साहब—वजीर के नाते इसके पालन का भार आपपर रहा, वह यह कि सिपाही के बदन को कोई छुए नही। गिरि गुसाईं की मौत के कसूर की उसकी सारी ज़िम्मेदारी मैंने माफ कर दी।—कहकर वह अपने तंबू मे चला गया।

नवाब सफदरजग नाराज हुआ। उसने सोचा था। उस सिपाही

का हाथ पहले कटवा लेगा, फिर गरदन कटवाएगा। कहेगा, निशाने की चूक से जो इस तरह अपनी ही तरफ के आदमी को मारता है, हाथ काट लेना ही उसकी सज़ा है। गिरि गुसाईं की फौज उसकी गरदन तो उतार ही लेगी। लेकिन आदिलशाह ने माफ कर दिया। सफदरजग नाखुश तो हुआ, लेकिन वह बात उसने मानी थी।

नतीजा इसका अच्छा नहीं हुआ।

गुसाई की फौज फिर वैसी लड़ी नही। बिलकुल अलग से लड़ती थी। अपने पीछे नवाबी फौज को नही रहने देती थी।

उसके बाद आदिल वही पुराना आदिल हो गया सुरैया। वही पुरानी बात। वैसी ही मीठी हंसी।

जयपुर के राजा माधोसिंह ने सफदरजंग से तसफिया कर लिया। सफदरजग ने कहा—आदिलशाह, तुम्हारे लिए मैंने जागीर की बात कही है।

आदिल ने कहा—मै शाह-बादशाह नही हूं नवाब साहब—मै वही आदिल हू जो गुलाम होकर बिकने के लिए आया था। आपकी मेहरबानी से मुझे बहुत कुछ मिला। आपके नमक का बदला चुकाने के लिए मैंने लटकती तलवार के नीचे नकली बादशाही की। मुझपर एहसान का और कर्ज न चढाएं नवाब साहब! जागीर और तनखा मुझे नही चाहिए। मैं बस एक ही चीज़ चाहता हूं, छुट्टी।

सफदरजग की भी आखे छलछला रही थी। उसने फिर भी आदिल को नही छोड़ा। वही कमखाब से सजे हौदे पर बिठाकर ले आया। आगरे ले जाकर मनसबदार अमरसिह के हाथो सौंपकर कहा—इसे किलेदार के ज़िम्मे कर दो।

मैं समझ गया कि आदिल कैद कर लिया गया।

मैंने आदिल की तरफ देखा। उसने हसकर कहा—मर्जी खुदा की, खेल नसीब का! सलाम नवाब साहब, सलाम वाला सुलतान साहब। यही मेरा नसीब है। मै यह जानता था।

नसीब ही कहिए। नन्ही-मुन्नी के खिलौने-खेल-सा नसीब बादशाह-वज़ीर से खेल रहा है। आगरे के किले मे आदिलशाह ही कैद नही हुआ। दो-तीन महीने बीतते न बीतते नसीब ने अहमद-

शाह के हाथो वजीर इन्तिजामुद्दौला के खिलौने को तोडा। नाटे कद का आदमी, भूरी आखे, बाल का रग कुछ लाल-सा। इमादुल-मुल्क वजीर बना। नसीब ने इमाद के ज़रिये इस बार बादशाह खिलौना अहमदशाह को तोडा। उसको दोनो आखो का अधा बनाकर पुराने किले के उसी कमरे मे दाखिल कर दिया। उसके साथ गई उसकी वही तवायफ मा—ऊधमबाई।

नसीब ने इमाद को भेजा—वह नया बादशाह-खिलौना ले आया—शाहजादा मैजुद्दीन। बहादुरशाह के बेटे का बेटा। नकीब ने घोषणा की—बादशाह आलमगीर गाजी।

अकबर आदिलशाह ने आगरे के किले मे ये खबरे जरूर सुनी होगी और उसने जरूर कहा होगा—मर्जी खुदा की, खेल नसीब का। अहमदशाह इज्जत नही बचा सके। इमाद की फौज के डर से वे पेड़ की जड मे छिप गए थे। सैनिक उन्हे खीचकर उसी घर मे ले गए, जहा फर्रुखशियर मरा था, उससे पहले जहादारशाह, लाला कुवर मरे थे। मुह को ऊनी चादर से ढककर ऊधमबाई को भी उसी घर मे डाल दिया गया था। अहमदशाह चीख उठे—पानी! पानी!

इमाद के लोगो ने बादशाह के सामने मिट्टी के एक गदे बर्तन मे थोडा-सा मैला पानी बढा दिया था!

नसीब खिलखिलाकर हस पडा था!

इसके बाद आदिलशाह के नसीब का खेल। वह भी अजीब! एक दिन कुइली खां ने ही कहा था—जरा खुदा की मर्जी तो देखो सुरैया! खबर मिली कि आगरे के किले मे आदिलशाह को चेचक हुई है! ऐसी भयानक हुई कि डर के मारे लोगो ने उसे किले के बाहर एक झोपडे मे डाल दिया है। एक बर्तन मे कुछ रोटिया और थोडा-सा पानी सिरहाने के पास रख दिया है। वह बचेगा नही शायद।

सुरैया का जी यह सुनकर खराब हो गया था। मा-बाप के सामने ही गन्ना की आखो से टपटप आसू चू पडे थे।

सुरैया ने कहा—गन्ना, उसे भूल जा। भूल जा।

गन्ना सिर्फ रोई थी।

महीने-भर के बाद कुइली खा ने बताया—खुदा की मर्जी अजीब

है ! उस झोपड़े मे अकेला पडा-पडा जी गया आदिलशाह । मरा नही । लेकिन कहा वह चला गया, कोई नही जानता ।

आज इतने दिनो के वाद सुरैया ने इकबाल से कहा—खोज करके वता सकते हो इकवाल, आदिलशाह कहा है ? पूछ देखो, किसीने ऐसे फकीर को देखा है, जो 'मर्जी खुदा की, खेल नसीव का' कहता चलता है ! चेहरे पर चेचक के दाग है। नही तो मैं यह कहती कि देखने में वैसे खूवसूरत अमीर भी कम ही है। वह लखनऊ के नवावजादा शुजाउद्दौला से भी सुदर है ।

५

पानीपत मे एक कतार से चार दरगाहे । उत्तर से दक्खिन । वावा हाफिज महल की दरगाह सवसे उत्तर मे । उससे थोड़ा पूरब हटकर वावर की वनवाई हुई मसजिद । लडाई जीतने के बाद वावर ने यह मसजिद बनवाई थी । उसी मसजिद के किनारे एक कम उमर का फकीर वैठा था । वैठा-वैठा वह देख रहा था । वादशाही सड़क से वादशाही फौज चली जा रही थी । चारो ओर धूल और धूल । घोड़ो की टापो, हाथियो के पैरो, सिपाहियों के जूतों की ठोकरो और गाडी के पहियो से कुडली बनाती हुई धूल ऊपर को उठ रही थी । दिल्ली का वजीर इमादुल मुल्क लाहौर जा रहा था ।

इमाद महज वीस साल की उम्र मे हिन्दुस्तान का वजीर बना। अपनी अक्ल के जोर से वह नसीव से मनमाना खेल खेल रहा था।

छः साल पहले, वाप के मरने पर पद्रह-सोलह साल का वह लडका सफदरजग के यहा रात-दिन रोया था और पद्रह दिनो तक उसके पैरो के पास घुटने टेककर हाथ जोडकर कहता रहा था कि आप मेरे वालिद के दोस्त रहे है । भाई के समान । आप मेरे चाचा हैं—धरमवाप है । आपके सिवाय मेरा कोई नही है ।

वजीरे-हिन्दुस्तान नवाव सफदरजग ने उसे अपना धरमवेटा बनाया था । लड़के से पगडी-वदल कराई और खुद वेगम के पास

ले जाकर शरबत-मिठाई खिलाकर भरोसा दिया। बादशाह के दफ्तर मे उसे मीरबख्शी की नौकरी दिलाई। उस समय उसका नाम साहेबुद्दीन था। इमादुल मुल्क वह तब नही बना था।

पद्रह-सोलह साल का वही साहेबुद्दीन चार साल मे आज हिन्दुस्तान का वजीरे-आजम अमीरुल मुल्क फिरोजजग इमादुल मुल्क गाजीउद्दीन बहादुर बन गया! बादशाह का सर्वेसर्वा!

ईरानी, तुरानी, अफगानी अमीरो से कद का छोटा। चेहरे मे जबर्दस्त होने का खास कोई लक्षण नही। थी सिर्फ दो आखे। भूरी आखे—वनबिलाव जैसी।

छाती पर कुरान झूलता होता। मुह मे कुरान की आयते रहती। शराब नही छूता। औरतो की तरफ नही ताकता। दुनिया मे कोई भी काम करके कभी पछताता नही। और ऐसा कोई काम ही नही, जिसे वह न कर सकता हो। अहमदशाह ने उसके हाथ मे कुरान देकर कहा था—शपथ करो कुरान लेकर कि मेरी कोई बुराई नही करोगे। उसने शपथ खाई। बादशाह ने उसे वजीर का कलमदान दिया सोने का। उसी कलम से कुछ कागजो पर सही बना करके उसने अपने मनसबदार को भेजा कि रंगमहल से पकडकर अहमद-शाह को उसी हाजत मे पहुचाओ, जहां दूसरे बादशाह कैद रहते आए है। बादशाह की आखे निकाल लेने का हुक्म दिया। इसके लिए उसे जरा भी परेशानी न हुई; चेहरे पर, कपाल पर जरा देर के लिए भी कोई लकीर नही पडी। वही इमादुल मुल्क!

इमादुल मुल्क कट्टर सुन्नी था, मगर रोहिला अफगानो का बडा भारी दुश्मन। इसलिए कि रोहिले हिन्दुस्तान, काबुल-कधार मे दुरानी शासन देखना चाहते थे। काफिरो से उसे नफरत थी, मगर पेशवो से साठ-गाठ करके अताजी को दिल्ली मे रक्खा था। मराठा सेना को तनखा देकर पोसता था। वह सेना उसके पीछे रहती थी। फर्रुखाबाद का अहमद खा अफगान उसका दोस्त था। वह उन अफगानो मे से नही था, जो हिन्दुस्तान मे दुरानी शासन का सपना देखते थे। चाहे जैसे हो, हिन्दुस्तान को वह फिर से ऊपर उठाएगा। चगताई वश के किसी शाहजादे को बिठाकर बादशाह पर बादशाही करेगा। पजाब को दुरानी अहमदशाह अब्दाली ने चार साल पहले

ही दखल कर लिया था। अब्दाली ने मोइनुल मुल्क मीर मन्नू को हराकर लाहौर पर कब्जा किया था। मीर मन्नू ने लाख निहोरा किया, दिल्ली से न तो उसे फौज की मदद मिली, न रुपये की। वह हार गया। अब्दाली ने पकड़कर उसे सामने बुलाया—अब ? मीर मन्नू ने तुरन्त कहा—दुरानी बादशाह अगर बनिया होगे, तब तो मुझे गुलामो के व्यापारी के हाथ बेच देगे; अगर कसाई होगे, तो कत्ल करेगे और अगर बादशाह होगे, तो मुझे माफ करेगे। क्योकि मैं उनके लिए लड़ा, जिनका नमक खाता था।

बादशाह खुश हुआ था। उसने उसे माफी दी थी। बादशाह और भी खुश हुआ मीर मन्नू की बेगम मुगलानी के सेवा-जतन से। इतना खुश हुआ कि मुगलानी को उसने धरमबेटी बनाया और मीर मन्नू को ही लाहौर का सूबेदार बना गया। मीर मन्नू नमकहलाल और ईमानदार मुसलमान था। वह चगताई वंश के बादशाह को उसका पावना दिया करता था। लाहौर और मुलतान के सूबे को छोडकर पजाब मे हिन्दुस्तानी अधिकार की और उधर लाहौर से पेशावर तक दुरानी अधिकार की रक्षा करता था। इमादुल मुल्क मीर मन्नू का अपना भानजा था।

इमाद ने अपने ईमानदार मामा को और भी गाढ़े अपनत्व से बाधकर अपनी तरफ करने की सोची। उसने मुगलानी बेगम की बेटी से ब्याह करने का प्रस्ताव भेजा। मन्नू आप सुन्नी था। उसने अपने जवान भानजे की आश्चर्यजनक उन्नति देखी। वह शराब नही छूता। औरतो की ओर नजर नही उठाता। यह सब सुन-सुनाकर आठेक महीने पहले इस प्रस्ताव को खुशी-खुशी मजूर कर लिया था। लेकिन मीर मन्नू अचानक गुज़र गया। वह शादी आज तक हो नही पाई। रिश्ता तै था। तब तक पजाब मे गोल-माल शुरू हो गया। मीर मन्नू के मरने के बाद पजाब की सूबेदारी उसके तीन बरस के बेटे मुहम्मद को दी गई। मुगलानी बेगम रही उसकी अभिभाविका। मुगलानी बेगम मे, कहा जाता था, बडी योग्यता थी, फिर दुरानी बादशाह उसे धरमबेटी कहता था। इधर वह इमादुल मुल्क की होनेवाली सास थी।

मुगलानी बेगम के चलते ही गडबडी शुरू हुई थी। मीर मन्नू के मरने के बाद ही बेगम कतई दूसरा रूप लिए प्रकट हुई। वह रूप

एक ओर से जितना घिनौना था, दूसरी ओर से उतना ही आश्चर्य-जनक। सवेरे वह परदे की आड मे बैठती—परदे के इस पार खोजा और दीवान वख्शी रहते—दूसरे-दूसरे कर्मचारियो को तलव किया जाता। सवकी वात सुनकर वेगम खोजा की मारफत हुक्म दिया करती। सूवेदारी मुहर उसीके हाथ रहती।

और दूसरी ओर वह चलाया करती महफिल। नवाव-वादशाह की तरह वैठती—वाईजी-तवायफो का मुजरा होता रहता। शीरा पीती। प्यार के दो-चार लोगो को पिलाती। प्यार के उन आदमियों मे कुछ तो अमीर थे और कुछ वडी ही छोटी कौम के—वंदा-गुलाम।

लाहौर के क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, सभी अमीर-उमरावों का सर शर्म से झुक गया। जव सहा नही गया, तो आखिर अमीर भिखारी खा के नेतृत्व मे लोगो ने वगावत की। वेगम को वेगम की ही अपनी वहन के यहा नजरवद कर दिया और मिल-जुलकर वे पंजाव का शासन चलाने लगे। मगर मुगलानी वेगम इससे दवी नही। उसने अपने धरमवाप अव्दाली के पास अपने मामा को कावुल भेजा और इधर आदमी भेजा अपने होनेवाले दामाद इमादुल मुल्क के पास। इमाद उस समय रोहिलखड और जाट राजा सूरजमल से उलझा था। आ नही सका। लेकिन अव्दाली के लोग आए। वागियो को दवाया और वेगम को फिर से सूवेदारी महल मे ले जाकर विठाल दिया। वेगम ने वेरहमी से भिखारी खा को वाव लाने और लाठी से पीटने का हुक्म दिया था। लाठी से पीट-पीटकर ही उसको मरवा डाला। उसके वाद और भी वौखला गई वह। और भी घिनौने रूप से ऐयाशी शुरू कर दी। इस वार तो इस हद तक पहुच गई कि उसके मामा ने ही उसे कैद कर लिया। इस वीच तीन साल का वह वच्चा सूवेदार मर गया। मुगलानी ने फिर इमाद के पास आदमी भेजा। सदेशा भेजा कि आकर उमधा को शादी करके लिवा ले जाओ। मेरा उद्धार करो।

इमाद लाहौर जा रहा था। वच्चा सूवेदार—उसका ममेरा भाई मुहम्मद मर गया। लाहौर अव उसके हाथ आएगा। उमधा मीर मन्नू की इकलौती वेटी थी। लेकिन भीतर ही भीतर इमाद मे एक दूसरा सुर भी छिड गया था। गन्ना वेगम के लिए वेहद लोभ वढ

गया था।

यही कुछ महीने पहले इमाद ने रोहिलखड मे रोहिला अफगानो से लडाई लडी थी। लडाई जीतकर कई दिन अपने दोस्त नवाब वगाश के यहां आराम किया था। अपने दोस्त हिन्दुस्तान के वजीर की खातिरदारी मे उसने महफिल बुलाई। उस महफिल मे एक तवायफ ने वडी मीठी गजल सुनाई। सुनकर इमाद का मन भी आसमान जैसा उदास और नीला हो उठा था। खूब तारीफ की।

वगाश ने तवायफ से कहा—तो गन्ना वेगम की और भी दो-चार गजले सुना दो!

—गन्ना वेगम?

वंगाग ने कहा—तो क्या वजीर साहव ने दिल्ली मे ये गजले और गन्ना वेगम का नाम नही सुना है?

तवायफ ने तव तक दूसरी गजल शुरू कर दी थी। "बुलवुल वगीचे में सीटी वजा-वजा के मात गई। कहा—वगीचे में गुलमुहर फूले। वगीचे को लाल कर दिया और रगीन नशा-सा ला दिया। आखो मे सुरूर-सा आ रहा है। आसमान मे सूरज की रोशनी तेज होकर ढूढ रही है कि कमल का फूल कहां फूला! लेकिन ऐ वुलवुल, तू ऐसे वक्त कहा है? गन्ना कहती है, अरी ओ वुलवुल, तू अपनी सीटियो मे माती है। साथी वुलवुल के लिए वेचैन हो रही है। मगर तुझे पता भी नही कि तेरी सीटी सुनकर पीछे से जाल लिए शिकारी आ रहा है—अभी-अभी पकड लेगा तुझे। उड जा। उड जा तू।"

वजीर ने पूछा—वाला सुलतान अली कुइली की वेटी गन्ना?

—हा। सुरैया वेगम उसकी मा है। वाप-मा दोनो कवि है।

—वाला सुलतान तो गुजर गया। ये लोग रहते कहा थे? लखनऊ मे?

—नही, अपनी जागीर मे चली आई है।

—वदमाश शुजाउद्दौला शायद शिकारी है, है न?

—मुमकिन है।

—हू।

इसके वाद इमाद चुपचाप गजल सुनता चला गया। दूसरे दिन सुवह की नमाज के वाद वही गजल गुनगुना रहा था। वगाश ने

कहा—लगता है, गन्ना की गजल गा रहे है।

—हा दोस्त। बडी अच्छी गजल है। 'बगीचे मे गुलमुहर फूले। बगीचे को लाल कर दिया और रगीन नशा-सा ला दिया।' मेरा भी दिल रगीन हो गया। वाह!

बगाश ने कहा—बाला सुलतान ने मुझे एक मसनवी भेंट दी थी। उसमे बाप, मा, बेटी तीनो के अशआर है। बहुत ही अच्छे। वह बिलकुल गन्ना के हाथ की लिखी हुई है। दिखाता हू।

इमाद देखकर मुग्ध हो गया। अचरज से कहा, यह तो देखता हू कि ज्यादातर खुदा के दरबार मे अर्जिया है।

—हां। लडकी वह बडी भली है।

—देखने मे कैसी है? आपने अपनी आखो देखा है?

—देखा है। गुलाब नही कहूगा। क्योकि मेरी नजर मे कमल फूलो मे सरताज है।

—लखनऊ का नवाब सिया है। और यहा से कुछ दूर पर अयोध्या—उधर मथुरा और वृन्दावन। नवाब ने इसी हवा मे सास ली है न, इसीलिए नजर बदल गई है।

बगाश ने हसकर कहा—लेकिन वजीर साहब, बादशाह अकबर से लेकर कट्टर सुन्नी आलमगीर बादशाह तक के हरम मे ईरानी, तुरानी गुलाब के साथ-साथ कमल को आदर की जगह मिली है। निजामशाही मे उसके सबूत की कमी नही।

इमाद ने उसका जवाब नही दिया। सिर्फ यह कहा कि नवाब साहब, गन्ना बेगम गुलाब है। मैने सुना है, उसकी मा सुरैया खाटी मुगलानी है। और बाला सुलतान ईरानी। तो क्या यह उस नशेबाज बदतमीज शुजाउद्दौला के हरम मे चली जाएगी?

—वजीर साहब का हुक्म हो तो सुरैया बेगम से कहू?

—कहो।—जरा चुप रहकर कहा—लाहौर की मुगलानी बेगम के किस्से सुने है?

—कुछ-कुछ सुना है।

—मै अभी लाहौर जा रहा हू। ख्याल रखना कि मेरे लौट आने तक गन्ना शुजाउद्दौला के हाथ मे नही जाए।

× × ×

दूसरे ही दिन वह लाहौर रवाना हो गया। रास्ते मे पानीपत मे पीर बाबा अली कलंदर की कब्र पर दुआ करने के लिए रुका। कलदर शरीफ के एक ओर फौज की छावनी पडी। वजीर का हाथी शरीफ से कुछ दूर बादशाही सडक पर खड़ा हुआ। वहा से वजीर पैदल चलकर शरीफ तक जाएगा।

दोनों तरफ कतार में भिखमंगे खड़े हो गए। सलाम किया। वजीरे-हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद का नारा बुलद किया। और रोटी-कपडे मागे। मेहरबान, गरीबपरवर!

एक सिपाही ने पुकारकर कहा—ऐ, बैठ जाओ सब। वजीर साहब पहले दरगाह पर नमाज पढ़ेंगे, फिर कुछ।

सबने फिर कहा—वजीरे-हिन्दुस्तान जिन्दाबाद।

धूप-गुग्गुल, लोहबान जलाकर दरगाह पर नमाज पढी, दुआ मांगी। उठकर दरगाह के चौतरे पर खडा हुआ और हुक्म दिया कि इन सबको एक-एक सिक्का और एक-एक धोती दो।

सिपाही ने पुकारकर कहा—ऐ, सुन लो। वजीर साहब का हुक्म हो गया। सबको एक-एक सिक्का, एक-एक धोती मिलेगी।

भिखमगे वैसे उत्साहित न हुए। इससे पहले वे हिन्दुस्तान के वजीर-बादशाह से इससे कही ज्यादा पा चुके थे।

फिर भी सबने जय-जयकार किया।

वजीर का बख्शी थैली लिए बढ़ आया।

वजीर का हाथ बडा सख्त है। सोना-चादी हथेली पर आए, तो मुट्ठी अपने-आप कस जाती है!

अपनी इसी खैरात पर वजीर बेहद खुश था। एक-एक सिक्का क्या थोडा है? रुपये मे तीन-चार मन गेहूं मिलता है—मन-डेढ मन दाल मिलती है। हिसाब से चले तो एक रुपये में पूरा महीना निकल जाए। वह उन अभागो की नज़र और चेहरे की खुशी देख रहा था।

हठात् उसकी नजर पड़ी—पेड़ तले एक फक़ीर बैठा है। वह जहा का तहां बैठा है। दरगाह में घुसते वक्त भी उसे वैसा ही बैठा देखा था। उसे थोड़ा अचरज हुआ। अपनी भूरी आंखो की पैनी निगाह से गौर किया। उमर फकीर की ज्यादा नही है। रंग गोरा है, मगर मैला पड़ गया है। रूखे बाल। रूखी दाढी-मूछ। चेहरा

कैसा तो। आसमान की ओर देख रहा है। पूछा—वह कौन है वहा ?

दरगाह के एक मुल्ले ने बताया—वह एक फकीर है। लगता तो है कि किसी बड़े घराने का। कच्ची उम्र है। दीवाना-सा लगता है खुदावद। भीख-वीख नही मागता। खुद कोई दे देता है तो लेता है—नही तो नही। दरगाह से रोटी मिलती है, वही खाता है।

वजीर ने एक नासाकची से कहा—उसे बुला तो।

नासाकची दौड़ा गया।

दरगाह के मुल्ले ने कहा—नमाज़ के समय के सिवा खास कभी नही हिलता है वहा से। बुलाने से भी कहता है—मुझे तो कोई ज़रूरत नही है। उसकी एक ही रट है—मर्जी खुदा की, खेल नसीब का, इज्जत इन्सान की।

वज़ीर ने हैरान होकर मुल्ले की ओर गरदन फिराई—क्या कहता है ?

कहता है—मर्जी खुदा की, खेल नसीब का, इज्जत इसान की !

—ओ। इमाद का चेहरा सख्त हो उठा था। जरा देर चुप रहकर बोला—चेचकरू है ?

—जी, गरीबपरवर। बादशाही मसजिद के किनारे बैठा रहता है। वही उसका अड्डा है। और कही नही जाता। कही रोटी भी नही मागता।

—हू।

नासाकची वापस आया। बोला—खुदावद, वह फकीर कहता है, मुझे तो किसीसे कोई काम नही है। मैं क्यो जाऊ ? मैंने कहा, तेरी गरदन जाएगी। उसने गरदन बढ़ाकर कहा—ले जाओ गरदन। क्या करें ?

—उसे गिरफ्तार करके तबू मे ले आ।

फकीर का हाथ बाधकर नासाकची ले आया। वज़ीर ने कहा—तुम्हारा नाम क्या है ? झूठ मत बताना। तुम फकीर बने बैठे हो।

उसने हसकर कहा—मैं झूठ नही बोलता वज़ीर साहब। मेरा नाम अकबर आदिल है।

—हा । शुजाउद्दौला का वही खरीदा हुआ गुलाम, जिसे नवाव सफदरजग ने नकली वादशाह वनाया था !

—असल-नकल की मैं नही जानता जनाव । वादशाह वनकर काठ की कुर्सी पर मैंने सात महीने दरवार किया है । लेकिन कभी किसीको कोई हुक्म नही दिया ।

—यहा कैसे आ गया ? किस फिराक मे घूम रहा है ?—एका-एक तुनककर वजीर ने वड़े रूखे शब्दो मे पूछा ।

फकीर जरा चुप रहा । अपने को सभालकर वोला—वजीर साहव, मुझे 'तू' कहने से भी इज्जत नही जाएगी । क्योकि फकीरी अपनाने के साथ ही साथ मैंने सव कुछ राह की धूल मे फेक दिया है । पर आपको 'तू' कहूं तो आपकी इज्ज़त चली जाएगी—वह मेरी गरदन उतार लेने से भी नही आने की ।

—खवरदार, गुलाम कही का !

—मैं गुलाम वदा ज़रूर हूं । गुलाम वेचनेवाले व्यापारी मुझे वाज़ार में लाए थे । लेकिन खवरदार मुझे नाहक ही कर रहे हैं वजीर साहव । मैंने तो आपके नासाकची के ही सामने अपनी गरदन वढा दी थी ।

ऐन वक्त पर तंवू के वाहर एक शोर हुआ ।

इमाद चौका ।—क्या है ? शोर कैसा ?

एक मुशी ने आकर कहा—इस फकीर को पकडा गया है, इसलिए भिखमगे हो-हल्ला कर रहे हैं ।

—इससे उनका क्या वास्ता है ?

—सो नही मालूम हुज़ूर, कह रहे हैं—उसे छोड़ दो । छोड दो ।

फकीर आदिल ने कहा—वे लोग मुझे प्यार करते है वज़ीर साहव ।

—प्यार करते है ?

—जी । मैं उन्हे प्यार करता हू, इसलिए वे मुझे प्यार करते है ।

—उन्हे हटा दो, वरना सिपाही आकर उन्हे भगा देगे । कह दो, फकीर मेरा कैदी है । वह एक मक्कार है, भागा हुआ गुलाम ।

फकीर आदिलशाह के वधे हाथ झट आगे वढ आए वजीर की तरफ । मगर नासाकची ने पकड लिया ।

वजीर ने कहा—इसे कोडे लगाओ।

नासाकची बाहर से घोडे का चाबुक ले आया। वजीर ने कहा—पाच कोडे !

आदिलशाह की पीठ का कपडा हटाकर उसे कोडे लगाए। चाबुक धंस-वस गए पीठ फटकर। लेकिन आदिल दात पर दात दबाए रहा। चार कोडे के बाद वह लडखडाकर माटी पर औंधे मुंह गिर पडा। मगर चीखा नही ! वजीर ने कहा—लगाओ। नासाकची आगा-पीछा कर रहा था। एक कोडा और मारा। आदिलशाह औंधा-सा पडा रहा कुछ देर। वजीर ने कहा—उसकी झोली झाड़ो तो देखू क्या है।

नासाकची ने झोली झाडी। दो पोथिया थी। कुछ सिक्के तांबे के। एक फकीरी अलखल्ला। एक पायजामा। एक कलम और एक मुहबद दवात। कागज की पुडिया मे थोडा-सा धूप-लोहबान। थोडी-सी दालचीनी-इलायची।

वजीर ने पोथी उठा ली।

पन्ना उलटाकर आदर मे माथे से लगाया। फिर पन्ना पलटने लगा। कुरान। बडे अच्छे हरूफ और शुद्ध-शुद्ध लिखावट। वजीर हैरान रह गया। कहा—ऐ आदिलशाह !

आदिलशाह अब उठ बैठा।

वजीर ने पूछा—कुरान की यह नकल किसने की है ? तुमने ? यह 'तुम' शायद आप ही आप निकल आया।

—हा।

—यह लिखावट तुम्हारी है ? जिल्द का नक्शा भी तुम्हीने बनाया है ?

—हा।

कुछ और उलट-पुलटकर कुरान को एक परात पर रख दिया। उसके बाद दूसरी पोथी खोली। हैरत मे आकर कहा—मसनवी।

ऊपर ही लिखा था—"दुनिया मे इतने फूल खिलते हैं। उनका रूप और खुशबू—सब उस खुदा की ही महिमा है। दुनिया मे जितने गीत है, जितने सुर—सबमे वही, उस खुदा की ही महिमा है। दुनिया मे जितना प्रेम है—इन्सान से इन्सान का, मां से बेटे का—उसमे भी वही खुदा की ही महिमा है। इसी महिमा के सुर से उठती है

अजान—ला-इला-इलल्लाह—। गन्ना बेगम कहती है…

वज़ीर ने आगे नही पढा। भवे सिकोड़कर कहा—यह तुझे कहा मिल गया ?

—आप जब तक मुझे 'तू' कहेगे, मैं जवाब नही दूगा।

वजीर चौका। गुस्से से चौका। एक चीख-सी आवाज की। कहने जा रहा था कि और दस कोडे लगाओ कि नजर आया, आदिल के सामने बडे अच्छे-से रूमाल मे मुडा हुआ कुछ पडा है। नासाकची से कहा—उसे उठाओ।

आदिल के कुछ समझने से पहले ही नासाकची ने उठा लिया। वह आदिल के अलखल्ले मे कही रक्खा था। जब वह औंधा गिर पड़ा था, शायद उसी समय गिर पड़ा। गोल पेटी-सा था।

वजीर ने उसे हाथ मे लिया कि आदिल कह उठा—दुहाई अल्ला की, वह मुझे दे दीजिए! उसमे मेरे बाप-दादे, पुरखो की तसवीरे है। और कुछ नही। लखनऊ मे सफदरजंग के यहा मैंने अपने से बनाई है।

वज़ीर ने कुछ नही सुना। खोलकर तसवीरे निकाली। देखकर बडी अच्छी लगी तसवीरे। हाथी के दात पर बनी तसवीरे बडी सुन्दर थी।

अकबरशाह। जहागीरशाह। शाहनशाह शाहजहा। बादशाह आलमगीर गाजी। अच्छी बन पडी थी। कहा—तुमने बनाई है ?

वजीर ने फिर 'तुम' कहा।

आदिल जवाब देने जा रहा था। उसके पहले ही वजीर ने पूछा—यह किसकी तसवीर है ? कौन है यह ? एक अनोखी सुन्दरी की तसवीर! अनोखी! यह तसवीर किसकी है ?

उसके पास ही एक दूसरी तसवीर।—यह किसकी है ?

—मेरे अब्बाजान की।

—शाहजादा फीरोजमद की ? तो, यह तुम्हारी अम्मीजान की तसवीर है ?

—नही। वह एक कुमारी की तसवीर है। खानजमान अली कुइली खा की बेटी…

—गन्ना बेगम की ?—उसके मुह से बात छीनकर वजीर ने कहा—यही है गन्ना बेगम ? वल्लाह! गन्ना बेगम!

उस तसवीर को लेकर वजीर उठ खड़ा हुआ। बाकी तसवीरें उसकी गोदी मे फेंककर तबू मे चक्कर काटने लगा। कुछ देर घूमने के बाद आदिल से पूछा—इस छोकरी से क्या नाता है? मुहब्बत है इससे?

—नही।—आदिल ने हसकर गरदन हिलाई।

—फिर? तेरे पास यह तसवीर क्यो है?

आदिल चुप हो गया।

—ऐ!

फिर भी आदिल ने जवाब नही दिया। समझदार वजीर ताड़ गया। बोला—बोलो। बिना बताए रिहाई नही मिलेगी। मुहब्बत है?

हसकर आदिल ने कहा—डर तो बेकार ही दिखा रहे हैं। गरदन तो मने बढ़ाकर ही रखी है। हा, मेरी इज्जत रखते हुए पूछे, तो जवाब दूगा। सुनिए वजीर साहब, मुहब्बत और चीज है, अच्छा लगना और। वह अच्छी लगी थी, जैसे गुलाब अच्छा लगता है। मुहब्बत? मैं खूब जानता हू कि मुहब्बत का मुझे अधिकार नही। अपनी बद-नसीबी का मैं दुनिया मे किसीको भागी नही बनाऊगा। और उसने शेर कहा—"दुनिया मे दुःख से पाक कोई चीज नही है आदिल, तुम इसका हिस्सा किसीको मत देना। यह तुमपर दयालु खुदा की दया है। इसका हिस्सा देने से तुम्हारी जिन्दगी ही बरबाद हो जाएगी।"

बाहर से आकर नासाकची ने फिर कोर्निश की। वजीर ने भवे सिकोड़ी—क्या है?

—अमीरुल उमरा अदीना बेग के यहा से सवार आया है।

—सवार? जल्दी बुला ला।

नासाकची चला गया। वजीर ने तबू के अन्दर के नासाकची से कहा—इसे जजीर से बांधकर तबू की हाजत के दरोगा के जिम्मे कर दे।

आदिल के हाथ जजीर से बधे ही थे। नासाकची उसे लिवा गया। इमाद ने सोचा, चेचक से जर्जर चेहरेवाले इस जवान को छोड दू? उसका शाहजादा-परिचय तो बिलकुल दब गया है। हारकर लौटते हुए सफदरजंग ने जिस दिन उसे आगरे के किले मे फेक दिया, उसी दिन से लोग समझ गए—यह कामबख्श का पोता हरगिज

नही है। दरअसल यह खोजा बंदा है, बादशाह के खिलाफ सफदरजंग ने महज इसे खडा किया था। और फिर वह सूरत भी नही रही। छोड़ दू ?

रात के अंधेरे को मथते हुए कोई गभीर गले से कह रहा था—मर्जी खुदा की, खेल नसीब का, इज्जत इन्सान की !

उन शब्दो में ऐसा कुछ था, जिसने इमादुल मुल्क को परेशान कर दिया। उसने मन ही मन कहा—नही, इसे छोडा नही जाएगा।

गन्ना की तसवीर को रोशनी मे रखकर उसने फिर से देखा।

बेग के सवार ने सलाम करके खत दिया। वजीर ने उसे खोला। लिखा था—"मैं दस हजार फौज लेकर लाहौर जा रहा हूं। वजीर साहब को लाहौर जाने की जरूरत नही है। सरहिंद मे पडाव डालकर इतजार करे। सिर्फ कुछ तोपे भिजवा दे। लाहौर का काम तीन दिन मे फतह करके वापस आ रहा हू।"

६,

पद्रह दिन के बाद।

सरहिंद के किले मे एक बडे-से कमरे मे गावतकिये के सहारे वजीर बैठा था। उसकी भूरी आखे तेजी से झुलस रही थी। सामने खडी थी मुगलानी बेगम—उसकी मामी, पजाब के सूबेदार मीर मन्नू की बेवा। उद्धत जवानीवाली एक खूबसूरत स्त्री। उमर पैंतीस के करीब। आखो के नीचे स्याही-सी। उसकी भी आखे जल रही थी।

बेगम के दोनो बगल दो तातारिने।

वजीर ने कहा—सुनो बेगम साहबा, तुम अगर मेरी मामी न होती, तो ये अमीर-उमरा तुम्हे कब का खत्म कर देते। तुमने सारी इस्लामी उमरावगीरी की शकल पर कालिख पोत दी है। और ताज्जुब है कि तुम उसे अब भी नही समझ रही हो।

मुगलानी बेगम के होठ जरा टेढे हो गए—चेहरे की लकीरो मे नफरत और हिकारत फूट उठी। कहा—कालिख पोत दी है, है न ?

—नही पोती है ?

—सरासर झूठ। मेरे पति मर गए, बेटा मर गया, उमराव लोग बदनाम करके मेरी सूबेदारी छीनना चाहते है !

—खोजा शाहबाज खा, बंदा छोकरा मिस्किन—इनसे तुम्हारी इतनी मिल्लत कैसी ?

बेगम ने कहा—इसलिए कि वे नमकहराम नही है। वे ही मेरा भरोसा है।

—सारा मुल्क और ही कहता है। तुम शीरा पीकर···

—शीरा कौन नही पीता ? बादशाह-बेगम नही पीते ? हा, शीरा मै पीती हूं।

—मैने मिस्किन को बाघ लाने का हुक्म दिया था। तुमने उसे अपने सोने के कमरे मे छिपा रक्खा था। इन्कार कर सकती हो ? उसे बादी की पोशाक पहनाकर सवेरे निकाल दिया।

—झूठी बात।

वजीर ने ताली बजाई। नासाकची आया। वजीर ने कहा—उस बादी को हाजिर करो।

बेगम ने कहा—वह बादी बदमाश है। हरामजादी। उसकी बात बिलकुल झूठ है। इसीलिए मैने उसके बाल काट दिए है। नाक काट दी है।

वजीर ने फिर नासाकची को बुलाया—बेगम साहबा के पुराने खोजा हब्शी को ले आओ।

उसके चले जाने पर कहा—बेगम साहबा, वह छोकरा मिस्किन मिल जाता तो मै उसकी खाल उधेड़ देता। तुम्हारी नजरो के ही सामने।

दो सिपाही उस बादी और हब्शी को पकडकर ले आए। वजीर ने कहा—अरी ऐ बांदी, बता कि बेगम ने तेरे नाक-बाल क्यो काटे ? खुदा के नाम पर कसम खा के सच-सच बताना। झूठ कहा तो तुझे जमीन मे गाडकर कुत्ते से नुचवाऊगा।

बादी ने हाथ जोडकर कहा—खुदावद, मैं औरत हूं। वह बड़ी शर्म की बात है। गरीबपरवर के सामने वह मैं कैसे अर्ज करू ?

वजीर ने कहा—कयामत के दिन जिस तरह से खुदा के सामने कहेगी, उसी तरह से कह न री कुत्ती ! तू तो मिस्किन से आशनाई

करने गई थी। उसी बात पर तो ठनी। ले, बता तू।

वादी कहने लगी। कहने लगी एक ढीठ प्रतिभाशालिनी औरत के पतन की कहानी। मोइनुल मुल्क की मृत्यु के वाद तीन साल के लड़के मुहम्मद को सूवेदार बनाकर सारे अविकार अपनी मुट्ठी मे लेकर वह औरत बिलकुल ही वदल गई। भरपूर जवानी। जीवन मे भरी लालसा। शीरां पीकर, हया-शर्म का सिर खाकर व्यभिचार करने लगी। खोजा शाहबाज, वंदा मिस्किन, उमराव गाजी बेग—बहुतो की आमदरफ्त थी। मिस्किन को वह प्यार करती थी।

वादी ने कहा—हा, गरीबपरवर ! मिस्किन से मुझे मुहब्वत हो गई थी। मैं यह नही सोच सकी थी कि यह मेरा कुसूर माना जाएगा।

मुगलानी वेगम ने लपककर उसे लात मारी। चीखी—मुझे उसी वक्त तेरी जीभ खीच लेनी चाहिए थी। गर्दन उतार लेनी थी।

वज़ीर चिल्ला उठा—मुगलानी वेगम !

तातारिनो ने वज़ीर का इशारा समझकर वेगम को खीच लिया।

मुगलानी रुकी नही। कहती गई—इमाद, तू बेईमान है। मैं अंधी थी कि मैंने तेरा एतबार किया। तू मुझे कैद करके लाहौर पर कब्ज़ा करेगा। वादशाह को गद्दी से उतारकर तूने उन्हे अंधा कर दिया है। यह मुझे समझना चाहिए था। मगर सुन लो वज़ीरे-आजम बहादुर ! मुगलानी न तो अहमदशाह है, न ऊधमवाई। मैं मुगलानी वेगम हूं।

वजीर ने तातारिनो से कहा—ले जा इसे। तंवू मे कैद करके रखना।

मुगलानी वेगम को लेकर तातारिने चली गईं। वजीर ने सिपाहियों से कहा—इन्हे ले जा।

ठीक इसी समय तवू के दरवाजे पर तीखे नारी-कंठ की आवाज़ सुनाई पडी—हट जा, वदतमीज़ ! हरामज़ादे !

तवू के दरवाजे से एक युवती घुसी। सोलह-सत्रह साल की। मजबूत वनावट। मुगलानी वेगम की वेटी—वजीर इमादुल मुल्क की मगेतर। उमधा वेगम।

मज़वूत वनावट। थोड़ी मोटी-सी। गोल चेहरा। बड़ी-बड़ी आंखे। उस नजर मे गज़व की मादकता थी। लेकिन उसमे जितनी भूख थी, उतनी ही थी तेजी। मोटे होठों की वनावट मे भी मादकता

थी। माथे मे भूरी-सी लम्वी लट। खूवसूरती थी। दूर से उस रूप मे एक आकर्पण था, पर पास जाने पर खिसक जाना पडता।

वजीर चौककर पीछे पलटा।

उमवा वेगम तेज निगाहो से ताक रही थी। वजीर ने कहा—तुम यहां किसलिए?

उमधा वोली—मैं वजीरे-आजम के पास फरियाद करने नही, कैफियत पूछने आई हू।

—कैफियत?

—हां, कैफियत। हमे वुलाकर इस कदर वेइज्जत करने का क्या अख्तियार है आपको?

—उसकी कैफियत मुझे तुमको नही देनी है। तुम्हारी मा के खिलाफ सारा मुल्क—अमीर-गरीव, किसान-भिखारी—जो शिकायत कर रहा है, नालिश कर रहा है, मुझे उसका विचार करना ही पडेगा।

—तो आपने यह वताकर मा को कैद करके लाहौर से क्यो नही मगवाया? आपने मुझसे शादी करने की कहके हमे वुलवाया है। मेरी मा इसलिए हीरे-मोती, अशर्फियां, जवाहरात—कोई तीन लाख का दहेज लेकर यहा आई है। आपने वह सारा कुछ ले लिया है। और फिर मा का विचार करने के लिए आप काजी वन वैठे है। उसे आपने कैद कर लिया। आखिर क्यो?

वजीर ने कहा—तुम्हारी मां जैसी मा की वेटी से वह इमादुल मुल्क, जो छाती पर कुरान रखता है, शराव छूता तक नही—हरगिज शादी नही कर सकता।

—यह मैं जानती हू।

—तुम भी शीरां पीती हो?

—पीती हू। मगर आप उसके लिए ऐसा नही कह रहे है। आप चूकि झूठे आदमी है, इसलिए झूठी वात कर रहे है।

—उमवा वेगम!

—यह तसवीर किसकी है?

वजीर चौका—यह तसवीर कहा मिली तुम्हे?

—आपके तकिये के नीचे। मैं एक खत लिखकर आपके तकिये के नीचे रखने गई थी। अपनी मा के लिए मैंने माफी मागी थी। लिखा

था—"मैं खुदा की कसम खाकर कह रही हूं, मैं मां जैसी नही हूं।" लिखा था कि मै सच ही तुम्हे प्यार करती हू। अब्वा ने जब से यह रिश्ता किया, मै तुम्हे प्यार करती आई हूं। लिखा था—"आप मेरे लिए थोड़ा बर्दाश्त करे। शादी हो ले, मा को अपने पास रखकर हम ठीक कर लेंगे। उससे कहूंगी—मुहम्मद मर गया। मैं तुम्हारी अकेली बेटी हूं। मुझे छोड़कर लाहौर मे तुम मनमाना करोगी, यह कैसे हो सकता है? तुम्हारे दामाद वजीरे-आजम है। हिन्दुस्तान के बादशाह के भी मालिक। उनका सर नीचा क्यों करोगी? इसपर भी अगर वह नही सुनेगी, तो जहर देकर उसे दुनिया से ही हटा दूंगी। लेकिन उमधा की मिन्नत है, आप इस छावनी में हज़ारो छोटे आदमियो के सामने मा का अपमान न कीजिए। सबके सामने वह गिर जाएगी।"

उमधा जरा रुकी। उसके बाद नफरत से मुंह फिराकर बोली—खत को रखने गई तो तकिये के नीचे यह तसवीर मिल गई। इसे सर पर या कलेजे पर रखकर सोते है वज़ीर साहब?

इमाद ने कहा—यह तसवीर एक गुलाम से मिली है। किसकी है, मैं नही जानता। रखने की दूसरी वजह है। उससे तुमसे शादी नही करने का कोई वास्ता नही है। मै तुमसे शादी इसलिए नही करूंगा कि तुम उस मा की बेटी हो।

उमधा ने एक कागज निकाला। पूछा—यह कविता किसने लिखी है वज़ीरे-आजम? यह भी उसी तसवीर के साथ थी? "हिन्दुस्तान मे एक गुलाब फूला है, जिसके रूप-रंग और खुशबू की मिसाल नही। एक बुलबुल हिन्दुस्तान की बगिया मे गा रही है—वह गीत कभी किसीने नही सुना। नाम है उसका गन्ना! गन्ना गुलाब है। गन्ना बुलबुल है! तुम्हारे लिए अपने कलेजे को सोने-मोती का फूलदान बनाया है—बनाया है कलेजे का पिंजड़ा…"

इमादुल मुल्क उठकर आगे बढा—वह दोनों दे दो।

—दे दू?

—हा।—उसने छीन लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

लेकिन बाये हाथ से वह कागज़ और तसवीर थामकर उमधा ने दरवाज़े के पास से एक फूलदानी उठा ली और उसे इमाद के कपाल पर दे मारा। इमाद दो-एक कदम पीछे हट गया। उमधा ने तसवीर

को नीचे रखा और लात मार-मारकर उसे चूर-चूर कर दिया। कागज के टुकडे-टुकड़े कर दिए।

कपाल पर हाथ रक्खे इमाद चुप खडा रहा। उमधा बेगम जिस दरवाजे से आई थी, उसी दरवाजे से चली गई।

उमधा के चले जाने पर वजीर ने सबसे पहले उस तसवीर को उठाया। टुकडो को जोडने की कोशिश की। मगर वह इस तरह से टूटी थी कि जुडने की नही। हाथ से ताली बजाई। दरवाज़े पर का पहरेदार आया। वज़ीर ने कहा—वह पानीपतवाला फकीर है न, जिसे गिरफ्तार करके रक्खा गया है—उसे यहां ले आ। उसके बाद तातारिन को बुलाकर कहा—उमधा बेगम को कड़े पहरे मे रखना। जरूरत हो तो जंजीर डाल देना। देख लेना, उसके पास कोई हथियार तो नही है। बेगम नज़रबंद···

तातारिन काठ की मारी-सी रह गई। सबको यह मालूम था कि वह दहेज के साथ शादी करने के लिए आई है। और वह नज़रबंद!

वजीर ने कहा—गंवारिन-सी ताक क्या रही है? जा। गडबड़ किया तो कोड़ा नही लगेगा, गरदन जाएगी!

तातारिन चली गई। पहरेदार आदिल को ले आया।

वजीर ने कहा—तुम्हे एक काम करना होगा आदिलशाह।

—फरमाइए। मेरी इज्ज़त पर आंच नही आएगी तो करूंगा।

—गन्ना बेगम की एक और तसवीर बना देनी होगी।

आदिल हसा। तसवीर तो आपने छीन ली है।

—वह टूट गई। मैं हाथीदात, रग—सब भिजवा देता हूं। एक और बना दो। रिहा कर दूगा तुम्हे।

—रिहा कर देगे! ठीक है। सामान भिजवा दे।

कोई दरवाजे पर आया। पहरेदार ने जाकर इत्तला दी—मनसबदार अदीना बेग आए है।

आदिल को ले जाने को कहा। कहा, तसवीर बनाने का जो सरजाम यह मागे, ला देना।

अदीना बेग ने कोर्निश करके कहा—लाहौर के अमीर लोग आए

हैं। दरबार आप कब करेंगे ? सबकी राय है, शादी हो जाने के बाद ही ठीक रहेगा। तब आप सास को साथ जाने को कह सकेंगे। पति-पुत्र के मर जाने से उनका दिमाग खराब हो गया है। उससे निंदा दब जाएगी।

—शादी नही होगी। यह शादी हो नही सकती है।

—जी!—बेग हैरान हो देखता रह गया।

—वह बेटी अपनी मां जैसी होगी निज़ामुल मुल्क आसफजा बहादुर के खानदान का लहू बडा पवित्र है। उसमे जहर मिल जाएगा। यह शादी नही होगी।

—गुस्ताखी माफ हो, इससे बड़ी बदनामी होगी। मोइनुल मुल्क आपकी मा के सहोदर थे। उनका खासा नाम है। उनके जाननेवाले बहुत है।

—मुझे और सोच लेने दो। जाओ, हुक्म जारी कर दो कि दरबार पाच दिन के बाद होगा।

दूसरे दिन सवेरे। वजीर दरगाह की अज़ान सुनकर बाहर निकला। पहरेदार तमाम रात जगा था। ऊंघ रहा था। इतने सवेरे वजीर को देखकर चौका।

इमाद कल रात नही सोया। शमादान के सामने बैठकर कभी तो टूटी तसवीर को जोडने की कोशिश की, कभी चहलकदमी करता रहा।

नौजवान इमादुल मुल्क। महज़ बीस की उम्र। छुटपन से ही उसके बाप ने उसे बडे कड़े सयम से पाला। उसे औरत का मोह नही था। उसका बाप कहा करता था—अपना खानदान भी वजीर का खानदान है। आसफजा निजामुल मुल्क ने वजारत की है। औरत की तरफ नजर उठाना हो तो वजारत करने मत जाना। औरत बादशाह को देना। वह अफीम से बुरा नशा है, शीरां से तेज नशा। वज़ारत करना हो तो शराब और स्त्री की तरफ मत ताकना। हा, शादी करना। शादी मे भी खूबसूरती का ख्याल मत रखना। जो सूबेदार सबसे जबरदस्त हो, उसीकी बेटी से ब्याह करना।

इमाद ने उन बातो के एक-एक अक्षर का पालन किया है। उसीके मुताबिक उसने पजाब के सूबेदार की बेटी से ब्याह करना चाहा था,

क्योंकि पंजाब हाथ से निकल गया था। यह सुविधा भी थी कि पंजाब का सूबेदार उसका मामा था। मुगलानी बेगम को दुरानी बादशाह धरमबेटी कहता था। इसके जरिये अब्दाली से मेल-जोल करके सारे हिन्दुस्तान को अपनी मुट्ठी मे करेगा। यह खेल बड़ा मज़ेदार है। स्त्री और शीरा इसके मुकाबले कुछ नही लेकिन एक-ब-एक उसके लहू मे नशा चढ आया। गन्ना की गजल सुनकर हल्का सुरूर आया और उसके बारे मे बंगाश से सुनकर उसकाई बातो की लौ-सा वह नशा जरा जोरदार हो गया। आदिल की फकीरी झोली से उसकी तसवीर और मसनवी जो मिली—वह लौ और फैल गई। उमधा ने उस तसवीर को चूरकर आज मानो सब कुछ मे आग लहका दी। वह उस लौ को बुझाना चाह रही थी—पाव से शमादान की बत्तियो को उलट दिया—जलती हुई बत्तिया तबू मे गिरी और आग भभक उठी। गन्ना बेगम! गन्ना बेगम! गुलमुहर के बगीचे मे खडी गन्ना की छवि-सी आंखो मे तैर गई।

फिर भी लगा कि चाल मे चूक हो रही है। नसीब का खेल शतरज के खेल-सा है। चाल मे चूक हुई कि मात। उसके इस शतरज मे दुरानी बादशाह नसीब का वज़ीर है—उमधा उसे रोकने का प्यादा है एक। उस प्यादे के पीछे बल है। उस मोहरे को हटाने से गलती होगी।

फिर लगा कि लहू उसका गरम हो गया है। डर किस बात का? तुम इमादुल मुल्क हो। तुम्हे अगर जहन्नुम मे जाना होगा, तो हिंदुस्तान को लेकर जाना। गन्ना तुम्हारे बगल मे होगी। गन्ना बेगम!

अजान सुनकर उसका वह विचार टूटा। रोज अल्लाह का नाम लेकर जीत की कामना करता था। आज उसने गन्ना की कामना की। उमधा बेगम को बर्दाश्त नही कर सकेगा। उसने गन्ना की तसवीर तोड दी।

बाहर खडा वज़ीर सोचने लगा। कि रास्ते पर धूल उडती दिखाई दी। कोई सवार आ रहा था। दिल्ली से? रोहिलखड से? फर्रुखाबाद से? बगाश के ही यहा का हो! सुरैया से पूछकर खबर देने को कहा था कि वह क्या कहती है।

वजीर ने पहरेदार को भेजा—बंगाश का सवार हो तो उसे फौरन यहां लिवा ला।

पहरेदार गया। वजीर खडा रहा। पायचारी शुरू की। खुद आगे वढकर देखे, जी मे आ रहा था। मगर हिन्दुस्तान का वजीर हू मैं। यह सोचकर अपने को जब्त किया। जेव से एक मुहर निकाली। उंगली की ठोकर से उसे ऊपर को फेका। किस रुख गिरती है। सामने का रुख होगा तो सवार नवाव वंगाश का होगा। न:, सामने का रुख नही! उसांस ली। अरे! सवार को तो पहरेदार लिए आ रहा है।

अल्लाह मेहरबान।

सवार के आते ही पूछा—कहां का खत है?

सवार ने वा-अदव खत सामने रक्खा। वजीर खत लेकर जल्दी से अंदर गया। मुहर तोड़कर सांस रोककर पढ़ा—

"आखिरकार गन्ना की शादी शुजाउद्दौला से ही तै पाई। जाट युवराज जवाहर सिह के डर से सुरैया वेगम ने आगरे के किले मे पनाह ली थी। गन्ना को पाने के लिए जवाहर सिह जान पर खेलने को तैयार है। सुरैया ने उस नकली वादशाह आदिल की खोज की थी। मुहव्वत थी शायद। लेकिन उधर सफदरजंग ने दवाव डाला। सुरैया आखिर राजी हो गई। अव वजीरे-आजम जैसा अच्छा समझे, करे।"

इमादुल मुल्क का सर एक वार घूम गया। उसके वाद वेहिसाव गुस्से और क्षोभ से अधीर होकर वह उठ खडा हुआ। पहरेदार को वुलाकर कहा—जनाव अदीना वेग को सलाम दो। हां, वजीरी फौज के मनसवदार को! और हां, सुनो। वह जो फकीर है न, जिसे कैद करके रक्खा है, पहले उसका सर काटकर यहां पहुंचा जाओ।

पहरेदार काफी दूर निकल गया था। वाहर निकलकर वजीर ने आवाज दी—अवे ऐ, सुन जाओ।

वह वापस आया। वजीर ने कहा—फकीर को कत्ल करने का हुक्म वापस लेता हूं। खवरदार, कोई उसके वदन मे हाथ न लगाए।

वजीर फिर अन्दर जाकर वैठ गया।

सबसे पहले उसकी वादाकशाही फौज का मनसबदार जाकर खड़ा हुआ।

वजीर ने कहा—छावनी उठाने का हुक्म दो। एक पहर दिन को सवारो का पहला दल रवाना होगा। सीधे रोहिलखंड से फर्रुखावाद।

× × ×

दोपहर का घडियाल वजते ही खेमा उखड गया। इमादुल मुल्क रवाना हो गया। सब वदोवस्त कर लिया।

लाहौर के अमीर मीर मोमिन को लाहौर की सूवेदारी का फरमान दे दिया। सारे काम की जिम्मेदारी जमालुद्दीन खा को सौपी। अदीना वेग जालन्धर दोआव का फौजदार वहाल हुआ।

मुगलानी वेगम को अपनी वेटी के साथ लाहौर के किले के एक महल मे रहने का हुक्म हुआ। कडा पहरा रहेगा। उमधा से शादी वहरहाल नही होगी। अभी फुरसत नही है। सोचना भी पडेगा। मौलवियो से राय लेनी होगी कि वैसी मा की वेटी से शादी करना ठीक होगा या नही!

सरहिद शहर धूल से भर गया—ढक गया। वादाकशाही फौज चलने लगी।

वजीर हाथी के हौदे पर वैठा सोच रहा था—गन्ना वेगम! पीछे पलटकर देखा। वह आया कैदखाना।

७

शुजाउद्दौला से शादी की सहमति देने के सिवाय सुरैया के लिए सच ही कोई चारा नही रह गया था। एक महीने के वजाय आगरे मे दो महीने कट गए। आगरे के किले मे जगह नही मिली। किले के पास ही एक उमराव का घर किराये पर लेकर वह गन्ना के साथ रह रही थी। किला खूव करीव था। घर था किले की उत्तरी-पश्चिमी वुर्जी के पास। अगर उस घर पर कोई दुश्मन हमला करे तो उस वुर्जी से तोपे दागी जा सकती है। किलेदार से इकवाल खा ने यह तै कर रक्खा था कि शत्रु धावा करे तो उस वुर्जी से तोपो की मदद करेगा। और खानजमान की फौज घर के चारो तरफ खेमे मे पडी थी।

सुरैया के कहे मुताविक आदिलशाह की तलाश मे इकवाल खा ने चारो तरफ आदमी भेजे थे। लेकिन कोई पता नही चला।

इधर जवाहर सिह की ललक लहरो-सी उसके घर के चारो तरफ पछाड़े खा रही थी।—गन्ना, मै तुम्हे चाहता हू, मै तुम्हे चाहता हू।

तीर की नोक पर लिपटी यह कविता पेड़ की जड़ के पास, छत पर, दीवार मे विंधी पड़ी रहती। कभी भेंट मे वैसी पंक्तिया पहुंच जाती। आगरा शहर के जवाहरातवाले आते। उनके जडाऊ गहनो मे मुहव्वत की भीख वडी चतुराई से मागी जाती। ज़ेवरवाले से पूछने पर वह कहता—यह भेंट एक अमीर ने भेजी है। मुझे रुपया देकर ये अलकार यहा दे जाने को कहा था। सुदूर जयपुर से उम्दा पत्थर की चीजे आती, उनमे भी यही लिखा होता। तिसपर इकवाल खा यह खवर लाता कि जवाहर सिंह अपने किले मे फौज और तोपे वढा रहा है। अफवाह है कि वह अचानक कभी गन्ना को छीनकर ले जाएगा।

गन्ना के लिए वह पागल हो उठा है।

धीरे-धीरे सुरैया के पास इस आशय की चिट्ठिया आने लगी कि गन्ना के लिए वह कितनी दौलत, सुख और ऐश्वर्य देगा।

चिट्ठियो मे सुरैया के तवायफ होने की फवतिया भी होती।

सुरैया वेगम परेशान हो उठी। एक रोज उसने गन्ना से कहा—गन्ना, अव तो वर्दाश्त से वाहर हो रहा है वेटी!

हसकर गन्ना ने कहा—ऐसा क्यों कहती हो अम्मी। पागल पागल-पना करते है। लोग उसपर हंसते है। नाराज हुई, तव तो तुम हार गई। मुझे तो अच्छा ही लग रहा है।

सुरैया ने रज होकर कहा—मैं तुझे समझ नही सकती गन्ना। तेरा इरादा क्या है? आखिर तूने क्या एक काफिर के लडके से मुहव्वत की?

गन्ना फिर हंसी—नही अम्मां।

—फिर ऐसा कैसे कह रही है? कैसे तूने यह कहा कि मुझे तो अच्छा ही लग रहा है।

—अम्मां, कभी किसी औरत के लिए मर्द पागल होता है और कभी किसी मर्द के लिए औरत। लेकिन एक चाहता है, तो दूसरा नही। नही तो वीच मे या तो धरम आ खडा होता है या खानदान की इज्जत, या फिर दोनो खानदानो की दुश्मनी। इसीपर तो दुनिया मे सवसे वडी मसनवी लिखी गई है, गज़लें लिखी गई है। मगर मैं तुमसे एक वात कहू अम्मा, तुम चाहे जिसे भी मुझे सौपना, मैं उसीके

साथ—सुख हो, दुख हो—जिन्दगी काट लूगी ।

अचरज से बेटी की ओर देखकर सुरैया ने कहा—उसे तू भूल सकेगी ?

—जनाब आदिल को ?

—हा ।

—भूलने की बात और है अम्मा । दुनिया मे बहुत-कुछ को भूला नही जा सकता । रही उन्हे पाने की बात, सो मैंने उनसे जिंदगी को जोडने की बात कभी नही सोची । वह आदमी बधने-बाधने का नहीं है । मै उन्हे हजरत जैसा मानती हू । दुनिया मे आग से ज्यादा चमक होती किसमे है—मगर उसे छाती से ही कौन लगाना चाहता है और आचल मे ही कौन बांधता है, बता ! मुधि के शमादान मे श्रद्धा की बत्ती मे वैसे लोगों को लौ-सा जलाए रखने से ही अधेरे मे दिशा दिखानेवाला जैसा अपना-सा पाया जा सकता है ।

सुरैया बेटी को एकटक देखती रह गई ।

गन्ना कहती गई—मुझे अरमान था अम्मा, कि मैं बेगम जहांआरा, बादशाह आलमगीर की बडी बेटी जेबुन्निसा की तरह अपनी यह जिंदगी काट दूगी । अपनी कब्र पर लिखने के लिए मै शेर लिख जाऊगी—"दुनिया मे आकर गन्ना ने खुदा का भजन किया था—इसीलिए उसे सारी दुनिया का प्रेम मिला । सुखी गन्ना यहा सो रही है ।"

सुरैया की आखो मे आसू भर आए । आखे पोछकर कहा—मेरी बेटी, तेरे मन को मैंने अब समझा । मैं तवायफ थी, मैं समझ सकती हू । चाह के आदमी को न पाकर लोग दीवाने होते है । उसकी मुहब्बत कभी जलकर राख हो जाती है और कभी वह फल-फूलो से भरे पेड-सी झलमला उठती है । उसके फूल खुदा की ओर आसमान मे मुह किए फूलते है । यह बहुत बडी खुशकिस्मती है बेटी ! लेकिन···

सुरैया जरा हसी । कहा—लेकिन दुनिया बहिश्त नही है बिटिया । उस पेड को भी आदमी काटता है । कहता है, सारे ही फूल ले जाकर माला गूथेगे । गले मे पहनेगे । कोई दूसरा न पहने, इसलिए और फूल नही फूलने देना चाहता । बेटी, शाहनशाह शाहजहा—उनकी

बेटी जहाआरा बेगम; बादशाह औरंगज़ेब की बेटी जेबुन्निसा—उनके जीवन के पेड़ मे किसीको कुल्हाड़ी मारने की हिम्मत नहीं होती थी, नही हुई। लेकिन तेरी ज़िदगी का रखवाला कौन है? आदमी ही नही, तुझपर तो जानवर—गाय-गोरू, भेड़-बकरी तक सीग मारेंगे। वह हमला कैसा दोज़खी है। तू उसकी कल्पना भी नही कर सकती। मैं जानती हू, मैं तवायफ थी, तिसपर शुकदेव पडित कह गया है, हिन्दुस्तान मे आधी आएगी। ऐसे में कोई रक्षक न हो तो चले कैसे?

—अगर समझती हो कि नही चलेगा, तो जो तुम्हारा जी चाहे, करो।

—उसीके लिए तेरी राय पूछ रही हू बेटी। तेरी गजलो के साथ-साथ तेरा नाम सारे हिन्दुस्तान मे फैल गया है, तिसपर तेरा नसीब कि तू मेरे पेट से पैदा हुई। मैं जानती हू, जो नवाबजादा, अमीर, रईस तुझे चाहते है, वे तुझमे एक, सिर्फ एक ही लडकी को नही पाएगे, पाएगे वे एक तवायफ की बेटी को। यह बात याद आ जाने से मुझे खुदकुशी कर लेने को जी चाहता है!

—मगर तुम्हे इसके लिए अफसोस क्यो हो रहा है अम्मा? लाखो-लाख गरीब लडकिया बिक रही है, तवायफे उन्हे खरीदकर तवायफ बनाती है, वे मजबूर,होकर तवायफ बनती है—नाचती-गाती और खुदा को पुकारती है। तुमने तो उसी जिंदगी मे गजले लिखी है! लोगो ने तुम्हे प्यार किया। खुदा के हुक्म से तुम्हारी किस्मत ने तुम्हे उस ज़िदगी से रिहाई दी और मेरे अब्बा जैसे बहिश्त के दूत के हाथो सौप दिया। तुम्हे शर्म किस बात की? ऐसी अम्मा कितनो की होती है।

सुरैया की आखो से आंसू ढुलक पडे! वह कुछ देर चुप बैठी रही। फिर पूछा—फिर भी, तू बता।

—नही। तुम जहा हुक्म दोगी, मैं उसी घर मे खुशी-खुशी चली जाऊगी।

सुरैया ने फिर कुछ सोचकर कहा—तो मै नवाबजादा शुजाउद्दौला को ही पसद करती हू। शुकदेव ने तुझे पच्छिम नही, पूरब भेजने को कहा है। और फिर सफदरजंग तेरे बाप का दोस्त है, उसने आश्रय दिया था। उसके हरम की बहू बेगम देवी जैसी है। तेरी जानी-चीन्ही

है। तू उसे बड़ी बहन जैसी मानना। और शुजा, मेरे ख्याल मे मुल्क-भर मे वैसी मरदानी सूरतवाला आदमी दूसरा नही है।

—यही तै रहा। वही सही!

सुरैया जरा देर चुप रही। कहा—ठीक है। वही बात। मर्जी खुदा की, खेल नसीब का। इज्जत इन्सान की। औरत की इज्जत उसका पति रखता है। तेरी पत रखने को नवाबजादा शुजा ही ठीक है।

सुरैया इकबाल खा को बुलवाने के लिए निकल पडी।

गन्ना अपने-आप गुनगुनाने लगी।

"चमेली ने चाद को चाहा था। चाद खुदा के दरबार मे रौगन-बरदारी करने मे मशगूल। न तो उसके नीचे उतरने का उपाय और न चमेली को आसमान तक जाने की क्षमता! चमेली अगर किसी पेड से लिपटे, काफी ऊचाई पर फूल खिलाए तो भी वह चाद को नही छू सकती—यह उसे मालूम है। मगर उसकी खुशबू? वह भी क्या नही पहुचेगी? हायरी चमेली, इसका जवाब तुझे दे कौन?"

सीढी पर किसीके पैरो की आहट से गन्ना चौक उठी—कौन? चाद?

पंद्रह-सोलह साल का एक लडका। इकबाल खा का बेटा चाद खा। चांद खा की आखे दमक रही थी। चेहरा तमतमा रहा था। हाथ मे बदूक थी। अन्दर जाकर उसने कहा—चुप! चुप रहो साहबजादी!

कहते-कहते वह झरोखे के पास जा खडा हुआ छिपकर। उसके बाद टप् से बैठ गया। बंदूक की नली झरोखे पर रखकर निशाना ठीक करने लगा।

—क्या है चाद?

चाद ने निशाना ठीक करते-करते ही कहा—बदर।

—बंदर? तो बंदर को क्यो मारोगे भला! चाद···

चाद की बंदूक गरज उठी। चांद बोल उठा—वह रहा, वह गिरा! वह उठ खडा हुआ। उसके इशारे का अनुसरण करके गन्ना ने देखा, उसके घर के पच्छिम जो पेड है, उनमे से एक की डाल हिल रही है। हट् से लगा, एक बदर—उंहू, बदर तो नही, कोई आदमी

नीचे गिर रहा है। आदमी डाल को कसके पकडना चाहता है, पकडे रह नही पा रहा है।

—यह तो आदमी है चाद !

—हा, देखने मे आदमी, लेकिन है बंदर। यह जवाहर सिंह का भेजा हुआ वदर है साहवजादी। जो तीरो से जवाहर सिह के व्यग्य-पत्र छोड जाता है। पता लगाते-लगाते आज आखिर मिल गया। वह गिरा !—कहकर चाद दौड़ा।

चाद खा। किशोर चाद खां अजीव है ! कुछ ही दिन हुए, इकवाल खा ने उसे गाव से बुलवाया है। इकवाल खा को खौफ है। विल्ली जैसे पांव दवाए जो लोग चुपके-चुपके घर के हीरे-जवाहरात चुरा ले जाते हैं, जवाहर सिह उन्हीकी तरह किसी दिन मुह वांधकर गन्ना को ही उठा ले भागेगा। इसलिए जिस घर मे गन्ना और सुरैया सोती हैं, चांद खा वहां रात को पहरा देता रहता है। इकवाल का छोटा वेटा है चांद। सुरैया की जागीर मे छुटपन से ही आता है। वचपन मे गन्ना और वह साथ खेले है। गन्ना से छोटा है—छोटे भाई-सा फरमावरदार है। डर का नाम नही जानता।

कुछ देर वाद सुरैया आई। कहा—चाद ने आज जवाहर के आदमी को घायल किया है। पकड़ा गया वह आदमी।

—मालूम है। इसी झरोखे से गोली चलाई।

—उस आदमी ने कहा क्या, मालूम है ?

—क्या ?

—जवाहर ने तुझे लूट ले जाने का तै कर लिया है। अभी इंजोरिया पाख चल रहा है। अंधेरिया होते ही झपटेगा। शिवाजी ने वारात के वहाने जैसे पूना का किला दखल किया था, वैसा ही मनसूवा करेगा कोई !

—हम लोग उससे पहले ही लखनऊ चले चले मा।

—हां, मैं वही ठीक कर आई। सवार आज ही रात लखनऊ रवाना हो रहा है।—सुरैया जिस तेजी से आई थी, उसी तेज़ी से वाहर चली गई। एक वार शुकदेव पंडित को बुलवाना होगा। पडित कोई अच्छा-सा दिन देख दे।

गन्ना हसी। जवाहर सिंह ! सुना है, व्रज मे वैष्णव राधा को

भजते हैं। तुमने वही क्यों नही किया जवाहर सिह। दूसरे धरम की एक लड़की! हाय रे हाय!

आगरे के किले के पास ही यमुना पार करके टुडला का रास्ता। टुंडला से फिरोजावाद होकर शेरशाही सडक से कानपुर। वहा से गगा पार करके पक्की सडक से लखनऊ।

सात दिन के वाद।

इन सात दिनो मे समस्या और भी उलझ गई। खवर आई, उस अनुचर के घायल होने से जवाहर चोट खाए शेर की तरह खूखार हो उठा है। दुनिया मे वह किसीकी परवा नही करेगा। वाप सूरजमल से चखचख चल रही है। उसकी भी नही सुन रहा है। मरते वक्त उसके दादा वदन सिंह ने अपनी गडी दौलत का पता वेटे को न वताकर पोते को ही वताया था। वह दौलत वेशुमार है। दौलत और हिम्मत एकसाथ हों तो खैर है भला! दुनिया महज़ माटी की थाली हो जाती है। उसने सोच लिया, आखिर अधेरी रात का ही क्यो इंतजार किया जाए? किसकी परवा है? आगरे के किलेदार के पास लोग आ-जा रहे हैं। सौदा हो रहा है—कितने रुपये लेने से किलेदार बुर्जो की तोपो को गूंगी करेगा, सैनिको को वहां से उतार देगा—सिर्फ एक दिन के लिए।

सुरैया को और इतजार करने का साहस न हुआ। इकवाल खां भी भरोसा नही दे सका। लखनऊ का सवार कल शाम लौट आया। सफदरजंग खुश हुआ। लिखा—"महीने-भर के अदर ही सम्मान के साथ गन्ना को लखनऊ लिवा लाने का इतजाम कर रहे है। आगरे के किलेदार को भी खवर की जा रही है, भरतपुर सवार भेजकर सूरजमल को होशियार किए दे रहे हैं।"

लेकिन नही। और भरोसा नही किया जा सकता।

अल्लाह की दुनिया कुरान का कानून नही मानती। हिंदुओ का जगत् जगन्नाथ का विधान नही मानता। दुनिया सोने की मुहरो के चक्के पर चलती है। दुनिया के कानून का कर्ता-धर्ता है दौलत। जवाहर सिह के पास वेहिसाव दौलत है। दौलत के लिए उसका वाप भी उसकी खुशामदें करता है।

× × ×

उस रोज़ सवेरे से ही यह वात फैल गई कि सुरैया वेगम अपनी जागीर को लौट रही है। वहां अपने माटी के किले मे पुरानी तोपें बैठाकर वारूद सुखाकर सामना करने की तैयारी करेगी। लखनऊ से नवाव की फौज आ रही है। इटावा के पास यमुना पार करके उसकी जागीर मे पहुचेगी। उसके वाद दहेज लेकर गन्ना वेगम शादी के लिए लखनऊ रवाना होगी। सवेरे से वैलगाडियां सजीं, सवार तैयार हुए, तंवू उखडे। एक पहर वेला होते न होते वे रवाना हो गए। दल को खुद इकवाल खां चला रहा था।

हरियाने के वडे-वडे वैल। सुंदर-सुदर सीग। वदन पर कौड़ियों के साज, गले मे चांदी की घंटी। घड़ी मे वे वैल दो कोस जाते। गाड़ी भी उतनी ही सुन्दर—ऊपर टप्पर, रंगीन कपड़े से मढा। और ऐसी सुन्दर तीन वैलगाड़ियों मे वेगम, गन्ना, वांदियां। चारों ओर से घुड़सवार।

माल-लदी और भी गाड़ियां। वेटी के व्याह का सौदा-पाती खरीदकर ले जा रही है वेगम! आगरे मे धूम मच गई। कई दिनो से माल ले-लेकर दूकानदार आते-जाते रहे। दोपहर होते-होते घर खाली हो गया। उतना वडा अमीरी घर खा-खा करने लगा। सिर्फ पचास सवार यमुना पार करके टुडला की तरफ गए—फिरोजावाद जाएगे। उनके साथ थे चाद खा, इकवाल खां का दोस्त और जांवाज वहादुर ज़ालिम खा। फिरोजावाद के पास एक गाव की दरगाह मे एक फकीर है—वाला सुलतान उसकी भक्ति करते थे। उसीके पास जाएगे। उसकी दुआ लेकर वे सव इटावा के पास व्याह के जुलूस में जा मिलेगे। उनके साथ एक वैलगाडी मे चार वांदिया—चार परातो मे धूप-गुग्गुल, फल-मूल, मिठाइयां तथा और-और चीज़े सजाकर फकीर साहव की भेंट के लिए जा रही थी।

गाडियो पर पचास सवारो का पहरा। वेगम साहवा ने आगरे के उस घर को छोडा नही था। उसे रक्खे ही रही। क्योकि शादी के वाद उन्हे यही रहना है। जवाहर के जुल्म से जागीर मे रह सकना मुमकिन न होगा।

८

जो शेरशाही सडक वगाल से दिल्ली होते हुए पंजाव पार करके बरावर पेशावर चली गई है, टुडला से इटावा तक वह यमुना के किनारे-किनारे गई है। वहा से यमुना से हटकर रास्ता कानपुर गया है। टुडला से फिरोजावाद कुछेक कोस है। इटावा तीसेक कोस होगा।

चाद खा के साथ जो दल चला, वह फिरोजावाद से इसलामपुर गाव चला गया, जहा वावा मुहम्मद गुलाम की दरगाह है—वूढे फकीर, प्यारा साहव का स्थान। फकीर साहव नंगे रहा करते और तार के एक साज पर गाते रहते। अजीव होते उनके गीत। वाला मुलतान जैसे शायर भी कहा करते—"खुदा को जाने विना ऐसे गीत कोई नही वना सकता, इस तरह से नही गा सकता।"

"खुदा मेहरवान, दुनिया मे तुमने पोशाक ऐसो को पहनाई है, जिनके कलेजे मे पाप की आग है, जिनकी नजर की उस आग की कालिख दुनिया को स्याह करती है। और जिनके मन को पाप ने नही छुआ, जिनकी निगाह साफ-सफेद है, उनके लिए तुम्हारा फरमान है कि तुम नगे रहो।"

वादशाह शाहजहा के समय ईरान से एक फकीर आए थे। मुहम्मद सैयद। उनकी साधना विचित्र थी। वहुतेरे हिन्दू उनके शिष्य वने। हिन्दू-मुसलमान, यहूदी-ईसाई—कोई भेद नही। साधक कवि। नाम पडा था सरमद। वे गाते थे—

"हाय मौलवी, इमाम ! तुमने उन्हे मंदिर और
मसजिद मे नही रक्खा—
रक्खा है उनके पत्थर और काठ को।
जो काला पत्थर कावा की मसजिद मे है—
उसी काले पत्थर की मूरत गढकर हिन्दुओ ने
मन्दिर मे रखी है।"

दारा शिकोह उनका भक्त था। वह फकीर को नंग-धडंग अवस्था मे ही वादशाह शाहजहा के पास ले गया था।

औरगजेव ने उनको कत्ल करने का हुक्म दिया था। कत्लवाले पत्थर पर माथा टेककर सरमद ने औरगजेव की तारीफ करते हुए

गीत लिखकर गाया था—

"नंगी तलवार के रूप मे आज मेरा परम मित्र आया है—
मैं जानता हूं मेहरवान, यह तुम्हारा छद्मवेष है।
तुम जाने ऐसे कितने रूपो में मेरे पास आए हो।
यह भी तुम्हारा वैसा ही एक रूप है।
आज तुम मुझे अपने पास करीव खीच लोगे।
कितना आनन्द है आज !"

फकीर प्यारा उन्ही सरमद की राह के राही है। उन्हीके शिष्य। इनके मीठे गले से मुग्ध होकर महज़ दस साल की उम्र मे इन्हे बुलाकर अपना शिप्य वनाया था। भिखमगे के लडके। जनम के अंधे। सरमद खुद इनका हाथ धरकर राह चलते थे। खुद गाते और अधा वच्चा गला मिलाता। नाम उन्होने रक्खा प्यारा। तभी से ये प्यारा कहलाए।

चाद का दल उनकी कुटिया के सामने पहुचा। गाडियां पहुंची। परातें लेकर वांदियां उतरीं।

अंदर से खुश होकर प्यारा साहव ने पूछा—आ गए तुम लोग ? वहुत अच्छा।

चाद खा ने कोर्निश की—हा, वावा, हजरत की खिदमत मे हम आ गए।

वुरका पहने वांदियो ने पराते उनके सामने रक्खी। पैर के अगूठे को चूमकर वंदगी की। एक ने कहा, आशीर्वाद दीजिए हजरत !

हज़रत ने कहा—गन्ना कहां है ?

एक उनमें से आगे आई—मैं हूं हजरत। हजरत की वादी।

माथे पर हाथ फेरकर अधे फकीर ने कहा—वेटी !

—हजरत !

—अपनी सारी जिन्दगी जिस गीत को मै एकान्त मे गाता रहा— वह गीत तुम्हे सुना दूं। तुम खुद शायर हो। तुम्हारी अम्मा, तुम्हारे अव्वा—दोनों ही शायर। कहो तो सही, तुम्हे यह गीत कैसा लगता है। और इस गीत में जो है, वह सच है या नही।

दो उगलियां जोड़कर हाथ को वढ़ाते हुए उन्होने गाना शुरु किया—"दिन की रोशनी मे तुम्हे देखने के लिए आकाश की तरफ

ताका। देखा, तुम्हे ओट मे किए सूरज खडा है। कह रहा है, मुझे देखो। चांदनी रात मे ताका तो चाद को देखा। उसने भी वही बात कही। अंधेरी रात, आसमान मे घनघोर घटाएं—सब थम-थम। कही कोई आवाज नही। ऐसे मे देखा। कही कोई आड़ किए हुए नही था। मैंने कहा—कहा हो तुम ? तुमने कहा— दुख, आफत, अंधेरे में मैंने ही तो तुम्हे ढककर रखा है। अब तो तुम हो और मैं हू—मैं हू और तुम हो। देख नही रहे हो—कोई नही है, कुछ नही है; सब कुछ खो गया है।"

गन्ना अभिभूत हो गई।

सुरैया ने शंकित होकर कहा—आपने यह क्या सुनाया हज़रत !

—क्यो बिटिया ?

—गन्ना के नसीब मे···

—नही, नही। मेरी बात है, मेरी बात सुरैया। अंधे प्यारा साहब की खुशकिस्मती देखो—आजन्म अंधा, इसलिए आजीवन ही उनसे मिलन ! कभी जुदाई नही। तुम्हारी बेटी की गज़लें नौजवानी की है। सुनकर सारा हिन्दुस्तान दीवाना है। इसीलिए बुड्ढे फकीर ने सुनाकर उससे जानना चाहा कि यह गीत उसे कैसा लगा ? मेरा यह अनुभव क्या झूठ है ?

—नही हजरत, इससे सच शायद ही दूसरा कुछ हो।

—खैर। अब तुम लोग रवाना हो पड़ो। डोली-कहार ठीक है। कहार पूरे विश्वासी है, साहसी भी। हथियार थाम ले तो पक्के सिपाही ! रवाना हो जाओ। आफत मे डरना मत। हिम्मत रखना। देखोगी, आफत मे ही खुदा तुम्हारे बहुत करीब है—बिलकुल कलेजे के पास !

एक महीने के बाद।

शुकदेव आचार्य प्यारा साहब के झोपडे के सामने घोड़े पर से उतरा। साथ मे चांद खां। बदगी की।

अंधे प्यारा साहब ने कहा—पंडित ! आ गए भाई ? सुबह से ही लग रहा था कि कोई मेहमान आएगा। आओ, बैठो।

—यह हो क्या गया बाबा साहब ?

—क्या हुआ पंडित ?

—आपने मना क्यो नही कर दिया कि सुरैया वेगम, आज आगे मत वढो। हज़रत तो सव कुछ देखते हैं।

प्यारा साहव हसे। कहा—मजाक करते हो भैया! अंधा आदमी, मैं कैसे देखूं ?

—आप लाख कहे, मैं नही मान सकता हजरत। आप ललाट की आंखो से सव देखते है!

—नही, नही। मैं कुछ भी नही देखता। मगर तुम ऐसे अफसोस के साथ क्यो कह रहे हो ?

—कमल जैसी खिली गन्ना, उसके नसीव मे क्या हुआ यह ? नवाव वंगाश के यहां जा पहुची ? अव तो वह दिल्ली ही पहुंचकर रहेगी। काश आपने उस दिन उन्हे मना किया होता! जाट जवाहर सिह आपकी दरगाह की तलाशी लेने की हरगिज़ हिम्मत नहीं करता!

गन्ना वेगम लखनऊ नही पहुंच सकी। लखनऊ के वदले वह फर्रुखावाद के नवाव अहमद खां वंगाश के यहां पहुंच गई।

ढाई सौ सवार चार डोलियों को घेरे लिए जा रहे थे। फिरोजा-वाद से इटावा। वहां से कानपुर। सोचा था, जिस चालाकी से वे जा रहे हैं, उसमे हमला करना होगा, तो जवाहर सिंह जागीर पर धावा वोलेगा। वहां इकवाल खां उसका मुक़ावला करेगा। और तव तक इधर पचास सवारो के पहरे में सुरैया गन्ना को लेकर कानपुर मे गंगा पार करके लखनऊ पहुच जाएगी। लेकिन जवाहर को दौलत वेशुमार थी। उसके जासूस तमाम फैले हुए थे। आगरे के लोगो ने सच-सच ही विश्वास कर लिया था कि सुरैया वेगम अपनी जागीर को वापस जा रही है। वेटी का व्याह होगा। महीने-भर में सारा इंतजाम करके हीरे-मोती-जवाहरात ले-लिवाकर धूम-धाम से लखनऊ जाएगी। उसके तंजाम के अगल-वगल घोड़े पर सवार दस-वीस वांदियां होंगी—वे कमखाव का सलवार-कुरता पहने होंगी, सर पर जरी-दार टोपी, कमरवद मे लटकती तलवार, हाथ में सोना-रूपाजड़ा डंडा। उनके आगे-पीछे इकवाल खा के हिन्दुस्तानी मुसलमान सिपाही। सजी वैलगाड़ी पर नौवत झरती रहेगी। दो-चार हाथी होगे।

सबने विश्वास किया था ठीक ही, लेकिन जवाहर ने सही खबर पा ली थी। वह सौ सवारो के साथ उनके पीछे रवाना हो गया था। गोवर्धन घाट मे यमुना पार करके नगी तलवार लिए तेज़ी से चल रहे थे। शोर-गुल करने की मनाही थी, पर घोडे की टापो से उड़ती हुई धूल को तो नही छिपाया जा सकता था! गोवर्धन घाट से उडती हुई धूल ने आसमान मे बादल की लाल टुकडी-सी बना दी थी एक। महावन से इटावा का रास्ता कुछ कम नही—तीस कोस से भी ज्यादा।

धूल के उस लाल लबे मेघ को आसपास के गाव के लोगों ने शका से ताककर देखा।

तब के हिन्दुस्तान के लोग—वे ऐसी धूल का मतलब समझते थे। धूल का ऐसा बादल आज जाट घुड़सवारो के घोड़े की टापो से उठता, कल उठता मराठा सवारो के घोडो की टापो से, परसों रोहिला अफगानो के घोडो की टापों से। उधर से धूल का ऐसा बादल उठकर यह पता देता कि लखनऊ से नवाब की फौज उन्हे रोकने के लिए जा रही है। मगर पता क्या कि ये किस गांव पर टूट पड़ेंगे, आग लगा देगे, लूट-पाट मचाएगे, औरतो को छीन ले जाएगे! इसी-लिए ऐसे मे वे शोर मचाने लगते। गाव-गाव मे भगदड़ मच जाती। लोग घर-बार छोडकर भाग खडे होते। कही-कहीं दो-चार बडे गांवों मे नक्कारे बज उठते। गाव के जवान हाथो मे हथियार सभाले तैयार हो जाते। मुकाबला करेगे। न होगा तो जूझकर जान देंगे। इतनी देर मे रूंजी-पूजी लेकर औरते कही किसी शहर को भाग जाएगी, या कि किसी जमीदार-जागीरदार के इलाके मे, जगल-झाडी मे पनाह लेंगी।

सुरैया बेगम की टोली जैसे ही इटावा के आसपास पहुंची कि पीछे से गांवो मे पिटते हुए नक्कारों की आवाज़ आई। इस आवाज़ की एक खासियत है—लगता है, 'होशियार, होशियार' कहकर कोई सचेत किए दे रहा हो।

चांद खा के साथ जालिम खा था। इकबाल खा का साथी, बचपन का दोस्त, बहुतेरी लडाइयो का सगी। उसके कान बडे चौकन्ने। वह झट घोड़े की लगाम खीचकर पलटकर खड़ा हो गया। आसमान की ओर जो ताका तो चौक उठा। सांझ हो रही थी। सूरज यमुना के उस पार आसमान के नीचे लाल हो उठा था। उस

लाल आभा मे ऐसा लगा कि पीछे कोस-भर के फासले पर कही आग लगी है । उसीकी झलक है आसमान पर ।

सुरैया ने नक्कारे की आवाज़ सुन ली थी । वह डोली से उतरी। आसमान की तरफ देखा और तुरत फिर से डोली पर सवार होकर बोली—जल्दी, जितनी जल्दी हो सके, बढ़ो ।

आदमी का स्वभाव है यह । पीछे से खेदो तो आगे भागता है । आगे से खेदो तो पीछे । पीछे दुश्मन थे । कुछ देर तक वे सामने की ओर जी-जान से भागे । लगभग कोस-भर चलने के बाद उन्हें रुकना पडा । धूल का बादल आधे कोस पर आ पहुंचा । यमुना के उस पार सुदूर प्रसारी बैहार मे सूरज डूब गया । गोज़ होकर अंधेरे ने जैसे उन्हें चारो ओर से घेर लिया ।

ज़ालिम खां ने हुक्म दिया—ठहरो ।

घोड़े की पीठ पर ही वह सुरैया की डोली के पास गया। कहा—अब सामना करने के सिवा कोई चारा नही है बेगम साहबा । कही वे अंधेरे मे आंधी-से टूट पड़े, तो पलटकर मुकाबले का मौका न रहेगा !

सुरैया डोली से उतरी । कहा—लड जाओ जालिम खां । गन्ना !

गन्ना भी उतरी—अम्मां !

—खौफ खा रही है ?

—नही अम्मां !

—कही पकडाई पड गई, तो मर जाना । ज़िदा न रहना । ले, सवार हो जा डोली पर । जालिम खां···

—हुक्म बेगम साहबा !

—तुम लोग यहा पर लड़ जाओ । दस सवार और चाद खा को लेकर हम आगे बढे । क्या ख्याल है ?

—जालिम खा ने एक क्षण सोचा और कहा—आप ठीक ही कह रही हैं । तो एक बात और बता दू ।

—कहो ।

—साथ मे बीस सवार ले जाएं । आगे इटावा से दो रास्ते निकले हैं । बाये वाला रास्ता फर्रुखाबाद गया है, दूसरा कानपुर । वहां से दो दलो मे बट जाएं । दो डोली दस सिपाही फर्रुखाबाद और

दो डोली दस सिपाही कानपुर। जो कानपुर की तरफ जाएगे, बीच-बीच में मशाल जलाएगे। फर्रुखाबाद वाली टोली अधेरे मे जाएगी। खुदा की मेहरबानी और आपका नसीब—फर्रुखाबाद पहुच जा सकती हैं।

—लेकिन दो डोली जाएंगी कानपुर। तुम क्या बादी को···

—जी नहीं, वे डोलिया खाली जाएगी।

चैन की सास लेकर सुरैया ने कहा—ठीक ही है। वैसा ही होगा। डोलिया चल पडी। जालिम खा ने कहा—खुदा हाफिज ! फिर कहा—सिपाहियो, जिदगी मे नमक का कर्ज खून से चुकता है। क्योकि लहू की बूद मे नमक मिला हुआ होता है।

इसी उपाय से सुरैया और गन्ना को राहत मिली। लखनऊ के बदले पहुच गई फर्रुखाबाद। जवाहर सिंह नाकामयाब लौट गया। जान पर खेलकर उससे लड़ता रहा जालिम खा। नमक का बदला चुकाया। दो घटे से ज्यादा उलझाया उसे। उसके महज तीस सिपाही। जवाहर के सौ। कब तक लड़े ? जवाहर उसके बाद अपने लोगों के साथ कानपुरवाले रास्ते की तरफ दौडा और खाली डोली को लूटकर निराश लौट गया।

रास्ते मे गन्ना कैसी तो हो गई। शांत तो वह सदा की है, पर कैसी गहरी चिंता में पड़ गई। यहा तक कि गजल भी नहीं बनाती, न ही गाती। चुपचाप बैठी रहती।

नवाब बगाश ने उन्हे आदर के साथ रखा। उसने वजीरे-आजम इमादुल मुल्क से गन्ना की शादी का प्रस्ताव किया।

सुरैया की राय शायद कुछ बदली। डगमग हुई।

यह बात चाद खा ने बताई। सुरैया ने उसे शुकदेव पडित के पास भेजा। इसपर पडित की क्या राय है, यह वह जानना चाहती थी। पडित ने कहा था, फिर भी एक बार और जानना चाहती थी। साथ ही वह यह भी जानना चाहती थी कि पडित के शास्त्र के अनुसार कोई रत्न धारण कराके गन्ना को खतरे से बचाया जा सकता है या नही। पडित ने पश्चिम यानी दिल्ली ही जाने की मुमानियत की। इसका कोई खडन है या नही।

पंडित शुकदेव ने वार-वार हाय-हाय की। उस दिन रवाना होने से पहले सुरैया वेगम ने उसे फिर नही बुलाया। इसलिए कि शायद कुछ गड़वड़ हो। लेकिन जिस रोज़ निकले थे वे, वह दिन वडा बुरा था। दुनिया पर शनि, मंगल और राहु की दृष्टि थी। उत्तर को योगिनी रोके हुए थी।

इसीलिए शुकदेव ने प्यारा साहव से जाकर शिकायत की कि हजरत, आपने उन सबोको जाने क्यो दिया। सब जानते हुए भी यह क्या किया आपने ?

प्यारा साहव ने कहा—पंडित, मैं तो अंधा हूं भाई। तुम मेरी गोद के पास वैठे हो और मै देख नही पाता। माथे के ऊपर सूरज जलता है, मै नही देख सकता। दोपहर के वाद यहां से दस-वीस कोस के फासले पर क्या होगा, मैं कैसे देखूं ?

शुकदेव ने कहा—आप और जिससे धोखा करे, शुकदेव से छलना करने से क्या लाभ है हजरत ! मुझे तो सव मालूम है।

—यकीन मानो पंडित, मुझे कुछ भी मालूम नही। कुछ भी नही। एक ही वात सिर्फ मालूम है कि दुनिया मे जो भी होता है, वह खुदा की मर्जी है। अन्त तक जो होता है, अच्छा ही होता है। वीज से जव अकुर होता है, तो न तो फूल ही खिलता है, न फल ही लगता है। उस समय उसपर विचार नहीं हो सकता। मैं कहता हू, सभी अकुर मे पानी डालो। कोई फूल, कोई फल तो लगेगा ही।

—अगर जहर का फल हो···

वह भी हो तो किसी काम का ही होगा भाई। हकीम उसकी दवा वनाएगा। हिंदुस्तान के वैद साप के जहर की दवा वनाते है।

शुकदेव गरम हो उठा। कहा—आप जैसो से यह वात सुनने की उम्मीद नही थी हजरत। और कोई कहता तो समझता, वज़ीर से घूस लेकर कह रहा है। मैंने वज़ीर की कुडली देखी है। उससे शादी होगी तो गन्ना की तकलीफ की हद नही रहेगी। भाग्य मे वधन-योग होगा !

—तो तुम मना कर देना। मैं झूठ नही कहता। मै यह सव नही जानता।

—मै कहने को ही जा रहा हूं।

—पडित, हाथ और कपाल की रेखा से सब कुछ जाना जा सकता है, कहा जा सकता है ?

—हां । मगर आप यह बात क्यों पूछ रहे है ?

—मैं अधा हू न । नही जानता, नही समझता, इसीसे पूछ रहा हू ।

—बदगी हजरत । मै जाता हू ।

—चल दिए ? गुस्सा होकर जा रहे हो ?

—जी नही । अफसोस हो रहा है कि आपने गन्ना को मना नही किया ।

—मैंने कहा तो कि मै नही जानता !

—जानते है !

—नही । तुम आज रुक जाओ तो तुमसे समझ लूं । रह जाओ पडित । गणना करके मेरा नसीब मुझे बता जाओ ।

—लौटते वक्त । लौटते वक्त आपका नसीब बता जाऊंगा ।

—उससे पहले ही अगर मर जाऊं ?

हंसकर शुकदेव बोला—अभी आप बहुत-बहुत देखेंगे ।

—खुदा हाफिज पडित !

९

काबुल के शाही महल मे अब्दाली गुस्से मे भरा हुआ-सा पायचारी कर रहा था । हाथ मे एक चिट्ठी थी । सामने खड़ा था एक पजाबी अफगान । वह अफगान शाह का चेहरा देखकर डर गया था ।

अब्दाली ने रुककर पूछा—तुझे क्या मालूम है, बता ।

उसने समझा नही, सो चुप रहा ।

—अबे उल्लू,, मुगलानी बेगम ने लिखा है कि वह कैद मे है । किस किस्म की कैद है, बता ।

—जहापनाह, वजीर इमादुल मुल्क ने घर के पास ही एक घर मे कैद कर रखा है । छोटा-सा घर है । हरदम पहरा रहता है । पहले तो लाहौर के किले मे ही कैद रखने का हुक्म दिया था । फिर

जाने क्या हुआ, शायद हो कि आपको खबर भेजने की शंका से कहला भेजा कि वेगम को दिल्ली भेज दो। तव से मा-वेटी दिल्ली में कैद हैं। किसीको भी अंदर जाने का हुक्म नही है। किसीसे मिलने की इजाज़त नही है। खत नही लिख सकती। खाना-पीना भी ठीक नही मिलता। नाच-गाना नही। शीरां नही। वेंगम साहवा कभी-कभी सर के वाल नोचती हुई रोती है। दो वादी और एक खोजा है। खोजा वदा चुराकर मगला देता है। वही पीसकर पीती है। वजीर कहता है कि दिल्ली मे उनके शौहर की जो दौलत छिपी है, उसका पता वताने पर ही उन्हे अच्छी तरह से रक्खेगा और उमधा से शादी करेगा।

—तू उस घर मे कैसे घुसा ?

—वेगम साहवा की वादी एक रोज रात को मुझे बगीचे के दरवाजे से ले गई थी। पहरेदार को एक मुहर देकर मिलाया था।

—हां !

शाह अव्दाली ने फिर एक वार कमरे का चक्कर काटा। इतने मे अफगान सिपाही अंदर आया। कहा—अशरफ उन उजरा अमीर-ए कवीर मुख्तार ओ मुंशी वाली खां वहादुर !

—वाली खां वहादुर ! अंदर आओ।—और वह खुद कई कदम आगे वढ़ गया।

वाली खां अंदर आया। कोर्निश की। शाह ने इस असमय मे उसे वुलवा भेजा था। शाह को उत्तेजित देख वाली खां ने खुद कुछ नही पूछा। शाह ने कहा—दिल्ली से खत आया है। इमाद ने मुगलानी को ले जाकर कैद कर लिया है। वडी मुश्किल से उसने यह चिट्ठी भेजी है। पढ़ो !

खत उसके हाथ मे दिया। फिर बोला—वह वदमाश स्यार—हा, हां, इमाद स्यार-सा ही चालाक और बुजदिल है—उसने क्या उस नाचनेवाली तवायफ और कुइली खा की वेटी से शादी की है ?

—शादी जल्द ही होगी। वह लड़की फर्रुखाबाद में नवाव बगाश के यहां रोक के रक्खी गई है। वज़ीर वहा जाने की तैयारी कर रहा था।

—शैतान ! लुच्चा इमादुल मुल्क ! अपनी ममेरी बहन से शादी

तै थी । उसे छोडकर नाचवाली की वेटी से व्याह करेगा !

वाली खां ने चिट्ठी पढी । वह वोलने का मौका खोज रहा था । सुयोग मिलते ही कहा—वडी शर्म की वात है जहापनाह !

—वेहद शर्म की वात ! और मुगलानी के लिए वेइज्ज़ती की वात ! क्या राय है तुम्हारी ?

—जी, पंजाव से हमें वेदखल किया है। दखल तो उसे करना ही है।

—वेशक ! अवकी सारा पजाव छीन लेंगे । मैं दिल्ली भी जाना चाहता हूं ।

—मुगलानी वेगम को आपने धरमवेटी कहा है । उसे वचाना आपका फर्ज़ है जहापनाह। फिर खत मे यह भी है कि आप दिल्ली आएं तो नादिर की तरह ही वेशुमार दौलत हाथ लगेगी । मैं जहांपनाह को पता दूगी कि किस-किसके यहा दौलत है । अपने ससुर के यहा का तो मै जानती हूं। घडों अशर्फी-मुहर, जवाहरात माटी मे गडे हैं । छत के नीचे सोना-चादी के वर्तन हैं। मैं सव वता दूंगी ।

—हा-हां । मैं जाऊगा । ज़रूर जाऊंगा ।

—जी जहापनाह, यह मौका चूक जाइएगा तो फिर नही मिलने का । खुद वादशाह आलमगीर इमाद से नाराज है । मीरवख्शी सिपहसालार नजीवुद्दौला इमाद का दोस्त नही है । इतिज़ामुद्दौला भी उसका दुश्मन है । अभी वडा अच्छा मौका है···

—मैं चलूगा । तैयारी करो । वादशाही दरवार मे जितने भी नमकहराम-वेईमान है, सवको खत्म कर दूगा । इमाद को मैं···

शाह का चेहरा खौफनाक हो उठा । उसने अपनी नाक पर के चादी के खोल को उतार दिया । नाक पर एक जख्म था, जिसे चांदी के खोल से अव्दाली ढके रखता था । जोश मे लहू के दवाव से वह जख्म दुख उठा । फिर भी वह खुश हुआ । यह लक्षण उसके लिए अच्छा है । एक ऊर्ध्ववाहु हिंदू साधु स्वामी प्राणपुरी ने उसे वताया था । गजनी के पास वह साधु है, यह जानकर इस जख्म के लिए ही अव्दाली ने उसे वुलवाया था । उसने सुन रक्खा था कि हिंदू सन्यासी जादू जानते हैं, ऐसी दवाए जानते है, जो हकीम नही जानते, वैद नही जानते, ईसाई मुल्क के 'डागडर' नही जानते । उस साधु

से उसने वह जख्म अच्छा कर देने के लिए कहा था। कहा था, ठीक कर दोगे तो मैं बहुत धन दूगा, और नही तो गरदन उतरवा लूंगा। सन्यासी ने कहा—इससे पहले मैं एक बात जानना चाहूंगा। उसके बाद बादशाह जो कहेगे, वही करूगा। बताने से आराम कर दूगा।

—कौन-सी बात ?

—आपके कपाल से मुझे यह मालूम हो रहा है कि आपकी बादशाही का मूल आपकी नाक का यह जख्म ही है। इसी जख्म के होने के बाद आप बादशाह हुए है। यह जख्म जितना बढ रहा है, आपकी बादशाही का दायरा भी उतना ही बढ रहा है। यह अच्छा हो जाएगा तो···

प्राणपुरी इसके बाद चुप हो गए। शाह चौंका। मन ही मन उसने संन्यासी की बात को मिलाकर देखा। ठीक ही कहा है। बिलकुल मिल जाता है कहना। कहा—तुम्हारी बात सही है सन्यासी। यह जख्म रहेगा। मैं तुम्हें इस कहने के लिए नजराना दूगा।

दिया भी था। बात भी ठीक थी। घाव की शुरुआत में वह ईरान से कंधार के अब्दाल अफगानों का मालिक हुआ था। जख्म बढने लगा—राज्य भी बढने लगा। काबुल, सारा अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, उसके बाद पेशावर पार करके पंजाब, मुलतान तक। घाव अभी टनटना रहा है—फिर बढेगा। अबकी दिल्ली तक। नः, दिल्ली से भी आगे··· खुश हो गया अब्दाली।

मिट्टी और पानी से यह ससार जितना ही विशाल है, उतना ही विराट। हिंदू भी कहते है, मुसलमान भी कहते है, भगवान की इच्छा से, खुदा की मर्जी से सब कुछ होता है। उन्हीके ख्याल से एक ही वक्त हजार कोस दूर से अपने परदेसी बेटे के बारे मे मा सोचती है और मा के बारे मे बेटा भी सोचता है। दुश्मन जब दुश्मन का खून करने की बात सोचता है, कभी-कभी खुदा की मर्जी से, भगवान की इच्छा से दुश्मन भी बुरा सपना देख नीद मे चौंक उठता है। कोई झूठ कहे, तो उससे झगड़ना नही है, लेकिन ऐसा होता है—हजार सबूत मिलेगे इसके। उस रोज़ भी ठीक यही हुआ। फर्रुखाबाद के उत्तर पश्चिम मे वजीरे-आजम इमादुल मुल्क की छावनी पडी थी।

उस छावनी मे इमादुल मुल्क के खेमे मे नवाव वगाश और इमाद मे यही वाते हो रही थी।

उमधा वेगम को दिल्ली मे नज़रवद करके इमाद गन्ना वेगम के लिए यहा आया था। आज ही। उसे गन्ना वेगम चाहिए।

इमाद ने कहा—खानजमान की वेगम से कहो, खानज़मान जव दिल्ली मे गुज़रे तो मैंने उनसे कहा था कि मै गन्ना से शादी करना चाहता हू। वे नवावजादा शुजाउद्दौला के बारे मे वोले। उससे डरते थे। मैंने कहा था, डरने की कोई वात नही। खानज़मान ने अपनी आंखों देखा है कि नवाव सफदरजग को मैंने किस तरह से दिल्ली से भगाया। ज़रूरत होगी तो सूबे-अयोध्या को मैं सर कर लूगा। शादी के वाद आप लोग दिल्ली आ जाइएगा। लखनऊ के नवाव की परवा नही रहेगी। खानजमान ने मुझे वात दी थी।

वगाश ने कहा—वेगम को किसी काफिर पडित ने गन्ना की शादी पूरव मे करने को कहा है। पश्चिम मे क्या तो हिंदुस्तान के नसीव मे आधी उठ रही है। गन्ना के भाग मे है, उस आधी मे वह टूटे पत्ते की तरह उड़ जाएगी।

इमाद हसा। वोला—उस पडित को आप वुलवा भेजे नवाव। मैं उसे अशर्फियां दूगा। वह दूसरी राय देगा। पच्छिम की आधी तो अव्दाली की आधी है। अवकी दुनिया वादशाही फौज की हिम्मत देखेगी। उसे वैरंग वापस भागना पडेगा!

—मगर एक वात आपसे मैं कहूं?

—जरूर कहिए नवाव साहव।

—उमधा से शादी बहुत पहले से तै है। वह आपकी ममेरी वहन है। मुगलानी वेगम जो भी करे, मीर मन्नू साहव खानदानी रईस थे। उसकी वेटी से आप पहले शादी कर ले, फिर···

वाधा देकर इमाद ने कहा—मुगलानी वडी शैतान है। मेरे मामा साहव के जीते-जी जव वात पक्की हुई, तो उसने मुझसे कुरान की जिल्द पर लिखवा लिया—"उमधा से व्याह करके मैं दूसरी शादी नही करूंगा।" नवाव साहव, राजनीति और वात है। इसमे आज कुछ कहे और कल न माने तो कोई गुनाह नही होता। लोग कहते हैं, वादशाह अहमदशाह ने मुझसे कुरान छूकर कसम खिलाई थी कि

मैं उनका कोई नुकसान नही करूगा। मगर मैने वादशाह को गद्दी से उतारकर अधा वनाया, कैद करके रक्खा। लेकिन सच पूछिए, तो मैंने कुछ नही किया। सभी परवानो पर आलमगीर के दस्तखत हैं। मैंने उन हुक्मो की तामील की है। इस मामले मे भी मै वही करूगा। उमधा से व्याह करके फिर व्याह नही करूगा। पहले करने मे क्या दोष है ?

वगाश हैरान होकर उस जवान वजीर को देखता रह गया। इसे ताडकर इमाद ने हंसते हुए कहा—नवाब साहव। इमादुल मुल्क मजहव को ज़रूर मानता है, लेकिन अक्ल से वह मजहव की तलवार पर अपने माथे हिंदुस्तान की भावना का बोझा ढोए चलता है—पांव पर एक बूद भी लहू नही गिरता। दुनिया मे ऐसी भी एक जगह चाहिए, जहां आनन्द मिले। मेरी वह जगह गन्ना है।

वाहर का पहरेदार आया। कोर्निश करके खडा हो गया।

इमाद ने उसकी ओर ताका—क्या है ?

—वेगम खानजमान के यहा से एक लडका आया है।

—वेगम सुरैया के यहा से ? चांद खा ?—वगाश ने कहा।

—जी हा, हुजूर। चांद खा ही नाम बताया। वजीरे-आजम को सलाम भेजा है।

वजीर ने कहा—बुला लाओ।

चाद खां ने झुककर सलाम किया—एक खत लाया हूं खुदावंद।

—वेगम सुरैया ने भेजा है ?

—जी नही। साहवजादी ने भेजा है।

—साहवजादी ? गन्ना वेगम ने ?

—जी।

इमाद चचल हुआ। अपने को सभालकर उसने हाथ वढाया। घुटने गाड़कर चाद खा ने रूमाल पर खत को रक्खा।

इमाद ने खत को उठाया। सुन्दर कागज पर साफ-साफ हरूफ। धीरे से उसे खोला। पढा। कभी चेहरा सुर्ख हो आया, कभी सफेद। पढ़ने के वाद पूछा—साहवजादी ने इस कैदी को कैसे देखा ?

चाद खा ने सलाम करके कहा—जी, वे कहा से देखेगी। उन्होने मुझसे सुना है। मैं दोपहर को खुदावद की छावनी देखने आया था।

घूमकर देख रहा था। कैंदखाने मे उस कैंदी को देखकर ताज्जुव हुआ। मैने इसीलिए साहवजादी से कहा।

ताज्जुव का क्या देखा ? साहवजादी से तुमने क्या कहा ? कैंदी ने तुमसे क्या कहा था ?

—कैंदी ने मुझसे कुछ नही कहा खुदावंद। मैंने भी उससे कुछ नही कहा। हैरत हुई कि उसकी एक आंख फूट गई है। सुई चुभो दी है। आख सूजी हुई है। सारे चेहरे पर चेचक के दाग। सामने रोटी-पानी धरा है, पर उसकी वह एक आख आसमान की ओर है। कौए रोटी खा रहे है, उसे होश नही है। वोला—भूख उन्हे भी लगी है भैया! खाने दो। पहरेदार ने कहा—तुम्हे भूखा जो रहना पडेगा। तीन-चार दिन से उपवास कर रहे हो। उसने कहा—खुदा की मर्जी। पहरेदार ने कहा—इसे और कितना सुनू! एक आख फोड ली। कहा, खेल नसीव का! आखिर क्यो ? खेल नसीव का क्यो, और मर्जी ही खुदा की क्यो ? वजीर साहव ने तसवीर वनाने को कहा। नही वनाई। 'मेरी इज्जत है।' तसवीर वनाने से इज्जत क्या जाती ? वह हंसा। पहरेदार ने कहा—आखिर तुम्हारी गरदन जाएगी। वह वोला—तभी मेरी इज्जत रहेगी भैया। यह सव देख-सुनकर मुझे ताज्जुव हुआ। मैंने जाकर साहवजादी से कहा। सुनकर उन्होने यहखत लिखा।

हु।—वजीर चुप हो गया।

नवाव वगाश ने पूछा—कैंदी ? किस कैंदी के वारे मे लिखा है ?

वजीर ने चिट्ठी नवाब को दी।

गन्ना ने लिखा था—"वजीरे-आजम एक मामूली लडकी के लिए दिल्ली से यहा आए है। मेरी अम्मा ने नवाव शुजाउद्दौला के लिए वचन दिया है और मुझे लखनऊ ले जा रही थी। हुजूर ने आज अम्मा को कहला भेजा है कि मेरे अव्वाजान ने आपको मुझे सौपने की कही थी। मगर मैंने अपने-आपको किसीको नही दिया है—मन से भी नही। हुजूर, मै खुद ही अपना हाथ आपके हाथ पर रख दूगी। लेकिन मुझे आपसे एक भीख मागनी है। आपके साथ एक चेचकरू कैंदी है, जिसकी एक आख हुजूर के हुक्म से जाती रही। यह वादी उस कैंदी की रिहाई चाहती है। उसे छोड देने से यह वादी

वज़ीरे-आज़म के हाथ सदा-सदा के लिए विक जाएगी ।"

दूसरे दिन सुरैया ने गन्ना से कहा—यह तूने क्या किया गन्ना?

—क्या किया? कोई बुरा काम किया है?

—लेकिन पंडित जो कह गया कि इमाद और दिल्ली—ये दोनो गन्ना के लिए मौत से भी भयकर हैं! उसने यह जो कहा—उससे तो अच्छा है वेगम साहवा, कि आप उसे जहर दे दे!

—मर्जी खुदा की अम्मा, खेल नसीव का! मै क्या करूं? अब जो होना होगा सो होगा ।

इतने मे चांद खां आया। कहा—कैदखाने मे वह कैदी नही है साहवजादी। उसे छोड दिया है।

—कौन? किसको?—सुरैया ने पूछा।

गन्ना नही वोली। जवाव चाद खां ने दिया—वह एक अजीव आदमी है वेगम साहवा! मुह मे चेचक के दाग। एक आख उसकी फोड़ दी है। उसपर भी वह कहता है—खुदा की मर्जी। रोटी देने पर खाता नही—कौए को खाने देता है। कहता है—उसे भी भूख लगी है। पहरेदार कहता है—तुम कर क्या रहे हो यह? वह कहता है—मैं क्या करता हूं? सव खेल है नसीव का।

सुरैया वोल उठी—आदिल!

चाद खां ने कहा—साहवजादी ने वज़ीरे-आजम से उसकी रिहाई मांगी थी। वजीरे-आजम ने उसे रिहा कर दिया।

गन्ना वोली—वज़ीरे-आज़म जिन्दाबाद! मै उनकी वादी हूं। उन्होने मुझे दुनिया की सबसे वड़ी दौलत दी है।

१०

तीन महीने के वाद।

अपने विशाल प्रासाद के शयनकक्ष मे वजीरे-आजम इमादुल मुल्क अपनी नई व्याहता दुलहिन गन्ना के वगल मे पलंग पर वैठा था।

हाथ मे वीणा लिए गन्ना उसे गजल सुना रही थी—"मेरे मुंह

की ओर ताकते हुए तुम किसे देखते हो ? वहा क्या तुम अपने को नही देख पाते ? मैं भी तो तुम्हारे चेहरे मे अपनी ही छवि ढूढती हू। पाती क्यो नही हूं, कहो तो ? लोग कहते हैं—यही तो दुनिया का दुख है। लेकिन यह दुख झूठा है। दुनिया मे यह हरगिज नही होता। गन्ना कहती है—तुम नही जानते ! यह झूठ नही, सच है। प्रेम मे दीवाने हो जाओ। तुम दीवाने, मैं दीवानी। तव देखोगे मुझमे तुम हो, तुममे मै हू। हाय गन्ना, दीवानी क्यो नही वन पाती ?"

इमाद ने उसे देखकर कहा—इसे तुम सच मानती हो गन्ना ?

—जी खुदावद !

—आः ! तुम मुझे खुदावंद क्यो कहती हो ?

—मैं आपकी वादी जो हू !

—नही, तुम मेरी व्याहता हो। प्यारी हो।

गन्ना सर झुकाए पलग पर विछी कमखाव की कीमती चादर को देखती रही।

इमाद ने उसे अपनी छाती के पास खीच लिया। गन्ना ने हाथ की वीणा को धीरे से मखमल के तकिये पर रखकर अपने को सौप दिया।

—तुम ऐसी क्यो हो, कहो तो ?

—कैसी खुदावद ?

गरम होकर इमाद ने कहा—फिर वही खुदावंद।

—मेरा कसूर माफ हो, अव नही कहूगी।

—यह तो तुम शादी के ही वक्त से कहती आ रही हो। और तुम इतनी ठडी क्यो हो ? तुम्हारे कलेजे मे जरा भी उत्ताप क्यो नही है ? तुम क्या उसी आदिल—वही झूटा वादशाह—शुजाउद्दौला ...खरीदा हुआ गुलाम...

—नही, नही।—सिहरकर गन्ना वीच ही मे वोल उठी—नही, नही। वह न तो झूठा वादशाह है, न ही सच्चा वादशाह। वह फकीर है। वह किसीका गुलाम नही, आजादो मे आजाद है। वह किसीके प्रेम का नही, श्रद्धा और दुआ का पात्र है। मैं उसकी फकीर जैसी ही भक्ति करती हू। मैने खुदा का नाम लेकर खत लिखकर अपना सब कुछ आपको वेच दिया है। इसीसे भूल नही पाती कि मै वादी हूं।

इमाद भवें सिकोड़कर सोचने लगा। अजीब लड़की है! उस-पर शुबहा करके बार-बार अपने-आप ही शर्म आती। फिर भी...

वज़ीर की सोच में बाधा पड़ी। तातारिन ने आहट से जताया कि उसे कुछ कहना है।

गन्ना को छोड़कर इमाद ने कहा—अन्दर आ जा।

तातारिन ने आकर कोर्निश की। कहा—हुज़ूर के दफ्तर से एक सवार को साथ लेकर सरदार आया है।

इतनी रात को सवार! उसका शिकन-पड़ा कपाल और भी सिकुड गया। सवार आता है। रात को भी, दिन को भी। दूर-दूर से खबर आती ही रहती है। वज़ीरे-आजम के दफ्तर मे हर वक्त कोई न कोई सरदार रहता है, जो उन सवारों को टिकाता है। वज़ीर के बठक मे बैठने पर सवारो को उनके सामने पेश करता है। खूब जरूरी होने पर रात हो या दिन, उसी वक्त हाज़िर करता है।

कहा क्या हुआ? रोहिलखंड मे अफगानो ने बादशाह के महाल पर हमला कर दिया? भरतपुर के जाट?

अन्त नही है इसका। इन बेईमानों ने हमला कर-करके खास महाल को परगना बना दिया, गोकि इस खास महाल की आय से ही बाद-शाह का अपना, हरम का खर्च चलता है, उसीसे तनखा दी जाती है। कुछ दिल्ली के बाज़ार की आय। इमाद ने अफगानो से लडकर कुछ खास महाल छीने है। वे फिर झपटे है?

याकि मराठे? मराठो से इमाद ने एक समझौता कर लिया था। पर उनका एतबार क्या? तोड़ सकते है समझौता।

पश्चिम मे पजाब। पंजाब के उस पार...। इमाद की छाती धड़क उठी। ठिठककर खडा हो गया। अब्दाली?

कलेजा धडकने लगा। लेकिन इतनी जल्दी कैसे आएगा? उसे तो रुपये से मतलब। उसके भेजने का समय तो हुआ नही।

अपने को जब्त करके वह उतरा। बैठक मे जाकर कहा—बुला सरदार को। सवार कौन आया है, उसे भी।

दोनो ने आकर कोर्निश की। इमाद ने उद्विग्न होकर पूछा—कहा का सवार?

—लाहौर का।

—लाहौर ? क्या बात है ? सिक्ख लोग लाहौर दखल करने आए है ?

—जी नही, खुदावद । शाह अब्दाली आधी की तरह चल पडे हैं । पेशावर तक आ पहुचे है । सूबेदार साहब ने यह खत भेजा है ।

खत हाथ मे लेकर वजीर कुछ देर चुप रहा । अब्दाली ! फिर अचानक बोल उठा—पानी ! पानी दो !

शाह अब्दाली आ रहा है । कोई पचास हज़ार, कोई पचीस तो कोई अस्सी हजार फौज बता रहा है । सारी दिल्ली पत्तो जैसी काप उठी । तो भी उम्मीद थी कि हाथ से निकले पजाब पर कब्जा करके लाहौर, सरहिन्द, मुलतान, जलधर, अमृतसर को लूटकर, सिक्खों को तबाह करके अब्दाली लौट जाएगा; दिल्ली तक नही आएगा ।

मुगलानी बेगम जहा कैद थी, उस घर से बीच-बीच मे स्त्री का अट्टहास सुनाई पडता था । हा-हा-हा-हा !

इमाद को न दिन चैन, न रात नीद । दिन-रात काम मे व्यस्त । अपने बहाल किए मराठा सैनिको के लिए अताजी माणकेश्वर से राय-मशविरा करने लगा । पेशवा के पास आदमी भेजा । सवार पर सवार । उधर सूरजमल के पास नागरमल को भेजा भरतपुर ।

नजीबुद्दौला नवाब मीर बख्शी से चखचुख चल रही थी । नजीबुद्दौला कह रहा था—दो साल से फौज की तनखा बाकी पडी है । मुझे दो करोड़ रुपये दीजिए—मै मुकाबले को रवाना होता हू ।

इमाद ने कहा—तुम्हारी या तुम्हारी फौज की दमडी भी बाकी नही है । तुम्हे इसके लिए आधा दोआब जागीर मे दिया गया है ।

इतिजामुद्दौला नजीबुद्दौला से सलाह करने लगा ।

बादशाह आलमगीर भी शायद उन्ही लोगो की तरफ था, जिसे इमाद ने ही बादशाह बनाया !

गन्ना ने एक रोज कहा—खुदावद !

इमाद झरोखे पर खडा होकर यमुना के उस पार देख रहा था । सोच रहा था । शाह इसी ओर से आएगा । मुह फेरकर कहा—कहो ।

गन्ना ने कहा—दूर गाव मे जो छोटा-सा घर, मामूली खेत-खलि-

हान लिए रहते है, वे क्या हमसे सुखी नही हैं? चलिए, हम दुश्चिता और दुर्भाग्य का वोझा उतारकर चले चले।

रूखे स्वर मे इमाद ने कहा—मैं निजामुल मुल्क खानदान का हूं। अपनी हिम्मत और अक्ल के जोर से बीस साल की उमर होते न होते हिन्दुस्तान का वज़ीर, वादशाह का वादशाह बना हूं। यह वात दूसरा कोई कहता तो मैं उसकी जीभ निकाल लेने का हुक्म देता।

गन्ना का चेहरा उतर गया।

इमाद ने कहा—मुझसे एक चूक हो गई। वहुत वडी चूक! औरत की सूरत और गजल गाने की खूबी से मैंने एक तवायफ की वेटी से शादी कर ली—पंजाव की सूवेदारी की वारिस उमघा को छोड़कर! नसीव के शतरंज-खेल मे सवसे जोरदार मुहरे को हटा दिया।

कहते-कहते उतरकर चला गया। घर के सामने घोड़ा तैयार था। उछलकर सवार हो गया। साथ मे सवार पहरेदार चला। लाल किले के दफ्तर में पहुचा। वहां वल्लभगढ़ का दूत नागरमल वापस आकर इतजार कर रहा था। मराठा सेनापति अंताजी का आदमी वैठा था।

नागरमल ने कहा—जाट राजा सूरजमल वज़ीरे-आज़म से मिलने आए हैं। लेकिन···

—लेकिन ?

—राजा सूरजमल कह रहे है, वजीर साहव पहले मराठों को हटाएं। उसके वाद अफगान, मुगल, जाट राजपूत सेना लेकर पजाव चलें।

मराठा सेनापति के वकील का चेहरा लाल हो गया। वह खड़ा हो गया। वोला—तो सलाम वज़ीर साहव! मैं चला।

इमाद ने उठकर उसका हाथ पकड़ा। यह नाराज होने का वक्त नही है पंडितजी! वैठिए।

ठीक इसी वक्त किले के वाहर शोर-सा हुआ। हज़ार-दो हजार आदमियो का गला।

वजीर परेशान होकर वोला—क्या हो गया ?

मुगल पहरेदार ने आकर खवर दी—नजीवुद्दौला के सिपाही तलव के लिए शोर मचा रहे हैं। कुछ सिपाही कटरे की दूकानें लूट रहे है।

वज़ीर असहाय-सा वैठा रहा। क्या करे? दो ही महीने पहले

वज़ीर ने अपने फौजदार को रुखसत कर दिया था। ऐसा सोचा नही था। वह काठ का मारा-सा बैठा रहा।

कसूर खुद का भी था। सिपाहियो की तनखा बाकी पडने का कसूर अकेले नजीबुद्दौला का नही था।

फिर एक पहरेदार आया।—सरहिंद से सवार आया है।

—जल्दी बुला बेवकूफ। अभी एक लमहे की कीमत एक घटे से ज्यादा है।

सवार ने आकर सलाम बजाया।

—क्या खवर है ?

हुज़ूर, शाह अब्दाली ने लाहौर पर कब्जा जमा लिया। सरदार जहान खां जलधर मे दाखिल हो गए। अदीना वेग जगल मे भाग गए। लाहौर से सरहिंद तक रास्ते के दोनो किनारे के गांव खाली हो गए। खा-खा कर रहे है। गृहस्थ, अमीर, भिखमगे और फकीर—सभी भाग गए। कोई उत्तर, कोई दक्खिन। दिल्ली की तरफ हज़ारो-हजार लोग चले आ रहे है। उधर शाह अब्दाली तुरत दिल्ली रवाना होने को है। शायद हो कि जहान खा इस बीच सरहिंद पहुच गए हो।

नागरमल ने कहा—सूरजमल से भेट करनी हो, तो अभी ही चले !

इमादुल मुल्क बड़ी रात गए लौटा। तिलपथ से इतनी दूर आते हुए घबराई हुई दिल्ली की धड़कन सुनी। तिलपथ से दिल्ली फाटक तक की बस्तियों के लोग सब कुछ सहेजने लगे थे। भागने की तैयारी। पुराना किला, फिरोज़शाह कोटला मे घबराहट ज्यादा थी।

चोर, लुटेरे, गुडे सक्रिय हो उठे थे। ऐसे गोलमाल मे उनका कारबार चल निकलता है। वे निकल पडे थे।

एक जगह एक गुडा एक औरत को खीचे लिए जा रहा था। औरत वेचारी चीख रही थी। वजीर का एक सिपाही चिल्लाया—ऐ, कौन है ?

जवाव मिला—तेरा बाप !

वजीर ने कहा—खामोश ! आगे वढो !

वजीर का सर झिम-झिम करने लगा। नागरमल ने सूरजमल

का सदेशा कह दिया—पहले मराठो को हटाइए ।

साथ ही हंसकर कहा—अब उसका भी समय कहा रहा वजीर साहब ! अब्दाली तो लाहौर पहुच गया । अब वीस ही दिन मे यमुना के उस पार से तोप दागेगा । मैं चला । अपना भी घर सभालना होगा ।

वज़ीर के गुस्से का ठिकाना नही रहा । यह जाट राजा—इसका वाप एक मामूली भुइया था । उसके वाद वदन सिंह । वदन सिंह का दत्तक वेटा सूरजमल दिल्ली के वज़ीर के सामने ऐसा कहने की जुर्रत करता है ! मगर आज वजीर को एक भी वात कहने की हिम्मत नही थी !

सूरजमल ने कहा—वजीर साहव, चूक करने से उसका महसूल देना पड़ता है । आपने इतनी वड़ी गलती की, उसका महसूल जरूर देना होगा । आप खानजमान की वेटी से व्याह क्यो करने गए ? छि. छि. । उसीके लिए मुगलानी वेगम से झगड़ा किया । नवावज़ादा शुजाउद्दौला इसीलिए आपसे विगड़ गया है । उसके चलते नवाव सफदरजंग एक भी सिपाही नही भेज सकेंगे । लेकिन हां, मेरा उपकार किया है । जवाहर उस लड़की को छीन लाने गया था । नही सफल हुआ । उस लडकी की शादी शुजा से होती, तो वल्लभगढ़ से लखनऊ की लड़ाई होती । आपके व्याह कर लेने से वह झगडा नही हुआ । यह भूल आपकी सवसे वड़ी भूल है । दूसरी भूल कि आपने मराठो से दोस्ती की !

—ठीक है राजा सूरजमल । आपने भी लेकिन एक भूल की । आप यह भूल गए कि सदा यही हालत नही रहेगी ।

—नही वज़ीर साहव, भूला नही हूं । आज का दिन भी कल नही रहेगा । परसो आएगा अब्दाली । अब्दाली के जाने के वाद भी और कोई दिन आएगा—उस दिन की वात तो उसी दिन होगी, आज नही ।

—अच्छा, चला ।

—खुदा हाफिज वजीर साहव । खुदा आपको वचाएं ।

रास्ते मे वजीर अपनी चूक का हिसाव लगाता जा रहा था । चूक और भी एक हो गई है । अपनी खास फौज के सिपाहियों को

बर्खास्त कर दिया । तलब के लिए बहुत तग करते थे । यों वे लूट-पाट मचाकर खाते थे । मगर तो भी तनखा के लिए तंग करते थे । बादशाह का खजाना खाली । बादशाही खास महाल को जागीरदारो, रोहिलों ने जबर्दस्ती दखल कर लिया । अपनी जागीर के रुपये वे नही देने के । और ये सिपाही ऐसे बदमाश गंवार है कि घर जाकर वजीर का अपमान किया । उन्हे जवाब नही दे दिया होता, तो देख लेता !

दिल्ली मे घुसते ही अगल-बगल के गोलमाल की तरफ ध्यान गया । सर्दियो की रात । पहर बीत गया । अब तक सब सन्नाटा हो जाता है । लोग खिडकी-दरवाजे बन्द करके सिमट-सिकुडकर सो जाते है । खटिया के नीचे अंगीठी मे अगारे गनगन करते रहते है । आज इन्हे सर्दी, नीद—कुछ नही लग रही थी । चीख रहे थे । जान के डर से भागने की तैयारी कर रहे थे ।

वजीर दिल्ली फाटक पर पहुचा । फाटक पर सिपाही अभी तक थे । वजीर के सिपाही ने जाकर कहा, फाटक खोलो । खुद वजीरे-आजम खडे है । जल्दी ।

फाटक से घुसते ही दरियागज । नागरमल ने कहा—वजीर साहब, मै यही से अपने घर जाऊगा ।

—कल सुबह जरूर आइएगा नागरमलजी ।

—कल सवेरे तो नही आ सकता, माफ करे । कल बाल-बच्चों को मथुरा-वृन्दावन भेज देना है । यहा रखने का भरोसा नही होता । आपने नादिरशाही हमले के बारे मे सुना है, मैने अपनी आखो देखा है ।

वजीर ठक् खडा रहा ।

सामने दरियागज मे भी हलचल । बाईं ओर का रास्ता अजमेरी फाटक तक गया है । वहा भी गोलमाल ।

आतक से सारी दिल्ली की नीद हराम हो गई थी ।

अपने दो सिपाहियो को लेकर नागरमल चला गया । वज़ीर घोड़े की लगाम थामे खडा ही रहा । एक सिपाही ने कहा—हुजूर !

—हा ।

—रात दोपहर हो गई ।

—हां। चलो।

लगाम खीचकर घोड़े को इशारा किया। पांव की एडी से पेट में ठोकर लगाई। घोडा भागा।

इमाद अपने सोने के कमरे में पहुंचा। शमादान की वत्तियां आधी से ज्यादा जल चुकी थीं। फर्श के कीमती गलीचे पर तकिये के सहारे सर्दी से सिकुड़कर वैठी ही सो गई थी गन्ना। एक हाथ वीणा पर। सामने पानदान। इतरदान।

इमाद के क्रोध की सीमा नही रही। इस औरत को कोई फिक्र ही नही। गजल लिखती है। गीत गाती है। इसके भेजे मे क्या कुछ भी नही है?

गुस्से मे ही उसके दोनो कंधे झकझोरकर कहा—गन्ना!

गन्ना चौंककर जाग पड़ी। उसके वाद इमादुल मुल्क को देखकर वड़ी नम्रता से वोली—गुस्ताखी माफ करे, मैं सो गई थी।

अपने कपडे वदलने के कमरे मे जाते-जाते इमाद ने कहा—खाना दे जाने को कहो।

वजीर ने पोशाक वदली, वजू किया और नमाज़ पढने वैठा। आज नमाज़ मे भी समय की भूल हुई। इसके लिए अफसोस किया। लेकिन उसपर भी अब्दाली की शक्ल याद आई। वार-वार अपनी चूक का ख्याल हो आने लगा। चूक है गन्ना। चूक है मराठे। चूक है अपनी फौज को वर्खास्त कर देना। आज जिस दिल्ली को अभी-अभी देखा, वह याद आई। अपने कमरे मे वैठे-वैठे भी दिल्ली के लोगो का कोलाहल सुनाई पडने लगा।

परिवार तो उसे भी हटाना होगा। हां, गन्ना को पहले भेजना होगा। लेकिन कहां?

छि.-छि.-छि! मेहरवान खुदा, अपने इस फिक्रमंद वदा के कसूर को माफ करो! नमाज़ पढकर लौटा। देखा, खाना तैयार है। गन्ना सव ठीक-ठाक करके इंतज़ार कर रही है।

खूव भूख लगी थी। खाकर कुछ चैन-सा आया। फिर वही चिंता। कहा भेजा जाए? आगरा? नही। भरतपुर पास ही है। लखनऊ भी। एक तरफ जवाहर सिह। दूसरी तरफ शुजाउद्दौला।

फर्रुखाबाद ? वहा गन्ना की मा है। नवाव बगाश है। न-न। फर्रुखाबाद लखनऊ से और भी करीब है।

तब ? तो फिर कहां ? अजमेर ? हां, अजमेर। वहा अपना घर है पिताजी का बनवाया हुआ। वही खतरे से खाली होगा।

सबसे सुरक्षित होता हैदराबाद।

इमाद पहले निजामुल मुल्क आसफजा का पोता है। हैदराबाद सुरक्षा के लिहाज से सबसे अच्छी जगह होता। मगर बहुत दूर दक्खिन है। दिल्ली और हैदराबाद के बीच बहुतेरे मराठे, राजपूत, जाट, मुसलमान राजा-नवाब वज़ीर से कुढे हुए है। सबसे बेहतर अजमेर है। इस्लाम का पवित्र तीर्थ। वहां अब्दाली का हमला नही हो सकेगा। दिल्ली-अजमेर के बीच राजपूत, जाट राजा है। वे अपने स्वार्थ के लिए लड़ेगे। अजमेर ही सबसे अच्छा होगा।

हठात् बोल उठा इमाद—गन्ना, कल तमाम दिन तैयारी कर लो। परसो सुबह अजमेर के लिए रवाना होना होगा।

—अजमेर !

—हा। सारे अमीर-उमराव अपने-अपने परिवार को दिल्ली से बाहर भेज रहे हैं। अफगान फौज कही दिल्ली घुस आई, तो दिल्ली दोजख हो जाएगी। हिंदू-मुसलमान किसीको भी रिहाई नही। और अगर अब्दाली जीता, तो मुगलानी बेगम सबसे पहले हमारे-तुम्हारे पीछे पड़ जाएगी !

—ठीक है। चले, हम लोग यहा से चले जाए।

—तुम और अम्माजान जाओगी। मेरा चलना नही होगा।

—तो फिर मै क्यो ?

—मेरा हुक्म। तुम जाओगी।

—मगर आप क्यो रहेगे ?

—मैं हिन्दुस्तान का वजीर हू गन्ना। मै अगर आज भाग जाऊ तो फिर कभी दिल्ली मे कदम नही रख सकूगा। दिल्ली के भिखमंगे तक मेरे मुह पर थूकेगे।

गन्ना ने कहा—न होगा तो हम फिर दिल्ली नही लौटेगे जनाब। अजमेर शरीफ मे ही खुदा का नाम लेगे···

—नही। मैने तुमसे कहा है गन्ना ! मै हिन्दुस्तान का वजीर

हू। मेरी उम्र अब्दाली से बहुत कम है। अब्दाली के मरने के बाद भी मैं जिंदा रहूगा। मैं तब देखूगा। तुम शायद समझ ही नही सकोगी यह। आः! मुझसे चूक हो गई है गन्ना!

—चूक?

—हां, चूक। तुमसे शादी करना ही मेरी चूक है।

गन्ना के होठों पर उदास हसी फूट पडी। वह बोली—मै जाऊगी।

इमादुल मुल्क का दिमाग थिर नही। फिर सोचा, अजमेर नही, रेवाडी। रेवाडी जयपुर के इलाके मे है—दिल्ली के पास है। नवाब सफदरजग से जो लडाई हुई थी, उसमे रेवाड़ी के अजय सिह और अमर सिह ने इमाद की मदद की थी। इमाद ने उन्हे और भी कुछ जागीर दी थी।

सवेरे इमाद ने उसे रेवाड़ी भेजना तै किया। अजमेर दूर बहुत है। रास्ते मे डाकू-लुटेरो का खतरा। गूजर-जाट, डाकू सारे मुल्क मे ही भेडिये-से घूम रहे है। बादशाही के इस दुर्दिन मे उन्हे कौन दबाए? राजपूतो की शरण मे रहना अजमेर से कही अच्छा है। राजपूतो मे एक गुण है। वे जिन्हे आश्रय देते है, जान रहते उन्हे नही छोडते। अमर सिह दिल्ली मे ही रहता है। सरदार है।

अमर सिह को बुलाकर कहा—अमर सिह!

—जी।

—मुसलमानो की सबसे बड़ी चीज है ईमान। तुम राजपूत हो। तुम्हारे लिए सबसे बडा है धर्म। है न?

—जी। ईमान ही धर्म है। धर्म ही ईमान है।

—ठीक कहते हो। मैने सुना है, मुसीबत मे पड़कर कोई आश्रय मांगता है, तो धर्म के नाते राजपूत कभी ना नही करते।

—केवल ना ही नही करते जनाब, जब तक उसकी जान रहती है, कोई उसका बाल बाका नहीं कर सकता! हमारे यहा एक राजा हो गए हैं, चिड़िया की जान बचाने के लिए उन्होने अपने शरीर का मांस काटकर दिया था!

—दुनिया मे वह धर्म, वह राजपूत अभी है?

—वेशक। मै आपका नौकर हू, लेकिन राजपूत हू। मैं इसे मानता हूं।

—अच्छा, तो यह कहो, मै अगर अपनी अम्मा, अपनी वेगम के लिए रेवाडी मे आश्रय मागू, तो दोगे ?

घुटने टेककर अमरसिंह ने कहा—यह मेरा सौभाग्य होगा। आश्रय क्या, वे मेरी मा, मेरी वहन जैसी रहेगी। मा-वहन की तरह ही उनको जान देकर बचाएगे।

—तो तुम सुबह अपने राजपूत सिपाहियो के साथ औरतों को लेकर चले जाओ। मैं कहूगा, वे अजमेर गए। अजमेर का वही रास्ता है। तुम उन्हे अपनी जागीर के किले मे रखना। मैं दो लाख रुपये देता हू, सिपाही और वढा लो। हा ?

—जी। जो हुक्म।

वज़ीर का घोडा तैयार था। चला गया। लालकिले मे खवर लेकर आनेवाले घुडसवार राह देख रहे होगे।

पहाडगज, दरियागज, शीशगज, चांदनी चौक—उधर फतहपुरी मसजिद तक के रास्ते लोगो से भर गए थे। जामा मसजिद के चारों तरफ भीड़। सवकी जवान पर एक ही वात। क्या होगा ? वज़ीर क्या कर रहा है ? वादशाह क्या कर रहा है ? हमारी जान का क्या होगा ?

उन सवसे कतराकर यमुना के किनारे से वज़ीर लाल किले पहुचा। पता चला, दूकाने-ऊकाने, छोटा चौक आज वन्द है।

एक ने वताया—खुशहालचद, लक्ष्मीनारायण, नागरमल—इन लोगो ने वाल-वच्चो को मथुरा भेजने की तैयारी कर ली है। रवाना भी हो गए। दीवाली सिंह परिवार लेकर चला गया।

पैदल, वैलगाडियो पर, घोडो-खच्चरो पर सामान लाद-लूदकर लोग वाल-वच्चो के साथ भागने लगे।

एक सवार आकर खडा हुआ। मराठा सवार।

—क्या वात है ?—इमाद उठ खडा हुआ।

—जी, मराठा रिसालदार अताजी ने मुझे भेजा है। उन्होने यमुना के उस पार पडाव डाला है। खवर भेजी है।

इमाद ने चैन की सास ली। आ. !

—उनसे कहो, दिल्ली आने-जाने के सारे रास्ते रोक दे। लोग भेड़ों की तरह भाग रहे है। मेरी सही वाला हुक्मनामा जिनके पास हो, सिर्फ उन्हीको बाहर जाने दे।

अमीर-उमराव, व्यवसायी-दूकानदार, मोटिया-मजूर, झाड़दार—जमादार, कसाई—ये सब भाग जाएंगे तो शहर कैसे चलेगा? दूकानों मे चीजे नही मिलेगी, सब्जीमडी मे सब्जी नही, गोश्त नही, चावल-दाल-आटा-घी-दूध नही, काम-काज के लिए मोटिये-मज़दूर नही मिलेंगे तो सब कुछ ठप पड़ जाएगा। झाड़ूदार न होगे तो शहर नरक हो जाएगा। बाई-तवायफ तक का रहना ज़रूरी है, नही तो सिपाही भले घरो का दरवाज़ा तोड़ने लगेंगे।

कडा पहरा बैठ गया। शाहजहानाबाद के फाटकों पर मुगल सिपाही-सरदार, मथुरा सड़क पर निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह के बाद मराठे सिपाही। उधर जो सड़क राजपूताने की तरफ गई है, उसपर थाना बैठ गया।

मथुरा की सड़क पर ज्यादा भीड थी। राजपूतानावाली सडक पर भी कम नही। दल के दल लोग भाग रहे हैं। बैलगाड़ी, खच्चर, पालकी, डोली, गधा—तांता लगा है।

हुक्मनामा देखकर जाने दिया जाता है। घूस का बाज़ार गर्म हो गया। रुपया दो, तो जाओ। नही तो हटो यहा से।

तो भी भाग रहे है लोग। आदमी पीछे पांच रुपये। धनी लोगो से दस-बीस का मोल-भाव।

इसी भीड मे सौ सिपाही, डोली-पालकी, बैलगाडी के साथ आकर खडा हुआ अमर सिह। खास वजीर के दफ्तर का एक सरदार दस मुगल सिपाहियो के साथ भीड को ठेलता हुआ आगे आया। पालकी मे गन्ना उदास बैठी थी। उस रात से ही वह ऐसी हो गई है। छाती फटकर रुलाई आती है।

खत लिखकर उसने अपने-आपको इमादुल मुल्क के हाथ बेच दिया है। खुदा जानता है, उसने अपने फर्ज़ की अदायगी मे कोई कसर नही रखी। मगर वह सुखी नही हो सकी। अपने पति का धीरे-धीरे परिचय पाकर वह सिहर उठी है। सचमुच मे वह उसकी बांदी है। एक खिलौना। खिलौने से उसका दाम दमडी ज्यादा नही।

उसके अधिकार की प्यास देखकर वह घबरा उठी है। वह हिन्दुस्तान का वजीर है। उसके आचरण से वह सोच ही नही पाती कि वह शैतान है या पाप-पुण्य के परे कुछ। आदमी को अपने यहां बुलाता है। खातिर से बिठाता है। बगल मे सिपाही छिपे रहते है। इशारा पाते ही वे आकर उसे खून कर देते है। और वही आदमी खुदा का नाम लेता है। पांच वक्त नमाज पढता है!

ऐ खुदा, ऐसे आदमी को गन्ना देवता कैसे माने! कैसे प्यार करे! फिर भी उसने उसका एक-एक हुक्म, हुक्म के एक-एक अक्षर का पालन किया है। उसे वास्तव मे प्यार करना चाहा है। मगर हाय, उसके मन मे तो मुहब्बत है ही नही! उसकी छाती तो रेगिस्तान है। जितना चाहे पानी ढालो, तुरत सूख जाता है। दरिया-सी जो दीखती है, वह मरीचिका है।

उसे अपनी मां की गजल याद आई .

"हिरनी मर रही थी। राही से उसने कहा, राही, यह मरुभूमि है। इसमे दरिया बहता है देखकर प्यास की मारी दौडी। सारा शरीर झुलस गया है। कठ सूख रहा है। पानी मे कूदकर शरीर शीतल करूगी, पानी पीकर प्यास बुझाऊगी। लेकिन मैं दौड़ती गई, दरिया भी पीछे हटता गया। ठिठकी। वह भी रुका। आगे बढ़ी, वह भी हटने लगा। अब मैं गिरकर मर रही हू। राही, इस दरिया ने छलना की है।"

पालकी फिर हिली। चल पडी। बाहर सिपाही कहने लगे—हटो, अमर सिह मनसबदार की टोली को रास्ता दो।

पालकी चलने लगी। बाहर की दो-एक आवाज़े कानो मे आने लगी—वजीर जहन्नुम मे जाए। इमादुल मुल्क मुर्दाबाद!

गन्ना को कान मे उगली डालने की इच्छा हुई। हाय रे नसीब!

पालकी रुकी। फिर एक चौकी। जो लोग इधर को आ रहे थे उनसे पूछा जा रहा था—कौन है? दिल्ली मे इस समय क्या काम है?

—लौट जाओ। लौट जाओ। अभी दिल्ली मे खानेवालो की तादाद मत बढाओ।

—अपना परिचय दो। सबूत दो कि तुम चोर नही हो, बदमाश नही हो, डाकू नही हो। दिल्ली की इस हालत मे वहा तुम गडबडी

मचाने नही जा रहे हो। रोहिला अफगान नही हो।

—अरे ऐ अंधे! ऐ अंधे फकीर—अरे अभी दिल्ली जाकर जान देगा! लौट जा।

—मेरी वेइज्जती करके बोलोगे, तो मैं जवाव नही दूंगा!

—वेइज्ज़ती!

—जी। मुझे 'तू' मत कहिए।

—कौन हो तुम?

—मैं खुदा का दास हूं। फकीर। अंधा। देख ही तो रहे है।

—फकीर साहब, आप आंखो से देख नहीं पाते। इस समय दिल्ली जाकर क्या करेंगे? नाहक ही जान देगे।

—जान देंगे? वह तो नसीव का खेल है। नसीव का खेल तो खुदा की मर्ज़ी के विना नही होता। खुदा की मर्ज़ी होगी, तो मरूंगा। लेकिन इज्जत? वह तो इन्सान की अपनी है। उसे तो रखना ही होगा।

गन्ना चौक उठी। कौन? कौन? कौन? मर्ज़ी खुदा की, खेल नसीव का, इज्ज़त इन्सान की! पालकी के अंदर गन्ना वेचैन हो उठी—हज़रत! हज़रत!

फकीर कहने लगा—हिंदुस्तान की इज्जत जाएगी—वावरशाही, अकवरशाही, अलमगीरशाही की इज्जत जाने को है और मेरी इज्ज़त नही जा रही है? हाय-हाय, यह तो अपनी समझ न हो तो समझाया नही जा सकता। मैं अधा हू। खुद लड़ तो नही सकता, मगर आदमी तो वुला सकता हू, मर तो सकता हू! हाय नसीव! एक आंख गई थी—उसे उसके स्वामी ने ले लिया था। एक थी, सो तुमने ले ली?

पालकी फिर उठने लगी। गन्ना लेकिन अव नही रह सकी। पालकी के दरवाज़े को ठोककर उसने कहा—रिसालदार सिह, पालकी रक्खो!

कहारो ने पालकी रक्खी। एक ने जाकर अमर सिह से कहा—पालकी मे वेगम साहवा चिल्ला रही है।

वेगम चिल्ला रही है! क्या हुआ? वांदी ने पालकी का दरवाजा खोलकर पूछा—क्या हुआ वेगम साहवा?

वुरका पहने गन्ना पालकी से वाहर निकल आई। कहा—अमर

सिंहजी को सलाम बोलो।

अगर सिंह के आने पर बोली—मुझे आप माफ करें, शायद मैंने बेशर्मी जैसा काम किया। मगर आप तो हिन्दू हैं। आपके गुरु होते हैं। गुरु क्या होता है, आप जानते हैं। ये सबे फकीर, चेहरे पर चेचक के दाग—ये मेरे गुरु हैं। मैंने उनकी आवाज से उन्हें पालकी के अन्दर से पहचान लिया। अब उन्हें प्रणाम किए बगैर तो मैं बढ़ नहीं सकती। दया करके अगर उन्हें मेरा प्रणाम कहें, बुलवा दें तो मैं जनम-भर आपका नाम याद रखूंगी।

—लेकिन अम्मां साहबा का हुक्म…

—जी नहीं। यहां उनके हुक्म की जरूरत नहीं। मैं उसे मान भी नहीं सकूंगी। आप कुछ सवारों के साथ उनकी पालकी को बढ़ने दें। हजरत को मेरा प्रणाम कहकर बुलवा दें। कहें, उनकी एक शिष्या ने सलाम भेजा है। यह किए बिना तो मैं हिलूंगी नहीं।

पालकी पर बिछी चादर को गन्ना ने रास्ते में बिछाया। उस पर आदिलशाह को बिठाया। आदिलशाह ने पांव से चादर को टटोला—मखमल! कौन हो तुम?

पांव के अंगूठे को चूमकर गन्ना ने कहा—मुझे पहचान नहीं पा रहे हैं हजरत?

—गले की आवाज तो बड़ी पहचानी-सी लगती है। मगर, वह कैसे हो सकती है…

—वही है हजरत। मैं गन्ना हूं।

—गन्ना! तुम यहां कहां? माफ करना, मैं तुमको 'तुम' कह रहा हूं। तुमने मुझे 'हजरत' कहा—इसीलिए। और फकीर अगर हजरत होता है तो मैं 'हजरत' हूं। आज मैं वास्तव में हजरत हूं।

—आप सदा के फकीर हैं जनाब!

जरा उदास हो गरदन हिलाकर आदिलशाह ने कहा—नहीं। अंधा होने के बाद सही माने में फकीर हो सका। पानीपत में वजीर ने मुझे कैद किया था। मेरी तलाशी ली। उसमें उसे कुछ तसवीरें मिलीं। मेरे पुरखों की तसवीरें और…

गन्ना उत्कंठा से उनकी ओर ताकती रही।

फकीर आदिलशाह ने कहा—और एक तुम्हारी थी। तुम्हे लखनऊ मे देखा था। तुम्हारी तसवीर भी वनाकर रखी थी। वजीर ने उसे छीन लिया। मैने खुदा को धन्यवाद दिया। वह तसवीर रखना तो मेरे लिए उचित नही था। अनौचित्य के उस कसूर से उन्होने मुझे वचा लिया। मगर तमाम रात मै सोया नही। कई रात नही सो सका। जमीन पर वनाने की कोशिश करता। मेट देता। उसके वाद वजीर ने मुझे बुलाकर कहा—वह तसवीर टूट गई। फिर से एक वना दो। वना देने से तुम्हें छोड़ दूगा। मैने 'हा' कहकर तसवीर का सरंजाम मागा। सरंजाम पाने के वाद मन ने लेकिन ना ही कर दी। न, नही दूगा।

वजीर दिल्ली आ गए। आकर वुलवाया। कहा—तसवीर कहा है? मैने कहा—तसवीर नही वनेगी। नही वनाऊगा। वज़ीर ने एक आख फोड दी। कहा—एक छोड दी है। तसवीर वना दो तो यह आंख रहने दूगा। छोड दूगा तुम्हे। उसके वाद दिल्ली से फर्रुखावाद आया। सिर्फ तसवीर के लिए वजीर मुझे साथ लिवा गए। सुना, तुमसे शादी करने जा रहे हैं। जी वडा खराव हो गया। उसी हालत मे तसवीर वनाई। विलकुल दूसरी-सी हो गई। तुम्हारा हसता हुआ चेहरा हरगिज नही उतरा। ऐसा उतरा, जैसे तुम्हे जाने कितनी तकलीफ है। जैसे रो रही हो! मगर मुझे वडी अच्छी लगी। हा, यह रही कवि गन्ना की तसवीर! उदास-सी आसमान को देखती हुई पुकार रही है—ऐ मेहरवान खुदा! मैने तसवीर छिपा दी। देने को जी नही चाहा। वजीर ने धमकी दी—गरदन जाएगी! मैने कहा—जाए! मगर तसवीर नही दे सकता। फर्रुखावाद मे सिपाही ने आकर कहा—तसवीर वनाओ, वरना कल कत्ल कर दिए जाओगे। मैंने कहा—मर्जी खुदा की, खेल नसीव का। मगर यह मेरी इज्जत है। मैं यह नही देने का। दूसरे दिन वजीर को जाने क्या ख्याल आया, वुलवाया। कहा—मैं तुम्हारी गरदन उतरवा लेता आदिलशाह। तुम्हारे नसीव ने तुम्हें वचा लिया। मै तुम्हे छोड दे रहा हूं। लेकिन तुम्हारी दूसरी आख भी मुझे फोड देनी पडेगी। उससे तुम फिर तसवीर नही वना सकोगे। वजीर ने सामने ही मेरी आंख फोडवा दी। सुई लिए आदमी तैयार ही था! दुनिया अधेरी हो गई! कुछ

देर तबू के गलीचे पर पडा रहा। सभलकर उठा। वजीर ने कहा, इटावा तक ले जाकर इसे आगरे की राह मे छोड आ! पहरेदार ने मेरा हाथ थामा। मेरे जी मे हुआ—हा, मेरे लिए यह ठीक हुआ। अब दुनिया का और कोई न रहा। रह गया महज़ मै और मेहरवान खुदा। अचानक तुम्हारी तसवीर की याद आई। उसे कैदखाने की जमीन मे जतन से गाडकर रक्खा था। मैने कहा था, वजीर साहब, तसवीर मैने वनाई है। कैदखाने मे उसे छिपाकर रक्खा है। पहरेदार को दे दूगा। बोले—दे देना। परन्तु देने से भी मै तुम्हारी आख नही छोड़ता। आख रहने से तुम फिर तसवीर वनाते! वजीर ने ठीक ही कहा गन्ना। आखो के चले जाने से क्या देखता हू, जानती हो? तुम्हे नही देखता। तुम्हारी शकल कतई भूल गया हू। देखता हूं—अंधेरा ही देखता हू। लेकिन हा, लगता है, खुदा वहुत करीव मे है।

गन्ना की आखो से टपाटप आसू की वूदे टपकने लगी। आंखे पोछकर वह बोली—हज़रत!

—क्या कहती हो?

—आप फकीर हैं। आप कहते है कि अंधेरे मे खुदा आपको वहुत करीव दिखते है। मैं आपकी शिष्या हू। मै क्या वैसा अनुभव नही कर सकती हू? नही तो मै क्या लेकर जिऊगी?

—गन्ना!

—हजरत!

ऊपर को मुह किए अपनी आखो की अधी नज़र को आकाश पर थिर किए वे कुछ देर खडे रहे। उसके वाद बोले—तुमसे होगा गन्ना! खुदा को अपने मन के आसन पर विठाना। जो खुदा है, अल्ला है—उनकी कोई मूरत नही होती। काफिर ही उनकी मूरत की कल्पना करना चाहता है। तुम उन्हे पांच वक्त नमाज पढ़ते हुए पुकारना। और, यह लो, मै तुमको यह तावीज देता हूं। अजमेर शरीफ के पीर साहव ने यह तावीज मुझे दिया था। इस तावीज से तुम दुनिया की हर आफत से वचोगी। वडे से वडा गुनहगार भी इस तावीज से वच जाता है, उसकी महिमा से साधु हो जाता है। मदीना के वादशाह ने वहां के सवसे वडे वदमाश को मौत की सजा दी थी। जल्लाद ने तीन-तीन वार उसे कुल्हाडी मारी। वह नही मरा। पानी मे डुवोया,

फिर भी नही मरा। आग मे नही जला। वादशाह हैरान हो गए। खुद वह चोर भी दंग। चोर ने आखिर वह तावीज़ दिखाकर कहा—इसी तावीज का यह जादू है जहापनाह। मुझे यह तावीज देते हुए हजरत ने कहा था—इससे तेरी सारी मुसीवते कटेगी, सव गुनाह माफ होगा। खुदा की दुआ, पैगवर रसूल की महिमा समझ पाओगे। मदीना का वह चोर छूट गया। उसने फिर चोरी नही की। फकीर हो गया। मै वचपन मे मा के साथ कुछ दिन अजमेर मे था। पीर साहव की सेवा करता था। एक रोज पीर साहव ने पूछा—वेटे आदिल, तुम क्या चाहते हो, वताओ। मैने कहा—मै क्या चाहता हू, सो तो नही जानता हजरत। कभी लगता है, मै तैमूरशाही चगताई वश की गद्दी चाहता हू। मन तुरत कहता है, नही। वह लेकर क्या करेगा? खुदाताला का परस मांग। पीर साहव हसे। उन्होने मुझे यह तावीज दिया। वोले—इसे हाथ मे पहने रहना वेटे। दोनो ही मिलेगे। मगर एक वात है, दुनिया मे दाम दिए विना तो कुछ मिलता नही वेटे। गुनाह का महसूल दिए वगैर खुदा का परस नही मिलता। वह तो तुझे चुकाना ही पड़ेगा। इस तावीज से तुझे वह चुकाने की हिम्मत मिलेगी। इतना ही ख्याल करना—खुदा मेहरवान। दुख हो चाहे सुख, अमीरी हो या फकीरी—उन्हीकी कृपा है।

गन्ना अवाक् हो सुन रही थी। देर तक वोलने से आदिलशाह हाफ रहे थे। जरा थमकर वोले—सो, मैं कुछ दिनो के लिए वादशाह भी वना। वादशाही मसनद पर वैठा। दरवार किया। तवू का ही दरवार हुआ तो क्या, दुआए वीनी। नजराना लिया। खिलअत दी। महफिल मे आदर के आसन पर वैठा। सर उतारने का हुक्म दिया। तुरत लगा—सव झूठ है। ऐ खुदा, मुझे इस वादशाही से छुटकारा दो। सफदरजग हार गए, मुझे वादशाही से मुक्ति मिल गई। लेकिन आगरे के किले मे वंद रहा। तुम उस वक्त तक मेरे मन मे थी। अल्लाह को पुकारू कि तुम्हारी सूरत सामने आ जाती। खुदा ने चेचक दी। मुझे वाहर फेक दिया। सोचा, मै नही वचूगा। वच गया। पानीपत पहुचा। तुम्हारी तसवीर वनाई। आखे गई—यह तो तुम्हे वता ही दिया। महसूल इस तरह चुका दिया। फिर तो सच ही खुदा को पा गया। ला इला इलिल्लाह…। मै वही तावीज तुम्हे दे रहा हूं।

इससे सभी दुख सुख हो जाएगे । उनका स्पर्श पाम्रोगी ।

बाये हाथ से अपना तावीज नोचकर उन्होने गन्ना को दिया । उसके बाद लाठी से टटोलते हुए चल पड़े ।

गन्ना खोई-सी बैठी थी । फकीर को जाते देख अमर सिंह आगे आया । बादियो ने तजाम का परदा डाल दिया । अमर सिंह ने कहारो से कहा—ऐ, उठाओ पालकी ।

गन्ना अदर चौंकी । चीख उठी—नही !

अचरज से अमर सिंह बोल उठा—बेगम साहबा !

—पलकी लौटा लो । मुझे वापस ले चलो ।

अमर सिंह ने और जोर से कहा—बेगम साहबा !

—मैं नही जाऊगी अमर सिंह जी । नही जाऊगी । मुझे वजीर साहब की हवेली मे पहुचा दे ।

—जी, वजीर साहब ने ही तो आपको भेजा है…

—सो भेजे । मैं नही जाऊगी । जोर-जबरदस्ती ले जाना चाहोगे तो मेरे पास जहर है । खाकर मैं मर जाऊगी । और लोगो को लिवा जाओ । मैं नही जाती ।

—अम्मा साहबा की पालकी उधर रुकी है । वे नाराज होगी ।

—हों नाराज । मैं दुनिया मे किसीकी नाराजगी से नही डरती । मैं जहर पीकर मर जाने को तैयार हू ।

उसके स्वर मे पागलपन-सा झलका । अमर सिंह ने मिन्नत की—बेगम साहबा, लौट जाने से वजीर साहब बेहद नाराज होगे । आप उन्हे नही जानती ।

—जानती हू । अफसोस की बात है कि आप लोग मुझे नही जानते । देखिए, मुझे पहचानिए ।

पालकी के परदे से एक हाथ बाहर निकल आया । उस हाथ के लावण्य से अमर सिंह मुग्ध हो गया । मुग्ध से भी ज्यादा चकित हुआ हाथ मे एक ताजा घाव देखकर । गोल-सा जख्म । खूब समझ मे आया कि हाथवाली ने खुद काटकर उस जख्म को अभी-अभी बनाया है । लोहू टपक रहा है ।

अमर सिंह को काठ मार गया ।

गन्ना ने फिर पालकी के अदर से कहा—खुदा की दुहाई, अमर सिंह जी, मुझे वापस ले चलो। दिल्ली। नही तो मुझे मरना पड़ेगा। खुदा कसम, मैं मर जाऊंगी, मर जाऊंगी।

अमर सिंह अम्मां बेगम के पास दौडा गया। इमाद की मा के पास।

—माताजी ?

—हा।

—बेगम साहबा कह रही हैं···

—क्या ? क्या कह रही है ?

अमर सिंह ने सब कुछ बताया। अम्मा बेगम ने कहा—उस कसबी की बेटी को ले जाओ। ले जाओ। उठाओ हमारी पालकी!

इधर भीड़ बढती जा रही थी। बाढ-सी बढ रही थी। सोलह साल पहले ईरान से नादिरशाह आया था। उस समय की खूरेजी लोगो को याद है। चांदनी चौक मे आदमी के लहू की घुटने-भर धार बही थी। लोगो की खोपड़ियो का पहाड बन गया था। धड सड़कों पर बिखरे पड़े थे। जान ही नही, इज्जत भी गई थी लोगों की। घर-घर से औरतो को घसीट ले गए थे। जो आज बीस-पचीस साल के हैं, उनमे से बहुतो की मा गई। जिनकी उमर ज्यादा है, तीस-चालीस की, उनकी बहन-बीबिया गईं। दो-चार की मा भी। उनसे भी ज्यादा उमर है जिनकी, उनकी बेटियां गईं, बहुएं गईं, बहने गईं। रुपया-पैसा, बर्तन-भांडा—जिसके जो भी था, सब गया।

आगरे के हिंदू ज्योतिषी ने बताया था। किसीने यकीन नही किया। मुहम्मदशाह बादशाह जिन्दा थे। तैमूरशाही बादशाही की इज्जत का चिराग तब तक बुझा नही था। हिम्मत का नाश कतई गायब नही हो गया था। अब उस इज्जत की लौ बुत गई—जग लगी तलवार-सी पड़ी है वह हिम्मत। अब की भी पडित शुकदेव ने कहा—फिर ठीक वैसी ही आधी आ रही है। अधेरे मे दिल्ली गर्क हो जाएगी। दिल्ली ही नही, आधा हिन्दुस्तान डूब जाएगा। पूरब को भागो। दक्खिन को भागो। पश्चिम-उत्तर नही—उधर मौत का तांडव होगा।

शोर उठ रहा है! ···

अम्मां साहबा ने चिल्लाकर ही कहा—पालकी उठाओ! लेकिन

किसीने नही सुना। सुना सिर्फ अमर सिंह ने। उसने उठाने का इशारा किया।

अमर सिंह ने 'उठाओ' कहा और तुरत गन्ना बेगम की पालकी की तरफ पहुचा। पालकी नदारद। सिर्फ एक राजपूत सवार वहा खडा था।

अमर सिंह ने पूछा—पालकी ?

सवार ने सलाम करके कहा—दिल्ली चली गई। बेगम साहबा ने उतरकर दौडना शुरू कर दिया था। हम क्या करते ? बहुत कह-सुनकर उन्हे पालकी पर बिठाया। पालकी के साथ नौ सवार गए। मैं आपसे कहने के लिए यहां रह गया।

अमर सिंह ने कहा—खैर, तुम मेरे साथ आओ। लौटकर जाओगे तो वज़ीर के खौफ मे पडोगे। वज़ीर क्या जो करेगा, पता नही ! वह पागल हो गया है। दया, माया, विचार तो खैर उसे कभी नहीं था। तिसपर पागल हो गया है ! जो लौटे, भगवान जाने उनपर क्या बीतेगी…।

अमर सिंह चुप हो गया।

—पालकी को हवेली के दरवाज़े पर उतारकर ही वे भाग जाएगे। यह तै करके ही गए है वे।

अमर सिंह ने कहा—भगवान उन्हे बचाएं !

ठीक ऐन वक्त पर भीड का रेला—मराठा सिपाहियो, रोक और तलाशी के अड्डे को तोडकर निकल गया, ठीक जैसे बाढ़ का ज़ोर बांध को तोडकर निकल जाता है।

उल्लास के एक कोलाहल ने आकाश को गुजा दिया।

११

वज़ीर उस समय खाना खाकर जल्दी से नीचे उतर रहा था। खबर आई थी, खज़ांची खानखाना जियाउद्दौला के परिवार को मथुरा सड़क पर रोक दिया गया है। बाल-बच्चे अपनी जागीर को जा रहे है। रुपया वसूलने के लिए मराठो ने जुल्म शुरू किया है।

साईस बरामदे के सामने घोड़ा लिए खडा था। घोड़े पर वजीर खुद वहा जाएगा।

वजीर बरामदे पर खडा हुआ कि एक आदमी चिल्लाया—हुजूर, गरीवपरवर···

घोडे पर सवार हो इमाद फाटक पर पहुंचा।—क्या है? दिल्ली छोड़ने का हुक्म नही मिलेगा।

—मैं दिल्ली छोड़ने का हुक्मनामा नही मांगता। मै मथुरा से दिल्ली आया हूं···

—तुम मथुरा से आ रहे हो ?

—हुजूर! मैं बेगम खानजमान की लड़की के लिए तावीज लाया हूं। वड़ी मुश्किल से यह ला पाया हूं। बेचारी की ग्रहदशा बड़ी खराब है···

—इस तावीज़ से उसकी विपदा टल जाएगी ?

—जी, बडी-बडी क्रिया करके तब इसे बनाया है ?

आश्चर्य से वज़ीर ने कहा—हा। तू उसके लिए दिल्ली आया है? खुद मरने का डर नही हुआ ? वह कौन होती है तेरी ?

—मैंने बचपन से ही उसकी भाग्य-गणना की है।—हंसकर कहा—मै अभी नही मरने का। गणना करके देख लिया है।

—यानी तू शुकदेव पंडित है ?

—जी।

—तूने मुझसे उसकी शादी करने को मना किया था ?

—नही। मुझे दिल्ली पर आनेवाली इस आफत का पता था। इसलिए मैंने दिल्ली में शादी करने को मना किया था। दिल्ली और गन्ना का भाग्य एक होने से बेहद मुसीबत है···

—तू सब देख सकता है ?

—जी, देख तो सकता हूं।

—मेरा क्या होगा, बता सकता है ?

—मुगलानी बेगम आपको बचाएगी। आपकी फिर से शादी होगी।

—हूं।—जरा चुप रहकर कहा—तू अभी नही मरेगा, लेखा लगाकर देख लिया है ?

—मेरी आयु अस्सी साल होगी। अभी पचास है। अभी तीस साल जिन्दा रहना है…

उसकी मुह की बात मुह मे ही रह गई। वज़ीर के इशारे से एक पहरेदार ने पीछे से उसे तलवार भोंक दी। शुकदेव आचार्य की आंखें लमहे के लिए फैल गईं—जानवर-सी एक चीख़ निकलकर अधूरी रह गई। वह गिर पडा।

वजीर ने कहा—लाश को यमुना मे फेंक दे…

घोड़े को हवा करके वजीर चला गया।—काफिर, सब देख सकता है!

गन्ना की पालकी वज़ीर की हवेली मे घुसी। शुकदेव आचार्य की लाश सीढी के सामने पड़ी ही थी। सडको की भीड को ठेल-ठेलकर आने मे काफी देर हो गई। साझ होने-होने को। हवेली के पहरेदार ने साथ के लोगो को पहचानकर कहा—पालकी लौट आई?

राजपूत सिपाही ने कहा—बेगम साहबा का हुक्म।

—रसूलिल्लाह! ऐसा हुक्म होता है?

पालकी हवेली के अन्दर चली गई। हरम की तरफ।

हरम के खोजा खादिम नसरत खा के ताज्जुब का ठिकाना न रहा। बेगम साहबा पागल-सी हो रही थी। पूंछा—जी, बेगम साहबा की तबियत तो…

—मुझे पानी दो नसरत। पानी।

और वह अपने पलंग पर जाकर लुढक गई—अय खुदा, अय मालिक! आखिरी विचार करनेवाले, तुम्ही इसका विचार करना। ऐ आदिल-ए-अल्, तुमने सब देखा, सब जाना, तुम्ही विचार करना! मेरी जिंदगी का दाम न देकर जिस आदमी ने मुझे ठगा, तुम उसका विचार करो।

बुढ़िया बादी अमीना शरबत का गिलास ले आई।

गन्ना ने सर उठाकर देखा। चाव से गिलास लेकर मुह से लगाया और जरा चुस्की लेकर ही फेंक दिया। कहा—पानी! मेरा कलेजा सूख गया है। शरबत नही, पानी। ठडा पानी।

सच ही उसकी छाती सूख गई थी। रेगिस्तान-सी जल रही थी।

—बेगम साहबा, हकीम को बुलवाऊ ?

—हकीम ! नही।—गन्ना हसी। अजीव तरह की हंसी। वादी को लगा, यह हसी जरा जोर की हो तो झाड-फानूस की बत्तियां दप् से बुझकर अंधेरा फैल जाएगा। बांदी अमीना की उमर पचास से ज्यादा होगी। इमाद के वाप के वक्त से हरम मे है। किशोरावस्था मे ही गुलाम-पैठ से खरीदी गई थी। उसपर से बहुत आंधिया गुजरी। सोलह-सत्रह साल पहले जब नादिरशाह दिल्ली आया था, खून की नदी वहाई थी, तो ईरानी लोगो ने पकडकर इसे दो दिन रोक रक्खा था। पहली जवानी के दिनो उसकी पहली मुहब्बत हवेली के एक दरोगा से हुई थी।

पता चल गया तो इमाद के बाप ने बगीचे के एक कुज से दोनो को पकड़वा मगाकर इसके सामने ही इसके आशिक को मरवा डाला था। इसे याद है, यह रो नही सकी। रोने की हिम्मत नही पडी। ऐसा भाव दिखाकर रहना पडा था, गोया कुछ हुआ ही नही। लेकिन कलेजा हू-हू कर उठा था। बार-बार प्यास लगी थी। उस समय इसने अपने मुह मे ऐसी ही हसी देखी थी। एक बांदी ने पूछा था—वड़ा दु ख हुआ न रे? वह हंसी। सामने के आईने मे शकल देखी। इस हसी की जाति ही और है। इसमे उस्तरे-सी धार है—साझ की लाली मे अधकार की छाया—उसके साथ साझ को जोर से उठनेवाली हवा, जो हवा अपनी फूक से आफताब को बुझा देती है।

हसी ही नही, और भी कुछ। एक साल से ज्यादा हुआ, यह बेगम वजीर के हरम मे आई है। तब से देखती आई है—इस बेगम को न तो सुख है, न दुःख। न कभी लाड किया, न कभी मान।

वेगम शायर है। इसकी मां को उसने फर्रुखाबाद मे देखा है। सुरैया भी शायर है। कभी तवायफ थी। उसका अदब-कायदा, पैनी सूझ-बूझ, दुनियादारी देखकर वह दग रह गई थी। उसका एक कतरा भी इस लडकी मे नही है। दरअसल यह लडकी अपनी मा जैसी नही, वाप जैसी है। और, वजीर से इसने ठीक-ठीक शादी नही की है, अपने को वेचा है। उसे इसका पता नही था कि किस चीज के वदले वेचा अपने को !

अमीना चुपचाप ताकती रही। इस लड़की को वह बहुत मानती

है। उसे बड़ी भली लगती है यह। इसमें जैसे एक जोत हो। आज इसे हो क्या गया ? वापस क्यों आ गई ? दिल्ली में अब्दाली आ रहा है। अब्दाली को उसने नहीं देखा। नादिरशाह को देखा है। उस समय दिल्ली की हालत देखी है। लुटेरों के तम्बू में उसे रहना पड़ा था। औरतों की रुलाई और चीख से आसमान फटा पड़ता था। लहू की नदी देखी है, लाशों का पहाड़ देखा है, रात अगलग्गी की रोशनी देखी है। दिन को स्याह-सफेद मेघ की कुण्डली-से उठते धुएं को देखा है। उसके साथ हजार कि लाखों-लाख लोगों की दर्दभरी कराह सुनी है। यह बेगम लौट क्यों आई ?

उसे मालूम है कि वजीर ने लाहौर की मुगलानी बेगम को उनकी बेटी के साथ नजरबंद रखा है। इसी बेगम के लिए वजीर ने उमदा से शादी नहीं की। यह भी जानती है कि अब्दाली मुगलानी का धरमबाप है। हिंदुस्तान की बादशाही की आज कोई किस्मत नहीं। अब्दाली आते ही मुगलानी की बात सुनकर सबसे पहले गन्ना पर ही तलवार उठाएगा। उफ् !

गन्ना आंखें बंद किए पड़ी थी। मगर आंखों से आंसू बह रहे थे। हठात् बेगम ने कहा—अमीना, नींद की कोई दवा है ?

—नींद की ?

—हां। जिससे सब भूल जाऊं मैं।

हंसकर अमीना बोली—क्या भूलिएगा बेगम साहबा ? हुआ क्या है आपको ?

—दुनिया बिलकुल झूठी हो गई अमीना !

—शराब पीजिएगा ?

—उसके पीने से दुनिया झूठी नहीं मालूम होगी ?

—नहीं। नहीं होगी। मेरी दुनिया भी ऐसी ही झूठी हो गई थी। उस समय एक बांदी ने, मुझसे कहा, शराब पिओ अमीना। मैंने पी थी। और सच ही मेरी झूठी दुनिया रंगीन हो गई थी।

गन्ना उठ बैठी। कहा—तो वही ला। खूब कड़ी। तेज।

सिर से पैर तक चनक उठी। सारी उदासी, जड़ता, मायूसी कट गई। नजर के सामने दुनिया ने मानो शक्ल बदल ली। फानूस की

बत्तिया ज्यादा तेज़ लगने लगी। ज़िंदगी मे यह पहली बार शराब पी उसने। पीने मे तकलीफ हुई। लेकिन जरा ही देर मे सुरूर आ गया।

गन्ना ने कहा—वही तो अमीना !

—लीजिए। और एक प्याली लीजिए।

—ला।

एक प्याला और पी। मुह जरा बिचकाकर बोली—आः। कलेजा जल गया। मगर वड़ा आराम लगता है।

अमीना हसी। कहा—ऐसा ही लगता है।

—तेरे भी ऐसा ही लगा था ?

—नही तो आपसे कहती ही क्यों ?

—क्या हुआ था तुझे ? बताएगी मुझे ?

—सुनकर क्या कीजिएगा ?

—देखूंगी कि तुझसे मेरी मिलती है या नही।

—जी, जवानी मे मुझे इश्क हो गया। इस वज़ीर के बाप खान-बहादुर की हवेली के दरोगा से।

—अच्छा, नवाव, सुलतान या किसी अमीर का लड़का नही था वह ?

—नही। मगर न हो चाहे, वह किसीसे छोटा नही था वेगम साहवा।

—हा, फिर क्या हुआ ?

—एक दिन मालिक ने हम दोनो को पकड लिया।

—और तेरे आशिक को काना बना दिया ?

—नही। उसको एकवारगी कत्ल कर दिया। खून मे लाश तैरने लगी। मुझे दो सिपाही पकडे रहा। मैंने देखा !

गन्ना चुप वैठ रही। उसके दिमाग मे सव जैसे गड़बड़ हुआ जा रहा हो। मगर उसका उसे अफसोस नही। दुःख भी नहीं।

वाहर चारो तरफ शोरगुल। कलरव। कोलाहल। हवेली की ऊची मोटी दीवारे भी उसे रोक नही पा रही थी। सन्नाटे में वह आवाज गन्ना के कानो मे पहुची। वह उससे विचलित नही हुई लेकिन अमीना चौकी।

—इतना हो-हल्ला। इतना ! शाह अब्दाली आ गया ?—वह उठ खडी हुई। फिर कुछ देर सुना। डरकर बाहर निकली। कुछ ही क्षण में लौट आई।—वेगम साहवा !

गन्ना ने नजर उठाकर देखा।

—शोर सुन रही है ?

—शोर ? हां···। काहे का है ?

—मीर बख्शी नवाब नाजिव खा के सिपाहियो ने चौक बाजार को लूटकर आग लगा दी। सुना, वे सब इधर ही आ रहे हैं।

नीचे दुम्-दाम् आवाज। किवाड़े बन्द करने की आवाज़। अमीना ने कहा—वे शायद हवेली-घेराव करेंगे। लूट-पाट करेंगे। पूरे एक साल से उन्हे वेतन नही मिला है। मीर बख्शी ने वजीर साहव से मागा था। वजीर ने सिपाहियों से कहा—नाजिव देगा। नाजिव ने कहा—वजीर ने दिया नही तो मैं क्या करूं ? उन्हीको पकड़ो। सो वे वाजार लूटकर इधर आ रहे है। उठिए।

—क्यो ?

—चोर-कोठरी मे छिप जाइए। नही तो कोई दशा बाकी नही रहेगी। ये सिपाही पगले कुत्तो से वदतर है। ये पागल होते हैं तो पालनेवाले को चोथ डालते है।

गन्ना चुप ही बैठी रही। अमीना ने कहा—उठिए। जल्दी कीजिए। वजीर साहब है नही। इन कैं सिपाहियो को वे क्या लगाएगे ?

—वजीर साहब कहा हे ?

—घोडे पर कव के निकले है। मथुरा सड़क पर मराठों ने यहा के अमीर-उमरावो की जनानो को रोका है। यही सुनकर गए है। वे उधर गए और आप इधर आई। हवेली के सामने उस समय तक लाश पडी ही थी। मथुरा का एक पडित था। आपके लिए तावीज ले आया था।

—मथुरा का पडित ! मेरे लिए तावीज लाया था ?

—जी। वजीर साहब घोडे पर सवार हुए कि वह दौडता हुआ आया। कहा—आधी आ रही है। मैंने देखा, गन्ना वेगम पर आफत है। उनके लिए तावीज लाया हू। पहना दीजिएगा। वज़ीर साहव ने

कहा—तेरे नसीब मे क्या है, गिनकर देखा है? कहकर इशारा किया। सिपाही ने पीछे से उसे तलवार भोक दी। बेचारा और बोल तक नही पाया।

—शुकदेव पंडित! सिपाही ने उसे तलवार भोक दी?

—जी। इस पार से उस पार।

गन्ना के होठो पर फिर वही हंसी फूट उठी। जरा चुप रहकर बोली—अमीना, एक प्याला शराब और ला।

नीचे शोर बढ गया। गन्ना चौंकी। अमीना दौडकर देखने गई। हाय रसूलिल्लाह! क्या जो होगा! ये सिपाही एक न बाकी रखखेगे। समूचे घर मे अकेली वह और दो बांदियां। वह भी बिलकुल बुढ़िया! पनाह के लिए बस चोर-कोठरी है। माटी तले।—उन्होने नीचे का दरवाज़ा तोड़ दिया क्या? विपदा पर विपदा। बांदी लौट आई। ऐसी ख़ूबसूरत जवान औरत। ऐसी सुदरी दुर्लभ है। ऐसी औरत कहां, किसके यहां है! इसे ये सिपाही पाएगे, तो···। बांदी ने फिर झरोखे से झांका।

उफ्! हवेली को घेर लिया! शोर मच रहा है।—ऐ वजीर—कंबख़्त, चोट्टा, कमीना! तनखा चुका। लूट। लूट ले। तोड़ दे दरवाज़ा।

अमीना ने देखा, हवेली मे भी कोई छः सौ सिपाही तैयार हैं। वजीर के खास् सिपाही। वे उन्हे रोक रहे है।

अमीना लौट आई। चोर-कमरे में छिपने का अभी भी समय है। लेकिन देखा, तो गन्ना बेहोश सो रही है।

अमीना को गुस्सा हो आया। इतनी शराब क्यों पी ली? अब वह उसे लेकर जाएगी कैसे? एक पूरी जवान औरत को लेकर ऐसी खड़ी सीढ़ियां कैसे उतरेगी? जाते-जाते लौट आई! मौत इसकी!

ममता हो आई। उसकी वह हसी याद हो आई। गन्ना को उसने गोदी मे उठा लिया। फूल-सी हलकी। आंख खोलकर वह बुद-बुदाई—छोड़ दे मुझे। छोड़ दे। मैं नही जाती।

अमीना आजिज़ आ गई। उतार दिया उसे—मर जा। मर जा तू। जो नसीब मे लिखा है, वही हो!

किसी तरह से आंखों को अधखुली करके गन्ना वही हंसी हंसी।

कहा—मर्जी खुदा की। खेल नसीब का। इज्ज़त इन्सान की।

—वही इज्जत जाएगी।

—मैं अब इन्सान नही रही बांदी। आदमी नही रही। मैंने अपने को बेच दिया है···मगर कीमत क्या मिली है, मालूम है? नकली मुहर। सोना नही—पीतल। एक आख के लिए रोशनी मागी थी। बेईमान इमाद ने अधेरा दिया। स्याह अधेरा। बैठ। तुझसे कहू। इज्ज़त! इज्जत मेरी कब की जा चुकी है अमीना। मां मेरी तवायफ थी, शायद इसीलिए शादी होने के बावजूद मै वही हो गई। बैठ। सुन।

अमीना ने कहा—चोर-कोठरी मे चलिए। वहा सुनाइएगा।

बडे स्नेह से वह उससे लिपट गई।

वज़ीर जब मराठो की झझट मिटाकर लौटा, तो रात एक पहर जा चुकी थी। दोपहर के लगभग हो शायद। पुराने किले के आस-पास पहुचा होगा कि एक सवार शाहजहानाबाद की तरफ से आकर सामने खडा हो गया। इमाद के सिपाहियों ने भाले सभाल लिए—कौन है?

सवार ने कहा—तावेदार। वजीरे-हिन्दुस्तान का सिपाही कुदरत खां।

वज़ीर ने घोडे की पीठ पर से कहा—क्या बात है कुदरत खा?—वजीर विचलित हुआ। कौन-सी घटना घट गई?

कुदरत खा घोडे से उतरा। सलाम करके बोला—खबर बहुत बुरी है हुजूर। बादशाही सिपाहियो ने आकर हुजूर की हवेली को

—लूट लिया? और तुम अभी भी जिन्दा हो कुदरत?—कुदरत उसके सबसे विश्वासी सिपाहियो मे से एक था।

—जी नही हुजूर, घेर लिया है। घुस नही सके है। मैं किसी तरह से हुजूर को खबर देने के लिए निकल आया हू।

—वे चाहते क्या है?

—अपनी तनखा मांगते है। शोर मचा रहे है। भद्दी गालियां बक रहे है। अदर से हम छ सौ सिपाहियो ने फाटक बद करके किसी प्रकार से उन्हे रोककर रक्खा है।

—हूं ।

—उन सवका जो हाल है, जैसी वोलचाल है कि हुजूर को सामने पाएंगे तो···।—चुप हो गया । यह नही कहा कि क्या करेंगे । वज़ीर को समझना वाकी न रहा।

वज़ीर को याद आया—पानीपत मे ये सिपाही—ओः !

वज़ीर ने घोड़े का मुंह फेरा । कहा—फिरोजशाह कोटला । दस सिपाही जाकर देखो—कोटला में वदमाश-डाकू कोई है या नही !

आप फिरोजशाही किले के सामने जा खडा हुआ। सिपाही अन्दर चले गए ।

वजीर ने शाहजहानावाद की ओर नजर दौड़ाई । अंघेरे मे कुछ दिखाई नही पड़ रहा था । उधर का आसमान भयंकर रूप से काला लग रहा था। पेड़ पहाड़-से दिख रहे थे। दिल्ली की सारी दूकाने वंद । लोग-वाग भाग रहे हैं । गुडे लूट-पाट मचा रहे है । सिपाही पिंजरे से खुले भेड़ियो-से निकल पड़े है। कोतवाली के दरवाज़े वद है। शायद वहां तो कोई है ही नही । इन भेड़ियों के सामने वे करेंगे भी क्या !

दिल्ली की वादशाही वच्चों का घरौंदा वन गई है । वादशाह है एक वुड्ढा-निकम्मा मगर मतलबी। और कंवख्त को लालच कितना ! उसीने उसे गद्दीनशीन किया, वरना वादशाही कैदखाने मे सड़ रहा था । सडकर ही मर जाता। लोग कहते है, नसीब । मगर सरासर झूठ । इमाद ने उसे गद्दी पर वैठाया । मुहम्मदशाह के वेटे अहमदशाह को हटाने की उसे जुर्रत ही नही थी। नसीव कहो तो इमाद का। नसीव को वह मानता न था । लेकिन आज गोया माने विना कोई उपाय नही था ।

अठारह साल की उम्र मे वह सफदरजग की वजीरी छोड़कर मीर वख्शी वना । इतिजामुद्दौला जैसे निकम्मे वजीर को चुटकी वजाकर निकाल वाहर किया । महज पाच महीने के अरसे में। वजीर होना था कि अहमदशाह को हटाकर इस वुड्ढे को गद्दी पर वैठाया । अहमदशाह की आंखे फोडवा दी थी । उससे पहले अठारह साल की उम्र मे कोई हिन्दुस्तान का वजीर नही वना । हिंदुस्तान का वजीर। वादशाह का वादशाह । वही वादशाह वनाता है। इस वुड्ढे को लेकर वहुत-वहुत सपना देखा था । हिंदुस्तान की वादशाही को आलमगीरी

में बदलने की ख़ाहिश थी । मैजुद्दीन को उसीने आलमगीर नाम लेने को कहा था । रात को सोचा करता, लाहौर से पेशावर तक का दुरानी राज खत्म कर दूगा । मराठा काफिरो की कमर तोड दूगा । जाट सूरजमल को दीवार मे चुनवा दूगा, जवाहर सिंह को कुत्ते से नुचवाऊंगा । रोहिलखंड के अफगानों की बुनियाद उखाड डालूंगा । सफदरजग और उसके बेटा शुजा का काम तमाम करवा दूंगा । वह जानता था कि काम यह मुश्किल है । दिल्ली के बादशाह की दशा फकीर की-सी थी । खजाने मे कही से पैसा नही आता । बादशाह के खास महाल का बडा विस्तार था । उसीसे बादशाह की बादशाही— लाल किले के हरम से लेकर खास फौज तक का खर्च चलता था । दान-खैरात, महफिल, नाच-गान, मौज-मजा सब करके भी खज़ाना भरा-पूरा रहता था ।

इमाद के वजीर होने से पहले ही वे सारे इलाके अख्तियार से निकल गए थे । सबसे अफसोस की बात यह थी कि निहायत छोटे लोगो ने जबरदस्ती वह सब ले लिया था । हाफिज रहमत खा ने रोहिलखंड, नजीब खा ने सहारनपुर से मेरठ तक । सूरजमल ने ब्रजमंडल । दक्खिन मे लिया मराठो ने । जो, सो—किसने नही लिया !

एक-एक हमला हुआ, बस । रोटी का थोडा-थोडा टुकडा छीन लिया । बादशाह फकीर हो गया । बाकी रह गया दिल्ली शहर । वही की आमदनी से बादशाही चलानी पड़ रही थी । तो भी इमाद नही घबराया ।

वजीर होने के तीन हफ्ते के बाद अकीबत खा, जो सफदरजंग से लडने के वक्त से उसका दाया हाथ रहा था, उसके गोलदाज सिपाहियो ने इमाद की हवेली को घेर लिया था । तनखा के लिए चीख-पुकार मचाई ।

इमाद समझ गया, अकीबत अब उसका ताबेदार नही रहना चाहता, इसीलिए सिपाहियो को ललकार दिया है । उसकी हवेली मे उसके तीन पुश्तो की दौलत गडी थी—करोडो-करोड सिक्के, सोना, चादी, जवाहरात । उसने वह रुपया नही दिया । सेठ की गद्दी के नाम रुक्का लिखकर सिपाहियो हटा दिया । उसके बाद घर बुलाकर अकीबत मे कहा—यह क्या रवैया है ?

अकीवत ने कहा—खानखाना, साल-भर की तनखा बाकी है उनकी। उन्होने मेरा कुरता फाड डाला। मेरा अपमान किया। बाघ-भेडिया पालना हो तो खाना देना पडता है। खाना नही मिलने से वे पोसनेवाले को जरूर नोच खाएगे! में क्या करू?

बात सही थी। अकीवत के अपमान की खबर इमाद को मिली थी। मगर यकीन नही किया। कहा—पोसनेवाले के हाथ में चाबुक नही रहता है? फिर तो वह हिजड़ा है!

अकीवत का चेहरा सूर्ख हो गया—वजीर साहब, इज्जत रखकर बोलिए।

—हिजड़े की इज्जत!

अकीवत ने अपनी तलवार की मूठ पकड ली। लमहे में इमाद का अफगान देह-रक्षक उछला और देखते ही देखते छुरी अकीवत की पीठ मे घुसी। आर-पार हो गई। उसके मुह पर लात मारकर इमाद ने कहा—कवख्त की लाश को बगीचे के उस पार डाल दो।

आज हिन्दू ज्योतिषी को भी उसने उसी तरह मारा। लाश भी वही फेंक देने के लिए कहा।

अकीवत के मरने के तीन महीने वाद सिपाहियो ने फिर वही रवैया अख्तियार किया। इस वार वजीर के खास सिपाही तक नाचे। नचाया मनसवदार जाहिदवेग ने। सिपाहियो के वेतन के लिए जाहिदवेग को जागीर दी गई थी। इमाद ने साफ कहा—सिपाहियो की तनखा के लिए जागीर दी गई है। यो ही कहने से न होगा। वीस हजार सिपाही है। हाजिर करो। तुमने पैसे डकार लिए है। बाधो इसको।

जाहिदवेग वाधा गया। फिर नहीं निकला कभी। कई दिनो के वाद फिर हगामा शुरू हो गया। सिपाहियो ने जामा मसजिद, कुदसिया मसजिद दखल करके लूट-पाट मचाई। इमाद ने अपने सिपाहियो से गोली चलवाई।

महीना वीतते न वीतने फिर। सिपाहियो ने शोलापुरी वेगम तक को रास्ते मे छेका। वडी-वडी वेइज्जती की। आखिर घुडसवारो को पाच और पैदल सिपाहियो को एक-एक रुपया देकर शात किया।

उसके वाद एक दिन उन्होने लाल किले को घेरा। वादशाह

बाहर थे। इसमे वजीरी सिपाहियो ने भी साथ दिया। अमले, बख्शी, वजीर—सबको छेकने का इरादा था उनका। बादशाही हरम की बेगम-बादिया बुरका पहने पैदल ही निकली। निकलकर इज्जत बचाई। अंत मे जगत सेठ के एक दीवान का लडका जगजीवन दास ने जामिन होकर राहत दिलाई।

रोहिला नवाब नजीबुद्दौला को बादशाही फौज का मालिक इमाद ने ही बनाया था। यही चूक हो गई! सहारनपुर से मेरठ तक की जागीर उसीकी थी। तीन-चार किले बनवाए उसने। शैतान!

शैतान आलमगीर बादशाह भी कुछ कम नही। उसने बुरका पहने बादशाही हरम की बेगमो के पैदल भागने की बेइज्जती का खुद प्रचार किया। इसलिए कि इससे वजीर की बदनामी हुई। उसका सिर नीचा हुआ। यही नही, नजीब ने ऐसी चाल चली कि इमाद अपनी बारह हजार खास फौज को हटाने पर मजबूर हुआ।

इमाद समझ नही सका। शोर-गुल से खीजकर पानीपत मे नवाब लुत्फुल्ला खा के घर से बाहर निकल आया। कहा—सब लोगो को हाजिर करो। मै गिनकर तनखा दूगा। एक के बदले तीन की तनखा लेने की चालाकी मुझे मालूम है। मगर इसी नजीब के उसकाए सिपाहियो ने एक नही सुनी। इमाद का कपडा फाड दिया; उसे खीचा। चोट्टा बनाया। इमाद लेकिन दबा नही। किसी तरह से झमेले को मिटाया और उन बारह हजार सिपाहियो को जवाब दे दिया।

यह भी चूक हुई। अपने सिपाहियो को हटाना नही था।

एक, दो, तीन चूक। उमधा को छोडकर गन्ना से शादी की। तवायफ की बेटी। गजल बनाती है। गाती है। उसके गाने से बुलबुल शर्मा जाती है, कोयल चुप हो जाती है। सबसे बडी चूक यही हुई। नही तो उमधा और उसकी मा के नाते शाह अब्दाली सबसे पहले उसीको बुलाता। वह छाती ऊची किए शाह से मिलकर दिल्ली आता। घोडे पर सबसे आगे वज़ीरे-हिन्दुस्तान ही रहता। आकर बादशाह आलमगीर को हटाता। नजीबुद्दौला से सलाम कराता। ज़रूरत होती तो उसे साफ कर देता।

तो फिर नजीबुद्दौला आज इस तरह उसकी हवेली का घेराव करने की हिम्मत नही करता। शैतान नाजिर जागीर की आमदनी को माटी के नीचे गाड़े हुए है। और सिपाहियो के वेतन के लिए वजीर को बताए दे रहा है। शैतान, बेईमान !

सुबह उसने दो करोड रुपये देने की बात कही। कहा—दो करोड रुपये दीजिए। अपनी फौज ले जाकर अब्दाली का मुकाबला करता हू। बिना पैसे के लड़कर कोई अपनी जान नही दे सकता।

जागीर की बात को उसने हसकर उड़ा दिया। फिर कहा—लडाई से भी क्या होना वजीर साहब ? किससे लड़ेगे ?

—दुरानी शाह से।

—किसलिए ?

—इज्जत के लिए।

—किसकी इज्जत ?

—बादशाह की। मेरी।

—बादशाह की इज्जत ? चगताइयो की इज्जत बहुत पहले जा चुकी है। जिस दिन काफिर मराठा मनसबदार के पीछे बादशाही को खडा किया है, उसी दिन। रही-सही भी गई। और आपकी इज्जत ? शुभान अल्लाह ! एक कसबी की बेटी के लिए सैयद की बेटी, अपनी ममेरी बहन को आपने मैला कपडा समझा !

तन-बदन जल उठा। वह सोचने लगा—निबटारे के बहाने बुलाकर—खत्म। जैसा अकीबत खां, जाविद खा को किया।

और गन्ना ! वह और एक चूक।

जरा देर मे जी मे आया—उसे अम्मा के साथ राजपूताना भेजना गलत हुआ। लेकिन हिन्दू ज्योतिषी ने कहा है—उमथा से उसकी शादी होगी। मुगलानी उसे अब्दाली से बचाएगी। ठीक है···

—हुजूर···

इमाद चौका। डाट उठा—क्या है ? कौन हो तुम ?

—जी सिपाही। हुजूर का ताबेदार।

—क्या है ?

—फिरोजशाह कोटला के अदर गुडो के एक दल ने अड्डा गाड़ रखा था। आठ छोकरियो को लूट लाकर यहा बदमाशी कर रहे

थे। तीन बदमाशो को तो हमने पकड लिया है। दो घायल हो गए—शायद नही बचेंगे। छोकरियां है। लूट के रुपये-पैसे भी है। सिपाहियों का कहना है—अर्ज है…

—क्या अर्ज है ?

—लूट का माल तावेदारो को ले लेने का हुक्म दिया जाए।

इमाद ने उसकी तरफ देखा। सिपाही लूट की दौलत का इस तरह दावा तो नही करते ! यह कवख्त दात निपोरकर बख्शीश मांग रहा है।

मतलब इसका ? मतलब समझने मे देर नही लगी। जिन सिपाहियो ने इमाद के घर को घेरा है, उनके विद्रोह ने इनके लहू में भी हलकोरा लगाया है।

यह सब उसकी अपनी चूक का नतीजा है ! उसने एक लंबा निश्वास छोड़ा। कहा—लूट का माल वेशक ले लो। लेकिन देखो, औरत के लिए आपस मे लड़ने मत लगना। खबरदार ! हां, उन औरतो मे अमीर-उमरा, बडे घर की लडकी तो नही है कोई ?

—जी नही हुजूर।

वह सिपाही अन्दर चला गया। यह भी नही कहा कि आप अंदर आइए, आराम कीजिए। बल्कि उसके साथ जो दो सवार खड़े थे, उनमें से भी एक चला गया। अकेला वही रह गया—जो हवेली की खबर लेकर आया था। कुदरत खा—उसके विश्वासी सिपाहियों मे से एक। ऐसे विश्वासी उसके मुश्किल से पचास है। वे ही भरोसा है। जरा यह सब झमेला चुक जाए, उन पचास को पांच हजार किया जाएगा।

इमाद ने कहा—कुदरत !

—जी हुजूर।

—चलो। यहां से चले। ये लोग तो…

—जी। ये लोग अब नही जाएंगे अभी। औरतो के लिए आपस मे लड़ेगे ! मगर अभी जाएंगे कहा ?

—शहर की तरफ ही चलो। लगता है, शोर अब कम हो आया है। क्यो ?

कुदरत ने कान लगाकर सुना। कहा—जी, सुनाई तो नही पड

रहा है ।

—चलो । मै दिल्ली फाटक पर कही खड़ा रहूंगा वाहर, तुम पहरेदार से जाकर पूछताछ कर लेना ।

फिरोजशाह कोटला से वे मथुरा सड़क पर आए । सडक खां-खां कर रही थी । न आदमी न आदमजाद । दोनों ओर की बस्तियों मे कोई कही नही । वत्ती नदारद । सब लोग भाग गए ! सिर्फ दो घोड़े की आठ टापों की खप्-खप् आवाज़ उठ रही थी । कही-कही बस्ती के कुत्ते इन्हें देखकर भूकने लगते ।

—कुदरत !

—हुज़ूर ।

—तुम्हारा क्या ख्याल है, ये लोग फाटक तोड़कर हवेली को लूटकर लौट गए ? शोर तो नही हो रहा है । हम तो हवेली के करीब आ गए ।

इमाद को चिन्ता होने लगी । हवेली में उसकी तीन पुश्त की कमाई एक कुएं में पड़ी है । कुआं इंटो से खूब सावधानी से बंद कर दिया गया है । कम से कम दो-तीन करोड़ की दौलत ! लेकिन उसका किसीको पता नही है । एक अम्मांजान ही जानती है ! वह हैं नही । हवेली की दूसरी औरतों के साथ वह राजपूताना चली गई है। थोड़ा-बहुत खोदने से भी पता नही चलेगा ।

कुदरत ने कहा—जी नही हुजूर, वे लोग अंदर नही घुस सके होगे ।

—कैसे समझा ?

—जी, मेरा कान और ध्यान उधर ही लगा था । हुज़ूर चिंता मे डूवे थे । उधर का कोई ख्याल न था । अपने सिपाहियो ने ज़रूरत पड़ने पर वंदूके चलाने की सोच रक्खी थी। पर वंदूक की आवाज़ तो नहीं हुई । अपनी सौ बंदूकें तैयार थी । एकसाथ सौ वदूके दगे, तो आवाज़ कोस-भर से सुनी जाएगी ।

—ठीक कह रहे हो । लेकिन…

—जी नही । हवेली में जो छ. सौ आदमी है, उनमे से एक भी नही भागेगा जब तक उनमें जान रहेगी । इसके सिवाय वहां वेगम

साहबा है। उन्हे छोडकर भागने जैसी नमकहरामी वे हरगिज नही करेंगे।

इमाद चौंका—बेगम साहबा? कुदरत! कह क्या रहे हो तुम? बेगम? कौन बेगम? बेगम, अम्माजान—सब तो अमर सिंह के साथ चली गई है!

—बेगम साहबा वापस लौट आई है।

—लौट आई है? कब?

—हुजूर जब उस हिन्दू पंडित का काम तमाम कराके घोडे पर सवार हो चले गए, लाश तक उठाई नहीं जा सकी थी, ठीक उसी वक्त पालकी लौट आई। अमीना ने बताया, बेगम साहबा की तबियत खराब हो गई है। पानी-पानी चिल्ला रही है।

अरबी घोड़े को इमाद की एड़ी ने जैसे अपने-आप ठोकर लगाई, हाथ का चाबुक सप् की आवाज के साथ घोड़े की पिछली टाग पर लगा। घोडा चौका। चाल बदलकर दौड़ पड़ा।

दिल्ली फाटक पर आवाज दी—ऐ पहरेदार!

—कौन? कौन हो तुम?

इमाद के पीछे से कुदरत ने कहा—बेवकूफ, वज़ीरे-हिन्दुस्तान है। खोलो, फाटक खोलो।

१२

हवेली मे पहुचकर मंज़िल की सीढी से उछलकर इमाद उतरा। हवेली के चारो तरफ सूना पडा था। बागी सिपाहियो मे से एक भी नही था। सब जा चुके थे।

निश्चिन्त हुआ। कल नवाब नजीबुद्दौला की खबर ली जाएगी! निबटारे के लिए बुलाकर—बस। यहा न आए तो लाल किले मे बादशाह के पास उसे बुलाएगा। वहीं उसका खातमा कर दिया जाएगा।

निश्चित होकर गन्ना को देखने के लिए घोडे पर से उतरा। तबियत खराब है? क्या हो गया?

लेकिन खुदा मेहरवान। तबियत खराव करके उसे उन्होंने लौटाया। अब तक अपनी चूक की सोच रहा था। बार-बार जी मे आता, अफसोस की क्या बात है। फिर सोचता, चूक की! काश, गन्ना को न भेजा होता!

इतने मे सलाम करके कोतवाल फौलाद खां खड़ा हुआ।—हुजूर!

इमाद ठिठका—फौलाद खां!

—घटे-भर से वहुत जरूरी खबर लिए राह देख रहा हूं।

—वहुत ज़रूरी खवर? कहो।

—मीर बख्शी नजीबुद्दौला खा सारी वादशाही फौज को लेकर यमुना पार करके चला जा रहा है।

—मैं जानता हूं, वह जाएगा। जाने दो। मै सहारनपुर को ठिकाने लगा दूगा। वह छिपा वैठा रहे।

—जी नही। फौज लेकर वह अब्दाली की छावनी मे जा रहा है। डेढ पहर रात को अब्दाली के यहां से उसके पास निशान आया। उसने वुला भेजा है। वेशक, नवाव ने जाने की खुद दरखास्त भेजी होगी। कहा होगा, मराठे डाकुओ की तावेदारी में वज़ीर ने चगताई वंश की इज्ज़त और धरम को वरवाद कर दिया है।

—वेईमान।

—नवाव ने तमाम दिन जाने की तैयारी की। हवेली का घेराव उसने इसीलिए कराया था कि हुज़ूर अदर वद रहेगे। पता नही चलेगा। चिट्ठी लेकर रसूल खां एक पहर रात को लौटा। वह लौटा कि आधे घंटे मे फौज को तैयार करके रवाना हो गया। मैं तुरत आपको खवर देने के लिए दौड़ा। हुज़ूर थे नही।

वजीर इमादुल मुल्क दोनो हाथो से सिर थामकर एक चौकी पर वैठ गया। कुछ देर के वाद अजगर की तरह निश्वास छोड़कर उठ खड़ा हुआ। कहा—ठीक है फौलाद खा। तुम जाओ। मेरी जान जाए तो जाए, मैं उन सवको वचाऊगा, जो मुझे पकडे हुए है। वेवकूफ नवाव नजीबुद्दौला से मुझमे वहुत ज्यादा अक्ल है। मै उसे चाल मे मात करके छोड़ूंगा। तुम सिर्फ एक काम करो। मुगलानी वेगम की हवेली मे पहरा दो। कल मैं उससे मिलूगा, लेकिन मेरे से पहले जिसमें उससे कोई न मिल सके। एक काम और करना। कुछ आदमी

जुटाकर हवेली के सामने एक हलचल करा देना। लोग शोर मचाएंगे कि अब्दाली मुगलानी के बुलाने से आ रहा है। उसीकी बदौलत दिल्ली पर मुसीबत आई है। हम मुगलानी को नोच डालेंगे! तुम यह बहाना बनाना कि उस पागल भीड़ को तुम लोगों की मदद से रोके हुए हो। ठीक ऐसे समय मे मै पहुचूंगा।

इमाद ऊपर चला गया। दिमाग में सूझ आ गई!

दिल्ली की सर्दियो की रात। आधी रात बीत चुकी। रात का तीसरा पहर हो रहा है। हाथ-पांव बर्फ होते जा रहे है। लगता है, सूई चुभ रही हो। शहर का कोलाहल शांत। शायद हो कि डर से लोग गूगे हो गए हो। इमाद अपने सोने के कमरे मे पहुचा। सिर्फ दो शमादान मे दो मोमबत्तियो की धीमी जोत। दूसरे फानूसो मे बत्तियां नही जली। जलाने का समय नही था। सारी मंज़िल मे सन्नाटा। केवल हरम के चार खोजे जग रहे थे।

शयन-कक्ष मे गन्ना कहा? बिछावन तो खाली पड़ा है। इधर-उधर देखा। देखा, गन्ना एक मसनद पर औंधी पडी है। माथे पर की ओढ़नी हट गई है। गाढे लाल रंग की कश्मीरी सिल्क के कुरते पर सांप-सी लम्बी वेणी आकी-बाकी-सी पडी है। घर थोड़ा गर्म लगा। बाहर सरदी से आकर बड़ा आराम लगा।

सोई गन्ना को वह गौर से देखने लगा। माथे में हिन्दुस्तान की जो चिंताए भीड़ लगाए बैठी थी, उन्हे झाड फेकना चाहा।

लेकिन झाड़कर फेका नही जा रहा था। भूख लगी थी। पेट जल रहा था। इमाद ने आवाज दी—कौन है?

खोजा आया। इमाद ने कहा—बहुत भूख लगी है। बावर्ची से कहो, खाने को क्या है, लाए।

याद आ गया—आज शाम की नमाज तो नही पढी। कसूर हो हो गया। अल्लाह मेहरबान, बंदा के कसूर को माफ करो।

नमाज पढी। फर्श पर कीमती कपड़ा बिछाकर खाने बैठा, तो लगा, गन्ना ने तो नही खाया? पूछा—बेगम ने खाया है? क्या खाया है?

—कुछ नही खाया।

—कुछ नही खाया, सिर्फ पानी पिया है ?

—पानी भी नही पिया है हुजूर। शुरू मे तीनेक बार पिया था। फिर···

—फिर क्या ?

—शराब पी। भर-भर प्याला। उसीसे बेहोश पडी है।

इमाद चौंका। शुभानअल्लाह! शराब ? गन्ना ने शराब पी है ? शराब ! तबियत खराब थी, लौट आई। आकर शराब ? जो गन्ना शराब छूती तक नही थी, वह···!

बड़े गुस्से मे इमाद उठा। गन्ना की चोटी खीचकर उसे उठाया। आंखें जल रही थी। रूखे स्वर में पुकारा—गन्ना !

चोटी पकडकर बेरहमी से झकझोरा—गन्ना !

गन्ना ने आखे खोली। सुर्ख आंखें। नजर खोई-सी। निश्वास से शराब की बू। एक नजर इमाद को देखा। नफरत से बोली—तुम झूठे हो !

—गन्ना !—इमाद मारे गुस्से के बेहाल हो गया।

—एक फकीर की एक आंख के लिए मैंने अपने को तुम्हारे हाथ बेचा था ! खत लिखा था। तुमने कहा था—हां, दाम दिया। दाम—उस आंख की निगाह। लेकिन···

गन्ना के होठो पर ज़हरीली हंसी खेल गई। वह हंसी, जो उसके मुह पर किसीने नही देखी थी। कहा—तुमने दाम दिया नही। उसे अंधा बना दिया। झूठा आदमी !

इमाद की आखें शेर की आखो-सी जल रही थी।—दबे गले से कहा—किसने तुझसे कहा ? झूठी बात···

—हिन्दुस्तान की बादशाही और इज्जत को कब्र देनेवाले झूठे वजीर हो तुम ! झूठ कहकर किसीकी आखोदेखी को भी तुम झूठा बताते हो। तुम्हारी पाच वक्त की नमाज़ भी झूठ हो जाती है। छिः-छि'।

वजीर के चेहरे पर तेज़ और टेढी हसी दिखाई दी! कहा, खूब धीरे-धीरे—मैं क्या करूं ? मर्जी खुदा की, खेल नसीब का।

—लेकिन इज्जत इन्सान की !

—मेरी इज्जत हिन्दुस्तान की वजीरी है। वह इज्जत मेरी वर-करार है री कसवी की वेटी !

—मैं कसवी की वेटी ? और तुम ?

—मै हिन्दुस्तान का वजीर।

—वजीर ! तुम्हारी उस वजीरी का मुझसे ही खातमा होगा। आ रहा है अफगानिस्तान का वादशाह। मेरे साथ जो वेईमानी की, उसकी सजा मिलेगी।

इमाद ने उसके गाल पर जोरो का एक तमाचा लगाकर उसे गिरा दिया। गन्ना वेवस-सी पड़ी रही। उसकी ओर कुछ देर तक ताकते रहकर इमाद खाने की जगह पर जाकर वैठ गया। वडी भूख लगी थी। खाते-खाते अस्तव्यस्त कपड़ो मे शराव के नशे मे चोट से वेहोश पडी गन्ना को देखा।

पेट भरता आ रहा था। भूख की जलन नही थी। तन-मन शात हो रहा था। इमाद ने गन्ना की तरफ उलटकर देखा। देखता ही रह गया—कितनी खूबसूरत !

इमाद समझता है, गन्ना जाएगी। उसे जाना होगा। शाह अब्दाली उसे लेकर क्या करेगा, पता नही, लेकिन इमाद से वह उसे छीन लेगा। हो सकता है, कसबी वनाकर रक्खे। उसकी उमर वहुत हो गई है। वीमारी से नाक वैठ गई है—फिर भी अब्दाली ने मुहम्मदशाह की बेटी हजरत वेगम को मागा है। औरत की भूख गई नही है उसकी। शादी करेगा।

गन्ना को वादी वनाकर आखिर क्यो न ले जाएगा ?

ले जाए। जाए। मगर उससे पहले आज की रात···भर पेट भोग लिया जाए उसे। भूख मिटा ली जाए।

यह खूबसूरत वला !

सवेरे जगते ही खोजा सरदार को वुलाकर कहा—वेगम ये रही। खबरदार, भागे नही, जहर नही खा ले, मर नही जाए। अगर कुछ हुआ तो जमीन में गाड़कर कुत्ते से नुचवाऊंगा ! वादी अमीना को वुला।

अमीना को वुलाकर भी वही कहा। कहकर नीचे उतरा। कई

बड़े उमराव इंतज़ार मे बैठे थे।

एक सवाल—क्या होगा ?

इमाद ने कहा—क्या होगा ? नादिरशाह के आने से जो हुआ था, वही होगा ! रोहिला स्यार मीर बख्शी नजीबुद्दौला फौज लेकर भाग गया, मैं क्या करू ? लोहा लेनेवाले सिपाही नही है। तोप दागनेवाले गोलंदाज़ नही है। तोपे खीचकर ले जाने के लिए शायद बैल भी नही मिले ! मैं करूं तो क्या ? मगर बचना तो होगा ही। आप लोग भी कोशिश करें, मैं भी करता हू। मुझपर भरोसा रखे ! आप सब बल्कि किले मे बादशाह पर निगाह रखे। बादशाह साज़िश कर रहा है। मै वहां चलता हू।

इमाद निकलकर घोड़े पर सवार हो गया। दस खास वजीरी सिपाही साथ चले। नक्कारा नहीं लिया। वजीर जा रहे है—यह एलान करते हुए चलने का यह समय नही।

दिल्ली के सारे चौडे रास्ते सूने पड़े थे। मुहल्लों मे, गली-गली मे हलचल। अभी से मुहल्ले के फाटक बंद कर लिए गए थे। दूकाने बंद। कुछ कुत्ते घूम रहे थे केवल। और कुछ गुडे।

मीर मन्नू। निज़ामुल मुल्क वंश का। सैयद वंश का लोहू उसकी शिरा-शिरा मे। मीर मन्नू—हिन्दुस्तान के अमीरों मे श्रेष्ठ अमीर। बादशाह मुहम्मदशाह के बूढे वज़ीर का बडा बेटा। मीर मोइनुद्दीन खां। बाद मे लाहौर का सूबेदार हुआ। आम लोगो मे मीर मन्नू के नाम से मशहूर। उसके बाप-दादे क्रम से दिल्ली के वजीर हुए। उसका भाई इतिज़ामुद्दौला वज़ीर हुआ था। उसीको हटाकर इमाद वज़ीर बना। लड़ाई मे मीर मन्नू रुस्तम जैसा साहसी और वीर था। मुगलानी बेगम उसकी बीवी है, उमधा बेटी।

मीर मन्नू के मरने के बाद बेगम ने अनाचार-व्याभिचार चाहे जितना ही किया हो, कितनी ही उसकी निंदा फैली हो—वजीर इमाद ने कैद करके उसे अपमानित करने की हिम्मत नही की। चालाक इमाद ने मा के कलंक के चलते उमधा से शादी तो नही की, पर रिश्ते को तोड़ा भी नही। दिल्ली मे उन्हे अपनी ही हवेली मे नजरबंद करके रक्खा। इस हवेली के एक हिस्से में इतिजामुद्दौला रहता है। वह भी इमाद

का प्रतिद्वंद्वी है। कड़ा पहरा था।

गलतियो पर गलतियां की, मगर इसमें इमाद ने चूक नही की। हवेली के फाटक पर उस रोज सवेरे से ही एक भीड जमा होकर हल्ला करने लगी —मुगलानी बेगम कहां है? जहन्नुम मे जाए वह। उसे हम लोग फाड़ डालेंगे। उसीने अफगानिस्तान के लुटेरे बादशाह अब्दाली को बुलाया है। निकालो उस बदमाश औरत को।

जी-जान से चीख रहे थे लोग। लेकिन दिल्ली शहर का कोतवाल फौलाद खां खुद सिपाहियो के साथ खड़ा था फाटक पर। रोकने के लिए सिपाही बदूक ताने खड़े। खबरदार, बढे कि गोली चलाई!

इमाद ने मन ही मन कहा—शाबाश फौलाद खां!

उमधा बेगम खिडकी पर खडी थी। रात मुगलानी ने खुशी से छूटकर शराब पी। शाह अब्दाली—उसका धरमबाप—दिल्ली आ रहा है। एक बार वह इस कैद से छूटेगी। अब्दाली को कानोकान सलाह देकर बदला लेगी। उसे सबसे ज्यादा गुस्सा इमाद पर था। इमाद से उमधा का रिश्ता हुआ, नही तो वह अब्दाली से कहकर उसकी गरदन कटवा लेती। अब उसे गधे पर चढाकर वह सारी दिल्ली घुमाएगी।

रात नाच-गान मे मस्त रही। भोर की तरफ सो गई। सुबह उठकर फिर शुरू करने का इरादा था। एक फेहरिश्त बनाएगी वह। दिल्ली के किन-किन उमरावो को सजा देनी है। किन-किनके यहां धन-दौलत गड़ी है। वह फेहरिश्त वह अब्दाली को देगी। लेकिन सुबह होते-होते शोर से उसकी नीद उचट गई। नीद ही नही उचटी, मजा भी जाता रहा। कौन हैं ये लोग? क्या चाहते हैं?

उमधा उससे पहले ही झरोखे पर आ खडी हुई थी! चेहरा उसका फक पड गया था। उमधा ढीठ है, तर्रार है, मगर मां जैसी नही। वह सैयद वश की बेटी की नाईं अनाचार से दूर रहती है। कहा—ये दिल्ली के लोग है! शोर कर रहे है। हमला करने आए है।

—हमला! इन कुत्तो को काट-काटकर मैं फाटक के सामने खोपडियो का पहाड लगा दूगी। ये हरामी जानते नही है…

नशे मे ही वह उन्हे डाटने-फटकारने के लिए निकलना चाहती

थी। उमधा ने हाथ थाम लिया—कहां जाओगी ?

—बरामदे मे। कह दू—मैं सर उतरवा लूगी।

—उससे पहले फाटक तोडकर वे तुम्हे फाड़ डालेगे। शाह अभी यमुना के उस पार है। बीस कोस पर !

बाहर ज़ोरो का हल्ला हुआ—तोड दो फाटक। मुगलानी को निकालो। मुगलानी चौकी। दो-एक बार आखे पिटपिटाकर उसने मामले की गहराई को समझने की कोशिश की। उसके बाद पूछा—कितने लोग है ?

—अपनी आखों देख लो।—उमघा झरोखे से हट गई। मुगलानी ने झरोखे की जाली से बाहर झाका। देखकर उसका नशा तुरत फट गया। शरीर मे एक कपकपी छूट गई।

हज़ारो आदमी ! बाप रे !

बड़ी-बडी आखो से उसने पलटकर बेटी को देखा—उमघा !

उमघा ने कहा—वहां जाकर बैठो। अभी भी तुम लडखडा रही हो।

मुगलानी चौकी पर बैठ गई। कहा—बादी, थोड़ी शराब दे, वरना मैं खड़ी नही रह पा रही हू।

उसके मन की आखो मे दिखाई दे रहा था—उन्मत्त भीड हवेली का फाटक तोडकर, उसका झोटा पकडकर रास्ते पर खीच ले जाएगी। टुकड़े-टुकड़े कर देगी। अपने तीस-चालीस ही तो पहरेदार है—ये हज़ार पागलो को कब तक रोक सकते है ?

—भागने का कोई रास्ता नही है ? खुला नही है किसी तरफ ?

खोजा ने कहा—नही। चारो तरफ घेर लिया है।

—चोर-कोठरी को जल्दी खोल। जल्दी।

उमघा मुह घुमाकर बोल उठी—अम्मा !

—क्या ? हवेली के फाटक को तोड़ दिया ?

—नही। गाज़ीउद्दीन इमाद फाटक पर खडा है। साथ मे सिपाही है।

मुगलानी सिहर उठी—उमधा ! इमाद क्या…?

उमघा जवाब न दे सकी। सवाल वह समझ गई। इमाद क्या बदला चुकाने आया है ?

—मेरी आखे निकाल…? जरा चुप रहकर बोली—या खीचकर मुझे पगले कुत्तों के आगे डाल देगा ? टुकड़े टुकड़े कर देगा ?

—इतना डर क्यो रही हो अम्मा ?

—कि दोनो आंखे ही फोड देगा। बादशाह अहमदशाह की तो दोनों आखें ही फोड दी थी !

—अम्मा !

—घुस रहा है ? इमादुल मुल्क अंदर आ रहा है ?

—नही। लोगो को डाट बता रहा है। तलवार दिखाते हुए हटने को कह रहा है। लोग खिसक रहे है।

—लोग खिसक रहे है ?

उमधा बड़ी व्यग्रता से झरोखे पर झुकी।—अम्मा ! गाजीउद्दीन कह रहा है—खबरदार, सैयद वंश की औरत के बदन पर हाथ नही लगा सकते ! अगर बढे, तो अब्दाली से पहले ही तोपो से मैं दिल्ली को उडा दूगा। हट जाओ।

—चले जा रहे है ?

—हा। इमाद घुडसवारो के साथ बढ रहा है। लोग पीछे हट रहे है।

मुगलानी उठकर आगे आई—हट जा, मैं देखू जरा।

उसने सतोष की सांस ली। कहा—बादी, शराब !

—इमाद अदर आ रहा है अम्मां !

इमाद ने अदर आकर सलाम किया। कहा—मुझे पता नही था बेगम साहबा। खबर मिलते ही मैं दौडा आया। कोई डर नही—सब भाग गए। तुम खडी क्यो हो उमधा ! बैठो। और चाहे जो हो, तुम लोगो की बेइज्ज़ती मैं नही देख सकता।

उमधा चुपचाप खडी ही रही।

—मुझपर गुस्सा है। है न ? वजह भी है उसकी। गुस्सा कर सकती हो।

मुगलानी बोली—भीड तो चली गई। मगर तुम अब क्या करोगे गाजीउद्दीन ? मेरी आंखे फोड दोगे ?

गाजीउद्दीन ने कहा—शायद वही करता वेगम साहवा ! आपने चिट्ठी लिखकर शाह अब्दाली को यहां बुलाया है। मैं वज़ीर हू। मुझपर आपको गुस्सा है। आपका भी दोष है, वह भी ठीक ही है। मगर मेरा कसूर कही ज्यादा है। रिश्ता पक्का होने के बावजूद मैंने उमधा से शादी नही की। उसका अपमान किया। मैं मुसलमान हूं। बात दी और रक्खी नही। ईमान नही रक्खा। वेगम साहवा, मुझे इसका अफसोस है। मैने अपना कसूर समझा है।

मुगलानी अवाक् हो गई। वह इमाद की ओर ताकने लगी। उमधा ने भी उसको देखा।

इमादुल मुल्क ने कहा—सुनिए वेगम साहवा, मै जानता हू कि अब्दाली आते ही मुझे ज़जीर लगाएगा। सो लगाए। मुझे सजा मिलनी ही चाहिए। मैं मुकावला नही करूंगा। शायद आप कहे, मुकावले का दम नही है मुझे। मगर मैं निकल भाग सकता हू। इतना वडा देश है यह। वह मुझे पकड नही सकता। मगर मै भागूगा भी नही। क्योकि मै अपने कसूर का प्रायश्चित्त चाहता हू। मैंने रात ठीक किया है, तवायफ की वेटी को मन ही मन मैंने तलाक दे दिया है।

· अव उमधा वोली—लेकिन वज़ीर साहव ने तो अम्माजान के साथ वेगम गन्ना को दिल्ली से वाहर भेज दिया है।

- —नही। अम्मा को भेजा है। सैयद वश की दूसरी वहू-वेटियो को भेजा है। गन्ना को नही। उसे घर मे वद कर दिया है। तवायफ की वेटी है न ! शराव पीकर वेहोश पड़ी है। मैं तुमसे माफी मागने आया हू उमधा। कहने आया हू कि मैं तुमसे शादी करने को तैयार हू। कहो तो शादी के तुरत वाद तलाक को भी राज़ी हू !

मुगलानी वोली—गाज़ीउद्दीन, वचपन से ही उमधा की शादी तुमसे तै है। तुम मेरे दामाद हो, वेटा हो। डरो मत वेटे। तुम आज ही मुझे शाह की छावनी मे भेजने का इतज़ाम करो। जाकर मैं सव ठीक किए देती हू।

—खुदा कसम ?

—खुदा कसम वेटे।

—उमधा !

उमधा सिर झुकाकर उधर चली गई। इमाद पीछे-पीछे गया।

—उमधा!

उमधा ने उलटकर उसे देखा।

—मुझे माफ करो उमधा!

उमधा फफककर रो पडी। इमाद ने उसे अपनी छाती मे खीच लिया। सर सहलाने लगा।

इमाद ने कहा—गन्ना को मै सजा दूगा। तुम्हारी बादी बना दूगा।

१३

लाल किले के आम दरबार मे वे अमीर-उमरा वजीर का इतजार कर रहे थे, जो दिल्ली छोडकर गए नही।

खबर आई कि अब्दाली के सिपहसालार जहान खां ने यमुना के पूरब लूनी मे पडाव डाला है। वजीर शाह वाली आ पहुचा है। जो करना है, तुरत कर लेना है।

सबने एक 'राहकाला' तोप को इसी बीच बैठाने की कोशिश की है। हिन्दुस्तान के मान के लिए कम से कम एक मोर्चा तो लेना ही है।

वजीर इमाद ने आकर कहा—नही। अब वह नही होगा।

—नही। कह क्या रहे है वजीर साहब! हिन्दुस्तान की इज्जत, मुगल खानदान की इज्जत को बरबाद कर देंगे?

वजीर ने जरा चुप रहकर कहा—इज्जत पानी जैसी होती है, दूध जैसी। एक बार माटी मे गिर पडने से उसे उठाकर काम नही चल सकता। शाह नादिर ने बादशाही इज्जत के प्याले मे छेद कर दिया है। उसमे जो भी दूध डाला गया, चू गया। फूटा प्याला पडा है। उलट देने से भी उससे इज्जत का दूध नही गिरेगा। बादशाह ने खुद आदमी भेजकर कहलाया है कि शाह दुरानी से रिश्तेमदी करके बादशाह धन्य होना चाहते है। तैमूरशाही खानदान की दो बेटिया है—बादशाह मुहम्मदशाह की बेटी हजरत बेगम और खुद बादशाह की बेटी मुहम्मदी बेगम। वे हजरत बेगम से शाह की और मुहम्मदी बेगम से शाहजादा तैमूर की शादी करना चाहते है। यो

महल मे इसकी धूम पड़ गई है, पर मैं सुन आया, मलिकाए-जमानी की हवेली मे रुलाई मची है !

इबादुल्ला खा कश्मीरी ने कहा—बादशाह खास महल को छोड़ मेहमान महल मे चले जा रहे हैं। कुजी जहान खा को भेज रहे हैं। अफगान लोग बरात लेकर आ रहे हैं। तोप छोडकर उन्हे रोकने का सपना आप सब भूल जाएं !

उमराव सब चुप रहे। उसके बाद कहा—तो ?

—तो क्या ? अपने-अपने घर जाएं। शाह को देने के लिए नज़राने का इन्तज़ाम करे। शाह मेहमान होकर आ रहे है।

सभी चले गए। रह गए केवल इबादुल्ला खा और इमाद।

इमाद ने कहा—इबादुल्ला…

—जी !

—तुम दो जने मेरा भरोसा हो। तुम और खानखाना बहादुर खां बलूच। आगा रजा दिल्ली मे नही है। रात के तीसरे पहर तैयार होकर आ जाना। दिल्ली का भार कोतवाल फौलाद खां पर रहेगा। मैं केवल तुम दोनो के साथ निकल पडूगा।

—कहा ? राजपूताना की ओर ? या सूरजमल की ओर ?

—शाह की छावनी मे। यमुना पार करके सवेरे शाह के वज़ीर वाली खां के पास पहुचेगे। वाली खा मेरे रिश्तेदार है। उनको साथ लेकर शाह के दरबार मे हाजिर होगे।

—वजीर साहव !—इबादुल्ला खा कश्मीरी के स्वर मे शंका की सीमा न थी।

वजीर ने हसकर कहा—डरो मत इबादुल्ला खा। सर जाएगा तो मेरा जाएगा।

—डर आपके ही लिए हो रहा है वजीर साहव।

—मैने उसका पहले से ही इतजाम कर लिया है। मैने अपना वकील भेज दिया है। उसकी बात पर शाह ना नही कर सकता। मैंने मुगलानी और उमधा को भेज दिया है।

—आप कह क्या रहे है वजीर साहव ! नालिश तो मुगलानी और उमधा की है ! लोग कहेगे कि शाह लूट-पाट के लिए आया है। मगर शाह तो यही कहेगा कि मै मुगलानी की नालिश पर वजीर

को सजा देने आया हूं।

—सो सब हो चुका है। सवेरे ही सुलह कर ली है। गन्ना को तलाक़ देकर मैं उमदा से शादी करूंगा। मेरा वकालतनामा लेकर मा-बेटी जा चुकी है। गन्ना को घर मे बद करके ताला डाल दिया है।

२६ रबी-उस्मानी का दिन। ११७० हिजरी। दिल्ली की उग कडाके की सरदी मे तीन घुडसवार रात के अतिम पहर मे यमुना के घाट पर पहुचे।

रात का अतिम पहर। डर की मारी दिल्ली। उसमे भी लोग अजीब ढग से जग पडे। अपना पवित्रतम काम करने लगे।

हर मसजिद मे अज़ान। मन्दिर मे शंख-घटे। लेकिन हा, और समय की तरह आवाज़ ऊची और गहरी न थी। डरी-डरी-सी।

गन्ना को चेत हुआ।

आज तमाम दिन वह बेहोश-सी पडी रही। ज्वरग्रस्त रोगी की तरह। पिछले दिन क्षोभ के मारे दुनिया पर से आस्था खोकर वह शराब ही पीती रही। बादी अमीना ने कहा था, बहुत गम हो तो गलत करने के लिए शराब पीजिए। इसलिए पी थी। सकून नहीं मिला तो भी वह कहती थी, बडी खुशी हुई। इमादुल मुल्क को आमने-सामने बेईमान कहकर बडी खुशी हुई। उसे शाप देकर बडी खुशी हुई। शर्म की क्या बात! बेइज्ज़ती काहे की? उसने तो बादी के रूप मे ही अपने को बेचा था। इमाद ने ब्याह का बहाना किया। लेकिन खरीदी हुई बादी सदा बादी ही रहती है।

बेगम उदीपुरी शाहजादा दाराशिकोह की बांदी बेगम थी। दारा के मरने के बाद औरगजेब ने उसे बेगम बनाया था। सभी जानते हैं, औरगजेब उसे बहुत चाहता था। पर गुस्सा होने पर उसके बेटे कामबख्श को वह कहता था—बादी का बच्चा कभी अच्छा नही होता।

वह तवायफ की बेटी है। उस रोज तवायफ की तरह ही उसने अपने को इमाद के हाथो सौंपा था। इमाद—जानवर है वह। साप है। उसे लपेटकर उसने तमाम काट खाया था। सुबह बदहोशी की हालत मे उसे बंद करके चला गया।

उसने अजान सुनी। घड़ी-घटे की आवाज। आंखे खोली। सारे वदन मे दर्द। ऐठन। सिरदर्द। खोलना चाहते हुए भी आखे नहीं खोल पा रही थी। मगर आखो से पानी वह रहा था। दिल मे कोई गिला नही—पर शोक की पीडा से हृदय जैसे दुख रहा हो।

हाय अल्लाह! यह हुआ क्या उसका! किस गुनाह की यह सजा दी है मेहरवान! कुर्बानी देकर उसने हजरत को चाहा था, अपने प्रियतम को। आदिलशाह हजरत ही नही, उसके प्रियतम है—महबूब। अपने को वलिदान करके उनकी एक आख को बचाना चाहा था। ऐ खुदा, तुम्हे वह भी मजूर न हुआ! न, तुमने मजूर किया, शैतान इमाद ने सब विगाड दिया।

आखो से पानी वहने लगा।

दु ख उसे नही था। आज हो चाहे कल, अब्दाली आ रहा है। उसे छुटकारा मिलेगा। अब्दाली उसका कत्ल तो नहीं करवाएगा, लेकिन हा, उसे चोर-कोठरी के अधेरे मे रहने का हुक्म होगा। इमाद को भी सजा होगी। इसलिए कोई दु ख नही।

प्यास से जैसे छाती फटने लगी। अन्दर सूखकर काठ हो गया था। अमीना जरूर पानी रख गई होगी। टटोला। किसी ठडी चीज़ से हाथ छू गया। पानी का गिलास। गिलास को उठाकर मुह के पास लाया।

सरदी की रात। पानी जैसे वर्फ हो। दात-जीभ कनकना उठेगी। तो भी ढक-ढक करके पी गई। थकावट से फिर उसकी आखे झिप आई। ठडा पानी जो पेट मे गया—छाती मे कपकपी छूटी। चादर को खीचा और सिकुडकर सो गई। नीद आ रही थी। भोर हो चला था। और समय ऐसे वक्त लोग जग जाते। देहात से गाडियो सब्जी आती। कसाईखाने के लिए वेशुमार वकरे-वकरिया। घोडे की टापो की आवाज उठती। भिखमगे शोर करने लगते। ग्वाले जगकर दूध दुहते। हिन्दू लोग यमुना नहाने जाते। किले मे नौवत झरती। आज जैसे सब सन्नाटा।

अचानक उसे ऐसा लगा कि दूर से कोई आवाज आ रही है। कोई जैसे पुकार रहा है। कोई फकीर होगा। हाय फकीर, अल्लाह को पुकारने के लिए कहते हो?

तुम नही जानते, अल्लाह दिल्ली से नाराज हो गए है। पैगम्बर

की भवों पर बल पड़ गए हैं। दिल्ली पर आंधी आ रही है। काबुल से अब्दाली आ रहा है। तूफ़ान जगकर उसकी तलवार से बिजली कौंध रही है।

—मर्ज़ी ख़ुदा की। खेल नसीब का। इज्जत इन्सान की ! अरे ओ दिल्लीवालो ! जगो। इन्सानियत की इज्ज़त तो रखो। एक मोर्चा तो लो। यह जो जान है, वह तो देने के लिए है। जानवर की तरह मुह बंद करके नही। उठो। जागो !

गन्ना चौंककर उठ बैठी।

—दिल्लीवालो ! इज्जत रखो। नसीब का खेल पलट जाएगा। नाराज ख़ुदा ख़ुश होगे।

गन्ना चीख उठी—हज़रत ! हज़रत !

बंद कमरे में आवाज दीवारो पर सर पीटने लगी। हो सकता है, कुछ क्षीण ध्वनि शीत की हवा मे बिखर गई।

अमीना की नींद टूटी। वह बगल के कमरे मे सोई थी। कहा—बेगम साहबा !

—अमीना !

—अभी रात बाकी है। सो रहिए।

—नही, नही, अमीना ! उठ। सुन नही रही है, हज़रत पुकारते चले जा रहे है। अमीना ! मै तुझे मोती का हार बख्शीश दूगी।

आवाज़ हवेली के सामने आई—वजीरुल मुल्क ! नमक तुमने बहुत खाया है—जागो गाज़ीउद्दीन आसफजा—उठो !

गन्ना ने चीखकर बंद दरवाजे पर पागल की तरह धक्के दिए। कहा—खोल अमीना ! खोल। तेरे पैरो पड़ती हू।

बाहर की वह पुकार सुनकर अमीना भी सिहर उठी थी। लग रहा था, जैसे बहिश्त से ख़ुदा का परवाना लाकर कोई दूत हिन्दुस्तान के वजीर पर जारी कर रहा है !

अमीना ने दरवाज़े का ताला खोल दिया। गन्ना लड़खड़ाती हुई बाहर निकल आई। बदन मे ताकत नही—सर्वांग मे दर्द।

—मुझे ले चल अमीना ! मुझे ले चल !

—कहा ?

—हज़रत के पास। न हो तो उन्हे बुला ला। अमीना !

—आप नासमझ, पागल हो गई है वेगम साहवा ! दरवाजे पर पहरेदार है। हमे जाने क्यो देगे और उन्हीको क्यों आने देगे ?

—तो मुझे झरोखे पर ले चल। जल्दी !

वाहर के लोगो को देखने, भीड़ को दर्शन देने के लिए वादशाही ढंग पर वजीर का झरोखा था। रास्ते की ओर।

अमीना के कंधे का सहारा लेकर गन्ना किसी तरह झरोखे पर आई। अव भी अधेरा था चारो तरफ। सर्दियो के भोर की हवा सुई-सी चुभ रही थी।

अमीना ने कहा—वाप रे !

गन्ना ने लेकिन परवा न की। झरोखे से झुककर सड़क की तरफ ताका। फाटक पर किसीको देख नही पाई। निगाह दौडाकर देखा—काफी दूर पर दो-तीन आदमी जा रहे थे। इतने पर भी वह पहचान गई, एक जने के पीछे जो है, वही हजरत है।

वह चिल्लाई—हजरत ! हज़रत !

उसकी आवाज को ढकते हुए हज़रत ने फिर ज़ोर से कहा—हाय रे नसीव हिन्दुस्तान का, हाय री किस्मत तैमूरशाही-वावरशाही बादशाही की ! हाय रे हिन्दू, हाय रे मुसलमान ! हाय रे हाय !

गन्ना फिर चीखी—ह-ज़-र-त ?

नीचे से पहरेदार ने कहा—यह एक अंधा है, पागल है वेगम साहवा !

१४

सात दिन के वाद।

शुक्रवार। जुम्मा की नमाज़ का दिन। लेकिन दिल्ली की शाही सडक, दिल्ली की सारी ही वड़ी-वडी सडके खा-खा कर रही थीं। सड़क पर तो नही ही थे आदमी, वड़े-वड़े घरो के झरोखे-वरामदे पर भी कोई शकल नही दिख रही थी, कोई आहट नही थी। सड़क से मुहल्लो को जानेवाले रास्तो के सभी फाटक वंद। लगता था, दिल्ली की जिंदगी खत्म है। लोग सव मर गए है। मुर्दों का निर्जीव शहर है शाहजहानाबाद !

गरमी के दिनो आंधी आने के वक्त किवाड-खिडकी बंद करके जैसे लोग डरी हुई निगाह से पश्चिम के आकाश की तरफ ताकते रहते है—ठीक उसी तरह सांस रोके सब उत्तर-पश्चिम की ओर ताक रहे थे अन्दर से। हिन्दुस्तान के मशहूर ज्योतिषी ने कहा है—"प्रलय की आंधी-सी आंधी आ रही है। सब तहस-नहस कर देगी। नादिर-शाही आंधी मे तैमूरशाही खानदान की इज्जत, शाहजहां का तख्त-ताऊस उड गया है। कोहनूर ताज उड गया है। बचा-खुचा जो है, सो अब की उड जाएगा। जनानो की इज्जत जाएगी, हिन्दुस्तान की लक्ष्मी जाएगी, मुडो का पहाड तैयार होगा। आग जल उठेगी। सब छार-छार हो जाएगा।"

शुकदेव पंडित का कहा सच निकला। आज अहमदशाह अब्दाली दिल्ली मे घुस पडा। आंधी दिल्ली के आसमान पर मंडरा उठी। शहर के मकानों के माथे पर, वह दिखाई दे रही है उडती हुई धूल। घोडे की टापो की आवाज। घर-घर लोगो का कलेजा कांप रहा है।

कई दिन पहले दिल्ली के बादशाह ने अब्दाली को निमंत्रण भेजा था। अब्दाली ने बादशाह को अपनी छावनी मे आकर मिलने का न्योता भेजा था।

और, हाय रे नसीब हिन्दुस्तान का! हिन्दुस्तान का बादशाह दो-चार घोडे-हाथियों, पांच-सात अमीर-उमरावो के साथ छोटे जमीदार-ताल्लुकेदार जैसा अब्दाली की छावनी मे गया!

दिल्ली के जो लोग सडक पर थे, उन्होने मारे शर्म के सर झुका लिया। उनसे देखा नही गया। जो झरोखे पर थे, वे अंदर चले गए। देश को, अपने नसीब को धिक्कारा।

कृपा के भिखमंगे की नाईं दिल्ली के बादशाह ने तैमूरी वंश की दो बेटियों को भेंट मे देना चाहा। अपनी बेटी मुहम्मदी बेगम को अब्दाली के बेटे तैमूर से ब्याहना चाहा। और, साठ साल के बुड्ढे अब्दाली को देना चाहा, हिन्दुस्तान की कमल, तैमूरी खानदान की श्रेष्ठ सुंदरी, बादशाह मुहम्मदशाह की बेटी!

बेगम महल मे रुलाई छूटी। मुहम्मदशाह की बेगम ने रोकर कहा—जहर खिला दूंगी, मगर अब्दाली से बेटी की शादी नही होने दूंगी। बेटी हज़रत बेगम ने भी कहा—जहर खा लूंगी। मगर हाय,

उनसे वह भी करते न बना। इसकी भी हिम्मत नही पडी।

आंसू पोछते हुए उन्होने शादी का इंतजाम किया।

भोर होते-होते कौन तो चिल्लाकर कह गया—इन्सान, अपनी जान देकर इज्जत बचाओ। देखना, नसीब का खेल उलट जाएगा। नाराज खुदा खुश हो जाएंगे। जानवर की जान मरने के लिए है—इंसान की जान कुर्बानी के लिए। जान दो, इज्जत मत दो।

यह सुनने के बावजूद किसीको साहस नही हुआ। लोग चौके। कान मे उगली डाल ली।

यमुना किनारे की उस आवाज ने सबके कलेजे मे प्रतिध्वनि उठाई। पर जबान खोलने का किसीको साहस नही हुआ। घर में सबने चुपचाप एक-दूसरे का मुह ताका। हाय-हाय करके नसीब को ठोका—नसीब! किस्मत!

चुप-चुप-चुप!

नक्कारे की आवाज बढ़ती आ रही है। घोडे की टापो की आवाज सुनाई दे रही है। रो मत बच्चे, रो मत।

डौंडी की चोट पर अब्दालशाही एलान कल हो गया:

"हिंदुस्तान की गद्दी को दक्खिन के मराठे लुटेरों, पूरब के जाट डकैतो ने हमलाँ करके हिला दिया है। साथ ही कुछ बेईमान सूबेदार, नायब, मनसबदार, राजा और नवाबो ने बादशाह के खास महाल को छीन लिया है। मै मुसलमान हू—बादशाह आलमगीर सानी का मेहमान हू। महज कई दिन के लिए आया हूं। मै इन बदमाश काफिरों को सजा दूगा, इन बेईमान नवाब-सूबेदारों, मनसबदारों को ठीक कर दूगा!

"गुडे, दगाबाज होशियार! होशियार चोर और लुटेरे! शहर शाहजहानाबाद और शहर दिल्ली की हाट-बाट में, दिन या रात मे अगर वे नज़र आएं, तो उनकी जान ले ली जाएगी। और, जो काफिर है, उनके लिए यह हुक्म है कि पहचान के लिए वे माथे पर सिंदूर का तिलक लगाएंगे। नही तो सजा होगी।

"सब्ज़ीमंडी, बाज़ार ऐसे ही चलते रहेंगे।

"मुहम्मद आलमगीर जैसे थे, वैसे ही बादशाह रहेगे।

" खानखाना कमरुद्दीन इतिज़ामुद्दौला वज़ीरुल मुल्क हुए ।

" इमादुल मुल्क को वजीर के पद से हटा दिया गया । हा, उनके कसूर माफ कर दिए गए । दिल्ली के तमाम अमीर-उमरा, सेठ-बनिये, गृहस्थ-गरीब को मालूम हो कि जुम्मा के दिन बादशाह अब्दाली दिल्ली मे प्रवेश करेगे । उनके साथ उनका हरम और फौज रहेगी । उस समय रास्ते पर कोई आदमी न रहे । सारे झरोखे बद रहे । ओट से भी कोई न झाके । "

वजीर इमादुल मुल्क के नसीब की सुनकर दिल्ली के लोग दग रह गए ! उसने नसीब की चाल पलट दी । उसके सारे कसूर माफ हो गए । उमधा बेगम से उसकी शादी होगी । वल्लाह !

दिल्ली के बादशाह ने खुद जाकर अब्दाली से अर्ज़ किया था—वजीर की गरदन उतारने का हुक्म फरमाया जाए । इसीने मराठा काफिरो से गठबधन किया, जाट सूरजमल से साजिश की ! दिल्ली की बरबादी और अव्यवस्था का जिम्मेवार यही है ।

अब्दाली ने कहा—मगर मैंने तो उसे पहले ही माफ कर दिया है बादशाह ! मेरी ज़बान से एक बार जो निकल चुका, वह पलट कैसे सकता है ? वह मेरे वज़ीर के हाथो बदी है । तीन दिन पहले ही आकर उसने मेरे पैरों पर माथा रखकर माफी माँगी है । और फिर बादशाह, मुगलानी मेरी धरमबेटी है । उसकी बेटी उमधा से उसका रिश्ता हो चुका है ।

—लेकिन शादी पक्की करके भी दो साल से उसने मुगलानी की बेटी से शादी नही की । बल्कि साल-भर हुआ, मा-बेटी को दिल्ली की हवेली मे नज़रबद करके रक्खा है । आप पूछ देखे उनसे ।

अब्दाली ने हसकर कहा—बादशाह आलमगीर, औरत और हिन्दुस्तान के धूप-बादल का मिजाज एक ही जैसा होता है । धूप जब चढती है, तो लगता है, आग से जहान को जला देगी । लेकिन कहा से तो आ जाती है बदली, उड़ेल देती है पानी । जाड़ा लग आता है । बादल लौट जाते है—आफताब की रोशनी दुनिया को झकमक कर देती है । ताज्जुब है, इमादुल मुल्क से पहले मुगलानी आई । उसने मेरा पाव पकडकर कहा—इमादुल मुल्क को माफ करना होगा !

१५

इमादुल मुल्क जादू जानता है ! मुगल बादशाही के पूरे जमाने मे ऐसा जादूगर वजीर कोई हुआ ही नही । सैयद भाइयो ने खेल खेले थे । बादशाही की बुनियाद उन्होने ही हिलाई थी । उनके नाम पर लोग आज भी अफसोस करते है । मगर वह खेल जबरदस्ती का था । बड़ा सैयद वज़ीर था । छोटा मीर बख्शी—फौज का मालिक । वे बादशाह को खिलौना बनाकर खेलते रहे । किन्तु इमादुल मुल्क इस उजडी पैंठ मे जादू का करिश्मा कर गया । हारती हुई बाजी को उसने प्यादे की किश्त से पलट दिया । और कितनी, बीस-बाईस की उम्र होगी ! उसने अब्दाली पर भी जादू कर दिया ।

इमाद मुगलानी बेगम और उमधा को ही अब्दाली के पास भेजकर निश्चित नही रहा । खानखाना बहादुर खा बलूच और इबादुल्ला खां कश्मीरी के साथ सर्दी की उस रात मे यमुना पार करके अब्दाली के वज़ीर की छावनी मे पहुच गया । वज़ीर शाह वाली की छावनी थी यमुना के किनारे और अब्दाली की शाहदरा मे ।

शाह वाली इमाद की मां का अपना आदमी था । उसने इतर-पान देकर इमाद की खातिर की । अब्दाली से जाकर कहा—हुज़ूर, हिन्दुस्तान के वज़ीर शाहनशाह के कदमो तसलीम दाखिल करने आए है । इससे पहले मुगलानी की अर्ज़ी वह मजूर कर ही चुका था । कहा—उसे पेश करो !

कायदे के मुताबिक हाथ मे रूमाल बांधकर शाह वाली ने उसे कैदी की तरह ही हाजिर किया । अब्दाली सुबह की नमाज पढकर तंबू के अन्दर तख्त पर बैठा था । उसके पास अब्दाल फौज का सिपहसालार जहान खा, हिन्दुस्तान का बेईमान मीर बख्शी नजीबुद्दौला, और भी चार-पाच मनसबदार खड़े थे ।

इमादुल मुल्क घुटने गाड़कर बैठ गया । पांच मुहरे और एक कीमती बाजूबंद नजराना देकर उसने शाह के पैरो पर होंठ रखकर अपने को सौप दिया ।

शाह ने हुक्म दिया—हाथ खोल दो । खडा होने को कहो इसे ।

खडे होकर इमाद ने अदब के साथ सलाम किया ।

शाह ने पूछा—तुम गाज़ीउद्दीन आसफजा हो। हिन्दुस्तान का वज़ीरुल मुल्क ? जरा चेहरा तो उठाओ, शक्ल देखू !

गाजीउद्दीन ने सर उठाया, लेकिन उधर ताका नहीं।

शाह ने कहा—हूं।—हलकी हंसी खेल गई उसके चेहरे पर। कहा—तुम हिन्दुस्तान के वजीरुल मुल्क हो ! ऐ !

—जी जहापनाह ! वह वदनसीव मैं ही हू।

—तो फिर क्या वात है कि मैं अफगानिस्तान से पजाव होते हुए यहा चला आया, हिन्दुस्तानी फौज से कही भी मुलाकात नही हुई ! कही कोई मुठभेड नही हुई ! कैसे वज़ीरुल मुल्क हो तुम !

जहान खां, नजीवुद्दौला होठ दवाकर हसे। इमाद एक ही सयाना था। उसने समझ लिया था कि अव्दाली किस जवाव से खुश होगा। ऐसा रुस्तम डरपोक जैसे जवाव से खुश नही होता। उसने सर उठाकर उगली से नजीवुद्दौला को दिखाते हुए कहा—सच कहूं तो इस गरीव पर नाराज न हो जहापनाह। हिन्दुस्तान की सारी फौज के मालिक, मीर वख्शी खानखाना नजीवुद्दौला दरवार मे हाज़िर हैं। मैंने वारहा उनसे लोहा लेने को कहा। मगर लडने के वजाय वे रातोरात सारी फौज लेकर हुजूर से जा मिले। मैं वजीर ठहरा—मेरे हाथ फौज नही। कैसे लडता ! गरीवपरवर आप इसका विचार करे।

अव्दाली चुप हो गया। समझ गया, इमाद ने गलत नही कहा। उसने झट प्रसग वदल दिया—ठीक है। मगर एक काम तो तुमने वडा वेजा किया। तुम्हारे मामा की वेटी से तुम्हारी शादी की वात वचपन से ही तै है। दो साल पहले रिश्ता भी पक्का हो गया। मगर आज तक तुमने उससे शादी नही की। उमधा और उसकी मा को नजरवद करके एक तवायफ की वेटी से व्याह कर लिया। क्या नाम तो है उसका, हा, गन्ना वेगम !

इमाद इससे ज़रा भी नही घवराया। कहा—गरीवपरवर, आप खुद खुदा के काजी है। विचार करे। हिनावदी के वक्त मुगलानी वेगम ने कुरान शरीफ पर मुझसे यह लिखवाया कि उमधा से शादी करने के वाद मैं दूसरी किसीसे शादी नही करूगा। जहापनाह, गन्ना तवायफ की वेटी तो है, पर उसका वाप खानजमान अली कुइली खा

है—ईरान का अमीर। बहुत बडा शायर। तिसपर अौधिया का नवाव इसके लिए मुझसे होड़ कर रहा था। इज्जत के लिए मैंने उसे छीना है। उमधा से शादी करने के वाद चूंकि शादी नहीं कर सकता था, इसलिए पहले ही कर ली। फिर भी मुझे इसका अफसोस है। चूक हो गई है। मै इसका प्रायश्चित्त करूंगा। मैंने उमधा से कहा है, मैं गन्ना को तलाक दूगा !

शाह ने उसकी ये लच्छेदार वाते सुनकर शावाशी दी। कहा—तुम बहुत सयाने हो इमादुल मुल्क ! मुगलानी ने तुमसे कुरान की पीठ पर लिखाया कि तुम उमधा से शादी करने के वाद दूसरी शादी नही कर सकते। तुम्हे उसका रास्ता निकालने मे देर नही हुई—वाद मे नही, तो पहले।—अब्दाली हंस पडा।

इमाद ने कहा—मै गन्ना को तलाक दूगा शाहनशाह !

—हा, हा। वह सब होगा। वाली खा !

वाली खा ने कोर्निश की—जहांपनाह !

—हिन्दुस्तान का वजीर तुम्हारा मेहमान है। और तुम मेरे वज़ीरुल मुल्क हो। हिन्दुस्तान के वज़ीर को मैं तुम्हारे जिम्मे वदी रखता हू। दिल्ली मे मैं अपनी राय सुनाऊंगा।

१६

इन कई दिनो मे ही इमादुल मुल्क शाह का प्यारा वन गया। अब्दाली ने फिर से उसीको वज़ीर वनाना चाहा था। इंतिजामुद्दौला ने वज़ीरी के लिए दो करोड नज़राना देने की वात कही। शाह ने इमाद से कहा—तुम एक ही करोड़ दो इमाद, वज़ीर मैं तुम्हींको वनाऊंगा।

इमाद ने वहुत-वहुत सलाम करके कहा—जहापनाह, सारी दिल्ली से चुनकर दो करोड भीकटे जुटाने की जुर्रत भी मुझमे नही है, मैं दो करोड रुपये कहां से लाऊं ? वज़ीरी इंतिज़ामुद्दौला को ही इनायत की जाए। मेरी कुल दौलत चौदह लाख से एक दमडी ज्यादा नही है। मैं उमधा के साथ गरीबी मे ही ज़िंदगी बसर कर लूगा। वजीरी का

कोई लोभ नही है मुझे ।

उसकी इन सादी बातो पर अब्दाली खुश हुआ ।

वह देखिए, अब्दालशाही जुलूस के साथ इमाद सफेद अरबी घोडे पर किजिलवासी पोशाक पहने जा रहा है । माथे की पगडी पर हीरा-जडा पखना उड रहा है । यह सब उसे अब्दाली ने दिया है !

दिल्ली के सूने राजपथ से अब्दालशाही जुलूस जा रहा है । सबसे पहले नगाडा । ऊट की पीठ पर नगाडेवाले बैठे है । उसके बाद अब्दाली के बारह हज़ार खास देह-रक्षक हैं । वे चार हिस्सो मे बटे है । बीच मे है अब्दाली । आगे-पीछे और दाये-बाये तीन-तीन हजार । हरेक नौजवान खूबसूरत । जगबाज । पहनावे मे किजिलबासी पोशाक । सिर पर पगड़ी । सामने कपड़ा जरा ऊचा उठा हुआ । पीछे थोडा लटक रहा है । हर के कान मे मोतियो-जड़े कुंडल ।

बीचोबीच अरबी घोडे पर शाह अब्दाली । बगल से फरसी लिए चल रहा है चिलमबरदार । अब्दाली रह-रहकर गुड़गुडी पी रहा है ।

पीछे-पीछे ऊट ।

उधर मत ताको । बादशाही जुलूस का कोई अमीर-उमरा भी उधर नही ताकता । साहस नही होता । ऊटो पर लाल मखमल से घिरे हौदे । छोटे-बड़े—किस्म-किस्म के । उनमे तख्त पर हरम की औरते । मोतियो की झालर ।

यह है बादशाही हरम ।

इसके पीछे अमीर-उमराव । उसके पीछे, रसदखाना, असबाबखाना ऊटो की गाडियो पर। उसके पीछे तोपे, फिर सवार । फिर पैदल ।

घोड़ो की टापो मे जुलूस की ताल पड रही है । जाड़े के दिन का पहला पहर बीता है । लाल किले की दीवारो से सूरज आसमान पर उठ गया । जुलूस की रौनक झकमका रही है । तीस-चालीस हजार सिपाही और घोड़े-ऊटो के पांवो से आसमान तक उठ रही है उड-उडकर धूल ।

दिल्ली के बाशिंदे घर बैठे देख रहे है—आसमान लाल हो उठा है । शुकदेव आचार्य की भविष्यवाणी गलत नही । आधी है यह ।

आवी।

अचानक नक्कारे की ताल टूटी। एक-दो चोट मानो पडी नहीं।

अव्दालशाही खास फौज के पिछले सवारो की पात मे घोड़े का एक कदम गोया ठिठक गया। ठिठकना था कि जुलूस के सभीका एक कदम रपटा।

और, तुरत पहली पंक्ति के दो-तीन सिपाही दौड़े। एक आवाज़-सी की—उर्‌रा!

क्या हुआ?

शाह अव्दाली लाल किले की मीनार को देखते-देखते जा रहा था। घोडे की लगाम ढीली पड़ी थी। चौककर शाह ने लगाम खीची। घोडे ने सिर ऊचा कर लिया। हुक्म का इंतजार करने लगा।

शाह ने पूछा—क्या हुआ?

जवाव मे एक सवार एक कटा सर ले आया। सलाम करके वोला—यह जुलूस के सामने तन गया था। रोकना चाहा। मैने सर काट लिया पगले का!

वाये हाथ से उस मुड का झोटा पकडकर शाह ने उसे देखा। चेहरे पर चेचक के दाग। दोनो आखो से अधा। कहा—अधा! और पागल कह रहे हो?

सवार ने कहा—पागल नही होता तो जुलूस रोकने आता!

शाह ने कहा—इस सर को भाले की नोक मे लगा लो। अच्छा ही हुआ। पागल हो चाहे अधा हो, आखिर एक आदमी ने तो मोर्चा लिया!

भाले पर उस सर को लटकाए जुलूस लाल किले मे दाखिल हुआ। इमादुल मुल्क घोडे की पीठ पर चौक उठा।

अधा! सारे चेहरे पर चेचक के दाग!

एक पहर होते-होते दिल्ली की सडको पर नक्कारे वज उठे। पहले ही पहर मे लाल किले मे, सारे हिंदुस्तान मे अव्दालशाही कायम हो गई। वादशाह अव्दाली जव तक रहेगे, तव तक वही मेजबान वादशाह की वादशाही करेगे।

इसी एक पहर मे कुछ अफगानी सिपाहियो ने निकलकर वादल-

पुरा बाजार मे लूट-पाट शुरू कर दी थी। आग भी लगाई थी। एलान होते ही सब बन्द हो गया।

अब्दाली ने कडा हुक्म दिया—जो अफगान सिपाही लूट-पाट, खून-खराबी करेगा, उसका हाथ कटा लिया जाएगा, ज्यादा होगा तो गरदन भी काट दी जाएगी।

खबर फैली, अपने तरकस के तीर से खुद अब्दाली ने कई की नाक फाड डाली।

फरमान निकला—दिल्ली की हर बडी सडक मे अब्दालशाही दफ्तर खुल रहा है। हर घर के लोग अपना नाम वहां दर्ज कराए। यह भी लिखाए कि कितना नजराना दे सकेंगे।

इसी बीच दुरानी सवारो की एक टोली गुजरी। साथ मे नवाब नजीबुद्दौला का एक मनसबदार। वे इमादुल मुल्क की हवेली की तरफ गए।

थोडी ही देर मे उनमे से कुछ लोग लौटे। उनके साथ एक डोली थी। पीछे बैलगाडी पर कुछ बुरकावाली औरते। बादिया। इमादुल मुल्क के घर की औरते ले जाई जा रही थी।

कौन ? किसे ले चले डोली पर ?

गन्ना बेगम को। आदिलशाही सिपाही गन्ना को कैद करके ले गए। साथ मे बादी अमीना। और भी दो बादिया।

डोली बदी-शिविर को ले जाई गई। ये सारे बंदी शाह के साथ अफगानिस्तान जाएगे। उधर इमाद की हवेली खोदी जाने लगी।

दिल्ली के मुहल्ले-मुहल्ले रोज नगाडे पिटने लगे।

"नजराना दाखिल करो। हर मुहल्ले मे दफ्तर खुल गया है। अपना नजराना वहा जमा करो।"

शाह अब्दाली ने कई दिन लाल किले के शाही महल मे आराम किया। दीवाने-आम मे दरबार किया।

नजराना लाओ। दो करोड़ का सोना !

दिल्ली के अमीर-उमरा एक दूसरे का मुह ताकने लगे। दो करोड !

बादशाही खजाने मे जो भी था, ले आया गया। मगर उससे क्या

होना ? वह तो जब शाह मेहमान के दौलतखाने में आए है, तो वह सब तो उनका पावना ही है । शहर के सेठ-साहूकारे, अमीर-उमरा, वनिया-गृहस्थ—तुम सब लाओ । नही तो···। नही तो अब्दाली जबर्दस्ती लेना जानते है ।

अफगान सिपाही दिल्ली के गृहस्थ, वनिये को लूटने लगे । रुपया, सामान, औरत । हिन्दू हो या मुसलमान—रिहाई किसीको नही । हिन्दू औरतो पर झोंक जरा ज्यादा !

तहलका मच गया । जवान औरतों को बांधकर ले चले । माथे का घूघट हट गया है, बुरका फट गया है । जानवर की तरह चीखती जा रही हैं ।

हे भगवान, बचाओ । उसके बाद झप् की आवाज़ । कुएं मे कूद पडी ।

चीख उठी । स्वर्ग जा । बहिश्त जा । उसके साथ आर्तनाद । मां-बहन-स्त्री को काट डाला !

हिन्दू-मुसलमान—सबके घर यही हाल । रास्ते मे लाशे पडी है । हिन्दू की, मुसलमान की । लाल किले के सामने काफिरो के सर का पहाड लगा । एक-एक सर के लिए अशरफ-उल-वजीर का खजांची रुपया दे रहा था ।

दीवाने-आम के सामने दिल्ली के अमीर खडे । सबसे पहले इतिज़ामुद्दौला । सामने तिकाठी । रुपया कहा है, रुपया ? नही तो उसी तिकाठी पर बांधकर कोडे लगाए जाएगे । इतिजामुद्दौला ने सिपहसालार जहानखां के मारफत कहलाया था कि अगर इमादुल-मुल्क से छीनकर वज़ीरी मुझे दी जाए, तो मै दो करोड़ रुपया दूंगा । शाह ने मजूर करके कहा—ले आओ रुपये ।

इतिजामुद्दौला का चेहरा सफेद हो गया—दो करोड रुपया ! रुपये तो उसके अपने पास नही है । उसे तो कहने को दामी एक अंगूठी है हीरे की । और क्या है । जो भी है, सब ले-देकर दो लाख भी नही होगा । उसने कहा—रुपये तो नही है ।

—इंतिजामुद्दौला !

—जी, सच कह रहा हूं गरीबपरवर !

—नही है! —अब्दाली की त्योरियां चढ़ गई ।—मुझसे मजाक !

रुपये नही है ! तेरा बाप वजीर था । तेरे बाप का बाप वजीर था। तीन पुश्त वजीरी की । यह सोने का मुल्क। और रुपया नही है ? बता, कहा है तेरी दौलत ?

उडे हुए चेहरे से इतिजाम ने कहा—खुदा का नाम लेकर कहता हू जहापनाह, मुझे नही मालूम । वह मेरी अम्माजान को मालूम है, शोलापुरी बेगम को ।

—बुलाओ शोलापुरी बेगम को । डोली भेजो ।

कहना था और सवार दौडे ।

शोलापुरी बेगम खडी हुई । अब्दाली ने कहा—गडी दौलत का पता बता दो तो मा-बहन की खातिर पाओगी । नही तो अगुलियों मे सुइया चुभोई जाएंगी ।

शोलापुरी बेहोश होकर गिर पडी । पानी के छीटे दे-देकर होश मे लाया गया । फिर कहा—बताओ ।

बुढिया ने कहा—हवेली मे गडी हुई है एक जगह । मगर मैंने महज सुना ही है बादशाह । जगह मैं बता देती हू।

तीन दिनो तक इंतिजाम की हवेली खोदी जाती रही । ज़मीन कोडकर, छत तोड़कर सोलह लाख रुपये और हीरा-जवाहरात-जडे सोने-चादी के बर्तन निकाले गए । उसके बाद सभी अमीरो की हवेलिया खोदी गईं । इमाद की हवेली खोदकर सब ले लिया । ढेरो दौलत । हवेली की बादियो को खीच-खीचकर निकाला ।

यही नही, शाह के सिपाहियो ने दीवान समसुद्दौला, कोतवाल फौलादखा, राजा नागरमल, जौहरी हीराचद की हवेलियो को भी खोद-खादकर हीरा-मोती निकाल लिया, मुहर-सिक्के निकाल लिए—दौलत का पहाड खडा हो गया ।

शाह हसा । उसे पता था । नादिरशाह ने जब हिन्दुस्तान को लूटा था, तो वह नादिरशाह का नौकर था । उसका हाथ अपने-आप एक कान पर चला गया । एक कान नही था । नादिरशाह ने काट लिया ।

इसी इतिजाम का दादा उस समय वज़ीर था । उसने अब्दाली का कपाल देखकर कहा—यह आदमी एक दिन बडा भारी बादशाह

बनेगा। यह बात नादिर ने सुनी। अब्दाली को बुलवाया और कमरबन्द की छुरी से उसका एक कान काट लिया। कहा—तू जब बादशाह होगा, तो इस कटे कान से तुझे मेरी याद आएगी।

याद आ रही है नादिरशाह की। कोहनूर, तख्तताऊस और मनों सोना-रूपा ले गया था। कोहनूर अब्दाली को मिला। तख्त-ताऊस, सोना-रूपा इस्फहान के खजांचीखाने मे रह गया। लेकिन हिन्दुस्तान की दौलत चुकने की नही। उसका सबूत सामने है! कमरुद्दीन इंतिज़ाम के घर से सोने का शमादान निकला—पूरे जवान जितना लम्बा, वजन सात मन से कम नही। शमादानो की तादाद दो सौ। यही दो सौ शमादान जलाकर दरबार करूगा।

मुगलानी घरमबेटी है। उसने यह सारा अता-पता बताया। उसके कहे उसने इमाद को मुआफी बख्शी, मगर उसकी दौलत नही छोडी।

नजराने के लिए तमाम परवाना भेजा गया। भेजा गया सूरजमल जाट को, अहमदखा बंगाश को, औधिया के नवाब शुजाउद्दौला को।

काफिर सूरजमल नही आया। बंगाश आ रहा है। खबर मिली, सूरजमल के खूखार बेटे जवाहर सिह ने मराठा मनसबदार शमशेरराव के साथ फर्रुखाबाद भेजी गई फौज को बिलकुल काट डाला है। हाथी, हथियार, जग के सारे सरो-सामान लूट लिए है।

अब्दाली ने कहा—दिल्ली का काम-काज फौरन खत्म करो। सूरजमल के क़िले को मटियामेट करके उसे किए की सज़ा देनी ही पडेगी। चलना पड़ेगा।

उसके पहले शाह बादशाह की बेटी हज़रत बेगम से शादी करेगे। मुहम्मदी बेगम से शाहज़ादा तैमूर की शादी होगी।

और उमधा से इमाद का ब्याह कराएंगे। मगर पहले विचार होगा। दीवाने-खास मे अदालत बैठेगी। शाह ने कहा—वालीखा, मुजरिम को और उस तवायफ की बेटी को हाजिर करो।

१७

बदनी सराय मे बदी थी गन्ना । खुद ही गजल बनाती और अपने-आपको सुनाती ।

कितनी गज़लें बनाईं और भूल भी गईं। लिखने का सामान नही था न ! खोजा सरदार आया—ऐ बादी, उठ ।

गन्ना ने उसकी तरफ ताका ।

—उठ । शाह की बुलाहट है ।

गन्ना उठ खडी हुई। पूछा तक नही कि कहा जाना होगा ।

पूछकर क्या लाभ ? मर्जी खुदा की । खेल नसीब का । इज्ज़त इन्सान की !

"तेरी इन्सानियत की इज्ज़त तेरी आखो का पानी नही है । आसू ? शर्म की बात । लोग हसेंगे । दुनिया मे किसीसे डरना मत । उससे भी लोग हसेंगे ।"

एक गजल उसे याद थी । गुनगुना उठी ।

बाहर डोली तैयार थी । सवार हो गई ।

क्या जरूरत है किस्मत से पूछने की कि कहां ले जा रहे हो ?
आदमी एक ही मुकाम पर जाता है । मुकाम दो नही है ।
जो दो मुकाम की कहते है, झूठ कहते है। बहिश्त और दोजख !
डराते है केवल । तू डरना मत ।
किस्मत जहा ले जाए, जा ।
हसते-हसते ही जा । डर मत ।

हसते-हसते ही वह डोली पर चढी । रोना किस बात का गन्ना ? किसलिए रोएगी तू ? बेदर्द दुनिया को कभी आसू बहाकर दर्द की बात कहनी चाहिए ? हसेगी दुनिया । तू बेशरम कहाएगी । शर्म ही इज्ज़त है । इन्सान की इज्जत !

डोली मे गन्ना स्तब्ध-सी, निस्पद-सी बैठी थी। ऐसी कि चिंता, डर, अफसोस—कुछ भी नही था । कहा जा रही है, यह भी नही। किस्मत जहा ले जाए । मन ही मन एक गज़ल गुनगुना रही थी—

बेदर्द दुनिया मे दर्द खोजकर हैरान न हो—
दर्द को शर्म से ढक ।

अपने आंसू को होठों की हंसी में छिपा।

कि डोली ज़मीन पर रख दी गई तो चेत हुआ। पहुंच गई। रूखी आवाज़ मे किसी अफगानी जवान ने कहा—उतरो।

डोली का परदा खोला। एक तातारिन ने उसका हाथ पकड़कर खीचा। उतरो ! गन्ना उतरी। बुरके की जाली से देखा—

सामने दीवाने-खास।

अब्दाली का दरवार लगा है। शाह मसनद पर वैठा है। उसकी पगडी और विशाल शरीर देखकर एक क्षण के लिए उसका कलेजा कांप उठा। फिर उसकी आंखों की भूरी पुतलियां दिखी। चांदी के ढक्कनवाली नाक।

तातारिन ने कोर्निश करके कहा—सामने शाह वैठे हैं। ख्याल नही है? गन्ना ने सलाम किया। अपने को सभाल लिया उसने। "वेशर्म जहान मे डरकर पत्थरो को न हंसा। आंसू रोक, उसमें इज्ज़त वह जाएगी। कोई डर नही। हंस।" मसनद पर शाह। वगल मे दिल्ली के वादशाह। और उधर? शायद शाह का वज़ीर वाली। वगल में रूमाल से हाथ वंधा इमाद। उधर बुरके मे दो औरतें। अदाज़ से समझ गई—मुगलानी वेगम और उमधा। खुली तलवार लिए पहरा दे रही हैं तातारिने। केवल शाह के पीछे चार जवान है।

गन्ना हंसी। तो अदालत वैठी है ! खुदा, तुम्हारी दुनिया का यह क्या तमाशा है ! हाय-हाय !

हठात् भयावना स्वर—तवायफ की वेटी गन्ना ?

तातारिन ने कहा—जी हां मालिके-मुल्क ! वज़ीर इमादुल-मुल्क की वेगम, छगे (छः अगुलवाले) अली कुइली की वेटी।

इमाद ने हाथ वंधी हालत मे ही कहा—मुझसे वहुत बड़ी चूक हो गई है जहांपनाह। मैंने तवायफ की वेटी से व्याह किया है। शहनशाह के सामने मैं खुदा का नाम लेकर इसे तलाक देता हूं। तवायफ की वेटी तवायफ के सिवा और कुछ नही होती।

शाह का हुक्म हुआ—तवायफ की वेटी का वुरका उतार दो।

तातारिन वुरका उतारने जा रही थी। गन्ना ने खुद ही मुह उघार दिया और सलाम करके नजर झुकाए खड़ी रही।

अब्दाली ने कहा—गन्ना वेगम ?

वह चकित हो गया। कहां गई उसकी वह सूरत !

इमाद उससे भी ज्यादा हैरान हुआ। सात दिन मे ऐसी हो गई गन्ना ! सूखा चेहरा। गुलाब का वह रग और रूप फीका हो गया था। आंखो के नीचे स्याही-सी।

शाह ने पूछा—तू गन्ना है ?

गन्ना ने सलाम किया—जहांपनाह ! बादी का ही नाम गन्ना है।

शाह ने हंसकर इमाद से कहा—माशा अल्लाह, गाजीउद्दीन ! इसीके लिए तुमने सैयद वश की बेटी उमधा से शादी नही की। तौबा-तौबा !

—मुझसे कसूर हो गया है बंदापरवर। चूक हो गई है।

—अपने से कबूल करते हो ?

—जी, जहांपनाह। इतना बड़ा कोई कसूर मुझसे जिदगी मे हुआ ही नही।

—तो सबके सामने इस तवायफ की बेटी को तलाक दो।

इमाद ने तलाक के वाक्य कहे।

शाह ने कहा—ऐ तवायफ की बेटी, शादी के समय तुझे देन मुहर मिली थी ?

गन्ना ने अदब से सलाम किया—शाहनशाह, दाम पर बिकने-वाली बांदी को देन मुहर मिलती है ? नही मिली। मगर उसका मुझे कोई गम नही, कोई शिकवा-शिकायत नही।

—तू बादी है ? किसने बेचा था तुझे ? तेरी मां ने ?

—नही मालिके-मुल्क, मैंने आप ही अपनेको बेचा था।

शाह को कौतूहल हुआ। हंसकर पूछा—किस कीमत पर ?

—शाहनशाह, एक फकीर—हज़रत—वे···

इमाद ने कोर्निश की। यानी उसे कुछ कहना है।···

शाह ने कहा—अच्छा रुक जा। इमाद क्या कहता है, कहने दे। कहो। इमाद ने कहा—गरीबपरवर, यह झूठ कह रही है। वह फकीर नही, इसका आशिक था।

—कौन था वह ?

—जी, मतलबी औधिया का नवाब, मुहम्मदशाह के बेटे अहमद-शाह बादशाह का वज़ीर था। उसी वक्त उसने बेईमानी करके एक

गुलाम को जिंदा पीर वादशाह आलमगीर गाज़ी के पोते शाहज़ादा फ़ीरोजमंद का वेटा वताकर वादशाह वनाया था। किस्से के अवू हुसैन जैसा। शाहज़ादा फ़ीरोज़मद के वेटे-वेटी दिल्ली मे है। उसने कहा, फ़ीरोज़मद फकीर होकर मक्का जा रहा था। रास्ते मे उसने चाचा की वेटी से व्याह किया। आदिल उसीका वेटा है।

शाह ने गरदन हिलाई—क्यो री तवायफ की वेटी !

—दुनिया के मालिक ! आपसे झूठ क्यो कहू। सच है। वे मेरे महवूब थे। मगर थे वे फकीर। हजरत। वज़ीरुल मुल्क ने उनकी एक आख फोड़वा दी थी। फोडवाई थी उनकी वनाई एक तसवीर के लिए। उमधा वेगम साहवा ने वह तसवीर फोड़ दी थी। इन्होने फिर उस तसवीर को वना देने को कहा। नही वनाने की वजह से एक आंख फोड़ दी। कहा—एक आख तसवीर वनाने के लिए छोड़ दी है। मुझसे शादी करने के लिए जब वजीर फर्रुखावाद गए, उन्हे साथ लिवा गए थे। जहांपनाह, उसी वक्त उनकी एक आख की भीख मांगते हुए मैंने अपने को वज़ीर के हाथों वेचा था। मगर दाम मुझे नही मिला। मुझसे विक्री का खत लिखाकर वजीर ने उनकी वह आंख भी फोड़ दी—विलकुल अंधा वना दिया।

ज़रा थमकर वोली—मगर मैं फिर भी उनकी वांदी हूं। अपने-को उनकी शादीशुदा नही मानती।

लोग शाह के सामने गन्ना की प्रगल्भता देख दंग रह गए।

शाह ने कहा—इमादुल मुल्क !

—शाहनशाह, मैंने उसकी आख नहीं फोडी। फोड़ी एक सिपाही ने। छावनी के वाहर। मगर उसकी आख फोड़ना अच्छा ही हुआ जहांपनाह ! नहीं तो जिस दिन जुलूस लाल किले जा रहा था, वह आदमी कुछ कर वैठता। उसीने उस दिन जुलूस के सामने सीना तान दिया था। उसीकी गरदन सिपाही काट लाया था।

—वह अधा ! मुंह पर चेचक के दाग ?

—जी गरीबपरवर, वही !

सारी दुनिया जैसे डोल उठी। दीवाने-खास के जवाहरात-जड़े खंभे जैसे विखर जाने लगे। अब्दाली का भयावना मुह खूखार हो उठा। गन्ना लड़खड़ाने लगी। फिर भी उसने जी-जान से खड़ी रहने

की कोशिश की। या खुदा मेहरवान! वांदी को खड़ी रक्खो। हज़रत आदिलशाह को गौरवान्वित करो। इज्ज़त इन्सान की। तुमने उनकी इन्सानियत की पत रक्खी है। अव मुझे कोई भी दु.ख पाने का गम नही। दुःख मेरी ज़िदगी का साथी हो गया है!

शाह ने कहा—तवायफ की वेटी, तेरी सज़ा यह है कि वल्ख मे तवायफगिरी करेगी। और इमादुल मुल्क! तैयार हो जाओ, मुल्ला उमघा से तुम्हारी शादी कराएगा। वाली खां, वुलाओ मुल्ला को।

उवर से वुरकेवाली एक औरत ने झुककर सलाम किया। एक तातारिन ने जाकर उसके पास कान लगाया। लौटकर कहा—शाहन-शाह, उमघा वेगम खिदमत मे कुछ अर्ज कर रही है।

—उमघा वेगम? कहो?

—शाहनशाह, अपनी शादी के मौके पर वेगम आपसे कुछ वख्शीश मांग रही है।

—कहो, क्या माग रही?

—वेगम एक वादी माग रही है। कहती हैं, तवायफ की उस वेटी को मुझे वादी के रूप मे वख्शीश दें। वह वेगम को गाना सुनाएगी, नाचेगी, पावों में मेंहदी रचेगी।

शाह ने कहा—मंजूर। तातारिन, वादी को अपनी मालकिन के पास जाने को कहो। तवायफ की वेटी, मेरे सामने खुदा का नाम लेकर कह कि मैं उमघा वेगम की वादी हूं।

गन्ना इसपर भी हसी। सलाम करके उसने उमघा के सामने घुटने टेक दिए।

शादी के वाद उस दिन रात को गाज़ीउद्दीन की वगल मे वैठ-कर उमघा ने गन्ना को वुलवाया—गीत सुना।

गन्ना ने वीणा उठाई और गाने लगी—

"सुख मेरा मेहमान है, दुख है साथी···

मेहमान आया था। इंतजाम कितना था उसके लिए!

मखमल की चादर विछाई थी। दीवाली जगाई थी।

मेहमान चला गया। रोशनी गुल हो गई। मखमल को उठा दिया।

चैन की सास ली। मेहमान के होते दर्द मे भी दो बूद आंसू नही बहा सकी। हंसना ही पड़ा। बड़ी पीड़ा। मगर मेहमान के सामने रोना नही चाहिए। हंस। हंस। कैसा सुख का दिन है आज!

साथी दु.ख आया। थोड़ा सब्र करो मेरे साथी।

मेहमान को रुखसत कर लूं। गले लगकर ज़मीन पर बैठूगी।

रोऊगी। अभी नहीं। अभी रोना नही।"

उमधा ने रोका—इसे मत गा। दूसरा कुछ गा।

इमाद सोच रहा था। हार के दांव ने रुख पलटा है!

नसीव उसका खुश है, वरना उमधा गन्ना को बांदी क्यों वनाती? गन्ना उसके लिए ज़रूरी है। उसकी यह खूबसूरती, यह गीत न होते तो दुनिया सूनी लगती। वज़ीरी भी फिर से हासिल करनी होगी।

गन्ना ने अब की सुख का गाना शुरू किया—

"आसमान में चांद खिला—वगीचे में गुलाब···लैला के पास मजनू आया। लैला मजनू की छाती में मुह गाड़ रही है। मजनूं उसके गालो पर चुंवन आंक देना चाहता है। उन्हे देखकर चांद कहता है—मुझे मजनूं वना दे। गुलाव की हंसी कहती है—लैला वना दे।"

रात का तीसरा पहर। उमधा को नीद आने लगी। कहा—ऐ बांदी! अब तू जा। मैं सोऊगी।

गन्ना ने सलाम किया। निकल आई। रहने को उसे बांदी-महल मे जगह मिली। अमीनावाले कमरे मे। लडखड़ाती हुई आई। बिस्तर पर बैठ गई। गुनगुनाने लगी—मेरे साथी दुःख, अब आओ। मेरे गले लगकर बैठो। कहो कि गन्ना, अब तुझे छुटकारा मिल गया! मर्ज़ी खुदा की, खेल नसीव का!

१८

अट्ठारह साल के बाद गन्ना को छुटकारा मिला।

साथी होकर भी दु.ख उसे छुटकारा न दिला सका। बांदी को

छुटकारा कहां ? न दीन न दुनिया । न रात न दिन । सुख-दुख, हंसी नही । रोना भी नही ।

शायद उसका खुदा भी नही ।

खुदा की जो मर्जी है, वह है सिर्फ शाहनशाहो के लिए । खुदा की मर्जी से ही दुनिया मे शाहनशाह होता है ।

बाकी के लिए मर्जी होती है बादशाह की । शाहनशाह की । उनके नसीब बादशाह की मर्जी से खेल खेलते हैं ।

बादशाह की मर्जी से गन्ना को धूर्त इमाद की बेगमशाही से नजात मिली । उसीकी मर्जी से वह उमदा की बादी बनी । उमदा के पति ने अपनी बीवी की बादी को भोग की वस्तु बनाया । स्पर्श की आग से जल-जलकर उसकी छाती दागो से मोर के पखने जैसी चित्रित हो गई है ।

गन्ना ने कहा—चांदखा भाई, सुनो ।

मेरी छाती छलनी हो गई है । मेरे मा-बाप दोनो कवि थे । मेरे रूप-गुण से मुझे गन्ना कहते थे । ईख बहुत मीठी होती है न ! इसीलिए । मेरा असली नाम चल नही सका । लोगो ने भी इसीको जारी रखा । मैंने इसी नाम से गजले लिखी । मै सारे हिन्दुस्तान मे सिर्फ गन्ना ही रही । चबा-चबाकर इमाद ने मुझे सीठी बना दिया !

अजमेर से ग्वालियर जाने की राह मे एक सराय मे बैठी, अपने मनसबदार के बेटे, वही उस चाद को सुना रही थी । चाद खा अब भरा-पूरा जवान है । अट्ठारह साल के बाद ।

गन्ना अभी भी युवती है । चौंतीस साल की । लेकिन दुबला शरीर, कुचला हुआ जीवन । जी मे असह्य ज्वाला । ज्वाला नही वेदना । दुनिया ही झूठी हो गई है उसके लिए । इज्जत भी महज कहने की बात । झूठ ।

इज्जत इन्सान की । इससे क्या होता है ? हाय, दस दिन के बादशाह आदिलशाह ! इज्जत रखने मे तुम्हारी क्या गत हुई ! दोनो आखे गई, आखिर जान गई । अब्दालशाही फौज के घोडो की टापो से तुम्हारी देह के टुकड़े-टुकड़े होकर धूल मे मिल गए । कब्र तक नसीब नही हुई । तुम उस अपने बदा-परिच्चय मे ही समाप्त हो गए—दुनिया

के लाखों-लाख, करोड़ो-करोड़ बदो की लाश के साथ। गन्ना ने वह बात तुमसे सीखी थी। उसका क्या हुआ, वह भी देखो! क्या हुआ? वह ताजिन्दगी बादी ही रह गई।

और उधर झूठ की, फरेब की कारसाजी का नतीजा देखो। देखो इमादुल मुल्क गाजीउद्दीन को···। उसकी जिन्दगी की चौपड मे जो भी दांव पड़े, वह सबको उलट-उलटकर चलता रहा। अब्दाली ने पहले उसे वजारत नही दी। वह राजा सूरजमल और औधिया के नवाब शुजा का मुकाबला करने अब्दाली के साथ बल्लभगढ की ओर बढा।

जवाहर सिंह। सूरजमल का बेटा जवाहर सिंह। गन्ना को किले के बाहर पेड तले उस नौजवान साधु की याद आई। सिर मे जटा, कपाल पर तिलक। नंगे बदन मे जवानी और जंगी ताकत की बहार। रुस्तम जैसा। उसने गन्ना को तावीज दी थी। हाथ और कपाल देखकर कहा था—यह तो ब्रजरानी जैसी सुहागिन होगी।

उसकी मा नही समझ सकी, पर वह ताड़ गई, यही जवाहर सिंह है, जो तीर से चिट्ठी फेका करता है।

एक चिट्ठी का शेर उसे याद है—"तुम राधारानी और मैं कन्हैया हू। मेरी मुरली तुम्हारा ही नाम पुकार उठती है। मैं रात मे तुम्हारा सपना देखता हूं। जगा होता हू तो लगता है, दूर पर, तुम्हारी पैंजनी बजती है। झूम-झूम-झूम।"

कितना मीठा लगा था।

मै झूठ नही कहती चाद भाई, उस चिट्ठी ने सच ही मेरे कुमारी मन मे आसावरी की धुन गुजाई थी। लेकिन अपने मन को मैंने उस दिन दबाया था। छिः। देवता-से अकबर आदिल को भूल गई? शर्म हो आई।

हा, वही जवाहर सिंह। लड़ गया अब्दाली से। हिन्दुस्तान मे और किसीने मोर्चा नही लिया, लिया जवाहर सिंह ने।

सयाना इमाद, अपनी नई ब्याहता उमधा और लालसातृप्त करनेवाली इस गन्ना को दिल्ली में छोडकर अब्दाली की फौज के साथ गया।

दो इरादे थे। एक तो यह कि शाह का प्यारा बनेगा, उसे अपनी

किस्मत दिखलाएगा, झूठी-सच्ची-मीठी वाते कहकर शाह को मात कर देगा। और दूसरा कि सूरजमल तथा जवाहर सिंह, अपने दो दुश्मनो को चोट पहुचाएगा। तुम तो थे ही चांद, जवाहर सिंह मुझे लूटने आया था ! वही गुस्सा था।

जवाहर सिंह ने किया मुकावला। चौमुहा गाव के वाहर वीस हजार अव्दालशाही फौज के सामने आ टूटा। उसके कुल दस हज़ार जाट सिपाही। अव्दाली की तरह न तो तोपें थी, न वंदूकें। तो भी डट गया।

सुवह से नौ वजे तक की वह लडाई जिन्होने आखो देखी, मैंने उनसे सुना है चाद—वाप रे ! वह लडाई !

वारह हज़ार लाशे चौमुहा के मैदान मे गिर गईं। तव कही जवाहर सिंह हटा। उसके दो ही तीन हजार सिपाही वच रहे थे। वह हट गया। शाह को पीछा करने की हिम्मत नही पडी भाई। इमादुल मुल्क ने दिल्ली की भारी तोप से वल्लभगढ़ को तोड़ना चाहा था। तोडा भी था। लूट भी वहुत मचाई थी। अव्दाली उमधा वेगम के खसम से वहुत खुश हुआ था। लेकिन जवाहर सिंह या सूरजमल को हाथ नही लगा सका।

क्रुद्ध के मारे मथुरा के हिन्दुओं पर जा झपटा।

होली का दिन था। अव्दाली तूफान-सा मथुरा पर टूटा और खूनी होली खेलने मे मत्त हो गया।

जवान, वच्चे, वूढे—सवको काट डालने का हुक्म दिया। हुक्म दिया—जो जितना सिर ला सको—काफिर के हर सिर के लिए पाच रुपये। और कहा—जो औरत लूटकर लाएगा, वह औरत उसीकी होगी।

और हुक्म दिया—आग लगा दो ! हुक्म दिया—मूरतो को तोड डालो। औरतो मे हिन्दू-मुसलमान का विचार नही। लूट मे भी हिन्दू-मुसलमान नही। गर्दन की वावत मुसलमानों की रिहाई रही, मगर उसका सवूत ज़रूर चाहिए।

शाह के दरवारी तवू के सामने मुडों का पहाड लग गया। हिंदू-देवताओ के पत्थर के मुड रास्तो पर लुढकते फिरने लगे।

कुए औरतो के शव से पट गए। इज्जत के लिए स्त्रियां कुओ मे

कूद मरी। वहुतो ने यमुना मे कूदकर जान दी।

और, जिनका नसीव इस गन्ना जैसा था, वे वेचारी सिपाहियों के हाथो पड़ी। वे उन्हे वांधकर जानवरो-से हांक ले गए। क्या दिन क्या रात, औरतों के गोश्त और खून से खाना-पीना चला।

आसमान उनके चीत्कार से भर गया।

भाई चांद, उस समय इज्जत की वात किसीने नही कही। कही केवल जान की वात। सौ मे शायद दो-चार ने इज्जत का नाम लिया हो। लेकिन जिन्होने 'वचाओ' की चीख-पुकार की थी, वे थे हजारों हजार—उनकी उस चीख मे जान की चिरौरी थी, जिसमे मान और इज्जत की ध्वनि डूव गई थी। जाने कितने जुल्म से मरे, कितनों ने पत्थर पर माथा ठोककर प्राण गंवाया। कितने किसी तरह भागकर यमुना मे डूव मरे।

यमुना के किनारे झोंपड़ा डालकर वैरागी-संन्यासी रहा करते थे। उनमे से एक भी न वचा। सवकी गरदन उतार ली गई। दुरानी सिपाहियो ने जिवह की हुई गाय के माथे से उनका माथा वाध दिया था। राह-वाट लहू से लाल हो गई—यमुना का पानी लाल हो गया। लाशों से यमुना की धार रुक गई।

इसी दरम्यान इमाद अव्दाली की वदागिरी करके अपना काम वना रहा था।

दिल्ली मे गन्ना उमधा और मुगलानी वेगम की दिलवस्तगी कर रही थी। गाकर, नाचकर। तवायफ की वेटी को अव्दाली के हुक्म से तवायफ वनना पड़ा था।

वहुत वार मेरे जी मे आया—इज्जत इन्सान की। ईमान आदमी का। और वह इज्जत ही जव, गई तो ऐ गन्ना, तू मर जा। मर जा।

कितने तो उपाय है मरने के। जहर खा। छत पर से कूद जा। पत्थर पर सर ठोक ले। माथे पर लोहे का डडा लगा। यमुना के किनारे जाकर नदी मे कूद जा। या फिर अपनी नाचवाली पोशाक में आग लगा ले।

चांद, गन्ना से वह न हो सका।

क्यो नही हो सका, जानते हो? मौत का डर भी कहो। तो भी आदमी की जव वेइज्जती होती है, तो वह मर सकता है। मर सकती

थी गन्ना ।

लेकिन मेरे जी मे वदला लेने की सूझी । शराव पीने से ही यह ख्याल हो आता । कलेजे मे वडी जलन होती थी भाई । उस जलन में नशे मे चूर गन्ना वोला करती, जो गन्ना दिल मे मुह छिपाए रहती थी, वह कहती थी—रो मत गन्ना । मत रो । इमाद की वातों मे आकर वादीगिरी का खत लिख करके अपनी वेइज्जती तूने आप ही की है । अव सूद समेत उसकी कीमत अदा कर । इमाद के कलेजे मे आग लगा दे । घमडी उमधा से वदला चुका । अव्दाली एक दिन कावुल चला जाएगा । उस दिन यह मुखौटा उतारकर इमाद नये जोश से फन फैलाएगा । तू सपेरिन वनकर उसे वस मे करना । लगा लेना उसे गले से और उमधा पर चोट करना । वह जला करेगी । अमीना मुझे सलाह देती रहती थी । वह मुझे शराव पिलाती थी । जव भी जी खराव होता, कहती, लो, पी लो । दुनिया मे हारकर क्यो जाओगी वेगम ! जीत जाओ । वदला लो ।

गन्ना कहती—एक प्याला और । खूव कड़ी ।

दिमाग झनझना उठता । गन्ना कहती—हां । ठीक कह रही है ।

भाई चादखा, गन्ना तुम्हे सव सुना रही है । कुछ भी नही छिपाएगी । वह वीच-वीच मे जवाहर सिह के वारे मे सोचती थी ।

हिंदुस्तान-भर मे एक उसीने अव्दाली से लोहा लिया । मरदाना है । शावाश ! इमाद को यही सजा दे सकेगा ! उसकी याद आती । अव्दाली के जाने के वाद वही सवक सिखा सकेगा ।

गन्ना का दिल गाता—गन्ना, तेरे कलेजे का लहू पिसी हिना के रग-सा टकटक लाल हो उठा है । किसके तलवे को चूमकर रगाएगी ?

हठात् गन्ना थम गई । झरोखे से आसमान की ओर देखकर गुनगुना उठी—

हाय, मेरी तरह जिगर खून तेरा मुद्दत से ।
अय हिना, किसकी तुझे ख्वाहिश पावोसी की है ।

चांदखा, उस वात का जवाव मुझे आज मिला । क्या है वह जवाव, जानते हो ? औरत का कलेजा भी हिना के रस के प्याले-सा लाल टकटक ही होता है । लेकिन औरत का नसीव ही ऐसा होता है कि

वह एक को चाहे जितना ही क्यो न ढाल देना चाहे, उसकी इच्छा पूरी नही होती। जाने कितने उसके प्याले मे जबरदस्ती पांव डुबाकर चले जाते है। कोई-कोई मर के जी जाती है। मगर कितनी ?

गन्ना हंसी।

गन्ना अगर पहले ही मरती, तो मर सकती थी। जिस प्याले मे उसने आदिल की पाबोसी करनी चाही थी, उस प्याले को अगर वह आदिल की जान और आब बचाने के लिए इमाद के पैरो नही ढाल देती, अकबर के साथ ही मर जाती, तो वह जी जाती। लेकिन···

खैर। उससे पहले जो हुआ था, वही बताऊं।

अब्दाली को आखिर लौटना पडा। मथुरा मे उसने वह जो खून की होली खेली, वही उसके लिए जहर हो गई।

यमुना का पानी आदमी के लहू से लाल हो गया था—लाशो से पानी की धारा अटक गई थी। हिंदुस्तान मे गरमी के दिन आ रहे थे। सूरज की गर्मी से वह लाल पानी पीला हो गया। जहरीला हो गया। उस पानी से अफगान सिपाहियों मे बीमारी फैली। हैजा। चीटी-से मरने लगे। इसकी दवा इमली। इमली का भाव अस्सी रुपया हो गया। फौज ने कहा—अब हम नहीं रहेगे। लौटेगे।

अब्दाली आदमी का सिर ले सकता है, आग लगा सकता है, पत्थर के पुतलो को तोड़ सकता है, गन्ना बेगम जैसी औरत को बांदी बना सकता है—हजरत बेगम जैसी बादशाह की बेटी को छीनकर जबरदस्ती शादी कर सकता है—लेकिन चांदखां, जब काल खुद आकर सामने खड़ा हो जाता है, तो वह भिखमंगे जैसा ही असहाय है। उसके डर से उसे भागना पडता है। काल को तोप से उड़ाया नही जा सकता। तलवार से काटा नही जा सकता। तीर से वेधा नही जा सकता। वह हा-हा करके आगे बढ़ आता है। सब निगल जाता है। सो अब्दाली भागा। नही तो नागा सन्यासियो से बदला लिए बिना वह हिंदुस्तान नही छोडता। नागाओ ने डटकर उससे मोर्चा लिया था। उनके देवताओ को वह हाथ नही लगा सका।

हिंदुस्तान की बादशाही को फकीरशाही करके दुरानी बादशाह चला गया। चला गया हिन्दुस्तान को कब्रिस्तान करके।

अट्ठाईस हजार हाथी-घोडे, ऊंट, बैलगाडी पर लादकर हिन्दुस्तान की दौलत ले गया—जिसे कोई तीस करोड की कहते है, कोई और भी ज्यादा। और, उसके सिपाहियो ने जो लूटा, उसे ले गए अस्सी हजार घोडे। उन घोड़ो की पूंछ से वाधकर हज़ारों-हज़ार औरतों को ले गया। शाह ने खुद बादशाही हरम की दो वेटियों को लिया था, उनके साथ और सोलह वेगमे थी, चार सौ वादियां। सिपाहियों मे किसीने दो लिया, किसीने तीन। किसीने चार। जाते-जाते राह मे जो मरी, उन्हे रास्ते के किनारे डाल दिया। कुछ रात के अधेरे मे भाग निकली। जो भागी, वे वन-जगल मे मरी, पानी मे डूबकर मरी, भूख से मरी, जानवरो ने खाया, डकैत-बदमाश के पल्ले पड गई। चादखा, सरहिंद-लाहोर से अटक के घाट तक रास्ते के किनारे-किनारे हड्डिया ही नजर आएंगी, हड्डी और हड्डी, खोपड़ी और खोपडी। और मिलेंगे बाल। औरतो के लम्बे बाल माटी से लिपटे पडे है। मरकर उन्हे छुटकारा मिला। गन्ना वादी वनकर रह गई। हिन्दुस्तान मे रहकर ऐसा नसीव तो और किसीका नही हुआ। हुआ एक गन्ना वेगम का। उसका खत दिखाकर उमघा उसे चमकाती, नचाती। उससे पाव तक दववाती। लेकिन समय ने पलटा खाया। अब्दाली कावुल चला गया। इमाद दिल्ली लौटा। वह भी लूट का माल लेकर आया। सिर ऊचा किए आया, पगडी का हीरा लगा पखना उडाते हुए। इमाद जीत गया। अब्दाली ने फिर उसे वज़ीर वना दिया।

गजव! इमाद को नसीव शिकस्त नही दे सका। वही नसीव को लेकर खेलता है।

उस दिन इमाद ने हवेली मे इनाम-इकराम वाटे। फाटक पर नौवत बजी।

मुझे वुलाया—गन्ना!

अमीना ने इशारा किया—वेगम, वक्त आ गया!

मै सोच रही थी कि अमीना का कहा नही मानूगी। जहर नही है। मै जाऊगी और इमाद की कमर के छुरे से मर जाऊगी। कह जाऊगी—मर्जी खुदा की, खेल नसीव का, इज्जत इन्सान की। अपनी इज्जत लिए मैं चली!

अमीना ने शराव का प्याला लाकर दिया—पी लो ।

शराव पीकर गन्ना और ही गन्ना हो गई । इमाद के सामने जाकर खड़ी हो गई ।

इमाद ने गले से मोती की माला खोलकर कहा—सारी वातो को भूल जाओ गन्ना ! मैंने जो भी किया, अब्दाली के डर से किया । उपाय नही था । लो, इनाम लो ।

मैंने कहा—नही । नही लूंगी वह ।

इमाद मौज मे था । बोला—तब क्या लोगी ?

गरदन हिलाकर कहा—तुम्हारा कलेजा । अपने कलेजे मे मुझे खीच लो और लो उमधा के सामने !

वजीर अवाक् होकर मुझे ताकता रहा ।

मै झट शीरा का प्याला ले आई—लो, पियो ।

—शराव ?

—उहू । शीरा ।

—कह क्या रही हो ?

—अरे प्यारे, हीरा वाई के हाथ की शीरा आलमगीर गाजी ने फेक नही दी थी । पियो । पीकर इस बात का सबूत दो कि तुमने जो भी किया था, अब्दाली के डर से किया था । दिल से नही । नही तो मैं समझूगी···

इमाद लोभी था । शराव-शीरा पर उसे लोभ था । उसने होठ से लगाकर जरा इतजार भी नही किया कि हीरावाई की तरह मै प्याला खीच लू—कहू—नही, पीना नही है ! मै परख रही थी । उसने एक घूट मे प्याला खत्म करके मुझे छाती में खीच लिया था !

वडा प्यार किया । मैने वाधा नही दी । आत्म-समर्पण कर दिया था । तवायफ की वेटी तवायफ की तरह या उन औरतो की तरह, जिन्हे दुरानी सिपाही ले गए । उनमे से बहुतो ने रो-रोकर दिन गुजारे । मगर चाद, ज्यादातर औरते सब कुछ भूल गई, खाया-पिया, हसी, गाया । और, कुछ ने शायद मेरी तरह उनकी गिरस्ती मे आग भी लगाई, जलाकर राख भी किया । गन्ना ने भी वही करना चाहा था । उमधा से, इमाद से वदला लेना चाहा था । उमधा से तो उसी दिन वदला चुक गया । इमाद ने प्याले पर प्याला शराव पी । रात

मौज से गाना सुना। मैने सुनाया। उमधा के सामने मुझे छाती से लगाकर कहा—अरी ओ सैयद की बेटी, देख! अब्दाली अब अटक पार कर गया। अब ?

उमधा लेकिन सैयद की बेटी थी। तर्रार थी। कुछ नही बोली। उसकी आखे दप-दप जलने लगी। वह कमरे से बाहर चली गई। फिर नही लौटी। मेरा जी कैसा तो हो गया। लगा, मैं हार गई। अमीना ने आकर कहा—उमधा बेगम अपने कमरे मे औंधी पड़ी रो रही है। अब खुश हुई।—लगा, मै जीत गई।

इमाद से भी बदला चुकाया था। मुह से दिखाने लगी उसे प्यार और देने लगी सलाह। अब्दाली ने उसके बारे मे कहा था—इमाद बडा सयाना मामलेबाज़ है! वह कभी किसीकी सलाह नही लेता, सीधी राह नही चलता, सच्ची बात नही बोलता। और ऐसा काम ही नही करता, जो कि सीधा हो, सच्चा हो।

मीरबख्शी सिपहसालार नजीबुद्दौला इमाद का दुश्मन था। बादशाह आलमगीर उसे पसद नही करता। सारे दरबार मे इमाद एक प्रकार से अकेला था। मैं इमाद की सलाहकार बनी।

अब्दाली की छाप बिलकुल पोछ देने की इच्छा थी उसकी। मैने उस इच्छा को उकसाया। कहा—हां, पोंछ डालो बिलकुल।

पोछ डालने से उमधा धूल मे लोटेगी। वह मुगलानी की बेटी थी। नफरत से मुझको तवायफ की बेटी कहती थी। मीर मन्नू की लडकी। उसकी मा तवायफ जरूर नही थी, पर उसके गुनाह और पाप का अत नही था। सारे हिन्दुस्तान मे चर्चा थी, निन्दा होती थी। नजीबुद्दौला अब्दाली का आदमी था, बादशाह अब्दाली के रिश्तेदार थे। मैने सलाह दी—इन दोनो का काम तमाम कर दो।

मै इमाद को सलाह देती थी, मुझे सलाह देती थी अमीना। मेरी सलाह पर इमाद ने मराठो को बुलाया—नजीबुद्दौला को हटाओ!

मराठे आए। दिल्ली मे फिर लडाई शुरू हो गई। लेकिन···

गन्ना ने चुपचाप आकाश की ओर देखकर एक लबा निश्वास छोडा। फिर हंसकर बोली—लेकिन मुझे क्या पता था चादखां, कि अपनी मौत का फदा मैं खुद ही डाल रही हू। उस फदे मे मै ही फंसूगी!

नसीब का ही खेल कहो, वह बात झूठ नही है। आज मैं वही सोचती हू। सोचती हूं कि मैंने वह काम क्यो किया ?

सावन का महीना था। दिल्ली मे बारिश नही उतरी थी। मट्टी जल गई थी। आसमान मे धूल उड रही थी। पत्थर चटख गए थे। मराठे खिजिराबाद आ पहुंचे थे। नवाब नजीबुद्दौला और बादशाह आलमगीर इमाद के खिलाफ आपस मे एक हो गए। इमाद दिल्ली मे अकेला था उस समय। मराठो के पहुच जाने पर वह वजीरुल मुल्क से मालिक-उल-मुल्क बन बैठेगा। बादशाह का बादशाह। नजीब, बादशाह—दोनो की धाक जाएगी। और उसीके साथ उमघा की हेकडी माटी मे मिल जाएगी।

अमीना बड़ी होशियार थी। वज़ीरो की दो पुश्त तक उनके यहां बादी रही। उसे आखिरी जिल्लत उठानी पड़ी, मगर उसने सीखा बहुत, समझा बहुत। उसने कहा—गन्ना बेगम, और दूर तक नज़र दौडाओ। देखो, दिल्ली इमाद के हाथों आएगी। मराठे इसका भार इमाद को देगे। वे लपकेंगे लाहौर तक। लाहौर से शाह के बेटे तैमूर और जहान खा को खेद देगे। आखिर अब्दाली फिर आएगा और तब इमाद की खैर नही रहेगी। देख लेना।

क्या बताऊं चाद, नशे मे मैंने सच ही वैसा देखा। बाहर उस समय तोपे दग रही थी। नजीबुद्दौला और बारगीरो मे छिड गई थी। इमाद नजीब के खिलाफ दल मे जा मिला था। उसे खौफ था कि नजीब मराठों के पहुचने से पहले ही उसका काम तमाम कर देगा।

उमघा अपने कमरे मे चुपचाप बैठी थी। क्या करती ?

कि बाहर हल्ला हुआ। वज़ीर के ठीक बगीचे मे। लगा, बिलकुल फाटक पर।

क्या बात है ? अमीना दौडी। हाफती हुई आकर बोली—नजीब खा ने सिपाहियो को वजीर की हवेली लूट लेने का हुक्म दे दिया है। कह दिया—वजीर को कत्ल कर दो। न मिले, तो हवेली लूट लो। हरम की औरतो को खीचकर सडक पर लाओ। बुरका उतार दो, बेइज्ज़त करो। सबसे पहले सैयद की बेटी उमघा को।

उमघा पर नजीब को गुस्सा क्यो था, जानते हो ? इसलिए कि

उमघा के चलते ही इमाद अब्दाली के गुस्से से बच गया। वज़ीरी उसकी छिन जाने पर भी फिर मिल गई। और, इमाद भागा तो भागा। उसकी इज्जत तो वेगमों के बुरके मे है। उसीको नोच डालो।

मराठे आ रहे है। आ ही पहुंचे लगभग शाहजहानावाद। नजीव दिल्ली छोड़कर भाग जाएगा। भागने के पहले बदला लेता जाएगा।

इमाद के पास फौज नही थी। छः सौ के करीब सिपाही थे। वे क्या करते। नजीव के तीन हजार सिपाही थे। मनसवदार था कुतुवशाह। कुतुवशाह मनसवदार ही नही, मुल्ला भी था। लोग कहते, वह जिंदा पीर का खादिम है। हवेली के अहाते मे कुतुवशाह ने ललकारा—वजीर की वेगम और वांदियो को खीच लाओ। तुम तो सिपाही हो चांदखा! लड़ते हो। तुम्हे पता है कि ऐसा हुक्म होने से सिपाही क्या करते हैं। दरवाज़ा टूट गया—भूखे भेडिये की तरह वे टूट पड़े। लूट शुरु हो गई। उसके साथ···

अजीव हंसी हंसकर गन्ना वोली—वांदियां महल मे चीख उठी। वैसी ही चीख, जैसी दिल्ली की लूट के समय अब्दाली की छावनी मे उठती थी। गन्ना खडी सोच रही थी! एकाएक उसके जी मे आया—चलकर देखो तो सही कि उमघा वेगम क्या करती है?

मैंने देखा सैयद की वेटी का मुह कागज जैसा सफेद हो गया है। उसके हाथ मे छुरा है।

मैंने पूछा—क्या कीजिएगा?

वह वोली—अपने कलेजे मे भोंककर मर जाऊगी।

—मर सकेगी?

उसने मेरी तरफ ताका। मैंने कहा, वेगम! वह कर सकती तो अब तक कर चुकी होती। अव तक नही कर सकी, तो अव नही कर सकेगी। हज़रत वेगम वगैरह भी चिल्लाती थी—अब्दाली से शादी नही करूगी। ज़हर खाकर मर जाऊगी। लेकिन नही मर सकी।

क्या हुआ, जानते हो चांद? वह काप उठी। छुरा हाथ से छूटकर गिर पडा। दोनो हाथो से मुह ढककर वह फफक उठी।

अमीना दौडी आई—कुतुवशाह आ रहा है। वेगम को खोज रहा है। अव की उमघा पुक्का फाडकर रो उठी छोटे वच्चो की नाई—मुझे बचाओ, मेरी इज्जत···

मुझे जाने क्या हो गया ! क्या हो गया, मैं नही कह सकती । मैंने जो किया, वह क्यो किया, किसने करने को कहा—यह मैं जानती हूं । मैंने खुदा का हुक्म सुना । अकबर आदिलशाह की याद आई—अकेले ही अब्दालशाही फौज को रोकने गया था ! लमहे में उसकी गरदन गई—शरीर के टुकड़े-टुकडे हो गए !

मैने उमधा से कहा—डरो मत ! जल्दी उस कमरे मे जाकर अपने हीरे-जवाहरात उतार दो । दामी ओढनी उतार फेको । बालो को विखेर दो । लगे कि तुम उमघा नही, उसकी बादी हो । मैं उमघा वन जाती हूं । जाओ ! —मैंने किया क्या कि उसकी ओढनी ओढ़कर दरवाज़े पर खड़ी हो गई। आदिल की दी हुई वह तावीज मैंने उमघा को पहना दी । मैं जानती थी, इसी तावीज की वजह से अब्दाली के सिपाही मुझे वे-आबरू नही कर सके थे ।

अमीना तो अवाक् खड़ी रही । कुछ कहा चाहती थी । रोक दिया ।

पावो की आहट नजदीक आई। मैने बुरके का परदा गिरा दिया। उमघा का वह छुरा भी हाथ मे उठा लिया ।

सीढी से ऊपर आते हुए कुतुबशाह ने कहा—रुक जाओ, वरना···
बुरके का परदा उठाकर छुरा दिखाती हुई मै बोली—इस छुरे से तुम्हे खत्म कर दूगी । वह न होगा, तो खुद मर जाऊगी । ठहरो···

चाद, औरत का रूप आसमान के चाद से भी सुदर होता है। शीरा के नशे से भी ज्यादा सुन्दर !

मेरी शकल देखकर कुतुबशाह ठिठक गया । मैंने पूछा—आप कुतुबशाह मनसबदार है ?

—हा ।

—मैं वज़ीर की वेगम उमघा हूं । क्या चाहते है आप ?

—क्या चाहता हूं ? —वह हसा—दुश्मन का किला जीतकर सिपाही-मनसवदार जो चाहते है । सोना-रूपा, हीरे-जवाहरात··· वेगम । वजीर शैतान है । काफिरों से हाथ मिलाकर उसने दिल्ली को वेच दिया । सिपाहियो को वेतन नही मिला । इज्जत जा रही है—उसका वदला वसूल कर तब जाएगे ।

—सुनो मनसवदार—। हीरे-जवाहरात जो भी लेना हो, ले लो।

मगर हरम की औरतों की बेइज्जती न करो। सिपाहियों से कहो, उन सबको छोड़ दें…उसके बदले बल्कि…

—बल्कि ?

—मेरी इज्जत तो तुम्हें सूरत दिखाकर जा ही चुकी है—बची-खुची जो है, मैं वह भी दे दूंगी। खुदा के नाम से कहो—मेरी बांदियों को छोड़ दोगे ?

कुतुबशाह को काठ मार गया।

मैंने उस दिन उमदा को बचा लिया चांदरा। मेरी बात छोटी। अकबर आदिल की एक आशा के बदले अपने को बेचने के साथ-साथ मैंने इज्जत भी बेची थी।—गन्ना हंसी—उसका दाम नहीं मिला, लेकिन इस बार कीमत मिली। उमदा बच गई। बांदियों पर भी जोर-जुलम नहीं हुआ। सबके साथ कुतुब ने ही मुझे बाहर निकाल दिया था।

इमादुल मुल्क के हरम की औरतें दिल्ली के रास्ते पर खड़ी थीं। सबके चेहरे पर बुरका पड़ा था—था नहीं एक मेरे चेहरे पर। मैं कैसी तो हो गई थी। मेरे लिए हया-शर्म, इज्जत-दौलत, किसी भी चीज की कोई कीमत नहीं रह गई थी। बहुत ही छोटी हो गई थी वह। मैं इन सबसे बहुत ऊंचा उठ गई थी। मुझे ख्याल भी नहीं था चांद—मैंने अपनी पोशाक, बाल, आंखों का काजल, सुरमा—सब कुछ के रंग को पोंछकर गोया अपने को बदरंग कर दिया था।

इवादुल्ला खां कश्मीरी का भाई सर्फुद्दीन मुहम्मद हमें रास्ते पर से नागरमल की खाली हवेली में ले गया। नागरमल बादशाह का दीवाने-खालसा था। वह भाग गया था। हवेली खाली पड़ी थी।

उस रोज रास्ते पर मुझे अपनी जिंदगी का पूरा दाम मिला था। हमें एक पेड़ की छांह में बिठलाकर सर्फुद्दीन ने डोली और बैलगाड़ी के लिए आदमी भेजा। वजीरी हरम की औरतों की जो बेइज्जती हुई, सो तो हुई ही, अब ऊपर से उन्हें रास्ते से पैदल क्यों ले जाया जाए। हम सावन की उस दोपहरी में पेड़ की छाया तले बैठीं। दिल्ली की घाट-बाट में, मैदानों में तब तक भी तांबा-पीतल-कांसे के बर्तन पड़े

थे। पेडो से लगे थे फटे कपडो के टुकडे। सोने-चादी के टुकड़े भी जहां-तहां!

मैं उगली से माटी खोद रही थी कि एक अंगूठी मिल गई! उठाकर उसे देखा। तांबा, पीतल या कि चादी की होगी। बच्चो जैसे मैं नाहक ही उसे घिसने लगी।

एकाएक चौकी मैं। अगूठी मे नग नही था। सील अगूठी। उसपर मीना किया हुआ कुछ लिखा था। भली तरह से घिसा। पढ़ा। मेरी आखो के आगे दुनिया उजागर हो उठी। वह कैसी रोशनी, सो तुमसे क्या वताऊं चांद! मैंने अगूठी पहन ली। आंखो मे आसू भर आए। भरकर गालों से बहने लगे। मेरे मन से अपने-आप निकल आया, 'खुदा मेहरबान!' उसके बाद की मुझे कुछ याद नही। मेरा होश जाता रहा। लगा, मैं रौशन दुनिया में खो गई। होश जब आया, मै राजा नागरमल की हवेली मे लेटी थी। अमीना हवा कर रही थी बैठी।

देखो, यही अगूठी है चाद। इसे मै अठारह साल से छिपाए रही—आते वक्त पहनी है।—गन्ना बेगम ने उंगली बढ़ा दी।

सोने की अगूठी। मीना की हुई। ऊपर लिखा था—अकवर आदिलशाह। अब्दालशाही सवारो के घोडो की टापो से अकवर आदिल के शरीर का चिथडा उड गया था। किसी कदर यह अगूठी यहा माटी के नीचे गन्ना के इंतजार मे पड़ी थी। कैसे, यह तो वही कह सकते हैं, जो दीन-दुनिया, सभी अघटन घटनाओ के मालिक है! आदिलशाह की दी हुई तावीज उमधा को देकर मै कंगाल हो गई थी। यह अंगूठी पाकर मै अमीर हो गई।

उसके बाद चांदखां···

उमधा पर मुझे कोई गुस्सा न रहा। इमाद पर? नही, उसपर भी नही। इमाद शैतान है। उसमे ईमान नही, रहम नही, दर्द नही, नमकहलाली नही—कुछ भी नहीं। है सिर्फ वह खुद और उसकी भूख। और उसकी वह भूख कभी मरती नही।

कहा तो मैंने, उसकी भूख की आग मे मै जल-झुलस गई। छाती छलनी हो गई। नौजवानी मे औरत की भूख जवानों को होती है।

जवान औरत को भी होती है। औरत-मर्द की तमाम जिंदगी वह रहती है शायद। लेकिन उनकी वह भूख केवल लहू-मास की नही, प्रेम के मधु की भी होती है। लेकिन इमाद ने वह नही चाहा। किसीसे नही।

मेरे जीवन के मधु को उसने कैसे चूसना चाहा है मालूम है? तलवार की नोक से जवानी को लहू-लुहान करके उस लहू लगी तलवार की नोक को चूसा है। वह मेरा दुश्मन रहा, चालबाज़ी करके मुझपर नालिश ही कर गया केवल!

मेरी ज़िंदगी, चादखा, आग मे ही जलती रही। जवानी की मेरी मधु की भूख बनी ही रही। अपने प्यार के नौजवान की मैं कामना ही करती रह गई, उसे पाया नही।

इमाद की तो जानते हो। सारा हिंदुस्तान जानता है। हार की बाज़ी पलटनेवाली उसकी करामाते खत्म हो गई।

नजीब खां भागा। मराठे आए। अमीना का कहा एक-एक अक्षर फला। मराठा फौज लेकर रघुनाथ जी पेशवा लाहौर तक जा धमका। तैमूरशाह और जहान खा को खदेड़कर अटक के पार भगा दिया।

मराठो की तावेदारी मे इमाद बादशाह का भी मालिक बन बैठा। उस समय उसने जो ज़ुल्म मुझपर ढाया, वह कहने का नही।

कभी-कभी जी मे आया, कवख्त को जहर खिलाकर मार डालू। या खुद ही जहर खा के मर जाऊ। मगर उमधा बेगम रोती थी। उसीके लिए वैसा नही कर सकी। और अकबर आदिल की पाई हुई अगूठी के लिए नही कर सकी। वह अगूठी मुझसे कहती थी—गन्ना, बरदाश्त कर लो। पी जाओ।

बहुत-बहुत सलाम हज़रत आदिल को—वे मेरे गुरु हैं। कभी मैंने उन्हे अपना प्रेमी माना था। लेकिन चाद, सच पूछो तो मेरी तकदीर अच्छी थी कि मैने जिंदगी मे उन्हें पाया नही। नही तो मै और तरह से जलती! जो आदमी सिर्फ खुदा को चाहता है, उसके लिए इज्जत और धर्म ही बडा होता है। वह आदमी को नही चाहता। स्त्री को नही, बाल-बच्चों को नही। आदिल मुझे नही चाहता। इमाद ने तलवार भोक-भोककर मेरी जवानी, मेरे रूप का लहू चूसा, आदिल खुदा के दरबार मे मेरी कुरबानी करता।

गन्ना जरा देर चुप रही। फिर कहा—उफ, कैसा ताज्जुब। बिना कहे तुम नही समझोगे। मराठों ने लाहौर दखल किया, दिल्ली से नजीब खा को निकाल बाहर किया—यह सब सुनकर अब्दाली फिर काबुल से रवाना हुआ। अब की और जबरदस्त तैयारी। उधर मराठे भी तैयार होने लगे।

शैतान इमाद ने देखा, यह तो मुसीबत हुई। अपने बूढ़े और लागर बादशाह आलमगीर को फिरोजशाह कोटला मे ले जाकर कत्ल कर दिया। इसलिए कि बादशाह अब्दाली के रिश्तेदार हैं। उसके बाद इतिजामुद्दौला का खून किया। और तब अपना हरम और चार-पाच हजार सिपाही लेकर निकल पड़ा। कहा ? फर्रुखाबाद। वहा उसने जाट सूरजमल से दोस्ती गाठी।

धूर्त हुए बिना कोई ऐसा नही कर सकता। पिछली बार अब्दाली ने बल्लभगढ को बरबाद कर दिया था। उस वक्त उसका दाहिना हाथ था इमाद। उसी खुशी मे अब्दाली ने उसे फिर से वजीर बनाया था।

अब रहा सूरजमल के इलाके मे। इस बार उसीकी तरफ से लड़ेगा। सूरजमल से कहा—आप चुपचाप बैठे रहिए। मराठे और अफगान लडे। दोनो बरबाद हो। फिर हम और आप हिंदुस्तान के मालिक होगे।

इधर जवाहर सिंह, वही जवाहर सिंह जो मेरे लिए पागल हुआ था—निशानी भेजने लगा। मैंने दो-चार बार जवाब भी दिया, गजल लिखकर भी भेजी। लेकिन चादखा, यह अगूठी मुझे खबरदार करने लगी। "अपने पापो का फल इमाद भोगेगा। तुम गन्ना बेगम, तुम वैसा मत करना। जिंदगी मे जो तकलीफे तुमने उठाईं, उसका इनाम खुदा तुम्हे देंगे।"

मुझसे और न बना। मैं खुद चुप हो गई! जवाहर सिंह शेर-सा खूखार था, मगर उसका बाप सूरजमल था शेरों का शेर। वह जिंदा था। उसने इमाद से मिलकर लडने की ठानी थी। उसके डर से जवाहर कुछ कर नही पाया। चुप रह गया।

उधर पानीपत मे अब्दाली से मराठो की लडाई छिड गई। हिंदुस्तान के तमाम मुसलमानो ने—यहा तक कि नवाब शुजाउद्दौला ने भी अब्दाली का साथ दिया। लेकिन मराठो का साथ किसी हिंदू ने नही दिया। न राजपूत राजों ने, न जाट सूरजमल ने।

फिर भी वह लडाई ऐसी घमासान हुई, जैसी कि हिन्दुस्तान मे कभी हुई नही थी। मराठे बिलकुल तबाह हो गए। अब्दाली जीता। लेकिन वह जीत भी हार के ही बराबर हुई। सारी जिन्दगी के लिए जख्म हो गया।

लडाई खत्म हुई कि इमाद निकला। धूर्त! वह जाट सूरजमल से हाथ मिलाकर ताक मे था। अब्दाली लौटे कि कूद पडे। अब्दाली भी चालाक था। वह उसीको फिर वज़ीरी सौप गया।

और वह एक दिन! मेरी ज़िन्दगी की वह दुर्योग की रात!

इमाद जरा तेज शराब पीकर बेहोश हो गया था। मैं उसका छुरा निकाल लेने के लिए गई। लेकिन अंगूठी ने मुझसे कहा—नही, गन्ना, नही। पी जाओ।

मैंने छुरे को फेक दिया। लेकिन मन ही मन खुदा से मैंने नालिश की—ऐ खुदा, तुम्हारे पास मेरी एक दरखास्त है। यह दरखास्त दुनिया की तमाम औरतो की तरफ से है। मेरे हजरत पीर ने कहा है—मर्ज़ी खुदा की, खेल नसीब का! लेकिन ऐ खुदा, तुम्हारी मर्ज़ी ऐसी क्यो है? क्यो नसीब सारी दुनिया की औरतो के साथ खेलता है? मर्द अपनी ताकत से उसे लूट लेता है, छीन लेता है—अपनी तलवार की नोक से मधु के बदले उसकी जिन्दगी को लहू-लुहान करके उसका खून पीता है। क्यो?

ऐ मालिक, कान लगाकर सुनो, वे रो रही है। अपने रोने मे गन्ना ने उसे जुबान दिया है।

एक बार और। और एक बार चादखा। जवाहर से मेरे इशारे चले थे। उसके पाच साल बाद। खुदा की मर्ज़ी से इमाद की शैतानी का जादू टूट गया था। वह दिवालिया हो गया था।

बादशाह आलमगीर का बडा लडका शाहजादा अली गौहर बादशाह बना—शाह आलम। अपने बाप का खून करनेवाले को वह माफ नही कर सका। इमाद ने उसे हटाने की कोशिशो मे कुछ उठा नही रखा। दिल्ली घुसकर मसनद पर बैठने ही नही दिया। मगर इमाद की जीती बाज़ी हार मे बदलने लगी थी। फिरगियो

और मराठों की मदद से आखिर शाह आलम उजडी बादशाही की गद्दी पर बैठा । इमाद को भागना पडा । भागकर वही भरतपुर पहुचा । लेकिन जाट राजा सूरजमल मर चुका था । उसका बेटा वही पगला जवाहर राजा था ।

जवाहर सिंह ने उसे पनाह दी । पनाह देने के पीछे उसका एक इरादा था । इरादा था कि वह गन्ना को छीन लेगा ।

अब की मैंने हामी भरी थी चादखां । इमाद यह ताड़ गया था । उसने मुझसे कहा—तू बेईमान रडी है। नौजवान जवाहर पर तेरी नजर है।

मैंने तुम्हे बताया है, जवाहर का ठीक-ठीक लोभ मुझे नही था। ऐसे एक जवान की ललक थी, जो केवल मेरे खून और गोश्त का भूखा नही हो, मेरे प्रेम की प्यास को भी बुझाए । जो मुझे भी अपने प्रेम का मधु दे ।

मैंने इमाद से साफ कह दिया कि मुझपर अविश्वास की शिकायत नाहक ही करते हो । मैं तुम्हारी ब्याहता तो हूं नही, बादी हू । मै तवायफ की बेटी हू । मेरा स्वभाव—शायद वह नारीमात्र का स्वभाव है—कि जब तक उसे सही प्रेमी नही मिल जाता, वह मन ही मन नये आदमी को खोजती है। मेरे दिल की भी शायद यही फितरत हो !

तोहमते-इश्क अबस करती है मुझपर मिन्नत ।
हाँ, ये सच, मिलने की खूबाँ से तू तक खुश है !

मैंने कहा था, तुम मेरे प्यारे नही, मुझपर नालिश करनेवाले मेरे दुश्मन हो !

मुद्दई हमसे सुख़नसाज़ वो सालूसी है।
अब तमन्ना को यहाँ मुजदए-मायूसी है।

वल्लभगढ से भागते वक्त इमाद से मेरी ये बाते हुई थी । मुझे छीन ले जाने के लिए जवाहर ने आदमी भेजा था ।

मैं चाहती होती तो पकड में आ जाती जवाहर की । जवाहर के सिपाही, लखनऊ जाने की राह मे प्यारा बाबा के दरबार के पास जिस तरह टूट पडे थे, इस बार भी उसी तरह से टूटे । मैं पालकी पर इसी अगूठी को पकड़े बैठी थी ।

चाहती, तो उतरकर भाग सकती थी। मगर नही भागी। बैठी यही कहती रही—मर्जी खुदा की, खेल नसीव का। जो भी हो, हो। पूरी हो खुदा की मर्जी और पूरा हो नसीव का खेल। मैं अपनी इज्जत को वरबाद नही करूंगी। इज्जत इन्सान की!

वे मुझे लूट नही सके। लोगो का ख्याल है, चूंकि मैं मुसलमान थी, इसलिए सिपाही मुझे ले जाना नही चाहते थे। जवाहर मुसलमान न हो जाए कही! या कि जवाहर की बीवियो ने मनसबदारो को घूस दिया होगा कि गन्ना को मत लाना। राजा उसीमे डूबा रहेगा। सब बटाढार हो जाएगा।

उसके वाद की तो तुम सब जानते ही हो चाद। तुम कहा राजपुताने मे नौकरी कर रहे थे। फर्रुखाबाद आए। मैं यहां हूं, सुनकर मुझसे मिलने के लिए आए।

उमधा ने मेरे लिए सुविधा कर दी।

उसकी मां ने चाहे जो भी किया हो, वह असली सैयद की वेटी है। वह मुह सिए ही रही। अपनी इज्जत देकर मैंने उस दिन उसकी इज्जत वचाई थी—इस बात को वह भूली नही। मगर उसे ईर्ष्या भी थी। क्योकि उसने इमाद को नही पाया। मैंने बीसियो वार कहा—उमधा बेगम, तुम मुझसे यह शिकायत न करो। सभी औरतो की तरफ से खुदा से करो। मर्द ऐसे ही होते है। वे अपने को किसीको नही देते। जबरदस्ती तलवार भोककर औरतो के कलेजे का खून पी लेते है। सोचते है, यही मुहब्बत है। औरते ताजिन्दगी रोती रहती है। दरअसल वे बेगम नही होती कोई—होती है वादी। खुदा से कहो, औरतो के नसीव को वह वदल दे।

फर्रुखाबाद से अजमेर।

इमादुल मुल्क का खेल खत्म हो गया। हिन्दुस्तान के नवाबी-वादशाही के खेल के मैदान से नसीव ने उसे गला पकडकर निकाल दिया।

इमाद ने अजमेर मे बसेरा बाधा। माला फेरने लगा। दौलत के मजे लेने लगा। गन्ना ने शराब पी। शराब और शराब।

नाचा। गाया। रिहाई नही।

जिसे देनी थी, उसने रिहाई दी—खुदा ने। नसीब ने!

बीमार पडी। मुह से खून आने लगा! खूबसूरती की बहार गई। जवानी की पंखडिया सूखने लगी—जिन्दगी की खुशबू जाती रही।

उमघा बेगम ने अब उसका पिंड छोड दिया।

बोली—गन्ना बहन, मैंने तुम्हे छुटकारा दिया।

मैने कहा—खुदा कसम?

—खुदा कसम। यह लो, अब्दाली ने तुमसे सही कराकर जो खत मुझे दिया था, उसे फाड देती हूं।

उमघा ने उसे फाड दिया। इमाद ने लपककर कहा—नही।

मैं तुमसे कहूं चादखा, उस दिन मैंने उमघा का और ही चेहरा देखा। सैयद की बेटी! उसने इमाद को ठेल दिया। बोली—नही, मैंने बात दी है। वह पूरी होकर रहेगी। इमाद, सोच देखो, इसी औरत की बदौलत आज तुम अजमेर आकर माला फेर रहे हो। इससे अगर शादी नही की होती, तो मेरी अम्मां अब्दाली को खत नही लिखती। तुम्हारा और हिन्दुस्तान का यह हाल नही हुआ होता और, तुमने एक ऐसी लडकी की सारी जिन्दगी बरबाद कर दी!

इमाद माथा नवाए चला गया। उमघा ने मुझसे कहा—तुम चली जाओ गन्ना। कही चली जाओ। कहो, कहां जाओगी? मैं भिजवा देती हूं।

मैने कहा—मुझे नूराबाद भेज दो। ग्वालियर मे तानसेन की कब्र है। मेरी मा की है नूराबाद मे। प्यारा बाबा अभी भी वहा है। वही भेज दो। और, भाई जैसे चादखां को मेरे साथ कर दो।

दूसरे दिन।

सराय से गन्ना ग्वालियर की ओर रवाना हुई। नूराबाद चली। प्यारा बाबा की शरण मे जुडाएगी।

डोली मे बैठी उस अंगूठी को देख रही थी। मीना पर अकबर आदिलशाह का नाम झकमका रहा था।

बगल से चाद खा और तीस सिपाही चल रहे थे!

अगूठी देखने मे अच्छी नही लग रही थी!

मन मे उसके प्रश्न जगा। इतनी जो तकलीफ उसने उठाई, खुदा की मर्जी मानकर सिर-आखो उठा लिया, उसके लिए खुदा के दरबार से क्या मिलेगा, सो वह जानती है। लेकिन उसके लिए वह कभी नही रोई। दुनिया मे उसके लिए कभी कोई नही रोया।

प्यार मे प्रेमी चुबन से दर्द देता है।

आदमी आदमी को दर्द देता है, वह आसू मे दिखाता है।

उसके लिए किसीने दो बूद आसू नही गिराए। उसे अपनी पुरानी गजल याद आई। वह गुनगुनाने लगी। पूरी याद नही आ रही थी। न सही। नई बना लेगी। नई बनाकर पुरानी गजल गाएगी।

"सुख अपना मेहमान है।
उसके लिए तैयारी कितनी!
मखमल बिछाना होता है। दीवाली करनी होती है।
गाना पडता है। हसना पडता है।
तुम्हारी कमी ढकनी पडती है। कलेजे मे दर्द को दबाना पडता है।
रोओ मत, हसो।
मेहमान चला गया। सुख का खेल खत्म हुआ।
बत्ती गुल हुई। महफिल का मखमल उठ गया।
आया दु ख। साथी।
जमीन पर बैठकर गले लगा।
रोओ गन्ना। जी भरकर रोओ।
छाती के दर्द को उजाड दो।"

उसकी आंखो से आंसू की धारा बह चली। आह, कितना आराम! कितना सुख। आज—इतने दिनो के बाद।

जरा देर आखे बद करके बैठी रही। पालकी चल रही थी। अगल-बगल घुडसवार। अच्छा लग रहा था।

हठात् उसने आखे खोली। पालकी के दरवाज़े को ज़रा फांक करके पुकारा—चाद!

चाद ने घोडे को मोडा। करीब आकर कहा—साहबजादी!

—साहबजादी नही चाद, बहन कहो!

—वही सही । कहो ।

—देखो, मेरी कब्र पर तुम इतना जरूर खुदवा देना—

"तुम लोग गन्ना के लिए जरा रोग्रो !"

चांद की आखें जैसे फट गईं । आंसू वह आए । आह !—वही खुदवा दूगा, वही !

चाद ने वही खुदवा दिया और रोया ।

चाद ही नही, वहुतेरे लोग रोते है ।

OOO

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-३२ 1138